

प्रकाशक

सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)

“वसुन्धरा” ग्राम भूपानी—लालपुर रोड फरीदाबाद—121002 (हरियाणा)

ई—मेल: info@satyugdarshantrust.org

website: www.satyugdarshantrust.org

© सर्वाधिकार सुरक्षित सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)

ISBN : 978-93-85423-07-09

प्रथम संस्करण

अप्रैल, 2017



समभाव-समदृष्टि के

सबक

दिनांक 17 अप्रैल 2016 - 25 सितम्बर 2016



सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार

★महामन्त्र★

साडा है सजन राम,
राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमार मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है।

उसी को जानो,

मानो और वैसे ही

गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु,
शरीर नहीं है।

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं,

ज्ञान को अपनाओ।

निमित्त में नहीं,

नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

अनुक्रमणिका

| क्रमांक | विवरण | पृष्ठ संख्या |
|---------|---------------------------------|--------------|
| 1. | दिनांक 17 अप्रैल 2016 का सबक्र | 1 |
| 2. | दिनांक 24 अप्रैल 2016 का सबक्र | 41 |
| 3. | दिनांक 01 मई 2016 का सबक्र | 50 |
| 4. | दिनांक 08 मई 2016 का सबक्र | 59 |
| 5. | दिनांक 15 मई 2016 का सबक्र | 68 |
| 6. | दिनांक 22 मई 2016 का सबक्र | 79 |
| 7. | दिनांक 29 मई 2016 का सबक्र | 89 |
| 8. | दिनांक 05 जून 2016 का सबक्र | 102 |
| 9. | दिनांक 12 जून 2016 का सबक्र | 109 |
| 10. | दिनांक 19 जून 2016 का सबक्र | 122 |
| 11. | दिनांक 26 जून 2016 का सबक्र | 132 |
| 12. | दिनांक 03 जुलाई 2016 का सबक्र | 141 |
| 13. | दिनांक 10 जुलाई 2016 का सबक्र | 148 |
| 14. | दिनांक 17 जुलाई 2016 का सबक्र | 157 |
| 15. | दिनांक 24 जुलाई 2016 का सबक्र | 168 |
| 16. | दिनांक 31 जुलाई 2016 का सबक्र | 177 |
| 17. | दिनांक 07 अगस्त 2016 का सबक्र | 186 |
| 18. | दिनांक 14 अगस्त 2016 का सबक्र | 197 |
| 19. | दिनांक 21 अगस्त 2016 का सबक्र | 208 |
| 20. | दिनांक 28 अगस्त 2016 का सबक्र | 219 |
| 21. | दिनांक 04 सितम्बर 2016 का सबक्र | 226 |
| 22. | दिनांक 11 सितम्बर 2016 का सबक्र | 239 |
| 23. | दिनांक 18 सितम्बर 2016 का सबक्र | 250 |
| 24. | दिनांक 25 सितम्बर 2016 का सबक्र | 262 |

दिनांक 17 अप्रैल 2016 का सबक्र

सब सजन अब उत्साह में आ जाओ क्योंकि अब हम बढ़ने लगे हैं पढ़ाई से गुढ़ाई की ओर। याद रखो गुढ़ाई करना उसी के लिए आसान होगा जिसने अब तक जो भी पढ़ाया गया उसकी विधिवत् पढ़ाई कर, उसे वैसा का वैसा अपनी स्मृति में बिठा लिया होगा। यह निष्कामता व ध्यान से उस पढ़ाई को साधने का यत्न है। इस तरह जिस भी सजन के अन्दर एक अच्छा इन्सान बनने के प्रति रूचि यानि दिलचस्पी होगी वही इसी गुढ़ाई की क्रिया को प्रसन्नता से सम्पन्न कर पाएगा। इसके विपरीत जो बेदिला होकर इस क्रिया में सम्मिलित होगा वह एक तो खुद नाकामयाब होगा, साथ ही दूसरों के रास्ते में बाधा उत्पन्न कर, उनकी नाकामयाबी का कारण भी बनेगा। अतः जो भी मनुष्यत्व की विचारधारा पर डटे रह आगे बढ़ना चाहता है, उसे इन तमाम बाधाओं को रास्ते से हटाना होगा और लगाव व प्रभाव के कारण पनपने वाले मोह बन्धन को त्याग, उसके दुष्प्रभावों से उबरना होगा। यह सब के संग विशेष रहते हुए भी निर्लेप रहने की बात है। याद रखो यह त्याग अपने आप में बहुत कड़ा तप है। इस तप द्वारा समस्त दुष्प्रभावों से विमुक्त हो, कोई विरला ही, आत्मिक ज्ञान की पढ़ाई को अमल में लाकर, गुढ़ाई की क्रिया में सफल हो पाएगा। अन्यथा सफलता प्राप्त करना कठिन है। अतः सभी अपने इस मानवीय उद्देश्य में सफलता प्राप्त करने के सुपात्र बनो।

इस संदर्भ में याद रखो जो खुद पढ़ना नहीं चाहता वह यह कभी नहीं चाहेगा कि दूसरा पढ़-लिख कर उससे बुद्धिमान व बलवान हो जाए। अतः हमें संगति और कुसंगति का

अन्तर समझना होगा यानि विचारना होगा कि इस जीवन यात्रा के दौरान मैं सत्-संगति कर रहा हूँ या कुसंग में फँसा हुआ हूँ। यदि लगे कि कुसंग में अटका हुआ हूँ तो आत्मनिरीक्षण करके आत्मनियंत्रण द्वारा उस दलदल से बाहर आ जाना। ऐसा करने से अफुर अवस्था बन सकेगी और मन संकल्प रहित होकर, गुढ़ाई में सफल होने हेतु, समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार, सजन-भाव अनुरूप, आचार-व्यवहार दर्शाने में सफल हो सकेगा। इस बात को सजनों अत्यन्त गंभीरता से लेना अन्यथा कमज़ोर पड़ जाओगे और कदम आगे नहीं बढ़ा पाओगे। अगर कमज़ोर पड़े तो यह अपने आप में बन्धनमान होने की बात होगी और स्वतन्त्रता से जीवनयापन नहीं कर पाओगे। इस सन्दर्भ में जानो कि स्वतन्त्रता से चलना सीखने पर ही परमपद यानि परम लक्ष्य प्राप्त कर पाओगे। सजनों यही अंतर्निहित मानवता को ज़िन्दा रखते हुए, परिपूर्ण जाग्रत अवस्था में जीवनयापन कर, इस जगत पर विजय प्राप्त करने की कुंजी है। क्या आप सब विजय प्राप्त करना चाहते हो?

हाँ जी।

तो संसार की हर शै का प्रयोग अवश्य करना अर्थात् जो शरीर के लिए उपयोगी है स्वास्थ्यवर्धक है, उसका सेवन करना, जो मानसिकता को स्वस्थ रखने के लिए आवश्यक है यानि धर्म-ग्रन्थों में विदित् ईश्वरीय विचारधारा, उस विचारधारा को अवश्य धारण करना परन्तु यह सब करते हुए मन को अपने नियन्त्रण में रखना व जगत के अधीन होने की भूल मत करना। यह मन व जगत की अधीनता स्वीकारने के

स्थान पर एक निपुण शासक की तरह इन पर राज करने की बात होगी। इस तरह शारीरिक-मानसिक रूप से स्वस्थ हो आध्यात्मिक स्वस्थता प्राप्त करने के योग्य बन जाओगे। याद रखना कि जो शारीरिक-मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं है वह कदाचित् आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ नहीं हो सकता। वह कदापि युवावस्था की ताकतवर भक्ति, धारण करने में सक्षम नहीं हो सकता क्योंकि कठिन परिस्थिति की ज़रा सी भी चोट उसे झुखने-रोने पर मज़बूर कर देती है और उसे नकारात्मक सोचों में डूबने पर विवश कर देती है। ऐसा अविचारी कैसे शास्त्रों में विदित शब्द विचारों को समझ सकता है? कैसे वह विचार शब्द से प्यार व प्रीत कर सकता है? निःसंदेह वह ऐसा कदापि नहीं कर सकता।

अतः सजनों समय अनुसार बदलाव को स्वीकारो और संसारी फुरनों के कीचड़ में फँसे हुए अपने ख्याल को उबार कर अपना अन्तःकरण स्वच्छ यानि मन-बुद्धि-चित्त निर्मल कर लो। इस तरह अहं भाव से मुक्ति पाओ। ऐसा होने पर न तो मन में विकार उत्पन्न हो पाएंगे और न ही अन्दर अहंकार वृत्ति पनपेगी यानि निष्कामी व निर्विकारी हो जाओगे। याद रखो कि जो निष्कामी व निर्विकारी है, वही 'ईश्वर है अपना आप प्रकाश', इस सत्य पर मज़बूत रह सकता है क्योंकि ऐसा होने पर उसे बोध हो जाता है कि हम शरीर नहीं है अपितु हम तो वह आत्मतत्व हैं, जो आद-मध्य-अन्त एकरस रहता है व कभी नहीं बदलता। यहाँ एक रस का मतलब है सम अवस्था। जहाँ सम अवस्था होती है वहाँ समभाव होता है। जहाँ समभाव होता है, वहाँ समदृष्टि होती है। जहाँ समदृष्टि होती है वहाँ मानव हकीकत में सत्यनिष्ठा और धर्म

परायणता से जीवन व्यतीत करने के योग्य बन जाता है। ऐसे मानव को फिर किसी आडम्बरी शरीरधारियों के पीछे भागने की आवश्यकता नहीं रहती। इस प्रकार वह स्वयं में ही परिपूर्ण व आनन्दित रहता है और इस अवस्था को प्राप्त हो अपने सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप को पा लेता है। याद रखो जिसके हृदय का वातावरण ऐसा आनन्दमय हो जाता है उसके मन में कोई संकल्प नहीं उठता क्योंकि वह अपार संतोष को प्राप्त कर लेता है। फिर उसे जगत की किसी वस्तु को प्राप्त करने की आवश्यकता अनुभव नहीं होती। जब आवश्यकता ही नहीं अनुभव होती तो काम/कामना कैसे उसको सता सकती है। इस प्रकार जब काम/कामना नहीं सताती तो क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जो काम के चेले हैं वे नहीं उपजते। अतः सजनों इन्द्रियों के विषयों में ग्रस्त हो, काम रूपी गुरु के चंगुल में मत फँसो। यदि ऐसा हुआ तो यह काम आपको विषय वासना में इस तरह से फँसा देगा कि आपकी होश ही गुम हो जाएगी यानि मदहोशी आपकी जाग्रत अवस्था को इस तरह क्षीण कर देगी कि आपका अचेतन अवस्था को प्राप्त होना निश्चित हो जाएगा। फिर पता ही नहीं चलेगा कि मैं कौन हूँ और इस जगत में क्या करने आया हूँ। यह विस्मृति मिथ्या ज्ञान अपनाने का हेतु होगी और फिर जो भी करोगे उस करनी के अच्छे-बुरे नतीजों से बेखबर हो, बुरे इंसानों की तरह ही करोगे। फिर इस चलन के स्वभाव के अंतर्गत होते ही जब कोई इस विपरीत चलन को छोड़ने के लिए कहेगा व रोकेगा-टोकेगा तो उसे खाने को पड़ोगे। इस तरह भ्रम जाल में फँसी हुई बुद्धि को यह पता ही नहीं चलेगा कि मैं क्या गलत कर रहा

हैं। फलतः खुद दुःख भोगोगे व दुःख ही बाँटोगे। अतः ऐसे कमज़ोर इन्सान बन, अविचारियों से दोस्ती मत लगाना। इस संदर्भ में मानवीय चलन अनुसार परिवारों में रहते हुए सम्बन्धों को निभाना अवश्य, पर उनके साथ जुड़ मत जाना। तात्पर्य यह है कि कर्तव्य परायणता से सम्बन्धों का निर्वाह करते हुए मज़बूती से आगे बढ़ते जाना। याद रखो जो इस मज़बूती से आगे बढ़ना चाहता है वही आत्मिक ज्ञान की पढ़ाई की गुढ़ाई कर सकता है और उसे ही अब से इन कक्षाओं में आने की आज्ञा होगी। ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि कमज़ोर और बुज़दिल इन्सान समभाव-समदृष्टि का सबक नहीं सीख सकता। ऐसे व्यक्ति को कक्षा में बिठाना अन्यो के लिए विघ्न पैदा करने की बात है। अतः अब जब हकीकत में ऐसा घटित होगा तो उस समय हड़बड़ाना नहीं। इसीलिए हम अभी से ही सतर्क कर रहे हैं। याद रखो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही सतयुगी भाव-स्वभावों पर बने रहने में सक्षम हो पाओगे। आप सब ऐसे सक्षम इन्सान बन सको इस हेतु आओ उस ईश्वर से प्रार्थना करते हैं:--

प्रार्थना

मेरा समभाव-समदृष्टि की पढ़ाई व गुढ़ाई करने के पीछे मुख्य उद्देश्य है अपने यथार्थ में बने रहने हेतु आत्मज्ञान द्वारा, मन-वचन-कर्म से आत्मभाव अनुसार, हर प्राणी के प्रति परमात्म-दृष्टि व वृत्ति अपनाकर, अपने आत्मबल का भरपूर प्रयोग करते हुए, अब तक धारण किए हुए सूक्ष्म से सूक्ष्म दोषों का निवारण कर श्रेष्ठ, विद्वान, गुणवान, बलवान, धनवान, बुद्धिमान व ज्ञानवान बन, सजन-भाव का वर्त-

वर्त्ताव कर एक अच्छे इंसान की तरह जीवन जीने के योग्य बनना। मैं जानता हूँ कि यही युक्ति ही मेरे हृदय में शांति रूपा शक्ति द्वारा मुझे सदा हर विकृति व अमंगल से रक्षित रखने का अचूक हथियार है। इस हेतु मैं अपने इसी उद्देश्य सिद्धि के लिए सर्वव्यापक भगवान से बल, बुद्धि व सुमति प्रदान करने की प्रार्थना करता हूँ।

याद रखो सजनों जब भी हम उस ईश्वर से कुछ प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करते हैं तो उस देने वाले दाता यानि ईश्वर के वचनों की पालना करनी होती है। जो उनके वचनों की पालना करता है वह दाता उस प्यारे को स्वार्थी व परमार्थी दोनों राज्य प्रदान कर, राजाओं का राजा यानि अमीरों का भी अमीर बना देते हैं। जब सजन इस प्रकार अमीरों का अमीर बन जाता है तो फिर इस ब्रह्माण्ड में बाकी कुछ प्राप्त करने योग्य नहीं बचता। इस तरह आत्मतुष्टि प्राप्त हो जाती है और इन्द्रियों की सारी भाग-दौड़ समाप्त हो जाती है। यही तो होती है इन्द्रिय निग्रह की सिद्धि। इस सिद्धि के प्राप्त होने पर सारी परेशानियाँ समाप्त हो जाती हैं क्योंकि मन पर अंकुश रखना यानि उसे वश में रखना संभव हो जाता है। इस तरह फिर कोई अन्य यत्न करने की आवश्यकता नहीं रहती। शारीरिक-मानसिक व्यवस्था विधि के विधान अनुसार स्वचलित हो जाती है। इस व्यवस्था के चलित होने पर फिर जो भी उत्पादन गुणों के रूप में होता है वह शुद्धता का प्रतीक होता है। ऐसा इन्सान फिर जीवन में जो भी करता है उसकी उस नेक करनी की सुगंधि से देवलोक की सुगंधि भी मात खा जाती है। इस तरह ब्रह्म स्वरूप हो वह देवलोक से भी ऊपर उठ जाता है। उसे फिर शरीरों, तस्वीरों, कर्मकांडों

जंत्र-मन्त्रों के भ्रम जाल में फँसने की कोई आवश्यकता नहीं रहती।

इस संदर्भ में सजनों याद रखो कि हम सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे पर हैं। अतः युक्ति के प्रति अनभिज्ञ हो इस प्रकार बुद्धिहीनता से जीवन जीना हमें कदाचित् शोभा नहीं देता। याद रखो जो सुपुत्र होता है वह पिता की शान बढ़ाता है व इस हेतु उसकी आज्ञाओं का पालन करता है। इस संदर्भ में जान लो कि गुढ़ाई का अर्थ ही ईश्वर के वचनों की पालना करना है। इस तरह वचनों की पालना द्वारा वह बहादुर व पराक्रमी इन्सान बन जाता है। आप भी अपने आप को इसी तरह का अच्छा इन्सान बनने के लिए मजबूर करो। निश्चित ही ऐसा करने पर जगत में विजयी होंगे।

इस परिप्रेक्ष्य में जान लो कि जीवन हारना या विजयी होना सब आप के हाथ में है क्योंकि बताना हमारा फ़र्ज़ है और उस पर अमल फ़रमाने का फैसला व्यक्तिगत रूप से आपके हाथ में है। आपके इस अधिकार में कोई हस्ताक्षेप नहीं कर सकता। न ही हम इसके प्रति आपको मजबूर कर सकते हैं क्योंकि ईश्वर का यही विधान है। वह ईश्वर प्रत्येक जीव को उचित मार्ग दर्शा कर स्वतन्त्र रूप से निर्णय लेने का यह अधिकार प्रदान करते हैं। इन्सान चाहे तो सन्मार्ग पकड़ 'आत्मा में जो है परमात्मा' उसकी पहचान कर तदनुसार इस जगत में विचर सकता है और यदि वह चाहे तो मनमत अनुसार कुमार्ग पर अग्रसर हो जन्म-मरण के चक्रव्यूह में फँस सकता है। निर्णय स्वयं आपके हाथ में है। आओ यह सब जानने के पश्चात् अब बढ़ते हैं गुढ़ाई की ओर.....

सजनों विगत दो वर्षों में हमें सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित आत्मिक ज्ञान की पढ़ाई कराने हेतु समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार सजन-भाव का सबक पढ़ाया व समझाया गया। इस पढ़ाई के समय के दौरान सजनों हर संभव प्रयत्न द्वारा हमें आत्मिक सत्ता का बोध करा, मानवोचित भाव-स्वभाव अपनाने के लिए प्रेरित किया गया ताकि हम इस दुर्लभ मानव जीवन की अनमोलता को सिद्ध कर न केवल अपने हितकारी बन सकें अपितु निस्वार्थता व परोपकार की भावना से ओत-प्रोत हो अपने परिवार व कुल समाज को भी निष्काम भाव से उत्थान मार्ग पर प्रशस्त करने के योग्य बन सकें। सजनों सार्वजनिक स्तर पर की गई इस क्रिया द्वारा, व्यक्तिगत स्तर पर कौन कितना लाभान्वित हुआ है यानि इन्सानियत की मर्यादा में बने रहने में कितना कामयाब हुआ है, उसका नतीजा रामनवमी के शुभ दिवस पर निकाल दिया गया है। साथ ही इस पढ़ाई के दौरान रह गई कमियों को शीघ्रतातिशीघ्र दूर करने की युक्ति भी आप सजनों को बता दी गई है। अब अपने जन्म की बाज़ी को जीतना या हारना आपके हाथ में है क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है:-

**जन्म दी बाज़ी जित चाहे हार, जीत हार है तेरे हाथ।
अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात॥**

सजनों जीवन हार कर अपने जन्म पर घात न लगाओ, सच्चे पातशाह जी के यह शब्द हमें विजय पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा दे रहे हैं। अतः हमारे लिए बनता है कि हम सच्चे पातशाह जी के इन वचनों को प्रवान करें। इस संदर्भ में

सजनों मत भूलो कि समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। वह तो निरंतर आगे बढ़ता ही रहता है। अतः यदि समय चूक गया और अभी भी हम अच्छे इन्सान न बन पाए तो फिर तलियाँ मल-मल, मल-मल तलियाँ पछताना पड़ेगा। ऐसा समय किसी के जीवन में न आए इसीलिए सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें समय रहते ही सचेत करते हुए कह रहा है:-

कलुकाल दे इन्सान जे हार खा बैटे,
तां सतवस्तु दा नज़ारा देखे कौन।

सतवस्तु में चौरासी दग्ध भस्म हो राहसी,
तां चतुर्भुजधारी दा नज़ारा देखे कौन॥

हिम्मत लड़ाओ मेरे सजनों,
जे सतवस्तु विच आना जे।

तां हिम्मत लड़ाओ मेरे सजनों,
जे संग लक्ष्मी चतुर्भुजधारी दा दर्शन पाना जे॥

अर्थात् बेहतरी इसी में ही है कि हम हिम्मत से काम लें और जल्दी से जल्दी बताई युक्ति के अनुसार पिछली कमियों को दूर कर, समय की रफ़्तार के साथ सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों को परख, कदम से कदम मिलाकर आगे की ओर बढ़ चलें क्योंकि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार अब वक्त आ गया है, आत्मिक ज्ञान की इस पढ़ाई की गुढ़ाई करने का। गुढ़ाई अर्थात् ट्रेनिंग जिसकी अवधि तीन साल है। इन तीन सालों में सजनों हमने क्या करना है यानि किस प्रकार आत्मिक ज्ञान की पढ़ाई को अमल में लाते हुए व अमल कमाते हुए, उस

पर गुढ़ना है और पुण्य आत्मा बन, एक नेक इन्सान बनना है, उसका योजनाबद्ध प्रारूप जोकि इस प्रकार है, गृहकार्य के रूप में आपको दे दिया गया है:-

सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार
आत्मिक ज्ञान की पढ़ाई की गुढ़ाई हेतु

गृहकार्य

सजनों अमल में लाओ व अमल कमाओ।
पुण्य आत्मा बनो और नेक इन्सान कहलाओ।।

सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार:-

‘सतवस्तु विच नेहकलंक अवतार,
चतुर्भुजधार सतवस्तु दा सिंगार होसी।
जैदा रूप न रेखा न रंग कोई,
फिर ओही तो सिरजनहार,
बिन सूरजों चमत्कार होसी।।’

जान लो कि जो यह ‘सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ’ कुदरती आया है, उसमें तूं-मैं किसी का कोई सवाल नहीं। यह ग्रन्थ सब का सांझा है और यहाँ वड-छोट का कोई प्रभाव नहीं। इस कथन के अनुसार हमें भी अपने मन को ‘तूं-मैं’ व ‘वड-छोट’ के प्रभाव से मुक्त रख, इसमें वर्णित सतवस्तु की चाल को एकरस अपनाना है व मनमत से आज्ञाद रह, उसी धर्म पर निष्काम भाव से डटे रहना है। कहने का आशय यह है कि कलुकाल का झूठा पहरेवा उतार, हमें इस कुदरती ग्रन्थ में वर्णित सतवस्तु के असूलों को पकड़, उन्हीं का इस्तेमाल करते हुए, सत्यता से उन्हीं सिद्धान्तों को सर्वप्रिय मान,

सत्यमय बने रहना है व इस तरह जन्म की बाज़ी जीत लेनी है। इस हेतु हमें 'विचार ईश्वर है अपना आप', इस सत्य को समझना है व मानना है यानि अपने असलियत स्वरूप से विमुख हो, अविचारियों की तरह, ईश्वर की खोज में इधर-उधर नहीं भटकना। यह संसार की नश्वरता व निज स्वरूप की नित्यता का बोध करते हुए, मूल मन्त्र आद् अक्षर के अजपा जाप द्वारा, अपना हृदय सदा एकरस प्रकाशित रख 'ईश्वर है अपना आप प्रकाश', के सत्य पर दृढ़ता से बने रहने की बात है। यह सही अर्थों में जप-तप-संयम जैसे बाल अवस्था के कठिन व आडम्बरयुक्त भक्ति भावों को अपनाने के स्थान पर, 'शब्द है गुरु, शरीर नहीं है' के भाव पर अटल रह, स्वतन्त्रतापूर्वक विश्राम से जीवन जीने योग्य बनने हेतु आवश्यक है। अतः सजनों हमें इसी मूलमन्त्र आद् अक्षर को ही गुरु जानते व मानते हुए उसी को प्रवान करना है। इस तरह उसी मूलमन्त्र को जीवन का महान पद प्राप्त करने के लिए प्रकाशमय व निष्कण्टक आधार मानना है। जानो यही सजन भाव की पढ़ाई की विधिवत् गुढ़ाई करने हेतु सबसे उत्तम पुरुषार्थ है यानि विचार शब्द द्वारा, असलियत स्वरूप की पहचान कर, सजन भाव अपनाते हुए, सहजता से जिह्वा स्वतन्त्र, संकल्प स्वच्छ, दृष्टि कंचन रखने की व मृतलोक पर फ़तह पाने की बात है।

इस सन्दर्भ में याद रखो सजन पुरुष, मन-वचन-कर्म द्वारा, सच्चाई-धर्म पर अटल रह, भक्ति-शक्ति की ताकत से, भाव शुद्धता द्वारा, गृहस्थाश्रम ठीक निभाते हुए, हर विकृति से बचा रहता है। इस प्रकार वह अपनी यश-कीर्ति पर फ़रक नहीं पड़ने देता। इसलिए तो सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह

रहा है कि, हे इन्सान ! 'जिह्वा सजन, ख्याल सजन रखते हुए, सजन नज़रों में पहचान' और 'हम हैं सजन, तुम हो सजन, सबको सजन सजन ही मान' व इस तरह एकता एक अवस्था में बना रह। अन्य शब्दों में सजनों, नित्य ब्रह्म भाव पर मज़बूत बने रहने हेतु, यह कुदरती ग्रन्थ हमें, सांसारिक ज्ञान में उलझ, मन में 'मैं-तू' का सवाल पैदा कर, द्वि-द्वेष का चलन अपनाने के प्रति सावधान करते हुए, कह रहा है कि 'सजन हम हैं सजन तुम हो, सजन दृष्टि मान लवो, सजन मानो सजन जानो, सजन बुद्धि पहचान लवो'। स्पष्ट है सजनों, बुद्धि को इस उच्च अवस्था में साधे रखने के लिए, जहाँ मन-वचन द्वारा, परस्पर सजन-भाव के वर्त-वर्ताव में बने रहने का विधान है, वहीं किसी कारण भी किसी के साथ छल-कपट करना, उसको गाली-गलूचे निकालना व उसकी निन्दा चुगली करना वर्जित है। अतः सजनों हमारे लिए बनता है कि सजन-भाव की गुढ़ाई के दौरान वांछित शुभ परिणाम प्राप्त करने हेतु हम अपने मन-वचन-कर्म द्वारा सजन-भाव का प्रयोग करते हुए, सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर चलने, शरीर व रिहायशी मकान को साफ़ रखने, हैसियत अनुसार साफ़ कपड़ा पहनने व सात्विक खुराक खाने हेतु, दृढ़ संकल्पी हो जाएं। यह शारीरिक, मानसिक व आत्मिक स्वस्थता प्राप्त कर, स्वतन्त्रता से जीवन के कर्म क्षेत्र में उन्नति कर, समृद्धि प्राप्त करने हेतु अति आवश्यक है।

यहाँ आहार शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए बता दें कि यह केवल प्रत्यक्ष रूप से मुख द्वारा ग्रहण किया जाने वाला भोज्य पदार्थ ही नहीं है अपितु ज्ञानेन्द्रियों द्वारा रूप, रस, शब्द, गंध व स्पर्श के रूप में अप्रत्यक्ष रूप से अन्दर ले जाई जाने वाली

भाव रूपी मानसिक खुराक भी है। शारीरिक व मानसिक दोनों तरह की खुराक के सात्विक होने पर ही, शरीर व मन का समुचित पोषण और रक्षण होने के साथ-साथ आत्मिक बल की वृद्धि भी होती है जबकि इसके अभाव में रोग ग्रस्तता शारीरिक, मानसिक व आत्मिक शक्तियों का सर्वरूपेण ह्रास करती है। परिणामस्वरूप असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और स्वभावों का टैम्पेचर घटना-बढ़ना आरम्भ हो जाता है। यह विकारों को धारण करने की व निर्विकार अवस्था भंग होने के कारण, मिथ्याचारी बनने की बात होती है। इस तरह जीवन का परम पुरुषार्थ मनुष्य के हाथ से छूट जाता है। अतः सजनों यदि आज से पूर्व राजसिक व तामसिक आहार का सेवन करने की लत में फँसकर, शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य बिगाड़ चुके हो तो अब निरोगी हो, पूर्ण स्वस्थता व एकता, एक अवस्था में बने रह, दीर्घ आयु लाभ प्राप्त करने के लिए आत्मनियंत्रण द्वारा, सात्विक आहार का सेवन करना ही सुनिश्चित करना।

इस हेतु याद रखो कि सात्विक आहार स्फूर्ति प्रदायक, पुष्टिकारक, रक्तशोधक, शक्तिवर्द्धक, रोगनाशक, सरस, स्निग्ध, सारवान तथा हृदयग्राही होता है और इस में शरीरस्थ तापमान को संतुलित रखने वाले वायु, पित्त और कफ़ समान मात्रा में उपस्थित रहते हैं। शरीर की सारभूत धातु की पुष्टि होने से इस द्वारा मनुष्य को आयु, बुद्धि, बल, आरोग्य व सुख प्राप्त होता है व सन्तान भी उत्तम गुण सम्पन्न होती है। यहाँ बल का अर्थ स्पष्ट करते हुए बता दें कि बल से आशय सफलता दिलाने वाली शारीरिक और मानसिक शक्ति से है।

इसके अतिरिक्त सात्विक आहार स्वभाव से ही मन को प्रिय लगता है क्योंकि इसके सेवन से न केवल सत्त्वगुणों में वृद्धि होती है अपितु हार्दिक संतोष भी प्राप्त होता है। इस प्रकार मन की प्रसन्नता और शरीर की पुष्टि के साथ-साथ चित्त को भी शांति प्राप्त होती है। परिणामतः शारीरिक-मानसिक रोगों का नाश होता है, निरोगता पनपती है और मुख आदि शरीर के अंगों पर भी शुद्ध भावजनित आनन्द चिह्न प्रकट होते हैं। सजनों यही जीवन का सच्चा सुख है क्योंकि इससे चित्त वृत्ति प्रेम भाव से सम्पन्न होती है। अन्य शब्दों में इससे शरीर में चैतन्यता, हलकापन तथा इन्द्रियों व अन्तःकरण में निर्मलता उत्पन्न होती है। फलस्वरूप हृदय में दिव्य ज्योति का उद्भव होता है जिसके प्रकाश के प्रभाव से सत्य-असत्य तथा कर्तव्य-बोध कराने वाली, ज्ञानस्वरूप विवेकशक्ति का उदय होता है। सजनों जिस समय ज्ञान व प्रकाश दोनों का प्रादुर्भाव होता है उस समय अपने आप ही सर्वत्र सुख-शांति छा जाती है तथा राग-द्वेष, दुख-शोक, चिंता-भय, मन की चंचलता, आलस्य-प्रमाद आदि दूर हो जाते हैं। यही सर्वांगीण शारीरिक व मानसिक आरोग्यता का द्योतक होता है। अतः सजनों ऐसी अति उत्तम सात्विक खुराक को ग्रहण कर, उससे अपने शरीर व मन को सींचो ताकि सद्गुणों की प्राप्ति के साथ-साथ, जीवन के धर्म को, इन्द्रियों के विषयों और क्रियायों को, अच्छी तरह सम्पन्न करके, मोक्ष प्राप्त करने के अधिकारी भी बन सको।

सजनों अपने जीवन का उद्देश्य सिद्ध करने अर्थात् परमधाम पहुँच विश्राम प्राप्त करने हेतु सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें कह रहा है कि इस मिथ्या जगत की रमज़ को जानते-

समझते हुए, निर्लिप्तता व निष्कलंकता से जीवनयापन करो व इस तरह हर परिस्थिति में सम अवस्था में बने रहो। इस हेतु सजनों सृष्टि का यह सत्य सदा याद रखो कि सब चराचर जीव-जन्तु प्रभु ने ही उपजाए हैं। चाहे इस क्रिया को जारी रखने हेतु उस ईश्वर ने ही फुरने अनुसार प्रत्येक को स्त्री-पुरुष का रूप प्रदान किया है पर वास्तव में सब शरीरधारी जीवों में रूप, रंग, रेखा रहित उस परम पुरुष का ही वास है। इस तथ्य से सजनों यह ज़ाहिर होता है कि वाकई ही वह गुसाईं बेअन्त-बेअन्त-बेअन्त है जिसका अन्त वही विरला ताकतवर जीव पा सकता है, जो रूप-रंग धारण की हुई, हर वस्तु की नश्वरता और शरीरधारी आत्मा की नित्यता को जानते-समझते हुए 'ज्योति स्वरूप है अपना आप' का बोध रखता है व अपने यथार्थ, नित्य हस्ती में बने रह, किसी भी संसारी आकर्षण से मोहित नहीं होता यानि कामनायुक्त होकर निष्कामता का रास्ता नहीं छोड़ता। यह अपने आप में विचार युक्त जीवन जीने की बात होती है क्योंकि ऐसा व्यक्ति यह जानता है कि ईश्वर से विमुख होकर कामनायुक्त कर्मों के फलस्वरूप, उसे जीवन में हज़ारों कष्टों की प्राप्ति होने वाली है। अतः सजनों गुढ़ाई के दौरान, एक निगाह एक दृष्टि, एक दृष्टि एक दर्शन द्वारा, सर्व-सर्व आत्मप्रकाश का आभास करते हुए, सदैव सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर बने रह, सब कुछ अकर्त्ता भाव से करते हुए, कर्मफल से आज़ाद बने रहो। किसी के भी प्रभाव व छलावे में आकर सतवस्तु का यह उत्तम चलन न छोड़ो।

सजनों जान लो कि इस जगत में आने वाले हर किसी इंसान ने आना भी अकेला है और जो दुनियां चार दिनों का मेला है,

उसे छोड़ कर जाना भी अकेला है। इस नश्वर जगत में आते-जाते वक्त कोई किसी का साथ नहीं दे सकता इसलिए अपने मन को ईश्वर में लीन रखते हुए, मस्तक की ताकी खोल, नित्य आत्मदर्शन की सुंदरता पर बलिहार रह, अपने आप में ही मग्न रहो। इससे न केवल अपने आप में ही भरपूरता का एहसास होगा अपितु आत्मतुष्टि यानि मन को भी संतोष प्राप्त होगा। बस फिर तो सम अवस्था में बने रह जीवन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए, उसी ईश्वर के ही गुण गाते हुए, अपना ख्याल व ध्यान उसी संग जोड़े रख, मूल मन्त्र के अजपा जाप से, हृदय प्रकाशित वेद विदित यानि सर्वोत्तम परमार्थी धन, इतना प्राप्त कर लोगे व इस तरह भरपूर हो जाओगे कि किसी अन्य वस्तु की प्राप्ति की इच्छा ही नहीं रहेगी। यह होगी मन की संकल्प रहित अवस्था जिसके अंतर्गत, धीरता से नेक कमाई कमाते हुए, आनन्द से परोपकार करते हुए खुशहाल जीवन जी सकोगे।

अतः सजनों मानो कि जिस ईश्वर की इलाही जोत मेरे मन मन्दिर में जग रही है, उसे कहीं भी बाहर ढूँढने की आवश्यकता नहीं है। इस हेतु यानि निज ज्योति स्वरूप का प्रकाश पाने के लिए तो, मात्र आत्मीयता को धर्मसंगत अपने स्वभाव के अंतर्गत कर, हर समय अजपा जाप द्वारा नाम ध्यान में स्थिर रह, सब कुछ सत्यनिष्ठा व धर्मपरायणता से करने की आवश्यकता है। इसलिए सजनों न तो दिनचर्या का समय खाने-पीने में बिताओ और न ही निद्रा में रात। इसी तरह मानसिक तौर पर न तो त्रेता वाला सेवक-स्वामी का भाव अपनाओ, न ही द्वापर का भक्त भगवान वाला भाव अपनाओ, न ही कलुकाल के गुरु-चेले वाले भाव को महत्ता

दो। इसके स्थान पर सतवस्तु यानि निज आत्मतत्व शब्द रूप साजन पति परमेश्वर को ही अपनी सुरत को सजाने, सँवारने व अपने जैसा महान बनाने का हेतु मानो। इस प्रयोजन सिद्धि के लिए तो सजनों विचार शब्द अनुसार जनचर-बनचर, जड़-चेतन में एक प्रकाश समझ, निष्काम हो जाओ। निष्काम रास्ते पर बने रहने के लिए जानो कि इस संसार में ईश्वर के हुक्म से ही सब कुछ होता है इसीलिए उसी के हुक्म को सबसे बलवान व महान मानो और उन्हीं के वचनों पर दृढ़ता से बने रह, परोपकारी बन, जन्म की बाज़ी को जीत लो। इस तरह जीवन हारने से बचो और मन पर विजय प्राप्त कर, अपनी शान बढ़ाओ।

इस संदर्भ में यह भी मत भूलो कि एक निष्कामी ही ब्रह्मज्ञानी हो सकता है। निष्कामी को ब्रह्मज्ञान प्रदान करने हेतु सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में ईश्वर कहते हैं कि 'ओ३म् ओ३म्, ओ३म् विच जड़या होया हां और ओ३म् ओ३म्, ओ३म् विच खड़ा होया हां'। इसलिए ओ३म् शब्द का महत्त्व जानते हुए ओ३म् के ही मन्त्र की रटन लगाओ। यह अपने मन को संसारी मिथ्या ज्ञान धारणा से स्वतन्त्र रख हृदय विदित चार वेदों, छः शास्त्रों को प्रकाशित करने व उनमें से खुद ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने की बात है। इस क्रिया उपरान्त ही सजनों समझ में आएगा कि 'ब्रह्म स्वरूप है अपना आप, हम तो हैं ओही प्रकाश' अर्थात् 'कीड़ी कोलों हाथी अन्दर, ब्रह्मा कोलों तृण अन्दर' ब्रह्म स्वरूप ही है। यह बोध होने पर कह उठोगे 'असलियत स्वरूप है जे ब्रह्म, जैदा रूप रेखा नहीं रंग' यानि मैं ही 'ओ३म् विच विशेष हूँ और ओ३म् तूं निर्लेप

हूँ। अतः सजनों गुढ़ाई के दौरान हमें ओ३म् शब्द के तत् और सत् को जानने के लिए नितांत अफुरता से एकरस अजपा जाप में बने रहने का तप करने का उद्यम दिखाना होगा ताकि हम इस आद् अक्षर के प्रकाश की, विवरण सहित प्रसार व गतिविधि, जान सकें व इस तरह त्रिकालदर्शी बनें। इस हेतु सजनों प्रणव जो परमात्मा का सूचक है, उसके अजपा जाप में कदापि लापरवाही न करें और सदैव अपने ज्योति स्वरूप में स्थित रहें। इस प्रकार ओ३म् के तत् का सत् यानि निराकार ब्रह्म विराट् दर्शन की समझ आने पर स्वतः हृदय में रूप, रंग, रेखा रहित, सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप, प्रगट हो जाएगा।

इससे सजनों स्पष्ट होता है कि निराकार अपरम्पार परमात्मा ही इस संसार रूपी आत्मा का आधार है। उस परमात्मा को राम, रहीम, कृष्ण, करीम आदि किसी भी नाम से पुकारो, सबमें वह एक ही जपने योग्य निराकार प्रकाशित है। यहाँ विडम्बना यह है कि उस परमात्मा के सर्वव्याप्त व हर अन्दर प्रकाशित होने का सत्य कोई विरला ही दिव्य दृष्टि का सबक प्राप्त कर जान सकता है व पहचान सकता है। इसीलिए सजनों ईश्वर कहते हैं कि मानो 'मैं एक हूँ, मैं एक हूँ, एक समझो हर थाई, व्याप रिहा हूँ हर अन्दर, उस जोत दी है रौशनाई'। अतः सजनों हमारे लिए बनता है कि गुढ़ाई के दौरान इस सत्य को धार, खालस सोना हो जाएं और उस ज्ञान के सागर में, ख्याल को ध्यान से इतनी गहराई में उतार दें कि उस हीरे की सार को पा आप भी उस हीरे संग हीरा हो जाएं। यह ईश्वर संग सच्ची मित्रता बनाने

व उसी के वचनों पर स्वयं को न्योछावार कर जगत हितकारी बनने की बात है।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों सब कार्य व्यवहार करते हुए निगाह उस चमत्कार के साथ हमेशा जोड़े रखो अर्थात् हथ कार वल, चित्त यार (ईश्वर) वल साधे रखो। फिर जो प्रभु कहते हैं कि 'मैं एक हूँ एक हूँ, एक नज़रों में, एक ही एक हर अन्दर सुहा रहा, जनचर-बनचर, जड़-चेतन ओ हर्षा रहा' उसको प्रसन्नचित्तता से स्वीकारो। इस पर स्थिर रहने के लिए जिधर देखो, जहाँ भी देखो, आपके मुख से यही निकले कि हे प्रभु ! 'इको रूप तुम्हारा, इको रूप तुम्हारा, शरीर दी बनावट अलग-अलग, कोई पतला कोई भारा, कोई गोरा कोई काला'। इस तरह निश्चित ही ख्याल को अपने असली घर में साधे रख, विश्राम से आनन्दपूर्वक जीवन जीते हुए, उसे सफल बना पाओगे।

सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में ईश्वर हमें बताते हैं कि यह ब्रह्मांड कारियों के कारीगर की अद्भुत रचना है। इसलिए हमें मानना है कि वही वास्तव में कुदरती साइंस का विद्वान है। तभी तो वह पल में सृष्टि उत्पन्न करने व उसमें जान डालने का महान कार्य सहजता से कर सकता है। यह अपने आप में दिव्य करामात है। इस सत्य से परिचित व्यक्ति यह जानता है कि इस कारण जगत की रचना, विस्तार व पूरा खेल-खिलारा सब फुरने के प्रभाव से ही है। अतः कामुक होकर इसकी किसी वस्तु से जुड़ना, मन की अफुर अवस्था भंग कर, मनोवेग के प्रभाव से, संसार के मोह जाल व विषय-विकारों में फँसने की बात है। इसीलिए सजनों

हमारे लिए बनता है कि हम गुढ़ाई के दौरान सच्चाई-धर्म का वर्त-वर्ताव करते हुए पतिव्रत या पत्निव्रत धर्म पर डटे रहें और सपने में भी परस्त्री या परपुरुष का ख्याल ला कामुकता जैसी विकार वृत्ति न अपनाएं। इससे बचने हेतु जगत में विशेष रहते हुए भी, उससे निर्लेप अपने स्वरूप में स्थित रहें। जानो पतिव्रत धर्म पर स्थिर रहने वाले की एक निगाह एक दृष्टि होती है और वह सच्चाई-धर्म की चाल चलता है। इसलिए तो वह परस्पर व्यवहार के समय सबको माता-पिता, बहन-भाई समझता है और अपना धर्म किसी भी प्रभाव में आकर कभी नहीं हारता। यह धर्म पर तन-मन-धन वारने की बात होती है।

हम भी ऐसा कर सकें उसके लिए सजनों ईश्वर कहते हैं कि एक संतोषी की तरह, धीरता से इस दुनियां में आज़ाद होकर विचरो। अगर किसी भी लिप्ति के कारण फुरनों में उलझ चुके हो तो मूल-मन्त्र, आद् अक्षर के अजपा जाप द्वारा, उन फुरनों को छोड़, पुनः हृदय सचखंड कर, अफुर अवस्था में आ जाओ। तभी अपने आप पर पकड़ रखते हुए गृहस्थ-धर्म ठीक से निभा सकोगे और फ़र्ज़ अदा हँस कर कर पाओगे। जानो जो अपनी विशेष बुद्धि पहचान इस प्रकार फ़र्ज़ अदा करने में समर्थ होता है, वही आत्मज्ञानी ही सब इन्सानों में अक्लवान कहलाता है। इसलिए आत्मिक ज्ञान प्राप्ति के महत्त्व को समझो। विवेकशील बनो, जो भी बोलो पहले तोलो अर्थात् खुद की अच्छी-बुरी करनी खुद जाँचो-तोलो और सम अवस्था में मज़बूती से बने रह, कभी भी नेकी का रास्ता न छोड़ो।

इस सन्दर्भ में याद रखो कि आवश्यकता से अधिक बोलने व हर किसी के साथ वाद-विवाद करने से तो अच्छा है, जिह्वा से ईश्वरीय वाणी का प्रसार करो। इस विषय में सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कहता है कि हमारा सोच-विचार व हर बात सजनता से परिपूर्ण हो व हम सबको आओ-जी, बैठो-जी, खाओ-जी, जैसे आदरसूचक शब्दों से सम्बोधित करें। इस प्रकार सजनों परस्पर जी-जी का वर्त-वर्ताव करते हुए, सज्जनता को इस तरह से अपने स्वभाव के अंतर्गत कर लें कि हृदय व जिह्वा से आत्मीयता का भाव न छूटे। ऐसा करना मानवता का आवश्यक गुण मानो। इस हेतु जब भी आपस में मिलो तो अपनी अंतरात्मा से दूसरे की अंतरात्मा का, जय सीता राम, नमस्ते या सत श्री अकाल आदि शब्दों से अभिवादन करो। ऐसा करते समय दृष्टि उस सजन के हृदय की तरफ़ देखे और उस में अपनी असलियत प्रकाश को देखें। बातचीत करते समय ख्याल उसी प्रकाश में ठहरा रहे। तभी एक निगाह एक दृष्टि पर स्थिर रह पाओगे और हृदय सुशोभित ईश्वर के वचनों को यादगिरी में रखते हुए, उसके प्रति श्रद्धा और विश्वास में यथा बने रह पाओगे। तब फिर मन में अमीरी-गरीबी यानि वड-छोट का सवाल नहीं पनपेगा और वह शान्त बना रहेगा। इस तरह आपसी एकता मज़बूत होगी और एक-दूसरे के दुःख-सुख के साथी बनोगे जिससे त्याग भावना भी मज़बूत होगी।

इस संदर्भ में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार सदा यह याद रखो कि जिसका मन शान्त होता है, वह अपनी शक्ति पहचान जाता है और इस शान्ति-शक्ति के हथियार द्वारा, अपनी वृत्तियों को विकारों से बचाए रख, निर्विकार अवस्था

में बना रहता है। परिणामस्वरूप जो विषय-विकार नरक का द्वार हैं, वे मन-चित्त में घर नहीं कर पाते। यह है काम के परिवार कामना और उसके दोस्त क्रोध व लोभ और इनके दोस्त मोह व कुलनाशक अहंकारता, यानि पंच विकारों से बचे रह, निर्विकार इस जगत में एकरस विचरने के योग्य बनना। इस प्रकार काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार पर विजय प्राप्त करने वाले सजन के संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म के सवाल हल हो जाते हैं और वह सम पर खड़ा हो जाता है।

अतः सजनों जीवन का महत्त्व समझो और यह सत्य स्वीकार लो कि हमारे परमपिता परमेश्वर ने हम जीवों को इस मृतलोक में सच वणजने के लिए भेजा है। इसीलिए झूठ का व्यापार कर, अपने बेदाग चोले पर दाग मत लगाओ अन्यथा कलुषित रूप के कारण, ईश्वर के सन्मुख जाने से डरोगे और गँवारों की तरह ख्याल को जगत में भटका बैठोगे। यह व्यभिचारी व दुराचारी बन, चरित्रहीनता को प्राप्त होने की बात होगी। फलतः दिल-दिमाग हमेशा आतंकित रहेगा। तभी कह रहे हैं कि आत्मनिरीक्षण करो और आत्मनियन्त्रण द्वारा अपनी त्रुटियों व भूलों का सुधार कर, अपने इस जगत में आने के उद्देश्य को सत्यनिष्ठा से निभाओ। जानो तभी गृहस्थाश्रम, समाज और परमार्थ को बिगाड़ने वाले दुर्भावों जैसे द्वैत, तृष्णा, वैर-विरोध, तेरी-मेरी, कामना, वासना, कूड़-कपट, ईर्ष्या, झूठ, चोरी, निंदा, स्वार्थपरता, कुकर्म-अधर्म आदि से अपने मन को रक्षित रख पाओगे व मनमत से बचे रहोगे। इस विषय में सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कहता है कि 'सच चानणा है और झूठ अंधेरा है'। इसलिए झूठ का पहरेवा जो औखा करदा है, वह उतार कर सच का

पहरेवा पहन, सौखे हो जाओ। यह शरीर रूपी मकान को सचखंड बनाने की बात है। मत भूलो कि वेदों के अनुसार झूठ बोलने वाले सजनों का परलोक बिगड़ जाता है व सुकर्म और धर्म पर चलने वाले सजनों का ईश्वर साथी होता है। इस कथन के अनुसार सदा ईश्वर के संग बने रहने में ही अपना व सर्व का हित मानो।

यहाँ हम सबको सावधान करते हुए यह कहना चाहेंगे कि गुढ़ाई के दौरान, मनमत के अधीन हो, किसी के भी लालच या प्रलोभन दिखाने पर ईश्वर से विमुख हो, मनुष्यता विपरीत चलन मत अपनाना। ऐसे में याद रखना कि लालच वह बुरी बला है जिसमें उलझ जीव सच्चाई-धर्म का निष्काम रास्ता छोड़, कामयुक्त रास्ते पर चलता हुआ, अंत तबाही को प्राप्त होता है। अतः सुख-शांतिमय बने रहने हेतु ख्याल को मनमत के संग जोड़ने की भूल मत करना अपितु सदा गुरुमत के संग बने रहते हुए मन को अपने वश में रखना। यह तभी हो पाएगा अगर हम दिल से 'शब्द है गुरु, शरीर नहीं है' के सत्य को स्वीकारेंगे व उसी के हुक्म की पालना में संतुष्ट बने रहेंगे।

निःसंदेह तभी अच्छा सोच सकोगे, अच्छा देख सकोगे, अच्छा धारण करोगे और अच्छा ही बोलोगे व करोगे। इस विषय में यह अवश्य याद रखना कि 'जैसी करनी वैसी भरनी, आज नहीं तो निश्चित कल'। यदि यह याद रहा कि जैसे कर्म करेंगे वैसा ही फल पाएंगे तो, निश्चित ही सबके साथ अच्छा करोगे यानि किसी का बुरा नहीं कर पाओगे। यह सब जानते समझते हुए सजनों हमारे लिए बनता है कि

गुढ़ाई के दौरान हम ईश्वर की इन आज्ञाओं को मानें और गिर-गिर कर खड़ा होने व वचनों के विरुद्ध चलने के स्थान पर उत्तम पुरुष बनने का संकल्प लें। यह कष्ट-क्लेश आने पर भी, अपने आप में सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर स्थिर बने रहने हेतु सब कुछ वारने का पराक्रम दिखाने योग्य बने रहने की बात है। इसे सजनों सम पर खड़ा होने के लिए आवश्यक मानो।

इसके अतिरिक्त सजनों मन से सांसारिक सम्बन्धों, विषयों व वस्तुओं के प्रति मोह भावना त्याग दो क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है कि 'कुटुम्ब कबीला बन्धु प्यारे, हैन भैणों मतलब दे सारे', इसलिए इनमें प्रीत लगाना अनुचित परिणाम देने वाला है। कहीं हम आपसी सम्बन्ध निभाते हुए मोह बन्धन में फँस न जाएं इसीलिए सजनों यह ग्रन्थ यह भी कह रहा है कि जगत में सब स्वार्थी, मतलब के यार हैं जो प्रयोजन सिद्ध होने के पश्चात् किसी से कोई सम्बन्ध नहीं रखते। याद रखो इन्हीं स्वार्थियों के कुसंग व वैर भाव का प्रभाव हमारे सत् स्वभावों की तबदीली का कारण बनता है और हमारे हृदय आकाश का वातावरण कलुषित हो जाता है।

इस कलुषता से बचने के लिए सजनों हमें याद रखना है कि कलुकाल हटने लगा है और सतवस्तु आने वाली है। अतैव मन को कलुषित करने वाले पाँचों विकारों से दोस्ती छोड़ कर, प्रभु संग प्यार बनाए रखो क्योंकि उन्हीं के शब्द विचारों की संगति हमें कुमति में उलझने से बचा, सुमतिवान बना सकती है और हम कलुकाल के भाव-स्वभावों की पोशाक तबदील कर, सतयुगी भाव-स्वभावों की पोशाक पहन सकते हैं। इस हेतु सजनों गुढ़ाई के दौरान हमारे लिए अति

सावधानी से अपने भाव-स्वभावों पर पहरा देना बनता है। यही नहीं इसके लिए हमें त्याग भावना सहित हर संभव यत्न करते हुए, कलुकाल की वृत्ति छोड़ कर, सतवस्तु की वृत्ति धारण करते हुए, अविलम्ब परस्पर सच-सच बातचीत व व्यवहार करना आरम्भ कर देना है।

इस सन्दर्भ में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित इन शब्दों को याद रखना है कि 'जिसने मन्दे संग नाल संग किया, ओ इन्सान दा वी हैवान हुआ, फिर अकल डिगी मनुराज अन्दर, ओ मौत दे मुँह बलिदान हुआ।' सजनों इस कथन के अनुसार, हम व हमारे पख-परिवार में से कोई भी छल-कपट, झूठ-चतुराईयाँ आदि का चलन अपनाकर मौत का परवाना न बने यानि जन्म-मरण के चक्रव्यूह में न फँसे उसके लिए हमें अपनी अकल पर खबरदार रहना होगा ताकि किसी भी प्रलोभन या प्रभाव में आकर, बुरा संग कर हम अपनी अकल गँवा उसे बरबाद न कर बैठें। इस सन्दर्भ में अगर अपनी अकल टिकाणे रख, अकलवान बनना चाहते हो तो जानो अकल, हृदय विदित वेदों में अस्थित है। इसका अर्थ है कि हमारे हृदय में जिन सद्भावों का निवास है, हम उनको जानें व हर परिस्थिति में उन्हीं पर निश्चल बने रह, ईश्वर को प्रसन्न कर दें। इस तरह एक अकलवान इन्सान की तरह समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार सजन भाव यानि आत्मीयता पूर्ण जीवन जी कर जगत को दंग कर दें। यह मिथ्या ज्ञान धारणा से बचे रह, अकल को जगत से आज्ञाद रखते हुए, निर्वैर, निर्भय, निर्विकार, निरासक्त, निष्कलंक जीवन जीने की यानि श्रेष्ठ पुरुषों की श्रेणी में आ सतवस्तु में आने की बात है।

इस संदर्भ में सजनों याद रखो कि 'सतवस्तु में विचार ते सतजबान होसी, एक दृष्टि, एकता महान होसी, न जप, न तप, न भजन, न बन्दगी, एक अवस्था ओ जगत जहान होसी'। अतः सजनों संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म के चारों सवाल धारण करके हल करो ताकि दिव्य दृष्टि का सबक लेने के योग्य बन सको। आपकी जानकारी के लिए वह सबक है 'अपनी असलियत की पहचान, जेहड़ा मन मन्दिर प्रकाश ओही असलियत ज्योति स्वरूप मेरा अपना आप, एक निगाह ओ एक दृष्टि, ओ एक दृष्टि ओ एक दर्शन, जनचर-बनचर ओ जड़ चेतन, ओ एक दर्शन ओ एक दर्शन'। सजनों गुढ़ाई के दौरान इस युक्ति पर खड़े हो, सतवस्तु पहचान लो और खुद सच का वर्त-वर्ताव करते हुए, उसी सद्-आचरण को ही अपने घर-परिवार की रसम-रिवाज़ बना लो। तात्पर्य यह है कि 'सच-सच जिह्वा कर सचखण्ड भर लौ, सच-सच सजनों सच नूं फड़ लौ'। इस तरह 'सच वर्तो, सच वर्त-वर्ताओ, सच उपदेश, सच दी पौड़ी चढ़ाओ' अर्थात् सच बोलचाल, सच खान-पीन और सच का आदान-प्रदान करते हुए किसी से मत डरो और दिन-रात बेफ़िकरे रहो।

सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है कि चंचलता का प्रतीक, बाल अवस्था वाला नाच-टाप का मनगढ़ंत भक्ति भाव छोड़ कर, युवावस्था का भक्ति भाव यानि समभाव-समदृष्टि की युक्ति को धारण करो व सजन भाव अपनाओ। इसी ताकतवर भक्ति भाव की साधना करते हुए ध्यान से निष्काम रास्ते पर बने रहो। इस हेतु अन्दरूनी वृत्ति में मन को प्रभु में लीन रखो और अपना जन्म सफल बनाने हेतु बैहरूनी वृत्ति में शरीरों व तस्वीरों का ध्यान लगाना छोड़ दो अन्यथा तलियाँ मल-मल जगत से खाली हाथ जाना पड़ेगा।

जानो कि युवावस्था की भक्ति के नीति-नियमों अनुसार बैहरूनी वृत्ति अब शोभा नहीं देती। अतः नादान बालकों जैसा आचरण मत करो क्योंकि अब आप नौजवान युवावस्था को प्राप्त हो चुके हो। अपनी अवस्था के अनुरूप अब आपके लिए बनता है कि दिल से आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने में लग जाओ और चंचलता छोड़ विश्राम को पाओ। इससे इस जगत में हर कार्य समझदारी से व समयानुसार सिद्ध करने हेतु आपको बल की प्राप्ति होगी और साथ-साथ आपकी शक्ति भी ताकतवर हो जाएगी।

इस सन्दर्भ में यह महत्त्वपूर्ण बात याद रखो कि कुसंग हमारा कोई भी नहीं, कुसंग हमारा संकल्प ही है। संकल्प कुसंगी से बचने के लिए मूलमंत्र आद् अक्षर का अजपा जाप करते हुए, ख्याल ध्यान वल, ध्यान प्रकाश वल स्थिर रखो। इस तरह इस दुनियां में जो भी नेक कमाई करो, वह जिस ईश्वर ने आपकी बनत बनाई है उसी के निमित्त ही करो व सुपुत्र कहलाओ।

मत भूलो कि संकल्प झुखता है तो ही इन्सान रोता है। यह उसकी बुद्धि के भ्रमित होने का सूचक होता है। अतः विवेकशील व सदा प्रसन्नचित्त रहने हेतु संकल्प स्वच्छ रखो। संकल्प स्वच्छ तो दृष्टि कंचन और जिह्वा स्वतन्त्र अपने आप हो जाएगी। अतैव गुढ़ाई के दौरान संकल्प को समझाओ और अपनी अक्ल टिकाणे रख अक्लमंद नाम कहाओ। इस परिप्रेक्ष्य में मन को संकल्प रहित अवस्था में साधे रखने के लिए यह मानो कि अब हमारे लिए रोना-झुखना वर्जित है। रोना-झुखना बंद करने के लिए, विचार,

सत्य ज़बान, एक दृष्टि, एकता और एक अवस्था पर स्थिर बने रहो। इस प्रकार उच्च बुद्धि, उच्च ख्याल हो युवावस्था की भक्ति और युक्ति अपनाकर भक्ति प्रबल व शक्ति ताकतवर कर लो। इससे आध्यात्मिक, आधिभौतिक व आधिदैविक यानि तीनों तापों का रोग मिट जाएगा और मन को शांति प्राप्त होगी। इस तरह जीवन उपयोगी विचारधारा के प्रवाह से हृदय का वातावरण सदा निर्मल व पवित्र बना रहेगा।

सजनों यथार्थता अनुरूप जीवन जीने के लिए इसे आवश्यक मानो क्योंकि ऐसे पावन वातावरण में ही हम विचार शब्द यानि समभाव-समदृष्टि के सबक अनुसार, सजन भाव का वर्त-वर्ताव करते हुए संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म पर स्थिर बने रह पाएंगे व हमारा मन-चित्त शान्त रहेगा। जानो कि चित्त की शान्ति ही जीव की विश्राम यानि मोक्ष अवस्था का आधार होती है। इसके विपरीत जो अविचारी इन्सान तीनों तापों से संतप्त होता है, वह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी पंच विकारों का शिकार हो, अपने चित्त को अशांत, अस्थिर कर बैठता है व असंतोष को प्राप्त होता है। इस अवस्था में उसके लिए युवावस्था के भक्ति भाव पर बने रहना नामुमकिन हो जाता है और इसी कमज़ोरी के कारण वह सांसारिक फुरनों में उलझ, व्रत-नेम, कर्मकांड युक्त भक्ति भावों में उलझ कर, परमार्थ की जगह स्वार्थपरता अपना बैठता है। सजनों कठिनाइयों से भरे इस अवलड़े रास्ते को अपनाते की भूल कभी मत करना। इस हेतु कदम-कदम पर विचार के साथ आत्मनिरीक्षण करते रहना।

उपरोक्त विवेचना से सजनों यह स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण स्वस्थता तथा सुख-शांतिमय जीवन व्यतीत करने हेतु,

सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें मन-वचन-कर्म द्वारा सम, सन्तोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म अपनाने के लिए निर्देश दे रहा है। इसलिए हमारे लिए बनता है कि सन्तोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म ये चार सवाल जो कि पढ़ाई के दौरान हल करने होते हैं व सम पर खड़ा होना होता है, उसी विधान अनुसार समभाव नज़रों में कर, सजन वृत्ति पकड़ने की क्रिया इतनी सावधानी से करें कि कहीं ऐसा न हो कि संतोष पर काबू पाएं तो धैर्य छूट जाए और धैर्य पर काबू पाएं तो सच्चाई धर्म छूट जाए। परिणामस्वरूप हमारे लिए सजन-भाव अनुरूप परस्पर व्यवहार करना कठिन हो जाए।

इस कठिनाई से बचे रहने हेतु सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के निर्देश अनुसार सम, संतोष, धैर्य का सिंगार पा, सच्चाई-धर्म पकड़ो विशाल और इस तरह एकता पकड़ एकता दिखाओ तथा उसी एकता के प्रभाव से सदा एक अवस्था को प्राप्त रहो। मानो कि यह अपने मन को समझाने व उखड़े दिल मिला, अफुरता से निर्दोष जीवन जीने की बात है। बस फिर तो हम अपने आप ही, जनचर-बनचर, जगत जहान के प्रति समभाव अपनाकर, हर प्रकार के भेदभाव यानि राग-द्वेष, जात-पात, अमीरी-ग़रीबी आदि से रहित हो जाएंगे और समदृष्टि जैसे महान गुण को धारण कर, परस्पर सजन-भाव के अनुकूल व्यवहार करने में सक्षम हो जाएंगे। तभी तो दिव्यता की खिड़की खुलेगी और उस युक्ति पर अमल करते हुए हम, दिल से दिल मिला यानि इको दिल बना, अखंड एकता के सूत्र में बँधे रह सकेंगे। यह सम मानने व सम जानते हुए, सम की पहचान करने, यानि समदृष्टि होने की बात है।

अतैव सजनों जान लो कि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें समभाव-समदृष्टि को धारण करने का आवाहन दे रहा है ताकि हम सजन दृष्टि पकड़, अपने मन से आपसी शत्रुता व वैर-विरोध त्याग कर, समता का भाव अपनाएं व परस्पर एकता में बने रहें। अतः सजनों गुढ़ाई के दौरान सबमें अपने असलियत प्रकाश को देखो। इस प्रकार बातचीत करने से मुस्कुराहट आएगी, बदन प्रफुल्लित होगा, हृदय खिड़ेगा और मुख चमकेगा। इसके अतिरिक्त द्वैत भाव छूट जाएगा। दिल से द्वि-भाव के हटते ही न किसी से प्यार रहेगा और न ही किसी से वैर रहेगा। इसके स्थान पर सजनता के प्रतीक, सुशीलता, क्षमाशीलता, शालीनता, दया आदि गुण हृदय में जाग्रत हो जाएंगे। यह होगा सुरत और शब्द की अटूट मित्रता यानि अभेदता का सूचक। इस संदर्भ में हममें से किसी की भी बुद्धि, किसी भी कारण भ्रमित हो, अपना विवेक न खो बैठे, इस हेतु सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में ईश्वर हमें कहते हैं कि इस वक्त जो मनमत के अनुसार अपने ख्याल को पंज ज्ञान इन्द्रियों और पाँच कर्म इन्द्रियों के बीच फँसा कर बैठे हो, वह चलन अब छोड़ दो यानि गुरुमत पर चल अपने ख्याल को उनके पंजे से आज़ाद कर अपने असली घर में स्थिर कर दो।

इस संदर्भ में सावधान रहना कि समभाव-समदृष्टि के चलन के विपरीत जो कोई भी बात कहे या सुनावे, उस बात को अपने हृदय में जगह नहीं देनी। ऐसा इसलिए कह रहे हैं ताकि वह बात हृदय में किसी प्रकार की कल्पना उत्पन्न कर मन-वचन-कर्म को कुप्रभावित न कर दे और इस तरह आप आपस में बैठकर निंदा-चुगली करने पर मजबूर न हो जाओ।

फिर भी 'समभाव-समदृष्टि की युक्ति' के विपरीत स्वाभाविक रूप में ढलने से बचे रहने हेतु अगर मजबूरी में किसी की बात सुननी भी पड़े तो उसे एक कान से सुनना और दूसरे कान से बाहर निकाल देना यानि उसे हृदय में ठहरने नहीं देना। यह होगा पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ सजन-भाव, अपनी दृष्टि में कर, सजनता अनुरूप भाव-स्वभाव अपने आचार, विचार व व्यवहार द्वारा प्रकट करना और उनके वर्त-वर्ताव के दौरान अपने में व सर्व-सर्व में आत्मस्वरूप निहारना। फिर उसी असलियत स्वरूप का सबमें दर्शन करने के योग्य बन, अपना व सबका सजन हो जाना। ऐसा पराक्रम दिखाने पर ही सर्गुण-निर्गुण के खेलों को सम कर जानोगे व मन मन्दिर में जो सिरजनहार प्रकाश रहा है, उसके संग बने रह पाओगे।

यहाँ स्मरण रखना कि सुरत यानि अन्दर का अपना ख्याल, उसी आद् शब्द के संग बने रह ही यह सत्य जान सकती है कि 'चमत्कार एक है, एक ही विशेष सजनों एक है, हर अन्दर प्रवेश ओ सजनों एक है, चमत्कार एक है, सजनों चमत्कार एक है।' अतः सब में उसी चमत्कार को देखते हुए हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सब को एक जैसा इन्सान समझो। इस प्रकार सजन-भाव पर स्थिर बने रह, सम्पूर्ण मानव जाति को 'हम एक हैं, हम एक हैं' यानि अखंडता में बने रहने का संदेश देते हुए, एकता के सूत्र में बाँधने का अदम्य पुरुषार्थ दिखाओ व इस तरह परोपकारी नाम कहाओ। याद रखो तभी सब सतवस्तु से नाता जोड़, मोक्ष के अधिकारी बन सकोगे। इस संदर्भ में ध्यान दो, इस सृष्टि के सिरजनहार हर जीव को अपनी जीवन यात्रा निष्कलंक

संपन्न कर, अपने असली घर परमधाम में आने हेतु 'आओ जी-जी आयां नूं' का आवाहन दे रहे हैं। अतः यह जानकर प्रसन्नता में आओ और अपनी जीवन यात्रा सुख-शांति से सम्पन्न कर अपने घर परमधाम पहुँचो। जान लो तभी रूप-रंग-रेखा रहित हो विश्राम को पाओगे। सजनों यह ही इस समभाव-समदृष्टि के स्कूल में सजन-भाव की पढ़ाई व गुढ़ाई करने का महान मकसद है।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों जान लो कि आत्मिक ज्ञान प्रदान कर, मनुष्यता के प्रतीक सात शब्दों यथा संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म, सम, निष्काम व परोपकार का अर्थ जीवन में सही ढंग से उतार, इस मानव चोले की श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए ईश्वर आप ही हम सजनों को समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार सजन-भाव की पढ़ाई करा, अब उस पर गुढ़ने के लिए फूँक भर रहे हैं ताकि हम अपने सच्चे पति की सार को पा सकें।

इस कार्य में सफलता प्राप्ति हेतु ही सजनों सजन श्री शहनशाह हनुमान जी हम सजनों को समझाते हैं कि इन दस इन्द्रियों अर्थात् पाँच ज्ञानेन्द्रियों व पाँच कर्मेन्द्रियों के दरमियान में जिसकी रौशनी है, जो हर जगह मौजूद है वह सच्चिदानन्द भगवान आप ही हो। अतः संसार में सब कामों में लीन होते हुए भी निष्कामी बने रहो क्योंकि जो ऐसा कर पाने का पराक्रम दर्शाता है वही हकीकत में ब्रह्म अवस्था में बना रहता है। इस संदर्भ में वह हमें हमारी आत्मा की अजरता-अमरता का बोध कराते हुए कहते हैं कि आप वह वस्तु हैं जिसे हथियार काट नहीं सकता, अग्नि जला नहीं

सकती, पवन उड़ा नहीं सकती, पानी बहा या गला नहीं सकता। आप अजर-अमर हैं। यह आत्मा तो इस तरह शरीर रूपी चोले को बदलती रहती है जैसे पुराना वस्त्र उतार कर नया पहन लिया जाता है। अतः शरीर को नाशवान मान अपने अजर अमर असलियत स्वरूप में बने रहो क्योंकि शरीर एक घड़े की तरह है लेकिन वह असलियत सूरज की तरह है। यह शरीर रूपी घड़ा तो टूट जाता है परन्तु वह सूरज सदा अटल है।

इस तरह इस सत्य के द्वारा वह हमें आत्मा रूपी सूर्य से, जो सूरजों का भी सूरज है व अटल सत्य है, वहीं से आत्मिक ज्ञान प्राप्त कर, तदनुकूल अपने मन, इन्द्रियों व शरीर का संचालन करने के लिए प्रेरित करते हैं। तभी तो वह हमें समझाते हैं कि इस संसार में न कोई गुरु है न कोई चेला है। आप ही गुरु हैं आप ही चेला हैं क्योंकि गुरु भी बन्धन है और चेला भी बन्धन है परन्तु वह हमें इन सब बंधनों से रहित कर, युवावस्था का स्वतन्त्र भक्ति-भाव अपनाकर, तदनुकूल आचार-विचार व व्यवहार दर्शाने का निर्देश देते हैं। इस स्वतन्त्र भक्ति-भाव पर स्थिरता से खड़ा करने के लिए ही वह हमें कर्म करने वाले सच्चे योगी बनने का निर्देश देते हुए कहते हैं कि निष्काम कर्म करो और अपने ज्ञान की अग्नि में अज्ञानता का नाश करो।

इस परिप्रेक्ष्य में वह हमें यह भी समझाते हैं कि जीवन हमेशा उसी का सुखी होता है जिसको प्रतिदिन सत्संग मिलता है, जिसके आचार-विचार उच्च होते हैं, जिसके मन के भाव गूढ़ होते हैं, जिसकी उस सच्चिदानन्द प्रभु के चरणों में प्रीत

होती है, जो मन, कर्म, वचन से सदा उसमें लीन रहता है तथा जो सदा सब कामों को सच्चाई और निष्काम भावना से करता है वरना मनुष्य का तन-मन सदा व्याकुल रहता है। इसीलिए वह हमें अंतर्निहित आत्मिक बल का बोध कराते हुए कहते हैं कि आप वह शक्ति हैं जिसके लिए खुशी और गमी एक समान हैं। अतः सब हालातों में अपने हृदय, दिमाग व शरीर को ठीक रखो और आत्मा को इन चीजों से निर्लेप अर्थात् अलग समझो क्योंकि आप का वही स्वरूप और आत्मा सदा अजर-अमर है।

संसार के सब कार्यव्यवहार करते हुए अपने सत्य स्वरूप पर अटलता से खड़े रहने के लिए ही वह हमें हर रोज़ एकान्त में बैठकर इन सब बातों पर ध्यान देने यानि अपना आत्मनिरीक्षण करने के लिए कहते हैं कि मुझे किसी से वैर और प्रीति न हो क्योंकि मैं अनन्त हूँ, ब्रह्म हूँ और अखण्ड हूँ, मेरा शरीर सबसे अलग रहे लेकिन मेरे प्राण सबमें मिले हुए हों, मैं सबको अपने में मिला लूँ और मेरा नाम सबमें समाया हुआ हो, मेरी हर बात को भूलने की आदत हो और मेरी भूल में भी प्रसन्नता हो, मेरे सामने सब चीजें पड़ी हों परन्तु मुझे उनसे कोई प्रीति न हो, मेरा असली मकसद बड़ा महान हो, मान और अपमान मेरे लिये एक समान हों, मेरे दिल में ऊँच-नीच का कोई भेद भाव न हो, प्रसन्नता और शोक मेरे लिये एक समान हों। वह कहते हैं कि इस तरह दिन-प्रतिदिन अपना आत्मनिरीक्षण करने से हमें नित्य प्रति प्रसन्नता मिलती रहेगी और हम यथार्थता के अनुसार इस जगत में आनंदमय जीवन व्यतीत कर पाएंगे।

संक्षेपतः सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार 'जेहड़ा मन-मन्दिर प्रकाश, ओही असलियत ब्रह्म स्वरूप है अपना आप' इस एक शब्द पर पाँच साल गुढ़ कर, दिव्य दृष्टि प्राप्त करने के लिए सजनों, ईश्वर हमें कह रहे हैं कि हम हर समय इन बातों को ध्यान में रखें कि मैं आप ही सत् चित्त आनन्द स्वरूप हूँ। मैं राम हूँ, कृष्ण हूँ, मेरा स्वरूप ही असली तत्व है, मैं ही ब्रह्म हूँ, मैं ही हर एक के हृदय में निवास करने वाला हूँ और सबकी आत्मा में परमात्मा के रूप में हूँ। मैं निर्भय हूँ, बेखौफ़ा हूँ, वैर-विरोध से रहित हूँ। त्रिलोकी की कुर्सी का स्वामी हूँ। मैंने अब उस आसान और किसी को न दिखाई देने वाले रास्ते को पा लिया है जिस पर से मैं बिना बेड़ियों, बिना किश्तियों और बिना जहाज़ के पार हो सकता हूँ। शांति शक्ति ही मेरा हथियार है। इसी गुप्त शक्ति के हथियार के ज़रिए मैं किसी से हार नहीं खा सकता। यह सब खेल मेरे ही रचाए हुए हैं। पवन, पानी, आकाश, पाताल, पृथ्वी आदि को मैंने ही बनाया है। सूरज-चाँद-सितारों को मैं ही चमका रहा हूँ। हर एक जानदार तथा बेजान वस्तु मेरी ही बनाई हुई है।

हर वस्तु में मैं ही रौशनी दिखा रहा हूँ। इसलिए मेरा नाम रौशन है। संसार में मेरी ही ज्योति चमक रही है। मैं आप ही याद करने वाला हूँ और आप ही याद दिलाने वाला हूँ। मैं ही भूमंडल में सुनता हूँ। मैं ही शंख, चक्र, गदा, पद्म धारण किए हुए हूँ। मेरे ही चरणों में लक्ष्मी का निवास है। मेरे ही सामने शक्ति है। मैं ही शेष की बिछाई पर विराजमान हूँ। मेरी जोत आदि से चमक रही है लेकिन मेरी जोत को कोई विरला ही ऐसा जीव पहचानेगा जो निर्वाण पदवी में जाएगा।

उस सार को प्राप्त करने से अन्दर से ही ओ३म् ओ३म् की आवाज़ें आती हैं और बिना सूरज के हर वस्तु में चमकने लगता है। परमेश्वर कह रहे हैं कि मेरा प्रकाश जल में भी है और पृथ्वी पर भी है। जानदार तथा बेजान चीज़ों में भी है। मैं सुखों का घर हूँ। सारा संसार मेरी ही आराधना करता है। मेरी लीला का कोई भी अंत नहीं पा सकता। मेरा निवास सबके मन-मन्दिर में है। मैं दया का भंडार हूँ। कृपा का समुद्र हूँ। मेरे खेल निराले हैं। मैं आदि से लेकर अनंत तक चमक रहा हूँ, रोशन रहा हूँ और रहूँगा। मेरा प्रकाश सातों द्वीपों में है। सारे संसार में मेरा स्थान है। मैं ही नौखंड और सारे ब्रह्मांड में जग रहा हूँ। सब शरीर रूपी मकानों में मेरा ही निवास है। मेरा नाम कर्ता भी है और अकर्ता भी है अर्थात् सब काम करने वाला भी हूँ और नहीं भी करता हूँ। चारों दिशाओं में मेरा ही निवास है। मैं युगों-युगों में जग रहा हूँ और जगता रहूँगा, हर बारीक से बारीक और मोटी से मोटी वस्तु में मेरा निवास है।

अतः सजनों पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिए मालिक के वचनों को जरूर ग्रहण करें क्योंकि ये सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के अनमोल वचन हैं। इन्हें जरूर धारण करें और वर्ताव में भी लावें। इस संदर्भ में सजनों याद रखें कि हम पढ़ तो गए हैं यानि समुद्र में हमारी छाल तो पड़ गई है परन्तु समुद्र में चमकते हुए उस असली हीरे के सार को प्राप्त करने के लिए हमने गुढ़ना है। जैसे स्त्री ब्याही जाती है तो विवाह के बाद उसे पति के स्वभाव, बोलचाल, उठने-बैठने तथा उसके घर की सार को परखना पड़ता है। यदि वह पति के सार को प्राप्त कर लेती है तो सुख पाती है। उसी प्रकार उस

पति परमात्मा से हमारा विवाह तो हो गया है, पर हमने उस हीरे के सार को परखना है। उस हीरे के सार को हम तभी परख सकेंगे यदि उनके वचनों का पालन करेंगे। ध्यान दो जैसे ग्यारहवें अध्याय तक अर्जुन पढ़ तो गया था, उसने आत्मपद की प्राप्ति तो कर ली थी परन्तु भगवान कृष्ण जी ने उसे अभी गुढ़ाया नहीं था इसलिए उसने हथियार फेंक दिए थे परन्तु फिर भगवान कृष्ण जी ने अटारहवें अध्याय तक उसे गुढ़ाया। जब अर्जुन गुढ़ गया तो रोग-हर्ष-शोक से रहित हो गया और उसका नाम सदा के लिए रोशन हो गया। उसी की तरह सजनों हमारे लिए भी बनता है कि गुढ़ाई के दौरान फ़र्स्ट का नतीजा सुना अपना नाम रोशन करें। अतः जाग्रति में आकर अपना जीवन चरित्र पवित्रता का प्रतीक बनाने हेतु, अफुरता से जुट जाओ। इस उत्तम कार्य को सिद्ध करने का तरीका, इस कीर्तन द्वारा ध्यान से समझो:-

साजन जी का जीवन चरित्र, कैसा है परम पवित्र
कैसा है परम पवित्र, साजन जी का जीवन चरित्र ॥

उठ अरे मेरे विश्वास, बदल डाल जीवन इतिहास
जाग अरे तू मेरे प्यार, अब जगने की बेला है ॥

अब जगने की बेला है,
साजन जी का जीवन चरित्र,
कैसा है परम पवित्र ॥

जो कुछ साजन जी ने लिखा है,
सतवस्तु के ग्रन्थ में समझ अरे अब तो वह वाणी,
फिरता क्यों हरबेला है ॥

फिरता क्यों हरबेला है, साजन जी का जीवन चरित्र,
कैसा है परम पवित्र।।

बैठा तूं हैरान क्यों, कर रहा जीवन वीरान क्यों,
पहचान ले अपनी ताकत को, ताकतवर बनने की बेला है।।
ताकतवर बनने की बेला है, साजन जी का जीवन चरित्र,
कैसा है परम पवित्र।।

इसी में तेरी शान है, इसी में तेरी आन है,
सत्य ज्ञान को धारण कर, बनना तूने महान है।।
बनना तूने महान है, साजन जी का जीवन चरित्र,
कैसा है परम पवित्र।।

अंत में सजनों याद रखो जिसे परमात्मा मिल जाते हैं उसे
और किसी वस्तु की प्राप्ति की आवश्यकता नहीं रहती।
इसलिए सबसे प्रार्थना है कि इसी परिपूर्णता को प्राप्त करने
के लिए हिम्मत दिखाओ और अक्लमंद नाम कहाओ। सभी
को सफलता की शुभकामनाएँ देते हुए ईश्वर से प्रार्थना है कि
सभी इस उद्देश्य प्राप्ति में विजयी हों, विजयी हों, विजयी हों।

जान लो सजनों गुढ़ाई के दौरान यही सफलता प्राप्त करने
की कुंजी है। इस कुंजी का इस्तेमाल करके मस्तक की ताकी
खोल लो और उस परमपिता परमेश्वर परमात्मा की झांकी
देख लो। इस तरह आत्मस्वरूप के दर्शन होते ही तमाम फुरने
व सन्ताप मिट जाएंगे। इस सन्दर्भ में सजनों हमारी सबसे
प्रार्थना है कि गृहकार्य के रूप में सबको दिए गए इस पर्व को
नियम से ध्यानपूर्वक पढ़ें-समझें व युक्तिसंगत अमल में ले
आएं। सजनों इसी में ही अपनी व अपने परिवार की भलाई
मानें।

अतैव सजनों गुढ़ाई की महिमा जानते हुए समझो कि अब सब बिगड़े कारज सँवरने जा रहे हैं और हम दुराचार छोड़ सदाचार के रास्ते पर स्थिरता से सशक्त कदम बढ़ाने जा रहे हैं। निश्चित ही गुढ़ाई के दौरान का यह समय आपके लिए आनन्दप्रद व अवर्णनीय होगा और आप प्राणवायु के द्वारा शरीर के अन्दर गुंजायमान अनहद शब्द, सुनने के योग्य बन सकोगे। इस परिप्रेक्ष्य में सजनों जान लो कि इस ज्ञान स्वरूप अनहद शब्द के गुंजायमान होने पर हृदय वेद विदित आत्मिक ज्ञान का साक्षात्कार हो जाएगा और मन स्वतः उस सत्य में लीन हो शांत हो जाएगा। फिर कोई जप-तप-संयम करने की आवश्यकता नहीं रहेगी क्योंकि हृदय आकाश में निज ज्योति स्वरूप का प्रकाश फैल जाएगा। ऐसा होने पर अन्तर्दृष्टि द्वारा जीव, जगत व ब्रह्म का सत्य जान सकोगे और अज्ञान का बादल छंट जाएगा। फिर स्वयं ही आत्मज्ञान प्राप्त कर आत्मज्ञानी व ब्रह्मज्ञानी बन सकोगे। इस तरह फिर आनन्दविभोर हो कह उठोगे:-

**इको रूप तुम्हारा महाराज जी, इको रूप तुम्हारा।
प्रकाश रिहा जग सारा महाराज जी इको रूप तुम्हारा।।**

अर्थात् ईश्वर के विराट रूप दर्शन यानि इस सृष्टि रचना की समझ आ जाएगी। फिर जिधर भी देखोगे, जिसको भी देखोगे, सर्वव्यापक ब्रह्म सत्ता यानि एकात्मा का बोध होगा। इस तरह आत्मीयता का भाव मज़बूत हो जाएगा और ब्रह्म भाव आपकी भावना में उत्तरेगा व स्वभाव के अंतर्गत हो जाएगा। तब फिर सर्व-सर्व, ब्रह्म ही ब्रह्म निगाह आएगा। ऐसा होने पर आत्मिक ज्ञान की पढ़ाई की गुढ़ाई सिमट कर

समाप्त हो जाएगी और 'ज्योति स्वरूप है अपना आप, हम तो हैं ओही प्रकाश' के सत्य से परिचित हो अमर आत्मा की रमज़ जान जाओगे। सब इसी प्रकार अपनी हार को जीत में परिवर्तित कर इस गुढ़ाई को खुशी से सम्पन्न करें इस हेतु हमारी शुभकामनाएँ आप सबके साथ हैं।



दिनांक 24 अप्रैल 2016 का सबक्र

अब सब सावधान हो जाओ क्योंकि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार अब समभाव-समदृष्टि के इस स्कूल में सजन-भाव की पढ़ाई नहीं अपितु गुढ़ाई होने जा रही है। सबकी जानकारी के लिए पढ़ाई के दौरान प्रत्येक सजन को इस जगत के रंगमंच पर उसकी चारित्रिक भूमिका क्या है व उसे कुशलता से कैसे निभाना है, यह सत्य बता दिया गया है। अब गुढ़ाई के दौरान उस भूमिका को उस पात्र विशेष ने बताए कथानक (सिक्रप्ट) के अनुसार सही ढंग से निभाना है व इस प्रकार अपनी पात्रता को सिद्ध करना है। याद रखना कि अपनी व्यक्तिगत मेहनत, लगन व आत्मविश्वास द्वारा ही आप अपनी भूमिका को अदाकारी से निभाते हुए सफलता प्राप्त कर सकते हो। निःसंदेह यदि आप ऐसा करने में सक्षम हो जाते हैं तो सफलता आपके कदम चूमेगी व आप तालियों के यानि प्रशंसा के पात्र बन, यश-कीर्ति को प्राप्त करोगे। इस तरह सकुशल अपने घर पहुँच जाओगे। यदि इसके विपरीत आप इस प्रयत्न में असफल रहे तो जीवन पर जीवन जब तक अपनी इस भूमिका को अदाकारी से निभाने में सफल नहीं हो पाओगे तब तक इस जगत में बार-बार आते-जाते रहोगे। इस बात को गहराई से समझना। आओ अब इसी जीवन में मोक्ष प्राप्ति हेतु आगे बढ़ते हैं।

सर्वप्रथम सब मिलकर यह बोलो -

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान।

अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी को जानो मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

इस विचार को समझते हुए धारण करो।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अतः उससे नाता जोड़ो अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहो :-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा,

याद रखो जो भी बताई युक्ति अनुसार इस अटल सत्य पर सुदृढ़ बना रह, इसे अमल में ले आएगा वह दिव्य दृष्टि का सबक प्राप्त कर लेगा।

सजनों श्री साजन जी कह रहे हैं कि समभाव-समदृष्टि की पढ़ाई की गुढ़ाई का शुभारंभ करने से पहले सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित पवित्र वाणी को सुनने व पढ़ने के साथ-साथ समझदारी से पहचानो। इस प्रकार उसके गुणों से अच्छी तरह परिचित होकर, प्रचलित मिथ्या ज्ञान के दोषों के खुद पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव को समझो और उससे प्राप्त होने वाली हानियों को जानो व संभलो। इस प्रकार सजनों इस क्रिया द्वारा कलुकालवासियों के साथ मिथ्या सम्बन्ध निभाते हुए सत्य पर अटलता से बने रहो। इसके लिए शब्द विचार पकड़ो। याद रखो जो इस पवित्र ग्रन्थ में वाणी के रूप में वर्णित शब्द विचार को पकड़ता है वह अपना आप पहचान सकता है और उस परमेश्वर के रंग में रंगकर खुशियाँ मान सकता है। इस तरह इस चाल को पकड़ कर वह जीवन के किसी क्षेत्र में कभी भी हार नहीं खाता। गुढ़ाई

में सफलता प्राप्ति करने हेतु सजनों ऐसा सुनिश्चित करना आवश्यक मानो। जानो कि इससे लेश मात्र भी विपरीत चलन अपने आप में कामुक व विषय विकारों में आसक्ति पनपने का कारण है, अंतर्निहित मानवता का घातक है व मार-काट का रास्ता यानि मानव का विनाशक है। इसीलिए हमारा सुझाव है कि सतवस्तु के वचनों से प्रेम बढ़ाओ और शब्द विचार अपनाओ।

इस संदर्भ में सजनों शब्द विचार अनुसार मूलमन्त्र शब्द को ही गुरु मानो व इसे ही अपनी ब्रह्म सत्ता मान, ग्रहण करो। यह अपने आप में '**विचार ईश्वर है अपना आप**' के भाव पर खड़े होने की महान युक्ति है जिसे अपनाने पर हम '**अमर-आत्मा**' व सर्व-सर्व वही '**ब्रह्म ही ब्रह्म**' पर खड़े हो सकते हैं। सजनों यही एकमात्र तरीका है हर वस्तु में ब्रह्म की विशेषता, निर्लिप्तता और रूप, रंग, रेखा से बाहर होने का सत्य बोध करने का। मत भूलो कि '**ब्रह्म विशेष भी है निर्लेप भी है और रूप, रंग, रेखा से बाहर है**' इस कुदरती नियम के अनुसार जीव के लिए शरीर सहित हर वस्तु को निष्काम भाव से सर्वहित के लिए प्रयोग में लाने का विधान है। अतः किसी वस्तु के प्रति कामनायुक्त होकर उपभोग प्रवृत्ति अपनाना, मानवता से गिरने व नैतिक पतनता को प्राप्त होने की बात है, अतः यह चलन वर्जित है। याद रखो सृष्टि के खेल के, इस सत्य का बोध करने वाला इंसान, इन शब्द विचारों में जुड़ समभाव नज़रों में कर व समदृष्टि हो, सजन-भाव और गृहस्थ धर्म के वचनों पर परिपक्व रहते हुए, एक तो घर सतयुग बना सकता है और दूसरा परमपद को प्राप्त कर अपना जीवन सफल बना सकता है।

आओ अब सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार समभाव-समदृष्टि की गुढ़ाई आरम्भ करने से पहले इसके प्रति आवश्यक यत्न करने के मकसद को परिणाम सहित जानते हैं:-

सजनों इस गुढ़ाई का मकसद है जिह्वा स्वतन्त्र व संकल्प स्वच्छ कर, एक निगाह एक दृष्टि दिखाना व आत्मनिरीक्षण द्वारा अपने आप को पकड़ते हुए खालस सोना हो जाना तथा अपने प्रकाश को पाना। फिर कदम-कदम पर विचार संग प्यार करते हुए, एकाग्रता से ख्याल को ध्यान वल व ध्यान को प्रकाश वल रखते हुए, आप दिव्य दृष्टि दिखाना व दूसरों को भी ऐसा करने हेतु प्रवृत्त करना। इस प्रकार ऐसा पराक्रम दिखा, परोपकारी नाम कहलाना और मिथ्या जगत पर विजय प्राप्त करना।

इस यत्न में आगे बढ़ने व सफलता प्राप्त करने हेतु, हमें सबसे पहले अपनी अन्दरूनी व बैहरूनी दोनों वृत्तियों में आत्मविश्वास के साथ, आत्मनियन्त्रण द्वारा युक्तिसंगत निर्मल माहौल बनाना होगा ताकि मन में फैला हुआ हर प्रकार का कूड़ा-करकट साफ़ हो जाए और किसी विध् भी उसकी प्रभु में लीनता में कोई अवरोध पैदा न हो सके यानि प्रभु के साथ हमारी निरन्तर तार जुड़ जाए। यह जीव के लिए यथार्थ स्वरूप का बोध रखते हुए यथार्थता से जीवन जीने की बात है। इसके अतिरिक्त यह निर्मल वृत्ति, निर्मल स्मृति, निर्मल बुद्धि व स्वभावों का निर्मल ताना-बाना पहन इन्सान के उच्च बुद्धि व उच्च ख्याल होने की बात है।

इसी तरह कर्म सहित हमारा आचरण-व्यवहार आदि प्रभु की देख-रेख में संचालित होते हुए ठीक दिशा में आगे बढ़

सकता है। याद रखो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही हम जिन परिस्थितियों में उलझे हुए हैं उन परिस्थितियों से उबरने में प्रवृत्त हो सकते हैं। यही नहीं इसी से हमारा अंग-प्रत्यंग गतिशील रह सकता है और हम उसको अपने जीवन उद्धार हेतु व सर्वहित हेतु विवेकशीलता से सही मायने में उपयोग में लाने के योग्य बन सकते हैं। याद रखो सजनों इसके लिए हमें स्वार्थपरता से भरपूर कामनायुक्त मत पर चलना छोड़ना होगा और अपने धर्म पर बने रहने के लिए यह सर्वश्रेष्ठ निष्पक्ष मत बिना तर्क व शर्त के अपनाना होगा। तभी हम सभी के साथ मनुष्यत्व अनुरूप ठीक व्यवहार कर पाएँगे और कलुकाल के स्वभावों व तंत्र-मंत्र आदि के प्रयोग से अपने मन व इन्द्रियों को गतिशील करके दूसरों को हानि पहुँचाना बंद कर सकेंगे। इस तरह फिर कभी भी किसी के अधिकार व प्रभाव में आकर सांसारिक विषय-विकारों को नहीं अपनाएँगे। यह चलायमान मन को शान्त रखते हुए, उसे विधि के विधान अनुसार क्रियाशील रखने की बात है। याद रखो सजनों यदि चंचल मन स्थिर हो गया तो पथिक की तरह आप का चलित यानि इधर-उधर भटकने वाला ख्याल अपने सच्चे घर में ठहर जाएगा। यह जितेन्द्रिय हो चिंता व व्यथा मुक्त आनन्दमय जीवन जीने की बात है। इसी से जीव को विश्राम प्राप्त रहता है।

अतः सजनों इसके प्रति यत्न करना उचित मानो और सजन शब्द चलाना आरम्भ कर दो। इस हेतु परस्पर व्यवहार के समय सजन ही सदा, सजन ही सदाओ व सजन ही पहरेवा पाओ। ऐसा सुनिश्चित करना मनुष्यत्व धारण करने की बात

मानो। इसलिए यही व्यवहार खुद अपनाना व औरों को अपनाने में प्रवृत्त करना मंगलमय मानो। इस संदर्भ में सजनों ईश्वर द्वारा निर्दिष्ट इस विशिष्ट भाव-स्वभाव का निर्मल ताना-बाना धारण करने व निर्विघ्नता से परस्पर एकता के स्वभाव में बने रहने के लिए, इस मृत्तलोक में इस स्वाभाविक पहरेवे की आवश्यकता व इस सुन्दर पोशाक को पहनने के ढंग को समझो ताकि भूलकर भी कुछ भी इसके प्रतिकूल अपनाकर परमार्थी की जगह संसारी न बन जाओ। इस प्रकार सजन शब्द को अन्दरूनी व बैहरूनी वृत्ति में वर्त-वर्ताव में लाते हुए अफुरता से आद् अक्षर मूलमंत्र के अजपा जाप द्वारा अपने प्रकाश को पाओ। सजनों किसी कारण भी इस चलन को वर्त-वर्ताव में लाने से रूको नहीं यानि इस प्रणव शब्द पर अटल बने रहो अन्यथा पिछड़ जाओगे। इसके विपरीत जो भी इस क्रिया को यथोचित ढंग से करेगा उसके लिए यह सारा ब्रह्मांड सजन हो जाएगा और मौत का भय नहीं रहेगा क्योंकि सजन शब्द बुलाने से बाकी कोई संकल्प नहीं रहेगा। एक निगाह एक दृष्टि हो कर हमारी दिव्य दृष्टि हो जाएगी और हम एक आत्मा होकर परमात्मा से मेल खाकर ज्योति स्वरूप जो अपना आप है उसकी पहचान कर सकेंगे। इस संदर्भ में सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है 'सजन है कुल चानणा, सजन है कुल दीपक।'

अंततः सजनों जान लो कि यह परिश्रम अपने आप में वह कोशिश/युक्ति है जिसके द्वारा हम अच्छे संस्कारों में ढल, सुसंस्कृत हो, नैतिक मजबूती ले, सत्यनिष्ठा व धर्मपरायणता से जीवन जीने के योग्य बन सकते हैं और

अपनी बिगड़ी हुई तकदीर बदल सकते हैं इसलिए सावधानी से आगे बढ़ना व किसी भी कष्ट व कठिनाई से मत घबराना क्योंकि इस हितकर प्रयत्न द्वारा आपके सब रोगों का उपचार होने जा रहा है। अतः सचेष्ट होकर निरन्तर प्रयत्नशील रहना और समभाव-समदृष्टि के सबक पर अटलता से बने रहने हेतु अपने समस्त धर्म-कर्म निष्कामता व निष्पक्षता से सम्पन्न कर, युवावस्था को प्राप्त होना। तभी गुढ़ाई द्वारा अपने जीवन का हर कार्य सिद्ध करते हुए निरासक्त, निर्विकार, निर्भय, निर्वैर व निष्कलंक अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम पा सकोगे। अतः सजनों निरंतर यत्न को ही सफलता की कुंजी मानो और इस तरह धर्म, अर्थ आदि पुरुषार्थ सिद्ध करो। इस संदर्भ में आपके परिणाम उद्देश्य के अनुरूप हों, इस हेतु परमेश्वर का आशीर्वाद आपके साथ है।

तो आओ अब सब मिलकर दिल से गुढ़ाई क्रिया में तत्पर रहने हेतु वांछित वातावरण का निर्माण करें और इस हेतु आध्यात्मिक विद्या प्राप्त कर, उसे अमल में लाने के लिए न केवल अपने अन्दर अपितु अपने से जुड़े समस्त पारिवारिक सदस्यों, सगे-सम्बन्धियों व मित्रजनों के अन्दर भी दिलचस्पी पैदा करें। इस संदर्भ में जान लो कि आध्यात्मिक विद्या से वंचित इन्सान ही छल-कपट, द्वि-द्वेष आदि विकारों के जाल में फँस अपना अमोलक जीवन बरबाद कर डालता है। अतः इस आध्यात्मिक विद्या को प्राप्त करना अति आवश्यक मानो ताकि हमारे मन में अज्ञान सहित कोई भी दोषयुक्त ज़रम-जहरीले घर न कर सकें और हमें सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का संग सदा प्राप्त रहे और हमारे तीनों तापों का

टैम्प्रेचर सदा सम रहे। इससे मस्तक की ताकी खुली रहेगी और निर्मलता के प्रवाह से चरित्रवान बने रहोगे। याद रखो ऐसा होने पर ही हम आस-पास की उन सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि परिस्थितियों को जो हमारे जीवन, मन, बुद्धि आदि को प्रभावित करती हैं, उनके दोष-गुणों को समझते हुए अपने अंतःकरण को प्रदूषित होने से बचा, उसे शुद्ध रखते हुए अपने मन में शांति का वातावरण बना पाएंगे और संसार के चक्रव्यूह से बचे रह, जीवन का वास्तविक आनन्द उठा पाएंगे। तो आओ इस आत्मोद्धार के मार्ग पर आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ते हैं और आत्मविजय प्राप्त करते हैं। इस संदर्भ में सजनों यह मत भूलना कि यह विजय प्राप्ति आप से आज तक अपनाए हुए विषय-विकारों का बलिदान माँगती है।

क्या यह बलिदान देने के लिए सब तैयार हो ?

हाँ जी।

तो एकजुट होकर आत्मविश्वास के साथ सार्थक यत्न करने में जुट जाओ। याद रखो जो विजय प्राप्ति के लिए जीवन संग्राम में यह बलिदान देने के लिए तत्पर हो जाता है वह धीरता से अजर-अमर अवस्था को प्राप्त कर लेता है। अतः इस हेतु संतोष, धैर्य की पोशाक पहन और परोपकार प्रवृत्ति में ढल, निष्कामता से सच्चाई-धर्म के रास्ते पर बने रहने का पुरुषार्थ दिखाओ व गुढ़ाई में फ़र्स्ट का नतीजा प्राप्त करो। आओ उचित नतीजा प्राप्त करने के लिए निर्मल वातावरण का निर्माण करें:-

आओ री सखी मिल किकलियाँ पाइए
हसिये आप और सब नू हँसाईए
संतोष धैर्य दा श्रृंगार पहन कर
सच्चाई धर्म दी राह ते चलदे जाईए
निष्काम कर्म करदियाँ होयां
नेक कमाई पर उपकार कमाईए
ए विध परमधाम पहुँच कर
खुशियाँ मनाइए व विश्राम नूं पाईए।

सजनों अब जब सबने मिलकर इस आनन्दमय वातावरण का निर्माण किया है तो इसी में ही बने रहना और कदाचित् किसी भी कारण इसे दूषित मत करना। इस संदर्भ में हम सबसे प्रार्थना करते हैं कि:-

इन चेहरों को ऐसा ही खिला रहने दो।
ऐसे ही नहीं और खिल जाने दो,
खिल जाने दो, खिल जाने दो।
सजनों इस तरह सतवस्तु की कमाल
विचारधारा को धार विशुद्ध हो जाओ।



दिनांक 01 मई 2016 का सबक्र

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान।

अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

इस सत्य को मज़बूती से अपनी धारणा में उतारो। जब ईश्वर धारणा में उतर गया तो समझो कि वह हमारा हो गया। अतः अब अन्दर-बाहर से न कोई तर्क करो और न ही किसी में उलझो। चाहे कोई आपको कितना ही भ्रमित करने का यत्न क्यों न करे, कुछ भी क्यों न कहता रहे पर अपनी इस धारणा के प्रति भ्रमित मत होवो क्योंकि भ्रमित होने का अर्थ है आत्मस्वरूप में आने के लिए हमें उस ईश्वर रूपी साधन से जो सहायता मिलनी है, वह अब नहीं प्राप्त हो पाएगी। इस तरह सब उलट-पुलट हो जाएगा और नतीजा हार का प्राप्त होगा। इसके विपरीत यदि अफुरता से उस एक को धारण कर, उस शहनशाह के संग जुड़ गए तो सब प्राप्त हो जाएगा। अतः इस धारणा को और मज़बूत करो और फिर अपने उसी परम मित्र ईश्वर को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ। जब इतना हो जाए तो फिर जो शब्द उसके मुख से निकलें उन्हें ही अपना गुरु मानो यानि उस ईश्वर की वाणी को ही अपने जीवन का मार्गदर्शक बल मान आप उसका अनुसरण करो। इस तरह उन्नति पथ पर प्रशस्त हो आप सफलता के चरमोत्कर्ष को प्राप्त करो। इसीलिए तो सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:-

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहो:-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

आओ अब इस अटल सत्य को धारण करें व अन्दरूनी और बैहरूनी वृत्तियों से ब्रह्म व जगत के सार तत्व का अनुभव करें। अनुभव करने को इसलिए कह रहे हैं क्योंकि अनुभव से ही धारणा के प्रति श्रद्धा और विश्वास बढ़ता है और हमने जो भी जाना-समझा है जीवन में उसका कुशलता से प्रयोग कर पाते हैं।

ओ३म् अमर है मेरी आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

ओ३म् परब्रह्मवाचक शब्द है जो प्रणव मंत्र कहलाता है। यह शब्द बहुत पवित्र माना जाता है और वेद मंत्रों के पहले तथा पीछे बोला जाता है। ओ३म् के अ, उ और म् क्रमशः विष्णु, शिव और ब्रह्मा के वाचक माने गए हैं। इस आद् शब्द के अजपा जाप से इंसान उपाधि रहित अवस्था को प्राप्त होता है और त्रिगुण (सत्व, रज और तम नामक तीनों गुण) से रहित परमात्मा स्वरूप का बोध रखते हुए जगत में विरक्त भाव से विचरता है यानि निरासक्त भाव से उसका उपयोग करता है। ऐसा मानव सबके प्रति श्रद्धा रखते हुए भी किसी अन्य का अनुयायी नहीं बनता।

इस आद् मूलमंत्र शब्द का अजपा जाप करने वाला मानव गुणों से युक्त होकर भी निर्गुण ब्रह्म और सर्गुण ब्रह्म को एक मानता है और अन्दरूनी एवं बैहरूनी दोनों वृत्तियों द्वारा रूप, रंग, रेखा, रहित निराकार ब्रह्म और जगत रूपी साकार ब्रह्म को सम कर जानता है। तभी तो वह स्वतः

सहजता से, समभाव नज़रों में कर, समदृष्टि के उसूलों अनुसार, अपने असली स्वरूप में स्थित रह, सबके साथ निष्कामता व निष्पक्षता से, समरस विचरते हुए, एकता व एक अवस्था में मज़बूती से बना रह पाता है। अतः सजनों सजन-भाव में ढलने हेतु, गुढ़ाई के दौरान इस मूलमंत्र का विधिवत्, निरन्तर अजपा जाप करना आवश्यक मानो। इस तरह हृदय पवित्र कर, अमर आत्मा में व्याप्त परमात्मा के दर्शन पाओ तथा उसी दर्शन को अपने मन-वचन-कर्म द्वारा दर्शाओ।

याद रखो सजनों अमर आत्मा अपने आप में वह शाश्वत मूल तत्व है जिसका कभी क्षय या नाश नहीं होता इसलिए इसे अविनाशी भी कहते हैं। इस सत्य का बोध करने वाला इंसान खालस सोना होता है और अमरता के भाव से निर्भय व निर्वैर जीवन जीता है। तभी तो वह सबसे श्रेष्ठ इंसान, अहिंसा का पुजारी व मोक्ष का अधिकारी होता है। अन्य शब्दों में वह अपने आप में वह दिव्य पुरुष होता है जो अपनी अलौकिक शक्ति को पहचानता है। इसीलिए वह दिव्य दृष्टि मानव, दिव्य ज्ञान के प्रयोग द्वारा सुन्दरता व श्रेष्ठता से जीवन जीता है। इस प्रकार उस दिव्यरत्न की सब इच्छाएँ पूर्ण रहती हैं जो उसके मनःसंतोष का सुदृढ़ आधार होता है। तभी तो उस दिव्यांशु का हृदय सूरजों के सूरज के प्रकाश से नित्य प्रकाशित रहता है और वह दिव्य ज्ञान को प्राप्त करने का योग्य अधिकारी सिद्ध होता है। इस तरह दिव्य वाणी का प्रयोग कर, पवित्र आचरण करने वाला, वह श्रेष्ठ, धर्मशील मानव, भूत-भविष्य और वर्तमान में उलझने के स्थान पर सदा अपनी मानवीय मर्यादाओं में बना रह,

उसकी प्रतिष्ठा को कायम रखता है व उस अटल सत्य को अन्यो के हृदय में स्थापित करने का कार्य निष्काम भाव से करते हुए परोपकारी नाम कहलाता है। ऐसा करना वह इसलिए उचित समझता है ताकि सम्पूर्ण मानव जाति अच्छी नीयत व हैसियत वाली बन, पुनः अपने वास्तविक सम्मान को प्राप्त कर सके। गुढ़ाई के दौरान सजनों हमें भी इसी प्रकार दिव्य पुरुष बन, निष्काम भाव से परोपकार करने योग्य बनना है।

इस संदर्भ में सजनों जान लो कि ऐसा परोपकारी, सहनशील व क्षमाशील मानव न तो अपनी उपेक्षा या अपमान से क्रोधित होता है और न ही ईर्ष्या के कारण उत्तेजित होता है। इस प्रकार उस मानव के मन में, किसी भी कारण व किसी के प्रभाव से मल उत्पन्न नहीं होता और सत्य प्रकट होने से उसका अंतःकरण इतना निर्मल हो जाता है कि उसके लिए निष्कलंकता से जीवन जीना सहज हो जाता है। ऐसे आत्मविश्वासी व कर्मठ मानव को अपनी आत्मा में परमात्मा के विद्यमान होने का बोध बना रहता है। इसके पश्चात् तो उसका ध्यान साधना का मकसद केवल इसी एक अवस्था में बने रहने हेतु ही होता है। इसीलिए वह स्थिर बुद्धि चेतनायुक्त मानव, ब्रह्म भाव पर स्थिर बना रह, निज ज्ञान स्वरूप होने का बोध करते हुए, जीवन की किसी भी परिस्थिति में तनावग्रस्त हो अपनी सुध-बुध नहीं खोता यानि सदा सचेतन रह, आत्मिक ज्ञान के प्रयोग द्वारा अपने मन-चित्त को भरपूर व प्रसन्न रखता है व सदा संतोष-धैर्य में बना रहता है। इससे उसकी विचारशक्ति प्रबल हो जाती है। यह अवस्था उसके वृत्ति, स्मृति व बुद्धि के निर्मल होने व किसी

भी कारण भ्रमित बुद्धि हो जड़ता यानि अचेतनता को प्राप्त होने से बचे रहने व शुद्ध चेतन स्वरूप में बने रहने की बात होती है।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों याद रखो चेतना ही अपने आप में प्राणी को ज्ञाता/दृष्टा/कर्ता बनाने वाली शक्ति है जिसके द्वारा मनुष्य विवेकतापूर्ण अपने होश-हवास में रहते हुए सजीवता से जीवन जीने के योग्य बन सकता है। अतः हमें भी इस संजीवनी शक्ति को धारण कर, मूर्च्छा से जगना है और गुढ़ाई के दौरान, होश में आकर, सावधानी से विचारपूर्वक सुधरना व सम्भलना है ताकि हम अपनी चेतना शक्ति, जोकि ज्ञान का मूलाधार है और जिसका ज्ञान अंतर्निरीक्षण द्वारा संभव है, उस सत्ता के प्रयोग द्वारा धर्मबुद्धि यानि धर्म और अधर्म का विवेक/अच्छे-बुरे का विचार करने योग्य बन सकें। यह किसी भी चेतनानाशक तत्व जैसे भय, लोभ, बाहरी घटनाओं, मानवों की मानसिक अनुभूतियों और विचारों के कारण धर्म भ्रष्ट होने की स्थिति से बचने के लिए नितान्त आवश्यक है। याद रखो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही हम, सबसे श्रेष्ठ चैतन्य, परब्रह्म परमेश्वर, जो बद्ध जीवात्मा से भिन्न, कार्य-कारण से परे, नित्य, शुद्ध, ज्ञानस्वरूप और मुक्त स्वभाव वाला चैतन्य परमात्मा है, उस की तरह अपने सर्वव्यापक, सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान होने का बोध कर पाएंगे। इस तरह जगत में विचरते हुए सबमें विशेष व निर्लेप और रूप-रंग-रेखा से बाहर अमर आत्मतत्व परमात्मा का दर्शन कर सकेंगे और अपने जन्म की बाज़ी को जीत सकेंगे। तब ही हम इस अटल सत्य का एहसास करते हुए उस पर बने रह सकेंगे। आओ

अब इस हेतु अभ्यास करते हैं:-

1. सब सजन अपना शरीर सीधा रखो और अफुर हो जाओ। अब आँखें बंद कर लो और भाव सहित बोलो 'ओ३म् अमर है मेरी आत्मा, आत्मा में है परमात्मा'। यह बोलते समय चेहरा खिला हो और बीच में कोई फुरना न आए। इस हेतु बीच-बीच में आत्मनिरीक्षण करते रहो कि कहीं बीच में कोई और ख्याल तो नहीं आ रहा।

2. अब यही ख्याल से बोलो 'ओ३म् अमर है मेरी आत्मा, आत्मा में है परमात्मा'। ख्याल से यह बोलते हुए आपके चेहरे पर भाव होना चाहिए। भावयुक्त होंगे तो नींद नहीं आएगी यानि सचेतन बने रहोगे।

3. अब इसी अनुभव में बने रह अक्षर चलाना आरम्भ कर दो। इससे आपको 'अमर आत्मा में परमात्मा' कैसे विद्यमान है, उसका बोध हो जाएगा और 'विचार ईश्वर है अपना आप' इस सत्य की समझ आ जाएगी। सतर्क रहो कि 'अमर आत्मा और परमात्मा' के बीच कोई तीसरा यानि जगत का फुरना न घुस पाए।

4. अब फिर से अन्दरूनी वृत्ति में बगैर जिह्वा हिलाए यानि ख्याल से अति धैर्य व विनम्रतापूर्वक, धीरे-धीरे उच्चारण करो:- ओ३म् अमर है मेरी आत्मा, आत्मा में है परमात्मा।

5. अब इसकी गति बढ़ाते जाओ और बिना उत्तेजित हुए अपने निर्गुण ब्रह्म होने का अनुभव करते जाओ व उसका सार पाने हेतु निर्गुण के खेल को समझो। समझो कि वह आपके सबसे नज़दीक, सबसे आगे खड़ा है यानि निकट

हिवे सजनों, सजनों निवे कोई दूर। कुछ सोचो या घबराओ नहीं अपितु अपने लक्ष्य प्राप्ति हेतु यत्नशील बने रहो।

6. जिनको ऐसा करने से आनन्द प्राप्त हो रहा हो वह इस अभ्यास को करते जाओ और जो इस यत्न में कामयाब नहीं हो पा रहे वह आँखे खोल लें ताकि पहले बैहरूनी वृत्ति में आपको यह यत्न करवाया जाए।

7. ध्यान दो कि अगर यत्न करने पर भी अपने निर्गुण ब्रह्म होने का अनुभव न हो तो जो दूर प्रतीत हो रहा है, बैहरूनी वृत्ति में अत्यन्त शुद्ध भावना से जिह्वा से अति धैर्य व विनम्रतापूर्वक, धीरे-धीरे उच्चारण करो:- **ओ३म् अमर है मेरी आत्मा, आत्मा में है परमात्मा**। याद रखो जैसी आपकी भावना होगी, वैसा ही आपको प्रतीत होगा।

8. यह लगातार बोलते जाओ और तब तक बोलते जाओ जब तक कि आपकी आवाज़ उस तक न पहुँचे। घबराओ नहीं अपनी बुद्धि, योग्यता और शक्ति पर भरोसा रखो कि आप ऐसा अनुभव करने में सफल हो सकते हो। इस हेतु अपने अन्दर चाहना पैदा करो, उसके प्रति भाव पैदा करो। यत्न न छोड़ो।

9. अब यह बोलने की गति बढ़ाते जाओ और मधुरता व प्रेम से ऐसे बोलो कि आपको जो दूर प्रतीत हो रहा है उसके सबसे नज़दीक यानि अमर आत्मा में विद्यमान होने की प्रतीति हो जाए।

10. जानो कि आपका अफुर अवस्था से एकाग्रचित्तता में किया हुआ यह यत्न अंतर्निहित निर्गुण ब्रह्म को बाहर सर्गुण

रूप में प्रकट कर सकता है। यहाँ प्रसन्नता में आ अपना यत्न छोड़ने के स्थान पर निर्गुण व सर्गुण ब्रह्म की अभेदता का सत्य बोध करना। कहने का आशय यह है कि उसी में मस्त हो सुध-बुध नहीं खोना अपितु सचेतन बने रहना। ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि भक्ति अब बाल अवस्था से युवावस्था में आ गई है। युवावस्था में इन्सान चाहे दर्शन हो भी जाए तो भी उसमें गुम हो सुध-बुध नहीं खोता अपितु चेतन बना रह उस दर्शन की सार को पा लेता है। सजनों यह **ओ३म् अमर है मेरी आत्मा, आत्मा में है परमात्मा**, इस अटल सत्य पर स्थिर रहने के लिए आवश्यक है।

11. जैसे ही आपको यह अनुभव हो जाए वैसे ही अन्दरूनी व बैहरूनी दोनों वृत्तियों में एकरस हो शांत हो जाओ व विश्राम को पाओ।

फिर कह रहे हैं कि अपनी बुद्धि, योग्यता और शक्ति पर भरोसा रखो कि आप ऐसा अनुभव करने में सफल हो सकते हो। इस प्रकार दूसरे के सहारे नहीं अपितु अपने भरोसे सब काम करने वाले स्वावलंबी इंसान बनो। यह आत्मीयता में ढलने व बने रहने के लिए अति आवश्यक है।

अंततः सजनों हमारी प्रार्थना है कि जिस तरह विश्व का धर्ता परमात्मा है, उसी प्रकार आप भी अपने ऊपर किसी काम या बात का दायित्व लेने वाले ज़िम्मेदार इंसान बनो। इस तरह अपने धर्म के स्वरूप के जानकार बन, धर्म की दृष्टि से, शाश्वत मूल्यों में विश्वास रखते हुए व तदनुकूल परस्पर सजन-भाव का आचार-व्यवहार करते हुए, नेक इंसानों की तरह नेक नीयती से परोपकार यानि कर्त्तव्य-भावना से जीवन जीने में ही अपना व अपने बच्चों सहित सब का

उद्धार मानो। इस उद्देश्य में सभी को सफलता प्राप्त हो, सफलता प्राप्त हो, सफलता प्राप्त हो इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

कदम बढ़ाओ अपने घर की ओर
चलते-चलो, चलते-चलो अपने घर की ओर
हँसते हुए खुशी मनाओ, बढ़ते चलो अपने घर की ओर

चलो हसत अपने घर की ओर...
कब तक बैठे रहोगे इस छोर,
चलो हसत अपने घर की ओर...

अपना घर अपना घर होता है
जो चाहो वह सब मिलता है
बना रहता है मनः संतोष

फिर दुनियां में जो भी घटता है
उड़ते नहीं मानव के होश
और मन भी रहता है खामोश

यही तो होती है चेतन अवस्था
मन-चित्त रहते जिसमें निर्दोष
और जीवन में भरा रहता है जोश

ऐसे बनो हाँ ऐसे बनो
और कर लो सजनों आत्मिक बोध
आत्मिक बोध हाँ आत्मिक बोध



दिनांक 08 मई 2016 का सबक्र

अपने व अपने परिवारजनों के जीवन उद्धार के लिए
ईश्वर की बात सुनो

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान।

अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी
को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

क्या इस सत्य को मानते हो?

हाँ जी।

तो फिर क्यों एक दूसरे की बुराईयाँ करते हो? क्यों फिर जो
बात हम से करने की होती है, वह दूसरों से करते हो और
जो दूसरे से करने की होती है वो हमसे करते हो?

क्यों विपरीत चलन अपनाते हो?

क्यों जो हमारे पास है, वह दूसरों को बीच में लाकर यानि
उलझनें खड़ी कर प्राप्त करना चाहते हो? विचार तो कहता
है कि सीधे सवलड़े रास्ते पर चलो और जिसके पास जो है
आवश्यकता पड़ने पर उसी से प्राप्त करो अर्थात् सीधा
सम्पर्क स्थापित करो। सजनों यह विचार करने की बात है
क्योंकि भक्ति अब कठिन नहीं रही अपितु सरल हो गई है।
जो विचार छोड़ देगा वह लाख गुण होते हुए भी छूट
जाएगा। अतः ऐसा मत होने देना। तभी तो कहते हैं कि
मानो:-

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं
नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहो:-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा ।

सजनों यह है शब्द विचार इस पर आप चलो और अपने परिवारजनों को चलाओ। यही सार्वजनिक उद्धार की बात है। इस हेतु सजनों ईश्वर की बात को ध्यान से सुनना होगा। जानते हो ईश्वर की बात को ध्यान से कैसे सुना जाता है?

मौन ।

इस हेतु पहले यह बताओ कि परमात्मा कहाँ विद्यमान है?

आत्मा में ।

तो आत्मीयता के चलन अनुरूप परमात्मा की बात आत्मा ने सुननी है। जो शरीरों की बात होती है, जगत की बात होती है वह शरीरों से सुनी जाती है और जगत तक ही सीमित रहती है, उससे ऊपर नहीं जाती पर आत्मा की आवाज़ आत्मा ही सुन सकती है। अतः ऐसे ही ईश्वर की बात सुनो और बीच में कोई अन्य ख्याल न आने दो यानि किसी शरीर का, किसी वस्तु का, किसी बात का फुरना, एक तरफ़ कर दो। ऐसे ही सब काम करने की आदत डालो। अन्दर पूर्ण शांति हो। इस तरह वातावरण शांत करोगे तो ही ईश्वर की बात आत्मा द्वारा सुन पाओगे।

सुनो सजनों ईश्वर कहते हैं कि आप अटल सत्य हो, इसलिए सत्य को स्वभाव के अंतर्गत रखने व उसी धर्म पर डटे रहने में ही अपना व सबका हित मानो। तभी सच-धर्म

की भक्ति कर सकोगे और फिर जो भी कर्म करोगे वह धर्म संगत होंगे। अन्यथा धर्म छूट जाएगा और अच्छे-बुरे कर्म करते हुए, उनके कर्म भोग में फँस जाओगे। अतः सत्यधर्म पर डटे रहने हेतु यदि तन-मन-धन भी वारना पड़े तो घबराओ नहीं क्योंकि आप नित्य सत्ता हो। अन्य शब्दों में न आप तन हो, न आप मन हो और न ही धन हो। तन-मन-धन पर अधिकार अवश्य रखो पर इनके वश में न आओ। इस संदर्भ में जानो कि जैसे पुराना वस्त्र उतार कर नया वस्त्र पहन लिया जाता है वैसे ही आत्मा भी इस शरीर रूपी मिथ्या चोले को बदलती रहती है। अतः संयोग-वियोग, मान-अपमान को त्याग कर बदलाव को स्वीकारो और इस कर्म क्षेत्र में अपना हर कर्तव्य कर्म मेरे हुक्म अनुसार, निष्कामता व अकर्त्ता भाव से करते हुए, विश्व रूपी इस रंगमंच पर अपना-अपना पात्र निष्पक्षता व कुशलता से निभाओ व इस तरह संकल्प रहित बने रहो।

याद रखो अगर मनमुखी बन, अपने हिसाब से कुछ करने की भूल करी तो मनमत पर चलना बहुत महँगा पड़ेगा यानि उसका दंड भुगतना पड़ेगा। एक वस्तु की प्राप्ति से संतुष्ट न होने पर अनेक की प्राप्ति के लिए लालायित हो उठोगे। इस प्रकार कामुक हो मनःसंतोष खो दोगे और धैर्य में बने रहने योग्य नहीं रहोगे। ऐसे में अचेतनता के कारण अपने ख्याल को काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे विकारों के कुसंग में फँसा बैठोगे यानि सत्य के स्थान पर विकार-वृत्तियों को अपने भाव, भावना व स्वभाव के अंतर्गत कर, संकल्प की स्वच्छता, जिह्वा की स्वतन्त्रता व दृष्टि की कंचनता खो बैठोगे। इस तरह दुर्बल व शक्तिहीन हो, मन में छाए अज्ञान

के कारण, हृदय विदित आत्मिक ज्ञान को ध्यान दृष्टि द्वारा ख्याल में धारण करने में अयोग्य हो जाओगे और मन सहित अपनी ज्ञानेन्द्रियों व कर्मेन्द्रियों का यथा उचित प्रयोग कर पाने के स्थान पर, उन्हें बाह्य जगत के चलन के मनन का साधन बना बैठोगे। इस प्रकार ईश्वर के विधान के विपरीत चलन अपना कर अपना सब कुछ खो बैठोगे और दूसरों पर आश्रित हो जाओगे। फिर जैसा वह कहेंगे खुद को वैसा करने पर मजबूर पाओगे और सत्य-धर्म की भक्ति करने की जगह, झूठ ही झूठ कमाओगे। तब फिर आपके मन में पुण्य कर्मों के स्थान पर पाप कर्मों को करने के प्रति ही रुचि पनपेगी और यह तो सब जानते ही हैं कि पाप कर्मों का फ़ल कितना विनाशकारी होता है। ऐसे पाप युक्त इंसानों को जगतवासियों से निंदा, अपमान आदि के रूप में फटकार व धिक्कार के सिवाय और कुछ नहीं मिलता यानि तालियों की जगह गालियाँ ही मिलती हैं।

याद रखो यह भूल ही आत्मविस्मृति यानि निज सत्य स्वरूप व आत्मिक शक्ति को भूलने का कारण बनती है जिसके फलस्वरूप इंसान, सचेतन से अचेतन अवस्था को प्राप्त हो, कुदरती विधि-विधान अनुसार सच्चाई-धर्म के रास्ते पर बने रहने के स्थान पर कुरस्ते पर यानि असत्य व अधर्म की राह पर अग्रसर हो जन्म-मरण के चक्रव्यूह में फँस जाता है। हम में से कोई भी इस भूल का शिकार न हो, इस हेतु सजनों गुढ़ाई के दौरान समभाव-समदृष्टि के सबक को गहराई से सूक्ष्मतया समझो व तदनुसार सजन-भाव का पहरेवा पहन, आत्मीयता से जीवन जीने की कला में माहिर बनो। सजनों जान लो यही मनुष्यत्व में बने रहने की बात है।

इसी परिप्रेक्ष्य में सजनों जीवन जीने की कला में माहिर बनाने हेतु सजन श्री शहनशाह महाबीर जी ने सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में बताया है कि अपनी अन्दरूनी व बैहरूनी दोनों वृत्तियों को स्वच्छ रखने के प्रति सदा जागरूक यानि सावधान रहो। इसके लिए बैहरूनी वृत्ति में वस्तुओं सहित अपने रिहायशी व शरीर रूपी मकान को साफ़-सुथरा रखते हुए अपनी हैसियत व अच्छे संस्कारों में बने रहो। अपनी हैसियत में बने रहने व अच्छे संस्कारों को धारण करने के लिए सच्चाई-धर्म के रास्ते पर खुद चलो व बच्चों को उसी रास्ते पर चलना सिखाओ ताकि परिवार का हर सदस्य कुरस्ते से बच जीवन के सद्मार्ग पर चलने के योग्य बन जाए और घर-परिवार में एकता, एक अवस्था बनी रहे। अन्य शब्दों में ध्यान से सत्य-धर्म की साधना करते हुए आप तो सत्यमेव बनो ही, साथ ही अपने बच्चों को भी उस पर विधिवत् डटे रहना सिखाओ ताकि उनकी वृत्तियाँ संकल्प कुसंगी से बची रहें। यह कार्य परस्पर प्यार व एक-दूसरे के प्रति आदर भाव रखते हुए व जी-जी का व्यवहार करते हुए, समझदारी से करो। इस प्रकार गृहस्थ-आश्रम को ठीक चलाते हुए व अपना संकल्प पूर्ण रूपेण सजन रखते हुए घर-परिवार व कुल संसार के साथ सजनता का व्यवहार करना सीखो। इस तरह 'जो मन-मंदिर सोई महाराज का रूप सारे जग अन्दर यानि जनचर-बनचर, जड़-चेतन एक ही रूप' का अनुभव करते हुए मन में संतोष प्राप्त करो। इस प्रकार संकल्प को सजन बना संतोष के सवाल पर फ़तह पाओ। याद रखो कि ऐसा सुनिश्चित करने पर ही इस जगत में हर कार्य धीरता से करते हुए, सच्चाई-धर्म के निष्काम

रास्ते पर चल सकोगे और दिव्य दृष्टि का सबक प्राप्त कर, विचार सत्-ज़बान, एक दृष्टि, एकता और एक अवस्था द्वारा, संकल्प पर फ़तह पा यानि सम पर खड़े हो, आवागमन के चक्कर से बच सकोगे। कहने का तात्पर्य यह है कि फिर सरलता से सतवस्तु यानि जो ईश्वर के सत्य विचार हैं उसके अनुरूप चलन अपना कर इस जगत में मौत के भय से भी बेख़ौफ़ा-बेख़तरा रह विचर सकोगे और इस तरह परोपकार कमा सकोगे।

इस संदर्भ में सजनों, यदि आप व आपके बच्चे इस यत्न द्वारा संकल्प रहित बने रहने के योग्य नहीं बन पाते तो कम से कम सतयुग में प्रवेश करने हेतु, संकल्प की स्वच्छता तो अवश्य सुनिश्चित कर लो। इस हेतु सजनों यह बात आप समझो व उन्हें बताओ कि हर जीव का सत्य स्वरूप अति सुन्दर व आनन्ददायक होता है जिसके प्रभाव से चित्त सदा प्रसन्न रहता है व इन्सान सब कुछ यथार्थता से करने का पराक्रम दिखा सकता है। यह निराकार व निर्विकार बने रहने की बात है। याद रखो कि इस सत्य स्वरूप में बने रहने पर इंसान के दिमाग पर कर्मफल की प्राप्ति हेतु कर्ता-भाव यानि अहंकार का भूत सवार नहीं होता, इसीलिए वह सब कुछ अकर्ता भाव से करते हुए सदा निष्काम बना रह पाता है। ऐसे निष्कामी की बुद्धि कभी भी, किसी कारण, भ्रमित अवस्था को प्राप्त नहीं होती। तभी तो वह संसार में निर्भयता व निर्लिप्तता से विचर पाता है। याद रखो ऐसे योग पुरुष को कोई भी अपने सच्चे घर के रास्ते से भटका व अटका नहीं सकता। यही सचेतन अवस्था में बने रह जीवन जीने की बात होती है व सत्यार्थ पुरुष होने की निशानी होती है।

सजनों ऐसा सत्यार्थ बनाने के लिए ही सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें सुगम निष्काम रास्ते को धारण कर, अगम-अगोचर को पाने का आवाहन दे रहा है और कह रहा है कि हे इंसान ! समभाव-समदृष्टि की युक्ति समझदारी से वर्त-वर्ताव में लाते हुए सजन बन और सब आडम्बर छोड़ भक्ति सच्चाई-धर्म की कर। सजनों यह एक इंसान को नादानमय व अज्ञानमय अवस्था से उबर, पुनः सुजान यानि बुद्धिमान बन, गुणी व्यक्तियों की तरह, निपुणता से सब कुछ कर पाने के योग्य इंसान बनाने की बात है। अतः गुढ़ाई के दौरान ऐसे ही योग्य मानव बनना सुनिश्चित करो।

इसी संदर्भ में सजनों इस दुनियां में आने वाले परिवर्तन को दृष्टिगत रखते हुए यह ग्रन्थ हमें सचेत करते हुए कह रहा है कि हे इंसान ! इस कल्याणकारी यत्न को अविलम्ब नेक नीयती से करना आवश्यक मानो व इस हेतु सच को धारण कर, सच ही कमाना सीखो। इस प्रकार सत्यनिष्ठा से बैख्रौफा-बेखतरा व बेडर हो इस जगत में विचरो। यह निर्भय, निर्वैर, त्रिलोकी की कुर्सी को प्राप्त कर, इस जगत में सब कुछ निष्कामता व निष्पक्षता से करते हुए, विश्राम अवस्था मे बने रहने की बात है। अन्य शब्दों में यही निज शक्ति को धारण कर बिन हथियारों, बिन तीरों, बिन तलवारों, हीरे-रत्न-जड़त-ताज पहन, अनमोल सिंहासन पर विराजमान हो, सार्वजनिक हित हेतु, ईश्वर के निमित्त अपने समस्त कर्तव्य कर्म करते हुए, बिन औखयाईयों, बिन खेचलों, बिन तकलीफों भवसागर पार होने का राज़ है।

अतः सजनों इसे ही आत्मशांति प्राप्त करने व अपना संकल्प

स्वच्छ, जिह्वा स्वतन्त्र व दृष्टि कंचन रखने के प्रति सार्थक यत्न मानो और इस तरह निर्वाण पद को प्राप्त कर ज्योति नाल जोत हो, सचखंड ब्रह्मांड बिन सूरजों चमक दिखाओ। यह अपने आप में बिन फुरनियों सर्व-सर्व एक दर्शन में स्थित रह, ईश्वर के इस विराट् रूप जगत की सूक्ष्मता का सार पाने की बात है और यथार्थता से जीवन जीने का तरीका है। गुढ़ाई के दौरान इस तरीके को अमल में ला, सजनों अपना जीवन बना परमपद तो पाओ ही साथ ही इस के प्रति सब संगी-साथियों को प्रेरित कर पर उपकार भी कमाओ।

आओ अब सब मिलकर बोलें:-

आत्मज्ञान की पढ़ाई द्वारा निज सत्य स्वरूप का बोध रखने वाला मैं अब कहाँ कमज़ोर हूँ। जैसा ईश्वर चाहते हैं अब मैं वह सब करने का पुरुषार्थ आत्मविश्वास के साथ दिखा सकता हूँ क्योंकि अब :-

न ही कोई चाह है न कोई परवाह है
क्योंकि यह निष्कामता की राह तो
बिन वैर और विरोध है
जो तेरा है वह मेरा है
जो मेरा है वह तेरा है
इस चलन में तो होता नहीं
द्वि-द्वेष का बखेड़ा है
तभी तो कहते हैं
सच्चाई धर्म की राह पर
जो इस तरह से चलता है
उसी का मन सदा ही

प्रभु लीनता से पाता परम संतोष है
यही ही तो मोक्ष है
हाँ यही तो मोक्ष है
यही तो मोक्ष है।

अंततः सजनों हम तो यही कहेंगे कि आज ईश्वर से हुए वार्तालाप के दौरान आपने आत्मा द्वारा जो भी उसकी बात सुनी उसको विचार में ले आना और उसके इस्तेमाल के प्रति अपने अन्दर रुचि पैदा करना। याद रखो जैसे-जैसे उनके वचनों का इस्तेमाल करते जाओगे वैसे-वैसे अशान्ति मिटती जाएगी और सारा परिवार एक विचार पर खड़ा हो, एकता से जीवन जीने में सक्षम हो जाएगा। इस तरह कुल दुनियां के सामने ऐसा आदर्श रख सकोगे कि आपको देख कर सारे कलियुगीवासी नेक रास्ते पर आने हेतु तत्पर हो जाएँगे। सब मानेंगे कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होते हुए यह उत्तम परोपकार कमाना बनता है ताकि वह परमपिता प्रसन्न हो सुरत-शब्द का इस तरह से मिलाप करा दें कि फिर बिछोड़े की घड़ी कभी न आए। अतः ऐसा करने का पुरुषार्थ दिखाओ, पुरुषार्थ दिखाओ, पुरुषार्थ दिखाओ।



दिनांक 15 मई 2016 का सबक्र

आत्मविश्वास

सजनों किसी कार्य को जब सिद्ध करना होता है तो उसके लिए सर्वप्रथम आत्मविश्वास की आवश्यकता होती है। चूंकि हम सब को अब गुढ़ाई करने के प्रयोजन में सफल होना है, अतः इस हेतु अपने अन्दर आत्मविश्वास पैदा करो और इस बात पर विचार करते हुए खुद से कहो कि मैं इस प्रयोजन की सिद्धि कर सकता हूँ। अब बोलो

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

सजनों आपका आत्मविश्वास विजयी हो, उसके लिए सबसे पहली आवश्यकता है कि उस ईश्वर से मित्रता बनाए रखो और फिर जो भी मित्र कहे उसे जानते-मानते हुए वैसे ही गुण अपनाओ। इस प्रकार गुणवान बन सकोगे।

सजनों ईश्वर को मित्र बनाने के लिए मानो कि अक्षर ही हमारा गुरु है, यानि शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहो-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

ध्यान दो कि मूलमन्त्र ओ३म् आद् अक्षर जो हमारा गुरु है, वह यह कह रहा है कि अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा। अतः उसके वचनों को सत्य मानते हुए, दुःख-सुख, मान-अपमान, बड़-छोट सब समरस कर जानो। इन सब विपरीत भावों में फिर आपका मन-मस्तिष्क उलझ कर, असंतुलित न हो अपितु सदा सम अवरथा में बना रहे।

आइए अब प्राप्त आत्मिक ज्ञान की गुढ़ाई की ओर, आत्मविश्वास के साथ बढ़ते हुए, आत्मीयता के चलन पर बने रहना सुनिश्चित करते हैं। हम ऐसा ही कर पाएँ, आओ इस हेतु आत्मविश्वास के हर पहलू को समझते हैं:-

आत्मविश्वास दूसरों पर आश्रित होने के स्थान पर अपनी योग्यता और शक्ति पर दृढ़ विश्वास यानि स्वयं पर भरोसा रखने की बात होती है। योग्यता का आधार होता है गुणशीलता व उन गुणों को बुद्धिमत्ता से व्यवहार में लाने की क्षमता। इस क्षमता पर बने रहने के लिए, आत्मिक ज्ञान की पढ़ाई के दौरान प्राप्त सद्ज्ञान को ढँकने वाले कर्म, करना वर्जित है। अन्य शब्दों में यह निष्काम भाव से पुण्य कर्मों में प्रवृत्त रहने की बात है। ऐसा सुनिश्चित करने पर ही इन्सान, ख्याल ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल, जोड़े रख सकता है वरना ख्याल के इधर-उधर बिखरने का भय निरन्तर बना रहता है। आत्मकल्याण हेतु अपनी योग्यता का, विश्वास के साथ सही ढंग से प्रयोग करने के लिए, रोम-रोम सहित सम्पूर्ण हृदय को निरंतर प्रकाशित करने वाली अंतर्निहित आत्मा की संक्षिप्त रूप में जो शक्ति होती है, एक निगाह एक दृष्टि द्वारा उसका बोध गहराई से करते हुए,

कुशलता से उसका इस्तेमाल करने की आवश्यकता होती है। यही मनुष्य के पावन जीवन चरित्र के निर्माण का हेतु होती है।

यही अपने सारे जीवन के कार्यों का केन्द्र, आत्मा को बना, सक्षमता से हर कर्म आत्मीयता के भाव से करने की बात होती है। इस क्रिया द्वारा, मनुष्य के मन का सम्बन्ध, बाह्य भौतिक पदार्थों से जुड़ने के स्थान पर, उस आद् चेतन शक्ति से जुड़ा रहता है। इससे स्वतः ही जीवन जीने के प्रति आध्यात्मिक दृष्टिकोण बनता है और इन्सान स्वार्थपरता, लोभ-लालच, मोह-माया, द्वि-द्वेष के रास्ते पर अग्रसर होने के कारण उत्पन्न होने वाली, अनेकानेक हानियों से बचा रहता है। ऐसा जितेन्द्रिय व आत्मा का प्रत्यक्ष अनुभव करने वाला व्यक्ति ही आत्मा और परमात्मा के स्वरूप को जानने वाला होता है और वही आत्मज्ञानी निश्चित रूप से ब्रह्म भाव में यथा निश्चल बना रहता है व उसके मन को परम संतोष प्राप्त होता है।

संतोष व धैर्य के स्वभाव के अंतर्गत होते ही वह पर उपकार के लिए अपने हित का विचार छोड़ देता है और जीवन में जो भी करता है, निःस्वार्थ भाव से करता है। बस फिर तो वह आत्मनिष्ठ यानि आत्मविश्वासी पदार्थों की अनुभूतियों और विचारों से सम्बन्धविच्छेद कर, आत्मविद्या की साधना में लीन हो जाता है। इस प्रकार वह आत्म यानि अपने विषय में परिपूर्ण जानकारी रखते हुए, आत्मपद को प्राप्त कर लेता है। याद रखो ऐसे व्यक्ति को बाल अवस्था के भक्ति भावों द्वारा, स्वयं को मानसिक या शारीरिक कष्ट देकर, तृप्ति

पाने की क्रिया नहीं करनी पड़ती क्योंकि वह अपने गुण-दोषों को परखता रहता है और इस तरह अपने अन्तःकरण को पूर्णतः शुद्ध रखता है।

तभी तो वह स्वयं अपने धन या ज्ञान व अपनी प्रशंसा कराने हेतु, स्वयं को बड़ा-चढ़ा कर दिखाने के स्थान पर, ईश्वरीय यानि उस सर्वव्यापक भगवान के पवित्र शब्द विचारों को धारण कर, अपने भावों या विचारों द्वारा यथार्थता से व्यक्त करता है। इसलिए वह आत्मबुद्धि द्वारा अपने दोषों का सूक्ष्म अवलोकन कर, हर प्राणी के प्रति परमात्म दृष्टि रखता है। यह स्वयं सहित हर वस्तु के ब्रह्म से उत्पन्न होने का सत्य बोध करते हुए आत्मभ्रान्ति से बचे रहने की बात होती है। इसीलिए मनुष्य के लिए स्वयं को स्वयं सम्मोहित करने, यानि खुद को खुद धोखा देने के स्थान पर आत्ममंथन यानि अपने मन में उठने वाले विचारों और भावों का, वचन व कर्म द्वारा प्रयोग करने से पहले उनका विश्लेषण और विवेचन करने का विधान है। इस चलन पर सुदृढ़ रहने वाला ब्रह्मज्ञानी संसार से मन हटा कर, सांसारिक विषय-विकारों से अपनी रक्षा स्वयं करते हुए, हकीकत में आत्मस्वरूप की साधना करने का पराक्रम दिखा सकता है। यह विराट् यानि आत्मा का अस्तित्व सर्वत्र व्याप्त मानने का सिद्धान्त है। याद रखो इस सिद्धान्त में आस्था रखने वाला आत्मविश्वासी मोह-माया में फँस, किसी अन्य प्रचलित सिद्धान्त का अनुयायी बन, अपनी स्वतन्त्रता नहीं बेचता यानि सांसारिक गुरु-चेले के भाव में फँसे रहने से बचा रहता है। इसीलिए तो वह सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित 'मैं ब्रह्म हूँ' की विचारधारा पर इस प्रकार अटलता से बना रह पाता है:-

‘विचार ईश्वर आप नूं मान,
अवविचार ईश्वर इक जान।।
विचार इक अपना आप ही मान,
अवविचार कुल दुनियां जान।।
विचार करो है ईश्वर अपना आप,
अवविचार ईश्वर है इक साथ।।
ईश्वर है अपना आप प्रकाश,
ईश्वर है जे अजपा जाप।।’

याद रखो इसी प्रकार आत्मविश्वासी बने रहने से मनुष्य स्वावलंबन यानि अपने पैरों पर खड़ा होना सीखता है। वह जो कुछ बोलता है और करता है, वह सब कुछ उस परमेश्वर के निमित्त समर्पित कर, अनासक्त और निष्काम भाव से उसी के आश्रय में करता है। इस तरह उस ईश्वर के सदा संग बना रहता है। इससे उसकी शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियाँ अगाध और असीम हो जाती हैं और उसे अपने उद्धार हेतु एक विशिष्ट प्रेरणा मिलती है और सफलता के द्वार स्वयंमेव खुलने लगते हैं। इसलिए अपने में विश्वास व ईश्वर में विश्वास रखने को, मानवता पर स्थिर बने रहने व उन्नति द्वारा जीवन उद्धार करने का, मूलमंत्र मानो और आत्मबल पर विश्वास रखते हुए अपने जीवन का मनोरथ सिद्ध करो।

इससे सजनों स्पष्ट होता है कि जीवन के महान कार्यों की सिद्धि के लिए आत्मविश्वास रखते हुए अपनी दृष्टि आत्मस्वरूप पर केन्द्रित रखनी आवश्यक है अन्यथा इसके विपरीत चलन पतनता को प्राप्त होने की बात होगी। यही

एकमात्र तरीका है जीवन की समस्त कठिनाईयों को आत्मविश्वास और दृढ़ निश्चय के सहारे सहते हुए, समस्त सार्थक उपलब्धियों को प्राप्त कर, अपने जीवन को सफल बनाने का। तो मानो कि मुझ में सफलता के हेतु आत्मविश्वास की कमी नहीं है और मुझे पूरा विश्वास है कि मैं अपनी एक अच्छा व नेक इंसान बनने की महत्त्वाकांक्षा को पूर्ण करने हेतु इस गुण का निपुणता से प्रयोग कर सकता हूँ। जानो कि यह शुभ संकल्प लेते ही आपको अपने अन्दर, जीवन लक्ष्य प्राप्ति के प्रति, एक अद्भुत शक्ति एवं प्रेरणा का अनुभव होगा। यहाँ नास्तिक प्रवृत्ति में ढलने की भूल करने के स्थान पर अध्यात्म की ओर उन्मुख हो, आस्तिक प्रवृत्ति में ढलना व सबके विश्वासपात्र बनना। सावधान रहना कि कहीं कोई कष्ट-क्लेश आने पर आपकी अपनी इस उद्देश्य पूर्ति के प्रति आशा न टूट जाए और आप आत्मविश्वास न खो बैठो। उसके लिए 'मैं ब्रह्म हूँ' के सिद्धान्त के प्रति किसी भी सांसारिक परिस्थिति के कारण आस्था न खो बैठना।

सजनों समझदारी इसी में है कि आत्मविश्वास रूपी गुण को समभाव-समदृष्टि के सबक की पढ़ाई की गुढ़ाई में सफलता प्राप्त करने हेतु प्रयोग में लाओ और ऐसा करना अपने व समाज के लिए उपयोगी समझो। अन्यथा इससे विपरीत चलन मानवता के लिए घातक सिद्ध होगा। वर्तमान में व्यापक रूप से फैला हुआ क्रूर और घातक आतंकवाद ऐसे ही निषेधात्मक आत्मविश्वास का परिचायक है। अतः ध्यान दो आत्मविश्वास रावण जैसा नहीं होना चाहिए, जो यह समझता था कि मेरी बराबरी का कोई है ही नहीं। आत्मविश्वास होना चाहिए विभीषण जैसा, प्रह्लाद जैसा।

उनके दिल में यह भाव था कि हम निर्बल हैं मगर ईश्वर हमारे साथ है और इस कारण हमारी शक्ति अनंत है।

इसी विषय में हमारे लिए आत्मविश्वास के दुरूपयोगों से प्राप्त होने वाले हानिकारक नतीजों से भी परिचित होना आवश्यक है। याद रखो जहाँ आत्मविश्वास की कमी उद्देश्य प्राप्ति की सफलता को बाधित करती है वहीं उसकी अधिकता काम बिगाड़ देती है। यह मत भूलो कि आत्मविश्वास की अधिकता से जैसे ही मनुष्य में अहंकार जन्म लेता है वैसे ही उसके पतन का कारण आरंभ हो जाता है और वह सुनिश्चित रूप से जीवन हार जाता है। इसीलिए कह रहे हैं कि आत्मविश्वासी तो बनो पर इस गुण का सावधानी से प्रयोग करना सुनिश्चित करो ताकि कहीं ऐसा न हो कि जिस संसार में भ्रमण करने आए हो उसके चक्रव्यूह में फँस उसी में ही डूब कर जीवन-हानि कर बैठो।

जानो कि गुढ़ाई में सफल होने के लिए सत्यता से इसके प्रति निरंतर प्रयत्नशील रहने की आवश्यकता है। याद रखो आत्मविश्वास में कमी होना निर्धारित लक्ष्य प्राप्ति हेतु किए जाने वाले परिश्रम को व्यर्थ करना है। आओ इस हेतु आत्मविश्वास बढ़ाने की रीति समझते हैं। वह है, आप वह काम करो जिसे करते हुए आप डरते हो यानि जीवन की चुनौती को हँस कर निर्भयता से स्वीकार करो। इस प्रकार ज्यों-ज्यों आपको सफलता मिलती जाएगी, आपका आत्मविश्वास बढ़ता जाएगा। इसके प्रति सजग रहने के लिए व मानसिक शक्ति द्वारा अपने कार्य को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के लिए अपने आत्मविश्वास रूपी गुण के स्तर का

स्वयंमूल्यांकन करते रहो। तो आपको अपनी सामर्थ्य का सही-सही आंकलन होगा। याद रखो कि यदि आप इस यत्न द्वारा समभाव-समदृष्टि के सबक को आत्मसात् करने के कार्य में सफल हो जाते हो तो समझना कि आप में पर्याप्त आत्मविश्वास है। इसके विपरीत आत्मविश्वास के अभाव को असफलता का हेतु मानना व याद रखना कि जिसे अपने आप पर विश्वास नहीं होता वह न तो किसी पर और न ही कोई उस पर विश्वास कर सकता है।

इसीलिए तो कहते हैं कि जीवन संघर्ष में सफलता प्राप्त करने हेतु इन्सान के लिए आत्मविश्वास अति महत्त्वपूर्ण मूल्य व सहारा है क्योंकि आत्मविश्वासी को बाहरी सहायता रूपी झूठी बैसाखियों की आवश्यकता नहीं रहती। इसका प्रमाण युग पुरुषों के रूप में हमें देखने को मिलता है। इस संदर्भ में चाहे सामान्य मनुष्यों जैसे ही उनके शरीर और मन थे पर अटूट आत्मविश्वास रूपी गुण ने उनसे कठोर परिश्रम करवाया, उनकी प्रतिभा को निखारा, उनमें क्षमा व त्याग भावना जैसे अनेक सद्गुण पैदा किए और विद्या, बुद्धि, धन-स्वास्थ्य आदि से उन्हें परिपूर्ण कर दिया। इस प्रकार वह सबके सब जगतहितकारी व न्यायकारी बने क्योंकि उन यशस्वियों ने छोटी-छोटी बातों में न पड़कर उच्च लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अपने श्रम और प्रयासों द्वारा उन्मुख रहना उचित समझा। इसीलिए हमारे लिए भी बनता है कि हम समभाव-समदृष्टि की पढ़ाई की गुढ़ाई उपरान्त फ़र्स्ट का नतीजा दिखाने हेतु इस शुभ कार्य को संपादित करने के दौरान तनिक भी यह चिंता या परवाह न करें कि कोई क्या सोचेगा या क्या कहेगा। इस प्रकार निंदा स्तुति से दूर रह

अपने इस शुभ कार्य की सिद्धि में निष्ठापूर्वक लगे रहें।

अतः याद रखें कि आत्मविश्वास जैसा दूसरा कोई मित्र नहीं। यह ही वह अटूट तार है, जिसके सहारे हृदय स्पन्दित होता है। अतः आत्मविश्वासी बनो क्योंकि आत्मविश्वासी व्यक्ति सूर्य के समान होता है। वह स्वयं भी चमकता है और दूसरों को भी चमकाता है। इस तरह वह हृदय प्रकाशी, जगत प्रकाशी कहलाता है। यही नहीं सूर्य की तरह वह समय की कद्र करता है और अपना कार्य निश्चित समय पर खुद सम्पन्न करता है। इस प्रकार ऐसे तपस्वी के मुखमंडल का तेज सूर्य के तेज की भांति न कभी बढ़ता है न कभी कम होता है अपितु समभाव-समदृष्टि के सबक पर बने रहने के कारण सदा सम अवस्था में बना रहता है। अंततः हमारी सबसे प्रार्थना है कि आप भी सबको सद्मार्ग दिखाने वाले सूर्य बनो और इस अमोलक मानव जीवन का सदुपयोग करने हेतु खुद आत्मविश्वासी बनो व अपने परिवारजनों को भी वैसा ही बनाना उनके प्रति अपना सबसे पहला कर्तव्य मानो। यह कर्तव्य जितना-जितना सजनता के भाव से हँसकर और विधिवत् निभाओगे उतनी ही जल्दी घर सतयुग बना पाओगे और शांति-शक्ति प्राप्त करने के अधिकारी बनोगे। इसलिए मन को वश में रखते हुए, निष्कलंक जीवन जीने हेतु इस क्रिया पर स्थिर बने रहना विकार वृत्तियों के प्रति अपना रक्षा कवच मानो व आत्मविश्वास के साथ अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त करो। अब दिल से कहो विश्वास, विश्वास, विश्वास हाँ मुझे खुद पर पूर्ण विश्वास है कि मैं इस यत्न द्वारा एक अच्छा व नेक इंसान बनके दिखाऊँगा। इस हेतु हमारी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं। अब सब इधर ध्यान

दो और मिल कर बोलो:-

आओ भज भज के आओ सज धज के
दर्शन पावां महाबीर रघुनाथ जी दा रज रज के ।

आओ भज भज के आओ सज धज के दर्शन पावां
महाबीर रघुनाथ जी दा रज रज के ।

वह देखो, वह देखो कौन आए हैं, देखो देखो कौन आए हैं
सुनो सुनो उनके आने पर कुदरत में संगीत गूँज उठा है,
ध्यान से सुनो, सुनो और जानो कि कौन आए हैं

रघुवर संग आए महाबीरा
हरने को हम सबकी पीड़ा
खुश होवो रे कलयुगवासी
कटने लगी है लाख चौरासी

सुनो सुनो वह कुछ कह रहे हैं,
ध्यान से सुनो वह क्या कह रहे हैं

समभाव-समदृष्टि दा सबक अपनाओ
सजन भाव व्यवहार में लाओ
झगड़े सारे यूँ ही मिटाकर
सारे ही समदृष्टि हो जाओ ।

सतवस्तु का चलन अपनाकर
अपना मानव धर्म बचाओ
ए विध जीवन सफल बनाकर
सारे अमर नाम कहाओ ।

हर वस्तु में रमणे वाले
वही तो हैं श्री साजन हीरा
आद् जुगाद प्रमाद जो चमके
उस हीरे दी सार नूं पाओ।

यही सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ की पवित्र वाणी का फरमान है।
यह युक्ति अपनाओ और जीवन सफल बनाओ।

अंततः सजनों अब जब महाबीर-रघुनाथ जी हमारे घर यानि मन-मंदिर में आ गए हैं तो उन्हें वहीं बसाए रखना ताकि मन-मंदिर प्रकाशित हो जाए और उनका दर्शन नित्य प्राप्त होता रहे। यहाँ ईश्वर को घर में बसाए रखने से तात्पर्य, ईश्वर के वचनों को बिना किसी तर्क-वितर्क के हाँ-जी करके स्वीकारने से है। आशय यह है कि फिर अपनी मनमत मत लगाना क्योंकि अपनी मत लगाने का अर्थ होगा अविचारी होकर, अपनी मत को आप मारना। याद रखो यदि निश्चित रूप से ऐसा करने में सफल हो गए तो उस ईश्वर के प्रकाश के तेज के प्रभाव से हृदय से कलुकाल समाप्त हो जाएगा और सतवस्तु प्रकाशित हो उठेगी। तभी तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:-

कलुकाल हुण जांदा, नी ओ जांदा, नी ओ जांदा, नी ओ जांदा।
सतवस्तु हुण आंदा, नी ओ आंदा, नी ओ आंदा, नी ओ आंदा।।

अतः सजनों अब सब प्रसन्नता से अपना जीवन उद्धार करने के लिए तत्पर हो जाओ।



दिनांक 22 मई 2016 का सबक्र

पुनरावृत्ति

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी
को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में
नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर
बने रहो:-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा।

सच्चेपातशाह जी की नीति अनुसार सजनों, सतवस्तु के
कुदरती ग्रन्थ में वर्णित, युवावस्था की भक्ति अर्थात् समभाव-
समदृष्टि की युक्ति अनुसार, सजन-भाव की पढ़ाई व गुढ़ाई
करने वाले सजन के लिए, जो भी उसने पढ़ा, समझा व धारा
है तथा उसको वर्त्त-वर्त्ताव में लाने से आत्मसुधार के रूप में
लाभ प्राप्त हुआ है, समय-समय पर उसका आंकलन करना
अति आवश्यक है। इस आंकलन से सजनों जहाँ समय पर
आवश्यक सुधार होने पर अपने प्रयत्न को उत्साह मिलता है
वहीं युक्ति को अपनाने के प्रति रही असावधानी या
लापरवाही के कारण खुद में रही कमियों को देख-समझ
कर उनको दूर करने का अवसर भी प्राप्त होता है। अतः
सजनों इस नीति की महत्ता को समझना है और जो भी यहाँ
पढ़ाया-समझाया जाए व धार कर व्यवहार में लाने के लिए

कहा जाए उसे साथ ही साथ करते जाना है यानि आज का काम कल पर नहीं छोड़ना। याद रखो इस क्रिया पर सुदृढ़ बने रहने से किसी प्रकार से भी पिछड़ोगे नहीं और आपका समयबद्ध जीवन उद्धार हेतु सुधार औरों के लिए भी प्रेरणादायक होगा। यह अपने आप में निष्काम भाव से उपकारी व परोपकारी बनने की बात होगी।

सबकी जानकारी के लिए शास्त्र अनुसार अपना आंकलन करने की यह क्रिया स्टेज वाले व संगत वाले सजनों ने समान रूप से करनी है अर्थात् सत्संग में लैक्चर वाला सजन संगत से पूछे और फिर संगत का एक सजन लैक्चर वाले से पूछे और घर-परिवार के सदस्य परस्पर एक-दूसरे से पूछें कि उन्होंने अब तक पढ़ाए व समझाए गए सबकों पर अमल फरमाते हुए, समभाव-समदृष्टि की युक्ति को व्यावहारिक रूप में कितना अपनाया है। इस संदर्भ में सजनों जो भी पूछा जावे उसके उत्तर में सब सजनों ने सच बोलना है और सच के सिवाय कुछ नहीं बोलना। इस प्रकार गुढ़ाई के दौरान सभी सजनों ने इसके प्रति निरंतर जागरूक रहने हेतु, हर पन्द्रह दिन के बाद अपनी जाँचना-तुलना यानि विचारसंगत पड़ताल करनी है। सजनों यह सतवस्तु के विचारों से युक्त होकर सदा सचेतन अवस्था में बने रहने व एक धर्मशील इंसान की तरह निष्काम भाव से जीवन जीते हुए सब कुछ करते हुए भी, कर्मगति से मुक्त बने रहने के लिए आवश्यक है। अतः इस क्रिया को अहंकार व मोह-माया के प्रभावों के दबाव में आकर या फिर झूठ के सहारे व मान-अपमान की आड़ में नहीं करना है। इसके स्थान पर यह याद रखते हुए कि चाहे लुक के करो चाहे छुप के करो सच्ची सरकार के

दरबार में कुछ न छुप सकेगा, अपनी गलतियों को सच-सच लिखते जाना है और समय रहते ही यानि अपने स्वभाव के अंतर्गत करने से पहले ही उनके सुधार के प्रति विचार करना है।

याद रखो सजनों अगर गुढ़ाई के दौरान यह कार्य, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित, शब्द विचारों के अनुसार कर लिया तो निश्चित ही विचार करने पर पाई गई गलतियों व उसके कारण प्राप्त दुःखों को याद कर, खुद को खुद ही सुधारने की इच्छा मन के अन्दर उत्पन्न होगी व फिर सहर्ष पूर्ण सुधार करने की ओर बढ़ सकोगे। इस यत्न को सजनों मनःसंतोष व शांति प्राप्ति हेतु आवश्यक मानो और इस प्रकार आत्मतुष्टि से धैर्य पूर्वक बहादुरों की तरह, सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर निर्विघ्न डटे रहो व परस्पर एकता में संगठित बने रहो।

तात्पर्य यह है कि गुढ़ाई के दौरान सजनों, जीवन की हर परिस्थिति में इस नियम-नीति पर स्थिरता से यत्नशील बने रहने को ही, अपनी व अपने परिवारजनों के लिए यथार्थतः सुख और समृद्धि का हेतु मानो। सजनों यही समभाव-समदृष्टि के सबक को विधिवत् आत्मसात् कर, परस्पर व्यवहार के दौरान सजन-भाव पर मज़बूत बने रहते हुए, आत्मस्वरूप में स्थित रह, आत्मीयता से जीवन जीने की बात है।

इस क्रिया की महत्ता को समझते हुए व जीवन के इस महान उद्देश्य को, इसी जीवन में प्राप्त करने के लिए, आओ सजनों अब आत्मनिरीक्षण करें कि आज तक पढ़ाए गए, गुढ़ाई के

सबकों के विचारों को धारने व उन्हें अमली जामा पहनाने में हम कितने सफल हुए हैं:-

1. क्या आपने नेक इन्सान बनने व आत्मिक ज्ञान की पढ़ाई की गुढ़ाई में सफलता प्राप्त करने के लिए, प्रदत्त गृहकार्य को अच्छी तरह से पढ़-समझ लिया है ताकि आप उसे अमल में ला, अमल कमा सको?

2. ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है। क्या इस सत्य को मज़बूती से आपने अपनी धारणा में उतार लिया है? कहीं अंतर्मुखी रहने के स्थान पर संसारियों को मित्र बना बहिर्मुखी तो नहीं हो गए?

3. क्या आप मूलमन्त्र शब्द को गुरु मान इस का विधिवत्, निरन्तर अजपा जाप कर रहे हो या अभी भी शरीरों में ही अटके हुए हो?

4. क्या आप सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित शब्द विचार को पकड़ते हुए, सत्य पर अटलता से डटे रहने में कामयाब हो पा रहे हो या नहीं?

5. क्या आपने गृहस्थ-आश्रम को ठीक चलाते हुए व अपने संकल्प को पूर्ण रूपेण सजन रखते हुए, घर-परिवार व कुल संसार के साथ सजनता का व्यवहार करना आरम्भ कर दिया है या नहीं?

6. कहीं विजय प्राप्ति हेतु जिन विषय-विकारों का आपने बलिदान कर दिया है वह आपको पुनः घेर कर अपने चंगुल में तो नहीं फँसा रहे?

7. क्या आप अपनी अन्दरूनी व बैहरूनी दोनों वृत्तियों को स्वच्छ रखने के प्रति जागरूक व सावधान रह सफल हो पा रहे हो या नहीं?

8. क्या आप वस्तुओं सहित अपने रिहायशी व शरीर रूपी मकान को साफ़-सुथरा रखते हुए अपनी हैसियत व अच्छे संस्कारों में बने हुए हो या नहीं?

9. क्या आप सच को धारण कर, सच ही कमाना सीख रहे हो यानि जिस सच्चाई-धर्म के रास्ते पर खुद चलना सीख रहे हो, उस पर अपने बच्चों व परिवारजनों को भी चलना सिखा रहे हो या नहीं?

10. क्या ईश्वर में विश्वास रखते हुए, आप आत्मविश्वासी बन, अपनी दृष्टि आत्मस्वरूप पर केन्द्रित रख सतवस्तु के विचारों पर डटे रह पा रहे हो या नहीं?

11. क्या किसी भी सांसारिक परिस्थिति के कारण 'विचार ईश्वर है अपना आप' यानि 'मैं ब्रह्म हूँ' इस सिद्धान्त के प्रति आपकी आस्था कमज़ोर तो नहीं पड़ रही?

सजनों आत्मनिरीक्षण की इस क्रिया के दौरान हमें अवश्य अपने में कहीं न कहीं कमी का अनुभव अवश्य हुआ होगा। आओ पूर्णतः कामयाब होने के लिए एक बार पुनः सर्वव्यापक अपने, अटल अमर आत्मस्वरूप को स्वभाव के अंतर्गत रख, बिना किसी तर्क-वितर्क के उसी धर्म पर डटे रहने हेतु अभ्यास करें:-

1. सब सजन अपना शरीर सीधा रखो और अफुर हो जाओ। अब आँखें बंद कर लो और भाव सहित सच्चे दिल से बोलो

‘ओ३म् अमर है मेरी आत्मा, आत्मा में है परमात्मा’। यह बोलते समय चेहरा खिला हो और बीच में कोई फुरना न आए। इस हेतु बीच-बीच में आत्मनिरीक्षण करते रहो कि कहीं बीच में कोई और ख्याल तो नहीं आ रहा।

2. अब यही ख्याल से बोलो ‘ओ३म् अमर है मेरी आत्मा, आत्मा में है परमात्मा’। ख्याल से यह बोलते हुए आपके चेहरे पर भाव होना चाहिए। भावयुक्त होंगे तो नींद नहीं आएगी यानि सचेतन बने रहोगे। अतः हिम्मत दिखाओ और अपने स्वरूप को पाओ।

3. अब इसी अनुभव में बने रह अक्षर चलाना आरम्भ कर दो ताकि हृदय प्रकाशित हो जाए और जो निगाह नहीं आ रहा वह निगाह आने लगे। इससे आपको ‘अमर आत्मा में परमात्मा’ कैसे विद्यमान है, उसका बोध हो जाएगा और ‘विचार ईश्वर है अपना आप’ इस सत्य की समझ आ जाएगी। सतर्क रहो कि ‘अमर आत्मा और परमात्मा’ के बीच कोई तीसरा यानि जगत का फुरना न घुस पाए और ख्याल ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल जुड़ा रहे। इस तरह ख्याल को इतनी गहराई में ले जाओ कि जीवन के सारे सन्ताप समाप्त हो जाए।

4. अब फिर से अन्दरूनी वृत्ति में बगैर जिह्वा हिलाए यानि ख्याल से अति धैर्य व विनम्रतापूर्वक, धीरे-धीरे उच्चारण करो:- ओ३म् अमर है मेरी आत्मा, आत्मा में है परमात्मा।

5. अब इसकी गति बढ़ाते जाओ और बिना उत्तेजित हुए अपने निर्गुण ब्रह्म होने का अनुभव करते जाओ व उसका

सार पाने हेतु निर्गुण के खेल को समझो। समझो कि वह आपके सबसे नज़दीक, सबसे आगे खड़ा है यानि निकट हिवे सजनों, सजनों निवे कोई दूर। अन्य कुछ न सोचो व घबराओ नहीं अपितु अपने लक्ष्य प्राप्ति हेतु ध्यान स्थिरता से यत्नशील बने रहो।

6. जिनको ऐसा करने से आनन्द प्राप्त हो रहा हो वह इस अभ्यास को करते जाओ और जो इस यत्न में कामयाब नहीं हो पा रहे वह आँखें खोल लें ताकि पहले बैहरूनी वृत्ति में आपको यह यत्न करवाया जाए।

7. ध्यान दो कि अगर यत्न करने पर भी अपने निर्गुण ब्रह्म होने का अनुभव न हो तो जो दूर प्रतीत हो रहा है, बैहरूनी वृत्ति में अत्यन्त शुद्ध भावना से जिह्वा से अति धैर्य व विनम्रतापूर्वक, धीरे-धीरे उच्चारण करो:- ओ३म् अमर है मेरी आत्मा, आत्मा में है परमात्मा। याद रखो जैसी आपकी भावना होगी, वैसा ही आपको प्रतीत होगा।

8. यह लगातार बोलते जाओ और तब तक बोलते जाओ जब तक कि आपकी आवाज़ उस आत्मा में विद्यमान परमात्मा तक न पहुँचे। घबराओ नहीं अपनी बुद्धि, योग्यता और शक्ति पर भरोसा रखो कि आप ऐसा अनुभव करने में सफल हो सकते हो। इस हेतु अपने अन्दर चाहना पैदा करो, उसके प्रति भाव पैदा करो। यत्न न छोड़ो।

9. अब यह बोलने की गति बढ़ाते जाओ और मधुरता व प्रेम से ऐसे बोलो कि आपको जो दूर प्रतीत हो रहा है उसके सबसे नज़दीक यानि अमर आत्मा में विद्यमान होने की प्रतीति हो जाए।

10. जानो कि आपका अफुर अवस्था से एकाग्रचित्तता में किया हुआ यह यत्न अंतर्निहित निर्गुण ब्रह्म को बाहर सर्गुण रूप में प्रकट कर सकता है। खुद पर विश्वास रखो और मानो कि आप में ऐसा करने की क्षमता है। यहाँ प्रसन्नता में आ अपना यत्न छोड़ने के स्थान पर निर्गुण व सर्गुण ब्रह्म की अभेदता का सत्य बोध करना। कहने का आशय यह है कि उसी में मस्त हो सुध-बुध नहीं खोना अपितु सचेतन बने रहना। ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि भक्ति अब बाल अवस्था से युवावस्था में आ गई है।

युवावस्था में इन्सान, चाहे दर्शन हो भी जाए तो भी उसमें गुम हो सुध-बुध नहीं खोता अपितु चेतन बना रह उस दर्शन की सार को पा लेता है। सजनों यह ओ३म् अमर है मेरी आत्मा, आत्मा में है परमात्मा, इस अटल सत्य को धारण कर उस पर स्थिर बने रहने के लिए आवश्यक है।

11. जैसे ही आपको यह अनुभव हो जाए वैसे ही अन्दरूनी व बैहरूनी दोनों वृत्तियों में एकरस हो शांत हो जाओ व विश्राम को पाओ।

फिर कह रहे हैं कि अपनी बुद्धि, योग्यता और शक्ति पर भरोसा रखो कि आप ऐसा अनुभव करने में सफल हो सकते हो। इस प्रकार दूसरे के सहारे नहीं अपितु अपने भरोसे सब काम करने वाले स्वावलंबी इंसान बनो। यह आत्मीयता में ढलने व बने रहने के लिए अति आवश्यक है।

निश्चित ही इस क्रिया से सजनों एक तो आपको अब तक पढ़ाए-समझाए व अवश्य धारणीय तथ्यों की पुनरावृत्ति हो गई होगी दूसरा गुढ़ाई के दौरान आप सब कितनी गहराई व

सावधानी से अपने जीवन लक्ष्य प्राप्ति के प्रति जागरूक हो, यत्नशील हो, इस संदर्भ में अपना नतीजा भी ले लिया होगा। सजनों नतीजा जो भी रहे, हमारा सुझाव यही है कि आज का काम कल पर मत छोड़ना यानि जो आज पढ़ाया जाए व अभी करने को कहा जाए उसे यथासमय ही कर लेने की आदत बनाओ अन्यथा छूटे हुए काम का सिर पर बोझ लादकर चलने से सफलता संदिग्ध हो जाएगी और जीवन लक्ष्य प्राप्त करना कठिन लगेगा। ऐसा इसीलिए भी कह रहे हैं ताकि जिस गति से समय चल रहा है यानि युग परिवर्तन हो रहा है, आप उस गति से अपने भाव-स्वभावों में भी परिवर्तन ला यानि शारीरिक स्वभावों को छोड़, उस स्वर्णिम युग का चाल-चलन अपना कर, सतयुग में प्रवेश कर सको अन्यथा यदि समय बीत गया और काम बाकी रह गया तो आप कलियुग के स्वभावों में ही अटके रहोगे। यह दुःख भरी बात होगी क्योंकि ऐसा होने पर आप महाराज जी से मेल न खा सकोगे। अतः सजनों आप सबसे फिर प्रार्थना कर रहे हैं कि अपनी पिछली कमियों को दूर करने के लिए पढ़ाए गए सबकों को दोबारा समझदारी से पढ़ना व अगली कक्षा में आने से पूर्व ही आपेक्षित आत्मसुधार कर लेना। सब इस यत्न में सफल हों इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

आओ अब सब मिल कर बोलें:-

जय सिया राम कई जन्मां दे भुले भटकियां नूं।
टिकाणे लगाया हनुमान बलवान जय सिया राम ॥

जय सिया राम कई जन्मां दे भरमदे होयाँ दा।
भरम मिटाया हनुमान बलवान, जय सिया राम ॥

जय सिया राम कई जन्मां दे तड़फदे होयां नूं।
सच्चा घर दिखाया हनुमान बलवान जय सिया राम॥

जय सिया राम कई जन्मां दे बिछड़े होयां नूं।
सियाराम मिलाया हनुमान बलवान जय सिया राम॥

जय सिया राम स्वास, स्वास ओ स्वास स्वास।
तुसीं नाम ध्यालौ जय सिया राम॥

जय सिया राम रोम रोम ओ रोम रोम
विच राम वसा लौ जय सिया राम।
जय सिया राम सच्चे घर दी ओ सच्चे घर दी,
तैयारी कर लौ जय सिया राम॥

जय सिया राम बिन तेलों ओ बिन वट्टों,
तुसीं जोत जगा लौ जय सिया राम।
जय सिया राम, राम नाम दा,
राम नाम दा सिमरन कर लौ जय सिया राम॥

जय सिया राम सुरति शब्द ओ सुरति
शब्द दे विच मिला लौ जय सिया राम।
जय सिया राम तां शौह अपने दा तां शौह अपने दा,
दर्शन पा लौ जय सिया राम।
जय सिया राम सोहणे चरणां ते सांवले चरणां ते सीस
निवा लौ जय सिया राम॥

नहीं चाहीदा ए फल फुल मेवा।
इक चाहीदी ए चरणां दी सेवा।
नहीं चाहीदा ए फल फुल मेवा।
इक चाहीदी ए चरणां दी सेवा॥



दिनांक 29 मई 2016 का सबक्र

आत्मनिरीक्षण

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी
को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में
नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर
बने रहो:-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

आज सबने विचार करना है कि किन स्वभावों के कारण
हमारे मन के अन्दर खोट भरता है और हम परस्पर छल-
कपट करते हुए एक-दूसरे के साथ खोटा व्यवहार करते हैं।
ऐसा करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि इसी खोटेपन के
कारण हम कुरूप हो गए हैं और आप अप्रसन्न रहते हुए
दूसरों को भी अप्रसन्नता प्रदान कर रहे हैं। अतः अपने
अंतःकरण को ध्यान से देखना है और यह परखना है कि
जीवनकाल में आज तक हमने जो भी अपनाया है उससे
खोटापन हमारे स्वभावों के अंतर्गत हो गया है या अपने
यथार्थ रूप व इस जगत के सत्य के प्रति हमारे अन्दर
स्पष्टता है।

इस संदर्भ में हम जानते हैं कि कोई भी इंसान आज परिपूर्ण

नहीं है क्योंकि किसी के पास भी सम्पूर्ण ज्ञान नहीं है। ज्ञान प्रदान करने की जो व्यवस्था युगों से भौतिक शास्त्रियों व विद्वानों ने की हुई है उसके दुष्प्रभाव से इंसान इंसानियत में ढलने के स्थान पर स्वार्थपर बनता जा रहा है। परिणामस्वरूप कामनाओं का गुलाम हो, प्रतिस्पर्धावश एक दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ में वह विकारग्रस्त होता जा रहा है और उसकी मानसिकता दूषित होती जा रही है।

यही कारण है कि आज सामान्य व्यक्ति का मानसिक स्तर स्वयं तक ही सीमित रह गया है और दूसरों का हित व कल्याण उसके लिए कोई मायने नहीं रखता। चाहे उसे कितना समझा लो वह सद्-विचार पकड़ नहीं पाता। सजनों इसी व्यवस्था के दुष्प्रभाव को दृष्टिगत रखते हुए ही हमारी आदिकालीन संस्कृति के अनुसार बच्चों को बाल्यावस्था से ही परिपूर्ण आत्मिक ज्ञान प्रदान करने का विधान था ताकि जीव-जगत व ब्रह्म का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर व तदनुकूल आचार-विचार अपना कर, वे चरित्रवान बनें, नश्वरता में न उलझें और सारे संसारी झंझट व संकट समाप्त हो जाएं।

सजनों हम इस विधान को चरितार्थ करने की महत्ता को नहीं समझ पाए इसीलिए हमारे साथ-साथ हमारे बच्चे भी खोटे भाव-स्वभाव अपना बैठे और अब दुःख भोग रहे हैं। सजनों जो हुआ सो हुआ, अब हम खुद सँवरें, अपनी औलादों को सँवारें और आने वाली संतानों को भी इस दुःख भोग से बचाने में कामयाब हो सकें इसके लिए हमें सत्यता से अज्ञानता के कारण अन्दर घर कर गई बुराई के स्तर की जाँचना करनी है और फिर सच्चे दिल व बहादुरी से उस

बुराई व गुनाह को स्वीकार कर तत्क्षण ही हिम्मत जुटा कर उसको त्याग देना है। कहने का आशय यह है कि अब तक जितनी भी आयु बीत गई है, उस जीवनकाल के दौरान हमने अपने मन-मन्दिर में कितना खोट इकट्ठा कर लिया है, उस स्तर की आज जाँचना करनी है और साथ ही यह भी परखना है कि कहीं उस खोट से हमारा मोह तो नहीं पड़ गया।

जैसे सजनों घर में पड़ी वस्तुएँ जब अपनी लगने लगती हैं तो उनसे हमारा मोह पड़ जाता है वैसे ही मन-मन्दिर में काफ़ी समय तक घर किए हुए विकार जब हमारे स्वभाव का रूप ले हमारी प्रकृति का हिस्सा बन जाते हैं तो उनसे हमारा मोह पड़ जाता है। इस मोह के कारण कई बार तो हम धर्म तक हार बैठते हैं। अतः ऐसा अधर्म करने से हर इंसान बचा रह सके इसीलिए सबने सच्चे दिल से अपना आत्मनिरीक्षण करना है और देखना है कि दिन भर में हम कितने खोटे कर्म करते हैं व इस तरह खोटी कमाई कमाते हैं। निश्चित ही जो बताई युक्ति के अनुसार सत्यता से यह क्रिया करेगा उसके चेहरे की मुख-मुद्रा आत्मसुधार की इच्छा से खिल उठेगी और मन-मन्दिर में व्याप्त सारी गंदगी बाहर निकल जाएगी। इस तरह मन-मंदिर का कोना-कोना स्वच्छ हो जाएगा और अच्छे स्वभावों की सुगंधि चहुं ओर फैल जाएगी।

इसी संदर्भ में सजनों अब सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार, आत्मनिरीक्षण द्वारा अपने मन की खोट को ढूँढ निकाल, आत्मनियन्त्रण द्वारा आत्मसुधार करने वाले व्यक्ति की कहानी सुनते हैं व उससे प्रेरणा ले, आत्मसुधार करने के

प्रति दृढ़ निश्चयी हो जाते हैं:-

एक आत्मविस्मृत अचेतन अवस्था को प्राप्त इन्सान ने जब समभाव-समदृष्टि के सबक की युक्ति धारण कर, उसके अमल द्वारा, पुनः चेतन अवस्था को प्राप्त होने की बात सुनी तो जीवन के कष्ट-क्लेशों से छुटकारा पाने के लिए, उसने मन मंदिर में विद्यमान आत्मा में परमात्मा से, सम्पर्क स्थापित करने की चेष्टा करी। जब वह प्रयत्न करने के बाद भी अंतःप्रतिरोध के कारण वैसा नहीं कर पाया तो इस सम्पर्क के न स्थापित हो पाने की समस्या का हल जानने के लिए जैसे ही उसने ध्यान से अपने मन-मंदिर में झाँका तो उसे यह एहसास हुआ कि वह सतवस्तु रूपी उत्तम पदार्थ में झूठ रूपी घटिया वस्तु मिश्रित कर चुका है। यह ही उसके ख्याल की उस अभिन्न से भिन्न होने की व उसकी बुद्धि में खोट पैदा होने का कारण है तथा इसी के फलस्वरूप वह द्वेष पूर्ण धारणा व अन्य विषय-विकारों जैसी बुराईयों में उलझ गया है और उसका निज आत्मतत्त्व से सम्पर्क टूट गया है। उसे प्रतीत हुआ कि इसी कारण वह आत्मीयता के चलन से भटक, नकली दुनियाँ का नकली चलन अपनाकर, छल-कपट युक्त व निकृष्ट करनी कर रहा है व उन पाप कर्मों के फल भोगों की सज़ा भुगतते हुए एक हताश इन्सान की तरह मौत को अंग-संग देखते हुए, झुखते-रोते हुए, दुःखों से भरा जीवन जीने के लिए विवश हो चुका है। इसीलिए तो अब वह जो भी करता है वह अनुचित और बुरा ही करता है। अन्य शब्दों में उसे एहसास हुआ कि खोटों के संग मित्रता रखना, खोटी बात करना, बुरे कामों से कमा कर खाना, बेईमानी से कमाया हुआ धन बुरे कामों में

लगाना, सबके साथ दुष्टता करना, एक आलोचक की तरह बड़े-छोटे का लिहाज़ किए बगैर भला-बुरा कहना ही उसके नीच इन्सान बनने का हेतु है।

इस प्रकार जब खोटापन उसे अपने स्वभाव के अंतर्गत नज़र आता है और मनुष्यत्व अनुसार व्यवहार करने में असक्षम वह अपना विनाशक अंत नतीजा देखता है तो अपने जीवन में इतना बुरा समय आने का कारण उसे समझ में आता है। कारण समझने पर भी जब वह असहाय उससे उबरने हेतु अपने आप को क्षीण व कमज़ोर पाता है तो आत्मग्लानि से भरपूर वह इस भयावह दुःख में क्षणिक सुख का एहसास करने के लिए दूसरों को इस अमानवीय स्वभावों को अपना देने के प्रति सावधान करने हेतु, नित्य प्रति सुबह उठते ही गली-गली घूम कर पूरी आवाज़ से अपना खोटापन स्वीकारते हुए इस प्रकार कहते हुए रोता हुआ गाता है कि हे मेरी बनत बनाने वाले परमेश्वर ! यह मुझे क्या हो गया है, मुझे समझ नहीं आ रहा क्योंकि आप परिपूर्ण ने मुझे अपने जैसा ही परिपूर्ण बना कर इस मृतलोक में भेजा पर यह क्या हो गया, यह क्या हो गया, यह क्या हो गया कि मेरे पवित्र मन में खोट भर गया पर मुझे एहसास ही नहीं हुआ। इस प्रकार आप परिपूर्ण से मेरा सम्पर्क टूटते ही मैं अपूर्ण हो गया और शब्द विचार से हट सांसारिकता में खो गया। हे जगतवासियो ! अब जब मैं दुराचारी, सर्वशक्तिमान ईश्वर को देखता हूँ और एक निर्बल इंसान के रूप में खुद को देखता हूँ तो जानते हो मुझे क्या एहसास होता है, मैं बताने लगा हूँ, ध्यान से सुनो ताकि आत्मोद्धार हेतु जैसा करने का निश्चय मैंने लिया है आप सब भी वैसा करते हुए पूर्णतः को प्राप्त हो

जाओ:-

मैं खोटा महाराज खालस सोना,
मैं खोटा महाराज खालस सोना।
खोट कढां सजनों तां मैं जाणा,
खोट कढां सजनों तां मैं जाणा।।

खोट न राहवे इस बदन में,
फिर मैं अपना आप पहचाना।
आप पहचाना तां मैं जाणा,
अपना आप पहचाना तां मैं जाणा।।

पकड़ां सजनों मैं अपने आप नूं,
फिर खोट न राहवे इस बदन में।
खोट न राहवे सजनों इस बदन में,
खालस सोना होवां तां मैं जाणा।।

खालस सोना हो कर चमकूं जगत में,
फिर मैं मेल महाराज नाल खावां।
मेल महाराज नाल खावां तां मैं जाणा,
मेल महाराज नाल खावां तां मैं जाणा।।

वह इसी तरह गाता रहता है और सुनने वालों में से कोई कुछ कहता है तो कोई कुछ, पर उस गुनाह स्वीकारने वाले को कोई भी रास्ता दिखाने की चेष्टा नहीं करता। ऐसे में एक दिन जैसे ही उस दीन-हीन की पुकार, सबकी सुनने वाले उस ईश्वर तक पहुँचती है तो वह दयालुता के भंडार उसको खोटेपन से उबर विशुद्ध हृदय वाला इन्सान बनने हेतु, आत्मनिरीक्षण द्वारा अपने मन में व्याप्त अच्छाई-

बुराई को समझते हुए, सत्य धारणा हेतु, आत्मनियन्त्रण रखते हुए, आत्मोद्धार करने की युक्ति इस प्रकार बताते हैं:-

ईश्वर कहते हैं कि हे इन्सान जो समभाव-समदृष्टि का सबक आपने सुना है, केवल उसको बार-बार गाने से कोई सुधार नहीं होने वाला, अगर आप बुरे इंसान से अच्छा इंसान बनना चाहते हो तो उस सबक को विधिवत् अमल में लाने हेतु सर्वप्रथम सजन-भाव अपनाओ। फिर उसी भाव पर स्थिर बने रहने हेतु बताई युक्ति के अनुसार आत्मनिरीक्षण करो तो सुनिश्चित ही सफलता आपके कदम चूमेगी।

अभी सजनों आपने सुना व समझा कि कैसे एक खोटे इन्सान ने सबके सामने अपने खोटेपन का सत्य स्वीकारने का साहस किया और सुधरने की मनोकामना सबके समक्ष रखी ताकि अन्यो को भी इससे लाभ प्राप्त हो सके। अतः सजनों हमारे लिए बनता है कि हम भी आत्मनिरीक्षण द्वारा अपने आप को समझें और हम में से जिसको भी अपने मन में किसी प्रकार के खोट का एहसास हो वह हमारी भांति, यह बोलकर, अपने मन का खोट स्वीकार सकता है :-

“मैं छली-कपटी, झूठ-चतुराईयों द्वारा अपना स्वार्थ सिद्ध करने में माहिर आज तक सबके समक्ष अच्छाई का मुखौटा लगाकर सबको ठगता रहा और प्रशंसा प्राप्त करता रहा परन्तु अब जब समभाव-समदृष्टि का सबक समझ में आ गया है तो मैं इस आत्मोद्धार की व्यवहारिक युक्ति को सहर्ष अपनाते हुए सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर चलना स्वीकारता हूँ और सबसे भी वैसा ही करने की प्रार्थना करता हूँ।”

अब ध्यान से सुनो कि आत्मोद्धार हेतु ईश्वर उस सजन को इस उत्तम कार्य की सिद्धि के लिए शारीरिक-मानसिक रूप से निरोगी होने की क्या युक्ति बताते हैं:-

ईश्वर उस सजन को कहते हैं कि सर्वप्रथम याद रखो हमारे शरीर की बनत के अनुसार आत्मविस्मृति होने पर मनुष्य के शरीर में उत्पन्न जीव-विषों द्वारा उसका शरीर व रूधिर दोनों ही विषैले हो जाते हैं। इसलिए इंसान के लिए अपने व्यवहार, प्रवृत्तियों तथा अपनी योग्यताओं-अयोग्यताओं, अभिप्रेरणाओं आदि को स्वयं ही समझते रहने का विधान है ताकि ईमानदारी व निष्पक्षता से अपनी भूलों, अपने दोषों और अपनी कमियों का मूल्यांकन कर उसके अन्दर दोष परिहार की सद् इच्छा जाग्रत हो जाए।

जानो कि इस विधान के विपरीत चलन के प्रभाव से आपके शरीर में भीषण रोग व दोष उत्पन्न हो चुके हैं इसीलिए आप उन प्राणनाशक रोगों व दोषों से इतने पीड़ित हैं कि चाह कर भी आत्मसुधार नहीं कर पा रहे यानि रोते-झुखते हुए जीवन व्यतीत कर रहे हो। जानो यह कैसे हुआ? यह इसलिए हुआ क्योंकि आप ने ईश्वर के अमृत रूपी शब्द विचारों का रसपान अपने भाव-स्वभाव के अंतर्गत करने के स्थान पर हर बुराई के हेतु काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी जगतीय विष को मन में धारण कर उन्हीं अनुसार पनपने वाले विषय-विकारों के रस को ही जीवन का रस समझ कर मृत्यु के रास्ते को अपना लिया। इसीलिए अब अप्रिय या कटु बोलना, बुरे कर्मों का फल संचित करना, हर वक्त कुढ़ते रहना, तीव्र क्रोध करना व इनके प्रभावों से दुःखी व निराश रहना आदि

यह सब आपके हृदय से आनन्द का समाप्त होना दर्शाते हैं। इसलिए सम्भलो ! आपने जो बुराई का विष पिया है वह अपनी संतानों को मत पिलाओ और इस प्रकार इंसान रूप में अपने माता-पिता होने का फर्ज प्रसन्नचित्तता से ठीक निभाना सीखो। याद रखो बुरे काम का परिणाम बुरा ही होता है। अच्छा परिणाम प्राप्त करने के लिए समभाव-समदृष्टि के सबक पर पढ़-गुढ़ कर उसे अमल में लाने योग्य बनो और इस प्रकार अपनी ही आत्मशक्ति द्वारा खुद पर सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर अटल बने रहने हेतु आत्मनियन्त्रण रखना सीखो व अपना सुधार करो। याद रखना कि आत्मसुधार के लिए अपनी बुराईयों से मुक्ति पाना अनिवार्य है तथा बुराईयों से मुक्त होने के लिए उन्हें पहचानना आवश्यक है। यह पहचान आत्मनिरीक्षण द्वारा ही संभव है। इसी के द्वारा आप अपने संबंध में स्व-संस्थापित गलतफ़हमियों से बाहर निकल कर निरपेक्ष भाव से अपनी सही तस्वीर देख सकोगे। यहाँ सावधान रहना कि एक बार आत्मसुधार की ओर बढ़ गए तो फिर इस सुधार प्रक्रिया के दौरान किसी विपरीत चलन वाले के सम्मुख हथियार मत डालना अपितु हिम्मत से काम लेना। उस वक्त यह मानना कि आपके लिए ऐसा कर पाना संभव है। इसलिए कुछ सोचना मत बस करना, करना और जो भी करना सर्वहित को ध्यान में रखते हुए एक अच्छा इंसान बनने के लिए ही करना। ऐसा करने में सफल होने पर ही अपना सम्मान मानना।

इस बात को समझते हुए उस इन्सान ने जब ईश्वर को कहा कि मैं ऐसा करने के लिए तैयार हूँ तो ईश्वर ने आगे कहा कि

अब पुनः अपने मन में झॉँको और अंतःकरण रूपी दर्पण पर विद्यमान अच्छाईयों व बुराईयों को जानो और विचारसंगत उनका कारण समझने की कोशिश करो। इस प्रकार मन-वचन-कर्म द्वारा अपने बुरे भावों, वृत्तियों, गलतियों, त्रुटियों, दोषों को जानने-समझने के पश्चात् उन्हें फिर से करने की भूल से बचने के लिए अपनी धारणा क्रिया पर आत्मनियंत्रण रखो। यह आत्मदर्शी बुद्धि द्वारा अपने अन्दर मानवीय गुणों में वृद्धि करते हुए धीरे-धीरे सूक्ष्म से सूक्ष्म बुराई या दोष से निजात पाने की बात है। इससे हृदय में मानवीयता पुष्ट होती है और व्यक्तित्व निखरता है। इस क्रिया से भ्रमित बुद्धि, प्रकाशित बुद्धि में प्रवृत्त हो जाती है और हम अपने मन और इन्द्रियों पर पूर्ण नियन्त्रण रखते हुए एकता और एक अवस्था में बने रह पाते हैं।

इतना जानने-समझने के पश्चात् भी सजनों जब हमारी तरह उस सजन के मन में आत्मनिरीक्षण व आत्मनियन्त्रण द्वारा आत्मोद्धार करने की युक्ति को अपनाने की रूचि उत्पन्न न हुई और उसका अपनाए विषय-विकारों से उबरना असंभव हो गया तो उसने अपनी इस असफलता के कारणों से उबरने के लिए निःसंकोच होकर, पुनः ईश्वर के आगे गुहार की। उसकी गुहार सुन ईश्वर बोले कि हे मानव ! मनुष्य का जीवन एक उद्यम के समान है। जीवन के दौरान प्रगति और विकास करने के लिए निरीक्षण-समीक्षण की विशेष आवश्यकता होती है। इसके बिना प्राणों में घुला दुर्गुणों व दोषों का भीषण हलाहल यानि ज़हर दूर नहीं होता। अतः मानवीय दुर्वृत्तियों के विकट ताप का शमन करने के लिए आत्मनिरीक्षण करो कि कहीं आपका यत्न अतिरिक्त

आत्मविश्वास, अहंकार, स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ समझने का भाव और दूसरों को तुच्छ समझने की प्रवृत्ति के कारण तो हार नहीं खा रहा। यदि इनमें से कोई भी कारण अपने पर लागू होता प्रतीत हो रहा हो तो इस संदर्भ में जान लो कि :-

1. अतिरिक्त आत्मविश्वास के कारण व्यक्ति अपनी कमियों को नहीं देख पाता।

2. अहंकार उसे दूसरे की अवमानना करने पर विवश करता है और अहंकारी कभी भी अप्रिय सत्य को सहज रूप से स्वीकार नहीं कर पाता है।

3. स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ और दूसरों को स्वयं से हीन समझने की दूषित-दुराग्रही वृत्ति उसके चित्त को विकृत बनाती है। उसके विवेक को कुंठित करती है और उसे आत्मनिरीक्षण के पथ से दूर ले जाती है। अतः आत्मनिरीक्षण का मूल्य विकसित करने वालों को चाहिए कि वह इन उपर्युक्त दुष्प्रवृत्तियों से दूर रहें।

इसके पश्चात् प्रभु ने उस व्यक्ति को कहा कि सर्वप्रथम निर्भयता से साहसपूर्वक अपनी कमियों को स्वीकारो और दृढ़ संकल्प लो कि अब मैं भूल कर भी किसी से वैर नहीं करूँगा और अपने उद्धार हेतु, क्षण-प्रतिक्षण अपनी जाँचना करते हुए, इस आत्मनिरीक्षण की क्रिया को भली-भाँति सम्पन्न कर, सजन-भाव पर स्थिर बने रहने हेतु अवश्य सफलता प्राप्त करूँगा। इस प्रकार जब प्रभु की बात उस व्यक्ति को समझ में आ गई और अन्दर से उसने इस क्रिया को करने हेतु अपने आप को तत्पर पाया तो वह हाथ

जोड़कर नतमस्तक हो बोला - हाँ जी, अब मैं तैयार हूँ और इस तरह वह अपने निर्धारित लक्ष्य प्राप्ति में लगन से रत हो गया और अंततः सफलता को प्राप्त हुआ।

हमें भी सजनों उस व्यक्ति के इस जीवन वृत्तांत से सबक सीखना है और अपने जीवन में आत्मनिरीक्षण की अमूल्य भूमिका को समझना है ताकि हम भी इस प्रक्रिया को कुशलता से संपादित कर आत्मनियन्त्रण रखने में सफल हों और इस प्रकार आत्मोद्धार कर सकें।

इस संदर्भ में सजनों संक्षेपतः जान लो कि आत्मनिरीक्षण वह दर्पण है, जो हमें हमारी वास्तविकता से अवगत कराता है। कहते हैं कि जब तक कुरूप व्यक्ति दर्पण में अपना मुख नहीं देख लेता तब तक स्वयं को दूसरों से अधिक रूपवान समझता रहता है। इसी तरह एक कहावत है कि जब तक ऊँट पहाड़ के नीचे नहीं आता तब तक वह अपनी ऊँचाई पर घमंड करता है। ठीक इसी प्रकार आत्मनिरीक्षण का दर्पण भी मानव को उसकी कुरूपता का बोध कराता है और आत्मनिरीक्षण के पर्वत तले ही वह अपने सही स्वरूप को पहचान कर झूठे घमंड से छुटकारा पाता है और उसमें विनम्रता आ जाती है। इस प्रकार विनय के पथ से वह मानव आत्मोद्धार की पात्रता प्राप्त कर लेता है। याद रखो यह दूसरों पर निर्भर रहने के स्थान पर स्वयं प्रेरणा से सुखद व मधुर परिणाम प्राप्त करने की बात होती है। इसलिए हिम्मत दिखाओ मेरे सजनों और विधिवत् आत्मनिरीक्षण क्रिया अपनाओ। इस तरह किसी भी कारण मन में उपजने वाले दोषों व विकारों के भाव रूप में क्रियाशील होने से पहले ही

बाहर निकाल फैंको। इस नियम पर बने रहना अपनी भावना व स्वभाव की निर्मलता का हेतु मानो। इस प्रकार अपने मन का खोटापन हटा खालस सोना हो जाओ और अपने आप को जान व पहचान जाओ और खालस सोना होकर इस जगत में चमको व महाराज जी से मेल खाओ। इस संदर्भ में अब ध्यान से सुनो:-

बढ़ना चाहते हो गर बुराई से अच्छाई की ओर
तो अपने दोषों से पर्दा उठाना होगा
पर्दा उठते ही जो दोष प्रकट होंगे
उन्हें हृदय से खुद ही मिटाना होगा
अपनी करनी पे पर्दा रखने की जगह
जो भी करते हो निःसंकोच करो
कुछ भी करते दुनियां से क्यों डरते हो
गर डरना भी है तो खुदा का खौफ रखो
सत्यता से अगर जीना चाहते हो
तो इस नीति का बखूबी इस्तेमाल करो
इस तरह आत्मसुधार करने हेतु
आत्मनिरीक्षण क्रिया का प्रयोग करो।।



दिनांक 5 जून 2016 का सबक्र

सबने खुद में रहना है। याद रखो जब इन्सान खुद में रहता है तो वह सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में जो विदित 'विचार ईश्वर है अपना आप' इस सत्य को आत्मसात् कर रहा होता है। अतः खुद में रहने की महत्ता को समझो और पूरी प्रसन्नता व दिलचस्पी में आकर इस विचार को पकड़ने की कोशिश करो। अब ध्यान से सुनो:-

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहो:-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों यही हमारे जीवन का लक्ष्य है और उस लक्ष्य तक पहुँचाने वाला हमारा मित्र ईश्वर गुरु मार्गदर्शक के रूप में हमारे संग है। अतः उस आद् अक्षर के अजपा जाप द्वारा आत्मा में जो परमात्मा है उसे प्रकाशित कर लो।

इस संदर्भ में यह सत्य तो हम मानेंगे कि हम मानव जाति के सदस्य हैं और मानव जगत में रहते हैं। इस मानव जगत में विचारशीलता से श्रेष्ठ व्यक्तियों की तरह जीवन जीने के

लिए हमारे पास ईश्वर प्रदत्त, अंतःकरण की एक वृत्ति मन है जोकि वह शक्ति है जिससे हम वेदना, इच्छा, संकल्प आदि का अनुभव करते हैं। जानो कि जहाँ मनः शुद्धि द्वारा मनुष्य यथार्थ अनुभव करने में सक्षम होता है तथा उसकी अन्य वृत्तियाँ यथा बुद्धि, चित्त व अहंकार निर्मल अवस्था को प्राप्त रहती हैं, वहीं मन की अशुद्धि से इससे बिलकुल विपरीत परिणाम उसे भोगने पड़ते हैं। मन की पहली अवस्था मनुष्य के होश में रहने की सूचक होती है व दूसरी अवस्था मदहोश होने की द्योतक होती है। जानो जब इंसान होश में रहता है तभी वह सजनता यानि मानवोचित गुणों का परस्पर वर्त-वर्ताव करते हुए, हर अच्छी-बुरी परिस्थिति में एकता, एक अवस्था में सुदृढ़ता से बना रह पाता है वरना पशुता यानि पशुओं के समान मूर्खता, निर्दयता या अति कामुकता आदि वाले स्वभाव/व्यवहार अपना बैठता है। यह मानव धर्म से विमुख हो पशु-धर्म अपनाकर, विलासी व्यक्ति की तरह, भोग विलास में फँस, कामी/लम्पट व्यक्ति बनने की बात होती है। यही सुख-भोग रस वृत्ति उसे, परमार्थ के रास्ते से भटका, स्वार्थपर बना देती है। यह उसके धार्मिक वृत्ति से हट, निराधार व असत्यपूर्ण मनगढ़ंत रास्ता अपनाकर, मानसिक संतोष जो अपने आप में मन की प्रसन्नता व मानसिक शक्ति का हेतु होता है, से च्युत होने व चंचलता के स्वभाव को प्राप्त होने की स्थिति होती है। इस मनोवेग के प्रभाव से ख्याल की स्वच्छता, जिह्वा की स्वतन्त्रता व दृष्टि की कंचनता का भंग होना सुनिश्चित हो जाता है और असत्य धारणा का सिलसिला आरम्भ हो जाता है। इस तरह वह विचारमूढ़ इंसान अपनी बुद्धि का प्रयोग करने में असमर्थ

हो जाता है और अन्यो के उपदेश उसके मार्गदर्शक बन जाते हैं। अन्य शब्दों में यह स्वतन्त्रता खो अन्यो की अधीनता स्वीकारते हुए गुलामों की तरह नकारात्मक जीवन जीने की बात होती है। हम में से कोई भी इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति को प्राप्त न हो इस हेतु सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में श्री साजन जी कहते हैं:-

विचार ईश्वर आप नूं मान।
अवविचार ईश्वर इक जान॥

विचार इक अपना आप ही मान।
अवविचार कुल दुनियां जान॥

विचार करो है ईश्वर अपना आप।
अवविचार ईश्वर है इक साथ॥

ईश्वर है अपना आप प्रकाश।
ईश्वर है जे अजपा जाप॥

अवविचार जेहड़ा चलदा है सजन,
चार चुफेर हार ओ खांदा है।
विचार है जित तुम्हारी ओ सजनों,
हर पासियों ओ जितदा रैंहदा है॥

अवविचार है जे कवलड़ा रस्ता,
हर पासियों ओ ठोकरां खांदा है।
विचार है जे सवलड़ा रस्ता,
सदा ही ओ जितदा रैंहदा है॥

शब्द-

हम तो हैं आज्ञाद, हुण किसदी सुनूं फ़रियाद,
सजनों हुण किसदी सुनूं फ़रियाद।
एहो फ़रियाद है जे अपनी कमाई,
एहो कमाई करो सजनों सुखदाई, सजनों करो सुखदाई।।

इस सत्य को मानते हुए सजनों आत्मस्वरूप परमेश्वर से ही प्यार करो और सारे जगत में उसी का ही पसारा समझते हुए परस्पर सजनता का व्यवहार करो। इस तरह उसी परमेश्वर का सहारा लेकर, उनके निर्दिष्ट विचारों पर मज़बूती से डटे रहो। इस हेतु सजनों खुद में रहो। आओ जानें कि खुद में रहने से क्या होगा:-

खुद में रहो

खुद में रहे तो खुदा ही बनोगे
खुदी में रहे तो खुदाई मिलेगी
खुदा से मिलन तो मिलन ही रहेगा
खुदाई से यकीकन जुदाई मिलेगी

खुदाई दे दे चाहे कितनी ही खुशियाँ
आखिर तो तुमको रूसवाई मिलेगी
जिस शै से भी तुम जोड़ोगे नाता
वह हर शै तुम्हें हरजाई मिलेगी

खुद में रहे तो खुद ही खुदा हो
वरना इन्सान की जगह शैतान हो
कैसे समझोगे फिर सत्य-धर्म की बातें
हर बात में ही चतुराई मिलेगी

मानो यह दुनियां है इतनी हरजाई
कुछ भी कर लो अंत में बेवफाई
जिस माया ठगनी के पीछे हो सौदाई
उसी माया ने ही है सबकी होश भुलाई

खुदाई में यूँ ही भटकते रहे तो
कैसे तुम्हें रौनाई मिलेगी
इसीलिए सीखो हाँ सीखो खुदापरस्त बनना
उसी के नूर से ही नूराई मिलेगी

नूराई मिली तो इतने सुन्दर बनोगे
कि हर जानिब से तुम्हें बधाई मिलेगी
बस फिर तो ऐसा करतब होगा
कि खुद में ही खुदा प्रकट होगा

फिर जो भी गुण मिलेंगे खुदा से
उनमें जीवन की गहराई मिलेगी
तभी निष्काम रास्ते पर खुद चल सकोगे
और हर कदम पर केवल भलाई मिलेगी

भलाई मिलेगी, भलाई मिलेगी,
भलाई मिली तो शहनाई बजेगी।

अगर चाहते हो कि हमारे घर में भी शहनाई बजे और हमारी
सुरत अटल सुहागन बनकर अपने असली घर को प्रस्थान
करें तो इस तथ्य को समझदारी से समझो व अच्छे व बुरे
मानव होने के प्रति अपनी पहचान करो। यह याद रखो कि
जहाँ अच्छे मानवों की सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर
चलते हुए शान बढ़ती है वहीं बुरे मानवों की दुराचार,

भ्रष्टाचार व व्यभिचार में फँसने के कारण शान घटती है।

इस प्रकार अच्छा मानव तो अपना नाम रोशन कर लेता है और वह दीप्तिमान पुरुष जगत महान कहलाता है। अतः स्थिरता से अच्छा मानव बने रहने हेतु याद रखो कि सांसारिक विषय-विकारों रूपी माया ठगनी ने ही सारी दुनियाँ उलझाई हुई है और इंसान को स्वार्थ के रास्ते पर अग्रसर कर, उससे खोटी कमाई कराते हुए, अपने सच्चे घर की राह भुलाई हुई है। इसीलिए आज का मानव कुकर्मों और अधर्मों के फल भोगता हुआ अपनी होश गँवा बैठा है।

हम में से किसी के साथ ऐसा न हो इसीलिए हमारी सबसे प्रार्थना है कि सभी समय रहते ही संभल जाओ। इस तरह इस अनमोल इंसानी चोले की कीमत पाओ। इसे ही अपना जीवन बनाने हेतु उत्तम पुरुषार्थ मानो। इस हेतु सदा याद रखो:-

खुद से हटकर खुदी अपनाना
मानो खुदकुशी है, हाँ खुदकुशी है
खुदगर्ज बनने की भूल मत करना
वरना जीते जी ही पड़ेगा मरना

मनमानी की राह नहीं है आज्ञादी
अरे ऐसा करना तो है बस बरबादी
ऐसा किया तो द्वैत में उलझकर
तिनकों की तरह ही बिखर जाओगे

एक दूसरे की जड़ें खोदते-खोदते
सच्चाई-धर्म पर खड़े नहीं रह सकोगे

बहुत कठिनाई से मिला है यह जीवन
मानो ईश्वर की रक्षा में ही रक्षित रहोगे

इसी में ही अपना कुशल मंगल मानो
शुरू कर दो उचित बात सुनना व कहना
अगर बना मन मन्दिर की जगह मैला
तो पी-पी मरोगे वही ज़हर विषैला

इसलिए कहते हैं खुदी में आ अपनी कब्र मत खोदो
डरो उस खुदा से और उसी के ही हो लो
सीखो सिखाओ खिलखिला के हँसना
अगर चाहते नहीं झुखने-रौने में फँसना

इसीलिए हमारी सबसे प्रार्थना है कि इधर-उधर भटकने की
जगह, इस तरह का पावन चलन अपनाकर ही सीखो अपने
ही घर में एकरस अटल सुहागन की तरह वसना और जीवन
के असली आनन्द को प्राप्त कर उसे ही सबमें बाँटने का
परोपकार दिखाओ। अब सब हर्षित मन से भावयुक्त हो, ऐसे
हँस कर दिखाओ कि जीवन से उदासी का चलन मिट जाए
और हृदय बहार की तरह खिल उठे। इन्हीं शुभकामनाओं के
साथ।



दिनांक 12 जून 2016 का सबक्र

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी
को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में
नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर
बने रहो:-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजन जी:- आप में जो कोई भी आज अपना खास गुण दर्शा
सकता है वह हमारे पास आए।

पहला सजन:-सजनो मैं वो कर सकती हूँ जो कलुकाल
वासियों में से कोई विरला सजन कर सकता है।

सजन जी:- और कोई सजन है?

दूसरा सजन:-

कुछ तो मैं भी कर सकती हूँ।

तीसरा सजन उठ कर आता है और कहता है कि कहीं आप
उस गुण की बात तो नहीं कर रहे जो मैं दर्शा सकती हूँ।

पहले दोनों सजन:- आप क्या दर्शा सकते हो जी?

तीसरा सजन:- मैं जीवन की हर परिस्थिति में हँस सकती हूँ, हँस सकती हूँ, हँस सकती हूँ और मैं हँसते-हँसते औरों को भी हँसने पर मजबूर कर सकती हूँ।

पहले दोनों सजन :- यह तो आपने हमारे मन की बात कह दी। चलो हम तीनों मिल कर यह गुण दर्शाते हैं।

सजन जी बाकी सजनों की तरफ़ देखते हुए कहते हैं कि अगर ये कर सकते हैं तो आप सब भी तो यह कर सकते हो। सजनों मौके का फ़ायदा उठाना सीखो और कार्य सिद्धि हेतु दृढ़ निश्चयी होकर आगे बढ़ो। अपने ज्ञान व क्षमता के प्रति भ्रमित मत होवो। अब बताओ क्या आप सब भी ऐसा कर सकते हो?

हाँ जी।

तो फिर सब मिल कर यह क्रिया करो।

सजनों इस गुण में स्थिर बने रहने के लिए सब हर्षित मन से भावयुक्त हो, ऐसे हँस कर दिखाओ कि जीवन से उदासी का चलन मिट जाए और हृदय बहार की तरह खिल उठे। याद रखो अन्दरूनी वृत्ति में भी जो सुरत सदा हँसती रहती है, ईश्वर उसे प्रसन्न होकर कंठ से लगा लेते हैं। अतः इस क्रिया को करना आवश्यक मानो। इस संदर्भ में अब ध्यान से सुनो कि इस हेतु हमें क्या करना होगा:-

झुखना रोना छोड़ो
खुशी का चलन अपनाओ
हँसो और हँसाओ
सुख से जीवन बिताओ
और खुशी के गीत गाओ

झुखना तो है मन की व्यथा
बनता है जो दुःख की कथा
जो सुने वही उदास
जीवन से होता निराश

रोना झुखना छोड़ने पर
हो जाएगी एक दृष्टि
और कर पाएंगे सर्व सर्व सुशोभित
उस सर्वव्यापक भगवान का एक दर्शन

आत्मबोध के होते ही
मन संकल्प रहित रहेगा
यह होगा मन से व्यथा का मिटना
और अपने यथार्थ स्वरूप का दिखना

बस उस से प्यार होते ही
छा जाएगी दिल में बहार
एकता एक अवरस्था होगी
मिट जाएगी सब तकरार

यह होगा समभाव नज़रों में कर
समदृष्टि हो जाना
और सजन भाव का व्यवहार अपना
मृतलोक पर फ़तह पाना

सजनों यदि आप सब सदा ऐसे ही हँसते रहना चाहते हो तो आपको अपना मन दुनियाँ से आज़ाद रखना होगा। कैसे, अब यह बताने लगे हैं:-

सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है:-

**इस नगरी तों मन आज़ाद रखो, स्थान अपना जे पावणा।
साडे इष्ट देव श्री रामचन्द्र नाल मेल तुसां खावणा।।**

ईश्वर शरीरधारी आत्मा से कहते हैं कि चाहे आप मेरा अंश हो पर शरीर धारने के बाद आप इस जगत में विचरने हेतु स्वतन्त्र हो। अतः अपनी वर्तमान स्थिति को समझो और मुक्त भाव से जीवन के समस्त कर्म-कर्तव्यों का पालन करते हुए, इसी मुक्त अवस्था में बने रहो। जानो कि यह सबसे उत्तम भाव है, इसीलिए इसी भाव के प्रेमी बनो व जो ईश्वर हृदय में हर समय उपस्थित है, उसी के विचारों पर सुदृढ़ बने रहो। इस तरह सजनों बिना जप-तप-संयम के ही स्वतः आत्मबोध बना रहेगा। फिर न तो किसी अन्य का आश्रय लेना पड़ेगा और न ही किसी के दबाव में आओगे यानि आचार-व्यवहार द्वारा निषंग आत्मीयता की विचारधारा पर मज़बूत बने रहोगे और अपनी जीवन यात्रा के दौरान सफल होने हेतु, समभाव-समदृष्टि के सबक अनुसार, विवेकशीलता से जीवन जी सकोगे। कहने का आशय यह है कि फिर जो इस जगत में करने आए हो, वह कार्य निर्विघ्न सिद्ध कर सकोगे।

याद रखो इस के विपरीत यदि किसी भी कारण अन्य भाव अपना लिए तो वह आपको बंधनमान कर, अपना गुलाम बना

लेंगे। ऐसा होते ही आप वर्तमान यानि जो इस समय अस्तित्व में है, उसमें जीवन जीने के स्थान पर जीवन में बीती हुई या आगे आने वाली परिस्थितियों में उलझ कर, कभी भी सुख से जीवन नहीं जी सकोगे। परिणामतः या तो जो घटित हो चुका है, उसी को याद कर-कर के उसी के प्रभावों से पीड़ित रहोगे या फिर व्यर्थ ही भविष्य के सपने संजो उन्हीं के ख्वाबों-ख्वालों की उड़ान भरते रहोगे। भूत-भविष्य का यही आवेश आपकी जीवन उन्नति में बाधा का कारण बनेगा यानि आप उन्नति नहीं कर पाओगे।

याद रखो इस तरह उन्नति रूकने से जीवन रूकता है और मन में गंदगी फैलती है। जब जीवन निरंतर गतिमान रहता है तो ही मन शुद्ध व साफ़ रह पाता है क्योंकि हमारा ध्यान प्रगति की ओर लगा होता है। अतः आवेशित मत होवो क्योंकि इस आवेश के वशीभूत होने पर स्वाभाविक रूप से या तो अभिमान आपको नष्ट कर देगा या फिर क्रोधी बन पागलों जैसा व्यवहार करने लगोगे। तात्पर्य यह है कि फिर हठी बन, अपनी धुन अनुसार ही सब कुछ करोगे और सांसारिक विषयों के नशे में धुत होकर, अपनी सुध-बुध इस तरह से खो बैठोगे कि अपना भविष्य उज्ज्वल बनाने की सामर्थ्य ही नहीं रहेगी। याद रखो इस प्रकार का जीवन जीने से सुख-दुःख ही प्राप्त होगा। वही सुख-दुःख ही फिर आपको झुखने-रोने के स्वभाव में उलझा, आपके मन की स्थिरता व चित्त की प्रसन्नता हर लेगा और आप का ख्याल व ध्यान दोनों नकारात्मक हो जाएंगे। इसके प्रभाव से सत्य धारणा नामुमकिन हो जाएगी और अज्ञानवश झूठ का रास्ता प्रिय लगने लगेगा। जानो यह विनाश को प्राप्त होने की बात होगी।

ऐसा इसीलिए कह रहे हैं क्योंकि जैसे-जैसे बीते हुए समयकाल के दृश्यों के सूक्ष्म शरीर में छायावत् दिखाई देंगे तो उनके प्रभावों से एक तो पंच भूतों जिनसे यह शरीर बना हुआ है उनका संतुलन बिगड़ जाएगा यानि निरोगी अवस्था के आधार वात-पित्त-कफ का संतुलन गड़बड़ा जाएगा। दूसरा मन में भी अंधेरा छा जाएगा। फिर मन-मन्दिर में सुशोभित ईश्वर को कैसे देख पाओगे? कैसे हृदय वेद-विदित को पढ़ पाओगे? इस तरह शारीरिक व मानसिक रूप से व्याधि ग्रस्त हो अस्वस्थ हो जाओगे। शरीर और मन के निर्बल होते ही औरों को सफल व सम्पन्न होते देख, दया भाव की जगह अन्दर ईर्ष्या व वैर भाव पनपने लगेगा। यह चेतन अवस्था की जगह अचेतन अवस्था को प्राप्त होने की बात होगी। परिणामस्वरूप न तो वर्तमान में संतोष, धैर्य पर बने रह, सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर अग्रसर रहना संभव हो पाएगा और न ही नेक कमाई कमा कर स्वतन्त्र रूप से मनुष्यत्व अनुरूप आन-बान-शान से जीवन जीना संभव हो पाएगा यानि वैभव और यश-कीर्ति दोनों का ही नाश हो जाएगा। यह होगा कि न तो आप भूत से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त कर सके और न ही भविष्य में मोक्ष प्राप्ति के योग्य रहे।

अतः सजनों अपने भूत को अच्छा बनाने व भविष्य को हाथ में रखने हेतु वर्तमान में ही समभाव-समदृष्टि के सबक अनुसार सजन भाव पर सुदृढ़ बने रहते हुए जीवन जीना सीखो। इस संदर्भ में जो अब तक कर चुके हो उसको सोच मत बनाओ अपितु जो आज करना बनता है, उस पर विचारसंगत इस तरह से क्रिया करो कि भविष्य में सब

अच्छा हो और आप भविष्य में होने वाली आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्वतन्त्र रूप से सम्पन्न होवो। याद रखो इस कार्य की सिद्धि की वही युक्ति है जो आपको शास्त्र बता रहा है यानि संतोष-धैर्य में बने रह, सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर संकल्प रहित हो, निरंतर बढ़ते चलो व इस तरह परोपकार कमाओ अर्थात् वर्तमान में ही ऐसी नेक कमाई करो जो सुखदाई हो। इससे स्वतः ही भूत-भविष्य सँवर जाएगा और किसी के भी आगे सहायतार्थ कुछ माँगने के लिए झुखते-रोते हुए हाथ नहीं फैलाने पड़ेंगे।

इसके प्रति सावधान रहो सजनों क्योंकि यदि समभाव-समदृष्टि के विपरीत कोई भी दुनियावी चलन अपनाया तो जीवन में जो भी पाना चाहोगे उसके लिए दूसरों के आगे फ़रियाद करनी पड़ेगी। यह होगा अपनी सहायता व आवश्यकता पूर्ति के लिए दूसरों के आगे पुकार करना। हो सकता है अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए तब आपको परनिंदा, चुगली व शिकायत आदि का सहारा ले उनकी चापलूसी भी करनी पड़े। अगर ऐसा हुआ तो याद रखो एक खरीदे हुए नौकर जैसा निरादरी व तुच्छता से भरा जीवन जीना पड़ेगा यानि यह अपने आप में राजा से रंक बनने की बात होगी और एक याचक की तरह किसी दूसरे से भिक्षा प्राप्त करना कहलाएगा। इस संदर्भ में ऐसे याचकों को हम दिन-प्रतिदिन, अपना पेट भरने व अन्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, दीनता पूर्वक धन-अन्न, वस्त्र आदि पाने के लिए याचना करते हुए, सड़कों व घरों आदि में देखते ही हैं। यहाँ यह भी स्मरणीय रहे कि आज के समयकाल में जो कोई भी किसी दीन-दुखिया की सहायतार्थ उसे कुछ देने

की कृपा करता है उसके पीछे उसका स्वार्थ ही निहित होता है। इसी स्वार्थ पूर्ति में वह फिर उस याचक से कई कुकर्म-अधर्म तक करा बैठता है। ऐसा किसी के साथ न हो इस हेतु सजनों सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर बने रह, परोपकार प्रवृत्ति में ढल सुखदाई कमाई करने के काबिल बनो और स्वाभाविक रूप से जिस अवस्था में भी हो, आत्मनिरीक्षण करते हुए उसे सुधारो। यह कार्य साहसपूर्ण होकर करो।

मत भूलो सजनों कि यही सुखदाई कमाई ही मन को प्रिय लगती है और इसी के द्वारा मनुष्य को संतोष प्राप्त होता है। अतः सजनों यदि चिंता रहित होकर, चैन से सब कुछ कुशलता से करते हुए, आनन्दपूर्वक जीवन जीना चाहते हो तो इस सुखदाई क्रिया को करना आवश्यक मानो और इस प्रकार अपने परिवारजनों व समाज के लिए सुखदायक अमूल्य दिव्य निधि बनो। याद रखो सजनों यही सुखों की खान बन, अच्छे व नेक इंसान की तरह खुशहाली से जीवन जीने की बात है। तभी तो सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ इस संदर्भ में कह रहा है:-

हम तो हैं आज़ाद, हुण किसदी सुनूं फ़रियाद, सजनों हुण किसदी सुनूं फ़रियाद।

एहो फ़रियाद है जे अपनी कमाई, एहो कमाई करो सजनों सुखदाई, सजनों करो सुखदाई।।

अंततः सजनों जब ईश्वर कहते हैं कि इस जगत से अपना मन आज़ाद रखो तो क्यों हम इस जगत के विषयों में आसक्त हो बंधनमान होकर एक बंधक की तरह निराशा व

निरादर भरा जीवन चाहते हैं। हमारे लिए बनता है कि हम उनका कहा मानें और नेक कमाई करते हुए सत्यनिष्ठा से जीवन जीएँ। इस संदर्भ में सजनों अब ध्यान से सुनो:-

**पराश्रित जीवन जीना आसान नहीं, आसान नहीं
इसमें मिलता किसी को विश्राम नहीं, विश्राम नहीं**

इसीलिए तो ईश्वर कहते हैं :-

**जीवन जीने की पद्धति पहचानो
और सभी बंधनों से मुक्त बने रह
आत्मस्वरूप में ही बने रहो
जानो जो औरों का आश्रय लेता है
वह तो ऐसे परवश हो जाता है
कि पल-पल ठोकर खाते हुए
जो करने आया था, नहीं कर पाता है
इसीलिए ईश्वर कहते हैं जीव से
स्व धर्म पर स्वतन्त्र रूप से बने रहो
सच्चाई धर्म अपना कर जीवन सफल करो ॥**

याद रखो इस प्रकार का चलन अपनाने से जैसे ही जीव निष्काम अवस्था को प्राप्त होगा वैसे ही उसके लिए मनुष्यत्व अनुरूप जीवन जीते हुए मोक्ष को प्राप्त कर पाना आसान हो जाएगा।

इस संदर्भ में सजनों पूर्णतः सफलता प्राप्त करने हेतु हम आपको यही कहेंगे कि आत्मनिरीक्षण के महत्त्व को समझो। आत्मनिरीक्षण करोगे तो ही अपनी भूलों का बोध होगा और आत्मसुधार करने के प्रति उत्साहित हो पाओगे। अन्यथा

भटकाव के अतिरिक्त कुछ प्राप्त नहीं होगा। इस परिप्रेक्ष्य में आज हम आपको एक कहानी सुनाते हैं। शायद इसको सुनकर आपको प्रेरणा प्राप्त हो और आप जाग्रति में आ आत्मनिरीक्षण करते हुए आत्मनियन्त्रण द्वारा आत्मसुधार करने के लिए तत्पर हो जाओ। ताकि इस तरह आप आत्मविजय प्राप्त कर सको। अब ध्यान से सुनो:-

जैसा कि विदित ही है और कहते भी हैं कि रावण सोने की लंका में रहता था। उसकी सोने की लंका यानि शानो-शौकत को देखकर सारा ब्रह्माण्ड बड़ा हैरान होता था और यही कहता था कि रावण की क्या आन-बान-शान है। अगर इन्सान आबाद हो तो रावण की तरह ही हो। इस तरह अपने ऐश्वर्य व ताकत की बड़ाई सुन-सुनकर रावण को भी अंहकार हो गया और इसी अंहकार वश उसने भगवान श्री राम जी से टक्कर ले ली। अब टक्कर ले तो ली पर बर्बादी के दृश्य नज़र आने लगे।

इसी विषय के दृष्टिगत रावण एक दिन एकान्त में बैठकर विचार करने लगा कि मेरी लंका व ऐश्वर्य को देखकर जो लोग यह कहते हैं कि मैं आबाद हूँ, तो क्या हकीकत में, मैं आबाद हूँ या बर्बाद हूँ? इस सन्दर्भ में जब उसने आत्मनिरीक्षण किया तो उसे लगने लगा कि मैं तो आबादी की तरफ़ नहीं अपितु बर्बादी की तरफ बढ़ रहा हूँ। ऐसा होने पर रावण दुविधा में फँस गया कि सच क्या है ? क्या वह सच है जो जनता बोल रही है या वह सच है जो अन्दर से आत्मा की आवाज़ आ रही है। जब इस बात की तह तक रावण गया तो फिर उसे यथार्थ का एहसास होने लगा और

उसने विचारा कि माना मैंने सोने की लंका बनाई और दुनियां का तमाम ऐश्वर्य प्राप्त किया, पर यह सब तो मैंने न जाने कितने लाचारों को दुःख देकर, उनका सुख-चैन छीनकर अपने झूठे सामर्थ्य व मायावी शक्ति के बल पर प्राप्त किया। तो हकीकत में मैं आबाद नहीं अपितु बर्बाद हूँ। इस बर्बादी ने ही मेरा सन्तोष और धैर्य छीन लिया है। इसीलिए तो मैं बात-बात पर अधीर हो जाता हूँ और कुछ भी पाने के लिए लालायित हो उठता हूँ। ऐसा होने पर मैं अपने तुल्य किसी को नहीं समझता और अकारण ही अपनी कामना सिद्ध करने के लिए क्रोधित होकर सबसे भिड़ जाता हूँ। यहाँ तक कि फिर मैं दूसरों को नीचा दिखाने में ही अपनी महानता समझता हूँ। तो यह सब मेरी आबादी के नहीं अपितु बर्बादी के ही लक्षण हैं। इस तरह विचार करने पर उसने पाया कि हकीकत में जो सबको मेरी आबादी दिख रही है, वह बर्बादी है। इसी बर्बादी के कारण मैं छल-कपट करने के लिये विवश हो जाता हूँ और काम, क्रोध, लोभ, मोह अहंकार रूपी विकारों के सताने पर अधर्म के रास्ते पर चलते हुए नाना प्रकार के षडयंत्र रचते हुए नकारात्मक सोचों में डूबा रहता हूँ। इस तरह इसी कशमकश में फँसा व्याकुल रावण सही राह ढूँढ नहीं पाता है। नतीजा युद्ध छिड़ जाता है। युद्ध के दौरान वह अपने भाई, बन्धु, पुत्र, मित्र व प्रजा सबको खो बैठता है और आत्मनिरीक्षण करने पर जिस बर्बादी का उसे बोध हुआ था उसका समरतक्ष मंजर देखता है।

यहाँ समझने की बात यह है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के वशीभूत होने के कारण, आत्मनिरीक्षण करने पर भी रावण रुका नहीं क्योंकि 'मैं' उसके सिर चढ़कर बोल रही

थी। इस तरह लोक-लाज व मान-अपमान के भय से उसने इतना विद्वान होते हुए भी वह नहीं किया जो उसे उचित समय पर कर लेना चाहिए था। इसीलिए आखिरकार उसका सामर्थ्य, धन-दौलत, वैभव के साथ-साथ पख-परिवार भी चला गया। इतना ही नहीं रावण जब खुद इस त्रासदी का शिकार हुआ और अपनी अन्तिम श्वास ले रहा था तो राजा रामचन्द्र जी ने लक्ष्मण से कहा कि हे लक्ष्मण ! यह विद्वान है, ज्ञानवान है अतः इससे शिक्षा लो। आज्ञाकारी लक्ष्मण ने वैसा ही किया और रावण के पास जाकर ज्ञान प्रदान करने की प्रार्थना की। जानते हो उस वक्त रावण ने क्या कहा? रावण ने कहा कि इतना विद्वान, ताकतवर व पराक्रमी होते हुए भी, अपने आपको आबाद करने के लिये जीवन में जो मैं नहीं कर पाया वह आज रामचन्द्र जी ने कर दिखलाया।

उसके ऐसा कहने पर लक्ष्मण जी ने पूछा कि आपके कहने का आशय क्या है? तो रावण ने उत्तर दिया कि मैं जीवन में सब कुछ करता रहा पर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार जैसे दुष्ट विकारों पर विजय नहीं प्राप्त कर सका। यही कारण था कि दुनियाँ की नज़रों में मैं ताकतवर इन्सान होते हुए भी अन्दर से सदा कमज़ोर रहा। पर आज मेरी सारी कमज़ोरी को रामचन्द्र जी ने मिटा दिया है यानि मेरे दुष्ट विकारों का नाश कर दिया है। इसीलिए तो वह नित्य दर्शन आज मेरे सामने है। इस तरह रावण ने अंहकार का नाश कर मोक्ष प्राप्त कर लिया। यह सब सुनने के बाद प्रजा ने रावण से पूछा कि जो आपके द्वारा करना संभव नहीं हो पाया वह आज कैसे रामचन्द्र जी का एक बाण लगने से सम्भव हो

गया। यह सुन कर रावण ने उत्तर दिया कि मेरे जो सिपहसालार थे वे राक्षसी वृत्ति के थे, इसीलिए मैं अन्तर्निहित विकारों पर फ़तह पाने की युक्ति नहीं समझ पाया पर राजा रामचन्द्र जी के जो सिपहसालार हैं वे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी हैं। उनकी युक्ति से ही ऐसा करना सहज हो सकता है। यही कारण है कि मैं हार गया और यह विजयी हुए। इस कहानी से शिक्षा लेकर सजनों हमने भी विजयी होना है और इस हेतु नियमित रूप से आत्मनिरीक्षण करते हुए सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति को अमल में लाते हुए अन्तर्निहित पाँच विकारों पर फ़तह पानी है तभी मोक्ष प्राप्ति सम्भव हो पाएगी।



दिनांक 19 जून 2016 का सबक्र

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी
को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में
नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर
बने रहो:-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

अब ध्यान से सुनों कि साजन परमेश्वर हम सब को क्या कह
रहे हैं :-

श्री साजन जी के मुख के शब्द

ओजी ओ ओजी ओ, ध्यान करो इस्थर,
ध्यान उसे दा लावो।

जेहड़ा ही नाम चलाओ, ओजी ध्यान उसे दा लावो।
ओजी ओ ओजी ओ ध्यान उसे दा लावो॥

ओजी उसे दे नाल जुड़ो, उसे दा संग सजनों।
हाँ मेल उसे नाल खावो,
ओजी ओ ओजी ओ ध्यान उसे दा लावो॥

ओही अनादि ओही प्रमादि,
प्रेम प्रबल उसे नाल बढ़ावो।

फिर दर्शन उसे दा पावो,
ओजी ओ ओजी फिर ध्यान उसे दा लावो ।

ओजी शब्द गुरु मन लवो,
अपना आप ही पहचानो ।
फिर प्रीत उसे नाल बढाओ,
ओजी ओ ओजी ओ ध्यान उसे दा लावो ॥

ओही ईश्वर ओही परमात्मा, ओजी ओही हैं भगवन्त ।
सजनों जोत नाल जोत हो जावो,
ओजी ओ ओजी ओ ध्यान उसे दा लावो ॥

शब्द है गुरु शरीर नहीं है अर्थात् मूलमंत्र जो आद् अक्षर है वही हमारा गुरु है क्योंकि यह शब्द ब्रह्म ही शब्द-रूप में ब्रह्मज्ञान या आध्यात्मिक ज्ञान का स्रोत है जो वेद व प्रणव के अजपा जाप द्वारा जाना जा सकता है। सजनों शब्द में पूर्ण सार्थक विचार निहित होते हैं। इस नाते से जहाँ शब्द परमात्मा का प्रतीक है वहीं उसमें निहित विचार या अर्थ आत्मा का ।

इस तथ्य को गहनता से समझते हुए सजनों गुढ़ाई के दौरान सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ जैसे लिखा हुआ है, वैसे ही और उसी क्रम से उसको ध्यान से पढ़ो व स्मृति में रखते हुए उसका अनुसरण करना सीखो व सिखाओ। ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि इसमें वर्णित शब्दों द्वारा एक मनुष्य के लिए धारने योग्य विचारों का संकेत मिलता है। यह विचार महाराज जी के मुख की वाणी है और कुदरती आई हुई है। अतः इसे गाते-पढ़ते या सुनते समय उस शब्द विशेष में

निहित, गूढ़ बात व विचार को, स्मृति में लो और तदनुसार उन विचारों के प्रयोग द्वारा अपना जीवन अर्थपूर्ण व युक्तिसंगत जीते हुए, उचित परिणाम प्राप्त करने में कुशल बनो। याद रखो सजनों इस तरीके को वर्त-वर्ताव में लाना, अपने आप में शब्द विचार पर खड़े होने का द्योतक तो है ही, साथ ही यह विभिन्न शारीरिक गुरुओं यथा हौं-मैं से सींचने वाले माता-पिता, पख-परिवार व अपनी प्रभुता जमाने हेतु, बाल-अवस्था के आडम्बरी भक्ति भावों की रचना कर, गुरु-चेले के बंधन में उलझाने वाले अहंकारी अज्ञानयुक्त इंसानों द्वारा प्रदत्त मिथ्या ज्ञान धारणा से बचे रहने का भी सूचक है।

अतः सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में लिखित प्रत्येक शब्द का अध्ययन करते समय, उसके अंतर्निहित, जीवन को उन्नति के चरमोत्कर्ष तक पहुँचाने वाली शक्ति को पहचानो व उसका यथा इस्तेमाल करने का ढंग सीखो ताकि गुढ़ाई के दौरान हमारे मन के अन्दर किसी प्रकार का कोई दोष उत्पन्न न हो सके और हम सदा सजनता के प्रतीक, ईमानदार इंसान बने रह सकें। इस हेतु मनन क्रिया के अभ्यास से धीरे-धीरे वर्णित शब्द विचारों के मतलब की गंभीरता/गहराई, विस्तार सहित समझो यानि हर शब्द के भाव को इस्तेमाल करने से पहले उसके भाव को जानने के लिए मनोविश्लेषण करने की आदत डालो। तभी शब्दों के अर्थों की प्रतीति व ग्रहण कराने वाली शक्ति को समझ पाओगे व उसी वृत्ति में ढल शब्द विचार पर सुदृढ़ता से डटे रहने में सक्षम हो सकोगे। इस संदर्भ में सजनों ध्यान दो कि यदि इस ग्रन्थ में वर्णित शब्दों/वाक्यों या वाक्यांशों का अर्थ ही नहीं समझ पाए तो उच्च विचारों को जीवन में लाने के

प्रति रूचि जाग्रत कैसे हो पाएगी? सो गुढ़ाई के दौरान ऐसी भूल कदाचित् मत करना।

इसी संदर्भ में सजनों याद रखो कि किसी भी शब्द की सार्थकता उसके सार्थक प्रयोग पर ही निर्भर करती है। अतः शब्दों के महल यानि मनगढ़ंत काल्पनिक योजनाएँ न बनाओ अपितु शब्दों के अर्थ को समझते हुए उसका प्रयोग करने की कला को समझो। ऐसा करने पर विचारों की शुद्धता के प्रति स्पष्टता के साथ-साथ, वाणी से शब्दों का उच्चारण करते समय, शब्दगत सौन्दर्य में भी बने रहोगे और मुख से केवल सार्थक शब्द ही उच्चारित करोगे यानि मीठा बोलोगे। इसके अतिरिक्त यह भ्रमजाल में आप उलझने व दूसरों को उलझाने के स्थान पर, यथार्थता से परस्पर विचारों का आदान-प्रदान करते हुए, दिल से दिल मिलाकर, खुशी-खुशी जीवन जीने के लिए भी आवश्यक है। इस तरह शब्द दोष व जाल में उलझने या किसी को उलझाने से भी बचे रहोगे। इस परिप्रेक्ष्य में विचार शब्द को थामें रखने व जिह्वा को स्वतन्त्र रखने के लिए वाणी द्वारा आडम्बर रचने से बचो यानि फालतू बोलना बंद कर दो और आवश्यकता अनुसार बोलना सीखो। आशय यह है कि बड़-चढ़ कर बातें करने के स्वभाव में ढल बातों के बहादुर मत बनो क्योंकि ऐसा इन्सान वास्तव में कायर होता है। यह भी मत भूलो कि जो इंसान किसी भी शब्द के अर्थ को समझे बगैर प्रयोग में लाता है वह अविचारी सदा कष्ट ही झेलता है। अतः जो भी बात करो विचार से करो यानि पहले जाँचो-तोलो फिर बोलो। यह गुरुमत पर स्थिर बने रहने के लिए अति आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त कोई भी शब्द कहने से पहले व सुनने व पढ़ने के पश्चात् वह शब्द किस वस्तु/विषय/बात के सम्बन्ध में प्रयोग किया जा रहा है, उसके बारे में बुद्धि से सोच-समझ कर, उसके सही-गलत, सत्य-झूठ होने का परीक्षण करो। इस तरह एक समझदार व्यक्ति की तरह, संदेह रहित होने पर ही, उसमें निहित विचार की सत्य धारणा, मन या ख्याल में स्थिर करो। ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि इस प्रक्रिया से जो उस शब्द विशेष का एक मानसिक चित्र बनेगा, उससे उसकी उद्देश्य सहित प्रतीति यानि निश्चयात्मक बोध होगा और आप सर्वहित हेतु उस के प्रयोग के विषय में न्यायसंगत निर्णय ले पाओगे। निश्चित ही ऐसा होने पर विचारशील व गुणी बनोगे और उद्देश्य सिद्धि हेतु किया गया पुरुषार्थ सफल होगा। यही नहीं इससे एक तो योजनाबद्ध क्रिया करने के प्रति विचार शिथिल नहीं होंगे और दूसरा विचारों के सागर में उलझ, सोचयुक्त अवस्था को प्राप्त होने से बचे रहोगे यानि हर अवस्था व परिस्थिति में सदा सचेतन अवस्था में बने रहोगे।

जान लो कि इसके विपरीत किसी भी शब्द का गलत लगाया गया अर्थ/व्याख्या यानि अभिप्राय जाने बगैर कुछ भी करना, भ्रम फैलाने व व्यर्थ समय गँवाने की हानिकारक बात होगी। अतः गुढ़ाई के दौरान सही क्रिया अपनाकर उस पर बने रहना, परमार्थ और स्वार्थ दोनों में ही लाभकारी सिद्ध होगा और आप निरर्थक कार्यों से बचे रह, स्पष्टता से अर्थपूर्ण जीवन जीने योग्य बन जाओगे। इस तरह जो चाहोगे ठीक वैसा ही कर पाने में सक्षम हो जाओगे यानि जीवन में कभी भी किसी भी संकट या कमी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

मत भूलो कि आत्मिक ज्ञान में प्रयोग होने वाले शब्दों का कभी भी अर्थ परिवर्तन नहीं हो सकता यानि वे विकार रहित होते हैं। अतः परमार्थी शब्दों को कहीं भी प्रयोग करते समय सावधान रहो और मनमत अनुसार उसके अर्थ को किसी भी कारण नष्ट कर अज्ञानता में फँसने से बचो। इस प्रयत्न द्वारा शब्द विचार पर यथार्थता से बने रह पाओगे। फिर जो भी बात करोगे वह दोषरहित यानि स्पष्ट, अर्थपूर्ण व सबके लिए उपयोगी होगी। आशय यह है कि फिर ईमानदार इंसान की तरह कभी भी अर्थहीन बात नहीं करोगे और न ही ऐसे शब्द इस्तेमाल करोगे जिसके दो अर्थ निकलते हों। इस प्रकार गुढ़ाई के दौरान छल-कपट और द्वि-द्वेष से बचे रह, अपने जीवन के महत्त्व को समझते हुए व नेकी की राह पर चलते हुए, उद्देश्ययुक्त जीवन जीने में कामयाब हो जाओगे।

यह सब जानने के पश्चात् सजनों हमारे लिए बनता है कि हम सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित शब्द विचारों पर अमल करने के योग्य बनने हेतु, शब्द गुरु का संग कर, विचारशील बनें और उसी विचारधारा की ही ध्यान से साधना करें। ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि यदि ब्रह्म शब्द रूपी गुरु का संग करने से, ध्यान द्वारा, ख्याल को आत्मीयता अनुरूप जीवनोपयोगी विचार स्वतः प्राप्त होते रहेंगे तो आत्मतुष्टि बनी रहेगी। फलतः निज ज्ञानस्वरूप का बोध होते ही मन को संतोष प्राप्त रहेगा और मन किसी भी परिस्थिति में अधीर होकर चंचल नहीं होगा। कहने का आशय यह है कि फिर जीवन में जो भी कदम उठाओगे वह विवेकशक्ति के प्रयोग द्वारा, सोच-समझ कर उठाओगे। इस तरह हृदय आत्मप्रकाश से प्रकाशित रहेगा और अकर्ता भाव

से समस्त क्रिया-कलाप सत्य-धर्म के भक्ति-भाव अनुसार, सम्पन्न करने के कारण, कर्मशील बने रहते हुए भी उन कर्मों में जकड़ोगे नहीं यानि कर्म फल नहीं भोगना पड़ेगा। फिर सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर सुदृढ़ता से बने रहना सहज हो जाएगा और आप शक्तिशाली इंसान की तरह बुद्धिमत्ता से ब्रह्म भाव/वृत्ति का प्रयोग करते हुए, सजनतापूर्ण चलन अपनाकर एकता, एक अवस्था में बने रह सकोगे। सजनों जान लो कि गुढ़ाई के दौरान यह सब करना मानवीय सैद्धांतिक दृष्टि में बने रह, विचारमूढ़ता से बचे रहने के लिए भी आवश्यक है। ऐसा सुनिश्चित करने पर ही न केवल आप स्वयं स्वतन्त्र रूप से शब्द विचार पर खड़े रह पाओगे अपितु औरों तक भी स्वतन्त्रता से यही सद्-विचार पहुँचा पाओगे। तभी तो विशाल हृदय व परोपकार प्रवृत्ति बन समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार सजन-भाव के उसूलों पर मजबूती से बने रह पाओगे और सत्यनिष्ठ व धर्मपरायण कहलाओगे।

सजनों अभी आप ने जाना एक मार्गदर्शक की तरह, विचार-शब्द के रूप में जीवन का पथ आलोकित करने वाले शब्द गुरु की महत्ता। इससे सजनों स्पष्ट हो जाता है कि सार्थक ध्वनि के रूप में आत्मिक ज्ञान प्रदान करने वाला हमारा यह नित्य, अजर-अमर, अविनाशी गुरु ही न केवल हमारे नित्य असलियत स्वरूप की पहचान कराने में अपितु उस ब्रह्म और इस ब्रह्मांड का हर रहस्य जनाने में पूर्ण सक्षम है तथा एकमात्र ऐसा स्रोत है जो समभाव से सर्व को एक सूत्र में बाँध, सबके मन-मस्तिष्क को एक ही तरह के आत्मिक ज्ञान के प्रवाह से भरपूर कर, सर्व कला सम्पूर्ण बना सकता है।

इसके विपरीत शब्द गुरु के स्थान पर, गुरु रूप में किसी नश्वर शरीरधारी से नाता जोड़ने का अर्थ है आत्मतत्व से नाता तोड़, मिथ्यात्व से सम्बन्ध जोड़ना व इस तरह अज्ञान में फँस अध्यात्मिकता के मार्ग से भटक जाना। नतीजा व्यक्तिगत स्वतन्त्रता खो, प्रचलित विभिन्न अविचारी, आडम्बरी व कर्मकांड युक्त भक्ति-भावों में फँसे हुए, अशान्त-अधीर, रोते-झुखते, दुःख-क्लेश भरा जीवन जीते हुए मानवों की हालत के रूप में, प्रत्यक्षतः हमारे सामने ही है। इस संदर्भ में सजनों समझने की बात यह है कि जिस गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान हमारे विवेक व स्वतन्त्रता का हनन करता है, हमारे ख्याल को विकारों में उलझाता है और फिर उसी अनुसार हमारी वाणी द्वारा बुलता है एवं कर्म द्वारा हमसे कुकर्म-अधर्म करवाता है, वह गुरु कभी भी इंसान को सद्मार्ग पर नहीं ला सकता। अतः शब्द गुरु को धारण से प्राप्त होने वाले लाभ व शारीरिक गुरु को धारण करने से प्राप्त होने वाली हानि को तुलनात्मक अध्ययन द्वारा समझना अति आवश्यक है। आप सबकी जानकारी के लिए इसके विषय में बातचीत अगली कक्षा में करेंगे। तब तक आप इन वचनों पर मज़बूत हो जाओ और इस संदर्भ में अब श्री साजन जी के मुख के इन शब्दों को ध्यान से सुनो:-

गरूढ़ घबलाटियां लावे नाले हस्से नाले गावे,
श्री राम चरणों में ढावे।
हथ जोड़ करे प्रणाम हथ जोड़ करे प्रणाम,
हो हो हो साजन हस पड़े।

खिड़ खिड़ हस्से हनुमान शक्ति लक्ष्मी ही हस्सन,
हस्सन हो करके हैरान, हस्सन हो करके हैरान॥

हो हो हो सजनों जिह्वा दा कढ़ो वल, हो हो हो,
मुश्किल हो जाये तुहाडी हल।
जेहड़ी बीत गई, जेहड़ी आने वाली, सारी तुहाडी
जायेगी टल, सारी तुहाडी जायेगी टल।।

हो हो हो फिर शब्द गुरु हनुमान जी दे द्वारे ते हो हो
हो ओन्हां दी युक्ति है प्रबल।
फिर पकड़ो सजनों आप नूं, एहो बात ओन्हां दी एहो
गल, एहो बात ओन्हां दी एहो गल।।

हो हो हो हनुमान जी दे वचनां दी पालना करो।
हो हो हो ओन्हां दी बात फड़ो पकड़ो इक इक गल।
ओ दाता है शहनशाहवां दा शाह,
हम बालक ओन्हां दे हैं निर्बल,
हम बालक ओन्हां दे हैं निर्बल।।

हो हो हो फिर शब्द गुरु होर लइयो न किसे दा नाम
हो हो हो सजनों बात लवो तुसां फड़।।
हनुमान जी दे चरणों में उस द्वारे ते एह बात नहीं
मुश्किल सजनों बात नहीं मुश्किल।
हो हो हो ओन्हां दी रौशनी तेज और ताकत नूं देखो
हो हो हो ओन्हां दा बल है नगरी ते प्रबल।।

मौत कम्बे हनुमान जी दे कोलों, कम्ब रही थर थर।
वचन पालो, कोई मुश्किल नहीं सजनों।
मौत दा न राहसवे डर, सजनों मौत दा न राहसवे डर।।

हो हो हो गुरु ग्रन्थ गुरु बाणी गुरु शब्द हो हो हो
विचार करो सजनों प्रबल।

भीम रूप धर असुर संहारे पापी जीवां दे खत्म करन
लई मचावनगे हलचल ओ मचावनगे हलचल ॥

शब्द:- सजनों इक बात सुनो साडी गल,
बचाओ तुहाडा हो सकदा है ॥
हनुमान जी दे वाक् लवो तुसां फड़,
सजनों हनुमान जी दे वाक् लवो तुसां फड़ ॥



दिनांक 26 जून 2016 का सबक्र

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी
को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में
नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर
बने रहो:-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों जानो कि समरूप अजर अमर आत्मा जब मायापाश
रूपी इस शरीर में कैद हो जाती है तो जगत की बेड़ियों से
स्वतन्त्र बने रहने हेतु उसके लिए जगत में विशेष होते हुए
भी उसके विषयों से निर्लेप रह, ध्यान से साधना करने का
विधान है। तब ही जीव आत्मिक ज्ञानी बन,
माया/कर्म/संसार के बंधन से मुक्त रह, उसी ज्ञान यानि
ईश्वरीय विचारों अनुसार, इस मायावी शरीर से कर्म करते
हुए सत्यनिष्ठा, धर्मपरायणता व निष्कामता द्वारा, संसार से
विरक्त, अपने नित्य स्वरूप में यथा बना रह पाता है। इसके
विपरीत पराश्रित हो इस संसार से कुछ भी धारण कर, माया
के ऋणी बन, कोई अन्य बनावटी चलन नहीं अपनाना होता
यानि अज्ञानवश खुद को गिरवी नहीं रखना होता। इस
संदर्भ में इस जगत में आत्मीयता के भाव से विचरते हुए
एकरस बने रहने हेतु, उसके लिए ईश्वर के संचालन व

नियन्त्रण में बने रहना आवश्यक होता है अन्यथा शरीर रूपा मायावी आवरण को धारण करते ही उसके अन्दर समभाव की जगह, भिन्नता का भाव पैदा होने का भय बना रहता है। इसलिए इसके प्रति बाल्यावस्था से ही सावधान रहना होता है क्योंकि कुछ भी धारण करने का मतलब होता है मनःसंतोष का अभाव होना और यह सत्य तो हम जानते ही हैं कि मिथ्या जितना भी धारण कर लो उससे तृप्ति प्राप्त नहीं होती। याद रखो मिथ्या धारणा से मन में पाँच विकारों सहित नाना प्रकार के दोष उत्पन्न होते हैं। अगर सब दोषों से मुक्त रहना चाहते हो तो जो भी इस जगत से लिया है वे सब हँसते-हँसते लौटा कर, ऋणमुक्त हो जाओ और अपने असली घर परमधाम को प्रस्थान करो।

ऐसा सुनिश्चित करने के लिए सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ जो हमें कह रहा है ठीक वैसी ही चाल पकड़ो ताकि अंतःकरण सदा विशुद्ध रहे और उस दिव्य दर्पण में अपनी वास्तविकता का बोध बना रहे। इस प्रकार ब्रह्म विचार पकड़ने के योग्य बनो। इस सन्दर्भ में सदा याद रखो:-

**गुरु है बन्धन ते चेला है बन्धन, ओ बन्धन है जे पख परिवार।
इस बन्धन तों छुटना चाहो, सजनों शब्द पकड़ो ब्रह्म विचार।।**

अर्थात् ब्रह्म विचार पकड़ो। इससे स्वयंमेव आपका मन संतोषमय बना रहेगा और कोई कमी नहीं खलेगी। न ही फिर ख्याल द्वारा कोई गंदगी धारण करोगे। सब अच्छा ही अच्छा व प्रिय प्रतीत होगा। इस प्रकार दृष्टि कंचन रखने व जिह्वा स्वतन्त्र रख पाना सहज हो जाएगा। सजनों हम सब ब्रह्म विचार को पकड़ कर, प्रकाशित बुद्धि द्वारा, स्वतन्त्रता

से आनन्दमय जीवन व्यतीत करते हुए, ख्याल को अपने सच्चे घर में स्थित रख सकें, इस हेतु ही सच्चेपातशाह जी ने हमें शारीरिक गुरु की अपेक्षा शब्द गुरु का संग करने का निर्देश देते हुए कहा कि 'इस संसार में न कोई गुरु है और न ही कोई चेला है। आप ही गुरु हैं, आप ही चेला हैं, क्योंकि गुरु भी बंधन है और चेला भी बंधन है, परन्तु आप इस बंधन से रहित हैं।' निःसंदेह इस कथन द्वारा वह हमें शारीरिक गुरुओं के साथ सम्बन्ध जोड़ने से मन में उत्पन्न होने वाले द्वि-भाव यानि मैं-तूँ, तेरी-मेरी, बड़-छोट युक्त भेदभाव व लगाव से बचा स्वतन्त्र प्रकृति में बने रहने का निर्देश दे रहे हैं। सजनों इस सुन्दर निर्देश की पालना द्वारा ही हम सुमति में आ परस्पर सजनता का व्यवहार करते हुए यश-कीर्ति की प्राप्ति कर सकते हैं। इस संदर्भ में वह यह भी स्पष्ट करते हैं कि जो सम्बन्ध समभाव आधारित होते हैं वहाँ एकता के रूप में चमत्कारी नतीजे प्राप्त होते हैं यानि जहाँ सम्बन्ध निर्वहन हेतु दोनों पक्ष भेदभाव रहित व स्वतन्त्र प्रकृति वाले होते हैं वहीं सम्बन्ध सहजता से निभ पाते हैं और चिर स्थाई होते हैं।

सजनों सच्चेपातशाह जी की यह बात हमारे दिल-दिमाग में अच्छी तरह से बैठ जाए और हम उन के वचनों की पालना करते हुए, तमाम आडम्बरी व कर्मकांड युक्त भक्ति-भावों से उबर सकें व मिथ्या धारणा से बचे रहें, इस हेतु शब्द गुरु व शारीरिक गुरु के मध्य जो अंतर है उसको तुलनात्मक अध्ययन द्वारा समझना अति आवश्यक है। आओ अब इसे समझते हैं:-

1. शब्द गुरु रूप-रंग-रेखा से रहित निराकार है जबकि शारीरिक गुरु रूप-रंग-रेखा में बँधा होने के कारण, पाँच

तत्त्वों का पुतला आकारमय है।

2. शब्द गुरु अजन्मा है व सब नामों से, सब युगों से परे नित्य हैं जबकि शारीरिक गुरु जन्म-मरण में बंधा हुआ है व इसी कारण परिवर्तनशील व हर युग में नित नए नामों से अलंकृत होता है।

3. शब्द गुरु अजर-अमर, अविनाशी व परम चैतन्य है जबकि पाँच तत्त्वों से निर्मित होने के कारण शारीरिक गुरु नश्वर, नाशवान व जड़ है।

4. शब्द गुरु सब कर्मों से परे है यानि निर्लेप है जबकि आसक्ति के कारण कर्त्तापन के प्रभाव से, शारीरिक गुरु कर्म भोग में बन्धा हुआ है व उनमें लिप्त है। इसलिए इस बंधन में बंधने वाला धर्म हार बैठता है केवल अच्छे-बुरे कर्म ही करता है।

5. शब्द गुरु निर्वैर, निर्दोष, निर्भय, व अजीत है जबकि रागग्रस्त होने के कारण शारीरिक गुरु द्वेष युक्त, भयग्रस्त व तीनों तापों से संतप्त है।

6. शब्द गुरु अनादि-प्रमादि है यानि उसका कोई आद्-अंत नहीं है। वह तो बेअन्त है और जो उसका पारावार पा लेता है उसे परमेश्वर के केवल दर्शन ही नहीं होते वह उस जीव को अपने में समा लेते हैं जबकि शारीरिक गुरु काल-चक्र में बंधा हुआ है।

7. शब्द गुरु कुदरती ज्ञान-उपदेष्टा है जबकि शारीरिक गुरु किताबी ज्ञान-उपदेष्टा है।

8. शब्द गुरु बुद्धि को स्वतन्त्र रूप से विकसित व विवेकशील बनाने वाला है जबकि शारीरिक गुरु बुद्धि को अपने अधीन कर, संकुचित व कुंठित करने वाला है।

9. शब्द गुरु, सजन को, निष्कामता से, ईश्वर है अपना आप, के सत्य पर खड़ा हो, स्वतन्त्र व विश्राममय युवावस्था के भक्ति भाव में बने रहने की प्रेरणा देता है जबकि शारीरिक गुरु स्वार्थी होने के कारण सजन को बाल अवस्था वाले द्वैत-युक्त, बन्धनमान, कर्मकाण्डमय, कामनामयी, भटकाव वाले भक्ति-भावों के जाल में फँसा सदा अपने अधीन रखने की चेष्टा करता है।

10. शब्द गुरु से प्राप्त यथार्थ आत्मिक ज्ञान को धारण कर, मानव का आत्मविश्वास व आत्म-बल दिन-प्रतिदिन बढ़ता जाता है और वह आत्म दृष्टि द्वारा हृदय वेद-विदित को पढ़ते व समझते हुए, कदम-कदम पर आत्मनिरीक्षण करते हुए उन्हीं, विचार अनुसार चलता है जबकि शारीरिक गुरु से प्राप्त अज्ञान को धारण करने से व्यक्ति के आत्मविश्वास व आत्म-बल का दिन-प्रतिदिन हनन होता जाता है और अंतरपट बंद होते ही वह बर्हिमुखी हो अविचार अवलड़े रास्ते पर चलता है। यहाँ हम स्पष्ट कर दें कि विचार महाराज जी के मुख की वाणी है व अविचार कुसंग के कारण मनुराज ने रची है। विचार जहाँ सवलड़ा रास्ता है वहीं अविचार कवलड़ा ठोकरों भरा रास्ता है।

11. शब्द गुरु ब्रह्म, जीव और जगत के यथार्थ ज्ञान का बोध कराने वाला है। इससे मन में ब्रह्म, जीव व जगत के प्रति अभिन्नता का भाव पैदा होता है जिससे एकता, एक अवस्था

बनी रहती है जबकि शारीरिक गुरु अपनी पूजा-मानता तक ही सीमित अज्ञान में उलझाने वाला द्वैतवाद में फँसा टकराव के रास्ते पर चलने के लिए बाध्य करता है।

12. शब्द गुरु के संग सजन की सुरत सर्गुण-निर्गुण के खेल खेलते हुए निर्वाण-परमधाम में स्थिर हो जाती है और इस तरह परब्रह्म की सार को पा जाती है जबकि शारीरिक गुरु सजन के भक्ति-भाव को सर्गुण तक ही सीमित कर देता है। उससे आगे क्या है इसका तो सजन को बोध ही नहीं हो पाता।

13. शब्द गुरु का संग करने से तूं-मैं, बड़-छोट का भेद मिट जाता है और सुरत अद्वैत यानि एक्य-भाव में खड़ी हो जाती है जबकि शारीरिक गुरु का संग करने से गुरु-चेले का बंधन सदा बना रहता है और इन गुरुओं द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से बनाई गई आत्मा-परमात्मा के बीच की खाई, कभी नहीं मिट पाती।

14. शब्द गुरु अपना है, सदा पास है व कदम-कदम पर जीवन का मार्गदर्शन करने के लिए हर पल संग है जबकि शारीरिक गुरु दूसरा है, सदा दूर है व सामयिक संग रहने वाला है।

15. शब्द गुरु अजर-अमर पद की प्राप्ति कराने वाला है यानि अमृत स्वरूप शब्द गुरु का संग कर सुरत संकल्प रहित हो, आनन्दमय हो जाती है यानि आत्मतुष्टि प्राप्त होती है जबकि नाशवान शारीरिक गुरु का संग कर सुरत संकल्प-विकल्प के चक्रव्यूह में सदा फँसी रहती है व रोती-

झुखती हुई जन्म-जन्मांतरों तक आवागमन के चक्कर में फँसी रहती है।

सजनों शब्द गुरु की इसी महानता को देखते हुए ही सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:-

शब्द गुरु जो जानियों शब्द गुरु करो प्रवान,
शब्द गुरु है मूल मन्त्र शब्द गुरु है महान।

सजना स्टेज दे उते बैठ अपनी मानता मत करा,
शब्द गुरु जो मानियों हनुमान जी रहे ने समझा।

हनुमान बलवान हैं ओ शक्तिवान उच्ची है जे उन्हां दी शान,
अमर है उन्हां दा नाम सम्भलो सजनों मत होवो नादान।

अर्थात् हे इन्सान स्टेज पर बैठ कर अपनी मानता मत करा, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने यह फरमाया है कि गुरु शब्द है शरीर नहीं है। मूल मन्त्र जो अक्षर है वही शब्द हमारा गुरु है, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों की पालना करते हुए शब्द को ही गुरु मान।

सजनों इस नीति की पालना में सुदृढ़ बनाने हेतु सच्चेपातशाह जी ने कहा कि कोई भी सजन शरीरधारी को ध्यान में और निगाह में न लावे। जो नाम वही ध्यान होवे क्योंकि किसी शरीरधारी का नाम लेने से कुछ न बनेगा। इस संदर्भ में वह स्पष्ट कहते हैं कि जब कृष्ण जी ने अर्जुन को गीता का ज्ञान दिया तो अर्जुन ने कृष्ण जी को नहीं देखा था अपितु चतुर्भुजधार का चमत्कार देखा था और तब कृष्ण जी ने कहा था कि हे अर्जुन यही तेरा असलियत अपना आप प्रकाश है। इस पर खड़े हो जाओ। सजन अर्जुन ने वचन प्रवान किए और उस सत्य को स्वीकार कर संसारी व

परमार्थी दोनों राज्य प्राप्त कर लिए। सजनों यही सुचेत व निष्काम भक्ति होती है। इस परिप्रेक्ष्य में सच्चेपातशाह जी, जो भी शरीरधारी अपने आप को भगवान कहलवा गए उनकी क्या हालत हुई वह स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि हिरण्याकश्यप ने अपनी मानता करवाई यानि अपने आप को भगवान माना तो भगवान को नरसिंह रूप धारण करके उसका पेट फाड़ना पड़ा। इसी तरह रावण ने अपनी मानता करवाई और अहंकारता में आ गया तो प्रभु राम जी को उनका सर्वनाश करना पड़ा। अतः सजनों इस चलन में मत फँसो क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है:-

जेहड़ा अन्दरूनी वृत्ति, प्रभु दा ध्यान लगावेगा ।
 ओ सजन इन्सान जीवन सफल बनावेगा,
 ओ सफल बनावेगा ॥

जेहड़ा सजन शरीर दा ध्यान लगावेगा ।
 तलियां मल मल सजन जगत तों खाली ओ जावेगा ॥
 जेहड़ा सजन बैरूनी वृत्ति, शरीर दा ध्यान लगावेगा ।
 ओ सजन इन्सान जगत तों खाली ओ जावेगा ।

ओ तलियां मल मल, मल मल तलियां,
 फिर ओ पछोतावेगा फिर ओ पछोतावेगा ॥

जेहड़ा नाम ओही प्रभु दा ध्यान लगावेगा ।
 असलियत अपनी विराट रूप, एक दृष्टि हो जावेगा ॥
 श्री शहनशाह हनुमान जी दे वचनां ते जो जावेगा ।

ओ सजन इन्सान मेल प्रभु नाल खावेगा ।
 ओ मेल प्रभु नाल खावेगा, प्रभु नाल खावेगा ॥

जेहड़ा है नाम ओही ध्यान लगावेगा,
 ओ सजन इन्सान अपनी असलियत नूं पावेगा ।
 रूप रंग न रेखा राहवे, ओ ज्योति स्वरूप हो जावेगा ।
 आद अन्त ओही प्रकाशे, सर्व सर्व ओही ओ सुहावेगा ।
 ओही ओ सुहावेगा, ओही ओ सुहावेगा ॥

यह सब सुन समझ कर सजनों अब तो जिह्वा को पलटा खवाओ और जिह्वा का वल निकालो। जिह्वा का वल निकालने से तात्पर्य यह है कि जब भी कोई आप से पूछे कि आपका गुरु कौन है तो आप कहें कि शब्द हमारा गुरु है। किसी दुनियावी गुरु का नाम नहीं लेना। जब भी बात करें शरीर पर बिल्कुल न आवें न ही शरीरों की मानता करें। इस प्रकार जिह्वा का वल निकाल कर मुकम्मल तौर पर शरीरों का ध्यान हटाना है और सुचेत होकर संभल जाना है। सजनों महाराज जी के मुख से जो वाणी आए वह ही चलनी है, अपनी बनावटी नहीं चलनी। इसी में सजनों हमारी भलाई है।

अंततः सजनों अब जब शब्द है गुरु, शरीर नहीं है के तथ्य व सत्य की समझ आ गई है तो हमारे लिए आवश्यक हो जाता है कि हम दृढ़ विश्वास से शब्द गुरु से अपना नाता जोड़ लें और श्रद्धापूर्वक, उससे प्राप्त सत्य आत्मिक ज्ञान के प्रति आस्था रखते हुए उन का इस्तेमाल कर आत्मबोध द्वारा यह मनुष्य जीवन सुख-शान्ति से व्यतीत करते हुए उस परमसत्य, अविनाशी ईश्वर को प्राप्त हों। इन्ही शुभकामनाओं के साथ।



दिनांक 3 जुलाई 2016 का सबक्र

पुनरावृत्ति - 2

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी
को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में
नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर
बने रहो:-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों समस्त बंधनों से आजाद हो अफुर अवस्था में आने के
लिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में सजन श्री शहनशाह
हनुमान जी हम सजनों को कह रहे हैं:-

संस्था बदन तुसां करो स्वतन्त्र, फिर साडे कोलूं ले लौ मन्त्र।
श्री राम नाम दा जाप है मेरा फिर जीवन बना लौ अपना।
बन जाए ओ जीवन तेरा फिर जीवन बना लौ अपना॥

साजन जी दी सूक्ष्म है वृत्ति,
सूक्ष्म है जे ओन्हां दी चाल डौल
सूक्ष्म है जे ओन्हां दा पहरेवा।

ओन्हां दी गल बात कोई मुश्किल समझे

ओन्हां दी गल वल ध्यान देवे जेहड़ा।
ओन्हां दी गल बात ओही समझे
ओन्हां दी गल वल ध्यान देवे ओ जेहड़ा।।

इस उत्तम कार्य को सिद्ध करने हेतु सजनों आत्मनिरीक्षण की महत्ता को समझना अनिवार्य है। अतः सजनों हम सभी के लिए बनता है कि समभाव-समदृष्टि के सबक को वर्त-वर्ताव में लाने योग्य बनने हेतु जो भी अभी तक हमें विभिन्न सबकों के माध्यम से बताया गया है, उसे ध्यान से समझें और विचार में लावें। इसी के साथ सजनों जो भी आत्मनिरीक्षण का तरीका व युक्ति दिनांक 22 मई 2016 की कक्षा में बताई गई व जो भी आज बताई जाएगी, उसको दृष्टिगत रखते हुए सत्यता से अपनी प्रगति का आकलन इस प्रकार करें:-

1. समभाव-समदृष्टि के इस स्कूल में विधिवत् कराई जा रही सजन-भाव की पढ़ाई की गुढ़ाई के दौरान क्या आप सत्यता से अज्ञानता के कारण अन्दर घर कर गई बुराई के स्तर की जाँचना दिन-प्रतिदिन करते हुए तत्क्षण ही उनको त्यागने की हिम्मत जुटा पा रहे हो या नहीं?
2. क्या आप इस प्रकार आत्मनिरीक्षण द्वारा आत्मनियंत्रण रखते हुए सजन-भाव का सबक अपनाकर परस्पर उसको विधिवत् अमल में ला, एकता, एक अवस्था में बने रह पा रहे हो या नहीं?
3. क्या आप अपनी मनःशुद्धि बनाए रख आत्मस्वरूप परमेश्वर से प्यार करते हुए, उनके निर्दिष्ट विचारों पर मज़बूती से डटे रह पा रहे हो या नहीं?

4. क्या आप बताईं युक्ति अनुसार सदैव भूत-भविष्य की सोचों व कल्पनाओं से मुक्त रह वर्तमान में जीवन जीते हुए यानि समस्त कर्म-कर्तव्यों का पालन करते हुए, स्वतन्त्र अवस्था में बने रहने में सक्षम हो पा रहे हो या बीता अतीत व भविष्य की चिंता अभी भी आपको सताती रहती है?

5. क्या अपने मन को जगत के विषयों से आज़ाद रखते हुए, आप स्वतन्त्र रूप से नेक यानि परमार्थी कमाई करने में सफल हो पा रहे हो या दूसरों की देखा-देखी अभी भी दुनियावी यानि स्वार्थपर चलन अपनाकर उसमें बंधनमान हुए पड़े हो ?

6. क्या आप शब्द को गुरु मान, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित शब्द विचारों के मतलब को गंभीरता/गहराई, विस्तार सहित समझ, उनका मनन व अनुसरण करना सीख रहे हो व दूसरों को सिखा रहे हो या नहीं?

7. क्या अब आप कोई भी शब्द कहने से पहले व सुनने व पढ़ने के पश्चात् वह शब्द किस वस्तु/विषय/बात के सम्बन्ध में प्रयोग किया जा रहा है, उसके बारे में बुद्धि से सोच-समझ कर, उसके सही-गलत, सत्य-झूठ होने का परीक्षण करते हो यानि संदेह रहित होने पर ही, उसमें निहित विचार की सत्य धारणा, मन या ख्याल में स्थिर कर, उसका निश्चयात्मक बोध करते हो या फिर इसके विपरीत अब भी शब्द का अभिप्राय जाने बगैर उसका प्रयोग करते हुए आप तो भ्रम में फँसे ही रहते हो, साथ ही दूसरों को भी भ्रमित कर परस्पर वैर-विरोध का दुःख भोग रहे हो?

8. क्या गुरुमत अनुसार सार्थक शब्दों का प्रयोग करने की कला में पारंगत बनने हेतु आप जो बात भी किसी से करते हो वह यथार्थता अनुरूप, विचार कर यानि भली-भांति जाँच-तोल कर स्पष्टतः करते हो या फिर मनमत अनुसार अभी भी अनावश्यक बढ़-चढ़ कर, अस्पष्ट व अर्थहीन फालतू बोलना और इस प्रकार मैं-मेरी के भाव में बने रहना आपको अच्छा लगता है?

9. क्या आप सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की नीति व युक्ति अनुसार, समभाव की चाल मज़बूती से अपनाने हेतु हर प्रकार के बंधनमान व द्वि-भाव युक्त बाल अवस्था के भक्ति-भाव यथा सेवक-स्वामी, भक्त-भगवान व गुरु-चेले के बंधन से अपना ख्याल स्वतन्त्र रख, भूल कर भी किसी शरीर, तस्वीर व मूर्ति आदि की पूजा-आराधना तो नहीं करते?

10. क्या अभी भी आप दो नावों में सवार तो नहीं हैं यानि सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे पर भी आते हैं और अपनी कामना पूर्ति हेतु मंदिर-गुरुद्वारों, तीर्थ स्थानों आदि की तरफ भी भागते हैं या फिर आडम्बरयुक्त कर्मकांडों में फँस जन्त्र-मंत्र-तंत्र आदि में अंधविश्वास रखते हो?

11. क्या शब्द गुरु के साथ पूर्ण श्रद्धा व दृढ़ विश्वास से नाता जोड़ उससे प्राप्त सत्य आत्मिक ज्ञान के अनुसार आप आत्मबोध करने में किसी कठिनाई का अनुभव तो नहीं कर रहे?

सजनों अब तक पढ़ाए गए सबकों के संदर्भ में, उपरोक्त बिन्दुओं पर आत्मनिरीक्षण करने के पश्चात्, जो भी नतीजा

आपको प्राप्त हुआ हो, उस परिणाम को सोच बनाने के स्थान पर आत्मसुधार हेतु अपने यत्न को जारी रखना। कहने का आशय यह है कि इस आत्मनिरीक्षण क्रिया द्वारा, अब तक हुई प्रगति व वांछित प्रगति के स्तर में जो भी कमी पाई गई हो, उसको यादगिरी में रखते हुए अति संतोष व धैर्य में बने रहना। फिर परिपूर्ण इंसान बनने के लिए जैसे पहले कहा गया है अपनी बुद्धि, योग्यता व शक्ति पर भरोसा रखना व अपने आहार-विचार और व्यवहार की सात्विकता बनाए रखने हेतु खुद पर कड़ा आत्मनियन्त्रण रखना सुनिश्चित करना। याद रखो ऐसा करने पर निश्चित ही अच्छा परिणाम प्राप्त होगा और आप कलुकाल के घोर अंधकार में भी एक तो खुद दीप्तिमान बने रहोगे, दूसरा अपनी प्रकाशित बुद्धि से अन्यो को भी जाग्रति में ला, निष्कामता से परोपकार कमा सकोगे।

इस संदर्भ में सजनों आत्मनिरीक्षण की इस क्रिया को समझदारी से करना है क्योंकि यह कोई हँसी-मज़ाक का कार्य नहीं अपितु खुद को मानवीय भाव-स्वभावों में ढालने का यानि स्वनिर्माण का कार्य है। इस निर्माण में यदि ज़रा भी भूल हुई तो पूरा ढाँचा अपने ऊपर ही आ गिरेगा जिससे अपना ही विनाश होगा। इसीलिए तो कह रहे हैं कि आत्मनिरीक्षण के दौरान जो भी कमियाँ अपने में नज़र आई हैं उसे झूठलाओ नहीं यानि स्वीकारने से शर्माओ नहीं और न ही उनसे दूर भागो। अन्यथा रोना पड़ेगा। सच को हिम्मत से स्वीकारो क्योंकि जब तक आप अपनी गलतियों को स्वीकारोगे नहीं तब तक आत्मसुधार कैसे करोगे? अतः सजनों हमारी सब सजनों से प्रार्थना है कि समय की चाल

को समझो और शारीरिक स्वभावों से पलटा खा, सतयुग की संस्कृति अनुसार, आत्मीयता के स्वभावों में ढलने हेतु ऐसा पराक्रम दिखाओ कि आपका व्यक्तित्व यथार्थता को प्राप्त हो कुल दुनियाँ के लिए मिसाल बन जाए। सजनों इसे जीवन की सबसे उत्तम उपलब्धि मानो व इसकी प्राप्ति हेतु हिम्मत के साथ आगे बढ़ो, आगे बढ़ो, आगे बढ़ो। इस प्रकार आगे बढ़ते हुए अपने परिवारजनों व कुल समाज को मनुराज की गुलामी से छुटकारा दिलवा, परिपूर्णता से जीने योग्य बनने का आवाहन दो। सजनों इसे सम्पूर्ण मानव जाति को निर्लिप्तता व प्रसन्नचित्तता से इस जगत में जीवन जीने योग्य बनाने की व समभाव-समदृष्टि के सबक अनुसार सजनता का पाठ पढ़ाने की मंगलमय बात मानो। अब इस संदर्भ में ध्यान से सुनो:-

सुनो, सुनो, सुनो, ख्याल ध्यान वल रख
और ध्यान प्रकाश वल रख सुनो
और आनन्द विभोर हो समझने का प्रयास करो और
जानो

यह तो अनहद का नाद है
गूँजत ओ३म् की आवाज़ है
अब तो अंधकार की जगह
बिन सूरजों प्रकाश है
ओ३म् शांति शांति ओ३म् ---3

असत्य लोप हो गया
हर सू अब तो सत्य है

आत्मपद पाने हेतु समझो
उसी का ही महत्त्व है
ओ३म् शांति शांति ओ३म् ---3

जिसने है यह जग रचा
अब वह सबके साथ है
सतवस्तु अब तो आने पर
कलियुग बना इतिहास है
ओ३म् शांति शांति ओ३म्-3

इसीलिए

कलियुग का चलन छोड़ कर
सतयुग का चलन धार लो

सब समय रहते ही खुद को सुधार लो,
सुधार लो, सुधार लो

अंततः सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार
सतयुगी इंसान बनने हेतु, अपनी व अपने घर-परिवार वालों
की अन्दरूनी-बैहरूनी दोनों वृत्तियों में सतयुगी व्यवस्था
समझदारी से कायम कर एकता, एक-अवस्था में आ जाओ
और जीवन सफल बनाओ।



दिनांक 10 जुलाई 2016 का सबक्र

ब्रह्म सत्ता-1

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी
को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में
नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर
बने रहो:-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

आओ आज हम ब्रह्म सत्ता यानि अपने अस्तित्व/जीवनी
शक्ति के आधारभूत सत्य को समझते हैं ताकि हम प्राकृतिक
गुणों में बने रह, उस परब्रह्म से प्राप्त जीवनी शक्ति का
प्रयोग करते हुए, अपने चित्त को साहस से शुभ कर्मों में प्रवृत्त
रख सकें और सदा प्रसन्नचित्त बने रह सकें।

ब्रह्म सत्ता के संदर्भ में सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह
रहा है :-

आहा मेरी ब्रह्म सत्ता हनुमान जी दे वचन करो प्रवान,
अपना आप लवो पहचान ओ मेरी ब्रह्म सत्ता।

ओ हर अन्दर प्रकाशे कोने-कोने डाली-डाली,
हर अन्दर ओ जापे ओ मेरी ब्रह्म सत्ता।

ब्रह्म सत्ता पकड़ो इन्सान पा लवो सजनों आत्मिक ज्ञान,
ब्रह्म सत्ता हिवे हाज़रा हज़ूर निकट हिवे निवे कोई दूर।

ब्रह्म सत्ता है अजपा जाप हम तो हैं सारा जग प्रकाश,
ओ मेरी ब्रह्म सत्ता आहा मेरी ब्रह्म सत्ता।

ब्रह्म सत्ता है बड़ी महान खुद हूँ मैं आप भगवान,
ओ मेरी ब्रह्म सत्ता आहा मेरी ब्रह्म सत्ता।

ओ हर अन्दर प्रकाशे कोने-कोने डाली-डाली,
हर अन्दर ओ जापे मेरी ओ ब्रह्म सत्ता।

अर्थात् सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार सजनों, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी कलुकालवासियों को मूल मंत्र शब्द को गुरु बताते हुए कह रहे हैं कि हे इंसान ! यह तेरी ही ब्रह्म सत्ता है। यही सर्व प्रकाशित है व इसी के अजपा जाप से तेरा मन-मन्दिर यानि हृदय प्रकाशित है। अतः अगर 'ईश्वर है अपना आप' के विचार पर स्थिर बने रहना चाहते हो तो इस महान सत्ता को ग्रहण करो। ऐसा करने पर स्वतः ही 'खुद हूँ मैं आप भगवान' का एहसास होगा और ताकतवर हो जाओगे। इसलिए सजनों हमारे लिए बनता है कि गुढ़ाई के दौरान हम आद् अक्षर के अजपा जाप द्वारा, ख्याल को उसी संग निरंतर जोड़े रखने की आदत डालें। इसे हम अपना हृदय प्रकाशित रखने व सजन-भाव और गृहस्थ धर्म के वचनों पर परिपक्वता से खड़े रहने हेतु आवश्यक मानें। इससे हमने 'जो प्रकाश मन-मन्दिर में देखा है, वही प्रकाश सारे जग में दिखाई देगा' और हम उस प्रकाश पर अटल रहते हुए हर हालत में एकरस बने रहने के योग्य बन पाएंगे। कहने का आशय यह है कि तभी हम इस

सत्य को जान पाएंगे कि आत्मा नित्य व सत् है और शरीर असत् व नाशवान है। सजनों जब हमें यह एहसास होगा तभी हम शाश्वत भाव से जीवन जीते हुए, जीवन का मुख्य उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करने हेतु, अपनी ब्रह्म सत्ता का उचित सदुपयोग कर पाएंगे। अतः सजनों हमारे लिए बनता है कि हम गुढ़ाई के दौरान 'अमर है मेरी आत्मा' के सत्य का बोध करते हुए, एकात्मा होकर सर्व-सर्व वही ब्रह्म ही ब्रह्म है, के सार को पा, सही ढंग से ब्रह्म भाव अनुसार जीवन जीना सीखें और सिखाएं।

इस तथ्य के अनुसार सजनों हमें यह मानना होगा कि हम सत्तावान हैं और ऐसे बलवान हैं जिसमें हर कठिन से कठिन कार्य निर्विघ्नता से पूर्ण करने की सक्षमता निहित है। अतः गुढ़ाई के दौरान सजनों हमें इसी ब्रह्म सत्ता के बल पर, मन को वश में रखते हुए यानि आत्मनियन्त्रण द्वारा, खुद पर सुचारू ढंग से शासन करने के योग्य बनना है। हमें समझना है कि जैसे ब्रह्म जगत में विशेष होते हुए भी उससे निर्लेप है और रूप-रंग-रेखा से बाहर है, हमें भी ब्रह्म वृत्ति अनुसार उसी प्रकार इस जगत में विचरना सुनिश्चित करना है और रूप-रंग-रेखा के बने हुए मायावी नश्वर आवरणों में नहीं फँसना। इस परिप्रेक्ष्य में हमें याद रखना है कि रूप-रंग-रेखा से रहित जो हमारा असलियत ब्रह्म स्वरूप है, वह मूलमंत्र यानि ओ३म् विच विशेष भी है और ओ३म् तों निर्लेप भी है। इसलिए हमने कदाचित् यह नहीं भूलना कि इस मूलमंत्र आद् अक्षर के निरंतर अजपा जाप द्वारा ही हम, मन को दुनियां से आज़ाद रख, अपने ख्याल को अफुर अवस्था

में साधे रखते हुए, ब्रह्म भाव पर स्थिरता से टिके रह सकते हैं और अपनी ब्रह्म सत्ता का भरपूर व उचित प्रयोग कर सकते हैं।

सजनों यह सात्विक भाव अनुसार सदा चेतन अवस्था में बने रह इंसानियत से भरपूर स्वाभाविक आचरण में यथा बने रहने की बात है। अतः गुढाई के दौरान सजनों हमें सुनिश्चित करना है कि हम सत्त्वगुण से युक्त होकर श्रेष्ठ प्रकृति वाले इन्सान बनें। इस हेतु आत्मिक ज्ञान द्वारा बुद्धि को प्रकाशित कर मनःशांति प्राप्त करने का भरपूर यत्न करें और इस प्रकार अंतर्निहित ब्रह्म सत्ता का आदर-सत्कार करते हुए, धर्मयुक्त पुण्य सत्कर्मों में प्रवृत्त हो जाएं। याद रखो तभी हम संतोषी व धैर्यवान बन, एक चरित्रवान इंसान की तरह, प्रसन्नता से न्यायसंगत जीवन जीने में कामयाब हो पाएंगे और जगत से आदर-सत्कार पाने के योग्य बन सकेंगे। सजनों मानव-धर्म व समभाव-समदृष्टि के सबक अनुसार यही, अहंकार व जगत के विषयों के प्रति तृष्णा रहित होकर, सत्यनिष्ठा व सुख-शांति से जीवन जीने का तरीका है। इसी तरीके का अनुसरण करके ही हम सजनता से युक्त एक ऐसे श्रेष्ठ समाज के निर्माण में निष्कामता से अपना योगदान दे पाएंगे जहाँ पर सब परस्पर सद्भावना, एकता व एक अवस्था में बने रहते हैं। सजनों ईश्वर की आज्ञाओं की पालना करने हेतु ऐसा करना आवश्यक मानो क्योंकि इसके विपरीत कुछ भी करना अपनी ही सत्ता के विरुद्ध विद्रोह रच कर दंड प्राप्त करने की बात होगी। अतः आओ सजनों, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के सपुत्र बनें और उनके वचनो की सही ढंग से पालना कर सजन युग की स्थापना करें।

सजनों अक्षर के निरंतर अजपा जाप पर पकड़ रखते हुए मन-
मंदिर प्रकाश रही, ब्रह्म सत्ता का बोध सर्व-सर्व में कैसे करना
है, यह जानने हेतु सब मिलकर बोलो:-

फिर फिर के देखां में दर्शन पावां
नज़र आवें सोहणा तूं इक तूं इक तूं।
फिर फिर के देखां में दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं॥

शेष में तूं है गणेश में तूं है,
देवी देवतियां विच तूं इक तूं इक तूं।
फिर फिर के देखां में दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं॥

शिव में तूं है ब्रह्मा में तूं है,
जिधर देखां सोहणा तूं इक तूं इक तूं।
फिर फिर के देखां में दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं॥

सूरज में तूं है चाँद में तूं है,
तारों में नज़र आवें तूं इक तूं इक तूं।
फिर फिर के देखां में दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं॥

वैश्य में तूं है शूद्र में तूं है,
क्षत्री ब्राह्मण विच तूं इक तूं इक तूं।
फिर फिर के देखां में दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं॥

सीता वी तूं है, महाबीर जी वी तूं है,
चंवर झुलेंदा लक्ष्मण तूं इक तूं इक तूं।
फिर फिर के देखां में दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं॥

पर्वतों में तूं है दरख्तों में तूं है,
फुलवाड़ी में नज़र आवें तूं इक तूं इक तूं।
फिर फिर के देखां में दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तूं॥

इन्द्र में तूं है वरुण में तूं है,

कुबेर वी नज़र आवें तू इक तू इक तू।
फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तू॥

मोर मुकट मत्थे तिलक विराजे,
गल बैजन्ती माला साजे सिंहासन ते सोहणा लगे तू इक तू इक तू।
फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तू॥

मस्ताने ने दासियाँ नूं मस्ती दिखाई,
मस्ताना बनाया तू इक तू इक तू।
फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां नज़र आवें सोहणा तू॥

जीव जन्तु तेरे दासी ने देखे,
चारे पासे नज़र आवें तू इक तू इक तू।
फिर फिर के देखां मैं दर्शन पावां, नज़र आवें सोहणा तू॥

अर्थात् सजनों इस सारे जगत में ब्रह्म सत्ता का ही चमकारा है। पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण, जल-थल, पवन-पानी, धरती-आकाश, सूरज-चाँद, पातालों-पाताल, आकाशों-आकाश, चौह-कुंडा विच ब्रह्म सत्ता का ही चमकारा है और ब्रह्म सत्ता ही जड़ चेतन, हर वस्तु व लोक-परलोक के अस्तित्व का सहारा है। उसके अतिरिक्त इस जगत में कुछ भी नहीं। अतः इस तथ्य को समझते हुए हमारे लिए बनता है कि हम उठत-बैठत, स्वप्न-जाग्रत, कहीं भी आएँ-जाएँ, जिसके साथ भी विचरें, हर्षोल्लास के साथ, सब में उसी ब्रह्म सत्ता का ही अनुभव करें तथा समभाव-समदृष्टि के सबक अनुसार परस्पर सजन-भाव का ही व्यवहार करें।

कहने का तात्पर्य यह है कि सच्चेपातशाह जी की युक्ति अनुसार सर्व-सर्व ब्रह्म सत्ता का आभास करने हेतु अन्दर विचरो-बाहर विचरो, घर में हों या बाज़ार में, मन-मन्दिर देखो या जग अन्दर, परिवार वाले देखो या रेहड़ी वाले, बाल-वृद्ध,

गरीब-अमीर जो सजन भी आगे आवे, उसको ब्रह्म यानि भगवान का रूप ही समझो और प्रसन्न होवो अर्थात् मन ही मन यह विचार कर हर्षाओ कि हे प्रभु ! तेरे खेल कितने निराले हैं। कितने रूपों में कितनी तरह का खेल, खेल रहे हो और खेल खेलते हुए भी उससे निर्लेप हो। इस तरह जगत के सब दृश्य देखते हुए अपने मन में किसी अन्य प्रकार का भाव पैदा करने के स्थान पर, अपनी ही ब्रह्म सत्ता का अनुभव कर हर्षाओ। सजनों इस वृत्ति पर ठहरो क्योंकि यह वृत्ति कमाल है और यही वृत्ति विशाल है। गुढ़ाई के दौरान इस पर खड़े हो जाओ जैसे अर्जुन खड़ा हुआ था। याद रखो अब से न तो आप के मन में किसी को सताने का भाव उत्पन्न हो और न ही किसी भी कारण शोक-पीड़ा, पश्चाताप आदि को प्राप्त हो, दुख की साँसें भरो यानि हर प्रकार की कल्पना से बचे रहने में ही अपना व सबका हित तथा सुख मानो ।

संक्षेपतः इस विवेचना से सजनों स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण विश्व ब्रह्ममय है अथवा ब्रह्म-निर्मित है और उसी की शक्ति से चल रहा है। प्रणव ही अपने आप में ब्रह्म बीज है जिससे यह सारा ब्रह्मांड उत्पन्न होता है व अंततः उसी में विलय हो जाता है। अतः गुढ़ाई के दौरान हमारे लिए बनता है कि हम मूलमंत्र ब्रह्म सत्ता रूपी शब्द गुरु के संग अपने रूखाल को अत्यन्त एकाग्रचित्तता व ध्यान से हर्षोल्लास के साथ साधे रखें। इस तरह ब्रह्म विचारी बन, आत्मिक ज्ञान यानि ब्रह्म विद्या द्वारा ब्रह्मशक्ति से उत्पन्न वाणी जिसे शब्द ब्रह्म कहते हैं, उसका बोध कर, अपनी ब्रह्म सत्ता का न्यायसंगत प्रयोग

करने की कला में पारंगत बनें और वेदों में विदित निर्दिष्ट धर्म-कर्म करते हुए अपने बच्चों को भी बाल्यावस्था से ही ब्रह्म के साक्षात्कार यानि आत्मिक ज्ञान के प्रयोग की युक्तिसंगत साधना करने में निपुण बनाएं। सजनों यह बचपन से ही उन्हें ब्रह्मचर्य का पालन करने योग्य बनाने व निर्विकारी अवस्था में साधे रखने के लिए अति आवश्यक है। निश्चित ही ऐसा करने पर वे आत्मभाव में स्थित रह तेजस्वी व ओजस्वी बन नेकी की राह पर मजबूती से बने रह पाने का पराक्रम दिखा पाने के योग्य बनेंगे और इस तरह सजन-युग की बुनियाद मजबूत हो जाएगी। ऐसा सुनिश्चित करने पर ही सपरिवार एकरस सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर बने रह परोपकार कमा पाओगे। इसलिए हमारी सबसे प्रार्थना है कि गुढाई के दौरान ऐसे बनो, हाँ ऐसे बनो और सबको ऐसा ही बनाओ। याद रखो इस पावन यत्न के उपरान्त जब आत्मस्वरूप का बोध होगा तो स्वतः ही कह उठोगे कि :-

पायो री मैंने आत्मस्वरूप है पायो
 यह तो है जी बहुत ही सुंदर
 हाँ जी, हाँ जी, अति ही सुन्दर
 जो मेरे मन को भायो

इलाही स्वरूप जब
 ध्यान से देखा
 हाँ जी, हाँ जी, ध्यान से देखा
 तो ही परमेश्वर नज़र आयो

उसी संग अब ध्यान है जुड़ गया
उसी रंग में हूँ अब मैं रंग गया
हाँ जी, हाँ जी, ऐसा रंग गया
और ख्याल में अपनायो

खुल गए मेरे अंतर नैनां
पाया मन ने भी चैना
हाँ जी, हाँ जी पाया ऐसा चैना
कि मैंने समभाव अपनाओ

जाऊँ मैं अब उस पर बलिहारी, जिसने बनाया मुझ विकारी
को सदाचारी और ए विध मेरी जिन्दगी संवारी ।

जय ब्रह्मचारी, जय जय ब्रह्मचारी, दासी चरणां तो जावे
बलिहारी, वारी ते सदके सारी, जय ब्रह्मचारी, जय जय
ब्रह्मचारी ।।

अंततः हमारी सबसे करबद्ध प्रार्थना है कि आप सब भी
समभाव अपनाओ और आत्मबोध कर परम शांति पाओ ।



दिनांक 17 जुलाई 2016 का सबक

(ब्रह्म सत्ता -2)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी
को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में
नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर
बने रहो:-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों गत सप्ताह हमने जाना कि इस मिथ्या जगत का
आधार, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, आद् पुरुष,
निरंकार, कारियों के कारीगर, परमेश्वर की ब्रह्म सत्ता है।
आओ आज उस परब्रह्म की, इस जीवनदायक शक्ति का,
सर्व-सर्व यानि जनचर-बनचर, जड़-चेतन, अखिल ब्रह्मांड
में एकरस व्याप्त होने का अनुभव करते हैं और उस ब्रह्म
सत्ता के वस्तुगत अनेक रूपों के आकर्षणों में उलझने के
स्थान पर, उन रूपों का, परस्पर एक-दूसरे पर निर्भर होने
का औचित्य समझ कर, सर्वहित की खातिर उन्हें सही ढंग
से प्रयोग में लाना सीखते हैं। यह अभ्यास अति सावधानी से
करना है ताकि किसी भी कारण अनुभव के दौरान, किसी भी
वस्तु का शरीरगत स्वाभाविक रूप, हमारे मन-चित्त की
एकाग्रता भंग कर, हमारे ख्याल को अपने में उलझा,

ब्रह्मसत्ता के यथार्थ का सत्य बोध करने से भटका न सके। इस प्रकार आज के दिन जो निज अस्तित्व की यथार्थता जानने का सत्य असंभव लगता है, वह जानना हम सबके लिए संभव हो जाए।

यहाँ हम अभ्यास आरम्भ कराने से पहले आपको सावधान करना चाहते हैं कि इस क्रिया के दौरान अपने पाँच तत्त्वों, मन, इन्द्रियों, पंच विकारों और तीन तापों को, चेतना शक्ति द्वारा अपने नियन्त्रण में कर शांत व अफुर रखना। सतर्क रहना क्योंकि यदि इनमें से किसी के भी कारण, अन्दर असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हुई तो सतोगुण के स्थान पर रजोगुण व तमोगुण हरकत में आ जाएंगे जिसके प्रभाव से अंतःपटल के आगे अंधकार छा जाएगा। फलतः आत्मिक ज्ञान का प्रकाश हृदय को प्राप्त नहीं हो सकेगा। इस तरह जब सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त नहीं होगी तो शरीर और मन दोनों ही अस्वस्थ हो जाएंगे। ऐसा होने पर मन में दोषारोपण की क्रिया आरम्भ हो जाएगी व अन्दरूनी व बैहरूनी वृत्तियाँ विकृत हो जाएँगी। इस तरह मन के चंचल होते ही उस में संकल्प-विकल्प की तरंगें उठने लगेंगी और अपने यथार्थ को जानने की क्रिया ठीक से नहीं कर पाओगे यानि सारी मेहनत बेकार हो जाएगी। अतः इस विपरीत स्थिति को उत्पन्न मत होने देना और इस हेतु याद रखना कि इनके उग्र स्वभावों के प्रभाव से मुक्त रहने पर ही, अपने तन-मन को स्वस्थ रख, जीवन लक्ष्य प्राप्ति हेतु इनका उचित प्रयोग कर पाओगे और अपने असलियत स्वरूप का सत्य बोध करते हुए, निर्दोष जीवन जीना संभव हो जाएगा।

ध्यान दो आप में से जो भी इस अनुभव को पूर्ण सचेतन

अवस्था में बने रह, सफलता से करने का पुरुषार्थ दिखाएगा, वही सही अर्थों में बधाई का पात्र होगा क्योंकि ऐसा प्रेममय, सजन पुरुष ही आत्मबोध द्वारा परमात्मा के दर्शन करने योग्य होता है। जानो कि ऐसे सफल दीप्तिमान व्यक्ति को, समभाव-समदृष्टि की युक्ति की पढ़ाई व गुढ़ाई उपरांत, नीतियों का वर्त-वर्ताव धर्मसंगत करने में, किसी प्रकार की कठिनाई नहीं आएगी यानि आगे का रास्ता सरल व स्पष्ट हो जाएगा। इस प्रकार वह सजन ही, समभाव को नज़रों में कर, आत्मीयता से भरपूर, समदृष्टि जैसे महान गुण को प्राप्त कर, प्रसन्नचित्तता से, इस जगत में शास्त्रविहित् धर्म-कर्म करता हुआ वास्तव में मोक्ष का अधिकारी होगा। सजनों जानो कि यही सबसे उत्तम पद है जिसको प्राप्त कर और कुछ पाने की आवश्यकता नहीं रहती। अतः यदि कामना करनी भी है तो इस उत्तम पद को प्राप्त करने की करो। तभी तो सब मानते हैं कि आत्मानुभूति से ही आत्मा तुष्ट रहती है और इंसान बलशाली हो, ब्रह्म भाव अनुसार स्थिर बुद्धि होकर इस जगत में जो भी करता है वह इच्छा रहित होकर, परमेश्वर के हुक्म अनुसार, निष्काम भाव से ही करता है। इस प्रकार ईश्वर की छत्र-छाया में बने रह, वह सब कुछ करते हुए भी दुनियाँ से आज़ाद रहता है। इस संदर्भ में सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में परमेश्वर कहते हैं:-

सजनों मेरी सुन लौ बात, दुनियां तों राहवो आज़ाद।।

सजनों यह आत्मबोध द्वारा, माया के भ्रमजाल से बचे रह, स्वतन्त्रता से अपने तन-मन को, ब्रह्म सत्ता की परिधि में साधे रखने की बात है। ऐसे बनो, हाँ ऐसे बनो और ऐसे बनने

हेतु, नेक नीयती व दिलचस्पी में आकर जैसे अब बताया जाए नियन्त्रित व एकाग्र होकर वह अभ्यास करो:-

पहले यह सत्य जानो कि पाँच तत्वों के शरीर सहित इस जगत की हर वस्तु जड़ व परिवर्तनशील है। ब्रह्म सत्ता ही अपने आप में वह चेतन शक्ति है जो इस मिथ्या शरीर रूपी मशीनरी सहित हर वस्तु को क्रियावन्त करने में समर्थ है यानि उसी जीवन-शक्ति से ही सभी क्रियाशील होते हैं।

इस तरह मानो कि परब्रह्म परमेश्वर की नित्य शक्ति ने ही ब्रह्म सत्ता के रूप में हर अनित्य वस्तु को धारण किया हुआ है। वस्तुओं के नाम व रूप अनेक हो सकते हैं पर उनमें शक्ति एक ही है, वह है ब्रह्म सत्ता। एक ही शक्ति से संचालित होने के कारण सजनों यह सिद्ध होता है कि हम सब एक हैं। अतः हमें एकता में ही बने रहना शोभा देता है। इसी एकता के भाव में आने पर ही हम ताकतवर हो सकते हैं। इस संदर्भ में याद रखो हमने और आपने कई चोले बदले हैं और यह चोला भी एक दिन मिट्टी में मिल जाएगा। अतः मिट्टी में मिलने वाले इस चोले से मोह मत करो, न ही इसका अभिमान करो अपितु विरक्त भाव से, ख्याल को शरीर व शारीरिक सम्बन्धों से मुक्त रख, आत्मीयता में बने रहने हेतु ब्रह्म-भाव अपनाओ। इस तरह सही ढंग से इस सत्ता का प्रयोग करना सीखो।

इस हेतु यह सत्य मानो कि यथार्थ में मैं अजर-अमर आत्मा हूँ, पाँच तत्वों का बना हुआ नश्वर शरीर नहीं जो बार-बार मरता है व फिर जन्म लेता है। अतः इस शरीर के नष्ट होने व रूप बदलने पर मुझे दुःखी व शोकग्रस्त होने की

आवश्यकता नहीं। इस बात को अत्यन्त गहराई से समझना है क्योंकि जो इस बात को समझ लेता है वह ही यथार्थता से आत्मीयता अनुकूल जीवनयापन कर सकता है। आत्मीयता के अंतर्गत शरीर का कोई स्थान नहीं होता अपितु आत्मीयता का वर्त-वर्ताव करने के लिए शरीर का सार्थक प्रयोग किया जाता है। अतः मुझे याद रखना है कि शरीर सहित, इन मन-इन्द्रियों को मैंने अपने जीवन के परम लक्ष्य यानि मोक्ष प्राप्ति हेतु धार रखा है। पर हकीकत में मैं रूप-रंग-रेखा से रहित ब्रह्म हूँ व इस चेतन शक्ति ब्रह्म सत्ता का आधार हूँ, जिसके द्वारा इस शरीर का संचालन होता है यानि अजर-अमर, आत्मा हूँ, जिसका नाश कभी नहीं हो सकता। हाँ वह आत्मा हूँ, जिसमें परमात्मा नित्य विद्यमान रहते हैं। मैं वही नित्य सत्ता हूँ और हर्ष-शोक, उपज-बिनस, संयोग-वियोग से बाहर नित्य परमात्म स्वरूप हूँ।

इस संदर्भ में सजनों इस अवस्था में बने रहने हेतु हमें अपनी आत्मा को शुद्ध वातावरण प्रदान करना है व इसके लिए अपने अंतःकरण को स्वच्छ रखना है ताकि आत्मबोध बना रहे। तभी हम अंतर्निहित आत्मिक शक्ति का भरपूर लाभ उठाते हुए इस शरीर का भरपूर इस्तेमाल कर इसे स्वस्थ रख पाएंगे और जिस मकसद के लिए इसे धारण किया है उसे सिद्ध कर पाएंगे।

सजनों ब्रह्म सत्ता की परिधि में शरीर के क्रियाशील होने का सत्य जानने के लिए मानो कि शरीर के चहुं ओर यानि अन्दर-बाहर ब्रह्म सत्ता ही व्याप्त है। अब गहरी साँस भरो व छोड़ो और जानो ब्रह्म सत्ता के अन्दर-बाहर निरन्तर होने पर ही आपकी श्वास टिकी हुई है यानि आप जीवित हो। निर्बाध

अफुरता से इस क्रिया को करो। याद रखो जहाँ इस क्रिया में बाधा उत्पन्न हुई यानि ध्यान इसके प्रति कमज़ोर पड़ा, वहीं जड़ता को प्राप्त हो किसी काम के नहीं रहोगे यानि मृत्यु को प्राप्त होगे।

इस सत्य को जानने के पश्चात् यह सत्य भी मानो कि जगत की हर शै का आधार भी यही ब्रह्म सत्ता ही है और इस लिए हर शै सम है। किसी में परस्पर कोई फ़र्क नहीं। यहाँ समभाव का महत्व समझ में आ जाता है। अतः सजनों निज धर्म अनुसार ईश्वर की बनाई हर शै की कद्र करते हुए, समभाव व समदृष्टि पर बने रहने को ही उचित मानो और ऐसा करना ही सुनिश्चित करो अन्यथा द्वि-भाव के कारण भिन्न-भेद से ग्रसित हो जाओगे।

अब मन को संकल्प रहित अवस्था में साधे रख, ख्याल ध्यान वल कर, अपने वास्तविक प्रकाशित स्वरूप का बोध करने का यत्न करो।

इस यत्न में सफलता प्राप्ति के लिए सांसारिक फुरनों से विरक्त हो, अंतःकरण रूपी दर्पण को अक्षर चलाते हुए निर्मल बनाओ। ऐसा करने से अपने प्रकाशित स्वरूप का बोध हो जाएगा।

अब इस निर्मल अवस्था में, एकाग्रचित्तता व ध्यान से, उस दर्पण पर प्रतिबिम्बित अपने स्वरूप को देखो यानि यह जानो कि हकीकत में 'मैं' क्या हूँ। यह क्रिया ठीक उसी तरह से करो जैसे कि शीशे को साफ कर अपने शारीरिक रूप को देखते हो व सजते-सँवरते हो।

ऐसा करते समय अगर स्वभाववश कोई विकार आड़े आ रहा हो तो, शब्द विचार द्वारा, बुद्धिमत्ता से उसका उन्मूलन करने में न तो विलम्ब करो और न ही कोई लापरवाही दिखाओ।

इसके पश्चात् जो देखा है उसे 'ब्रह्म स्वरूप है अपना आप' मान कर धारण करो। ऐसा कर पाना महान उपलब्धि मानो। अतः बहादुर बनो और इस महान उपलब्धि हेतु अपना सब कुछ इस पर वार दो।

सजनों इस सत्य को मानो कि आप यथार्थ में सूरजों के सूरज परमात्मा का प्रतिबिम्ब हो यानि ऊर्जा का वह सूरज रूपी स्रोत हो जहाँ से आपके हृदय को प्राकृतिक रूप से अंधकार को दूर करने वाला प्रकाश निरंतर प्राप्त होता रहता है और आप अंतर्दृष्टि द्वारा, अपने दिव्य ब्रह्म स्वरूप सहित, अंतर्जगत के रहस्यों को स्पष्टता से देख व समझ कर, उन्हीं दिव्य गुणों अनुसार बाह्य जगत में आत्मीयता से विचर सकते हो। सजनों यह अपने आप में शारीरिक स्वभावों से मुक्त बने रहने की बात है। इसको आत्म साक्षात्कार का हेतु मानो व इस तरह प्रकाशयुक्त हो धर्म प्रकाशी महान आत्मा बनो। निश्चित ही ऐसा होने पर सब भिन्न-भेद मिट जाएंगे और एकता, एक-अवस्था आ जाएगी।

इस तरह सजनों अब अपने आपको ओजस्वी यानि शक्तिशाली महसूस करो। ऐसा करने पर आपके मन में दीप्ति, वीरता और उत्साह का भाव उत्पन्न होगा।

अब मानो कि अब आप इतने सहनशील हो गए हो कि आपके मन को जीवन का कोई भी आघात या परिस्थिति आदि विचलित नहीं कर सकती। मानो कि सहनशीलता मन

का वह कवच यानि ढाल है जिसको भेदकर शारीरिक विकार, परिस्थितियों की ओट में, उसे अपना शिकार नहीं बना सकते।

इस तरह अपने मुख पर विशेष तेज व मन में आध्यात्मिक शक्ति का एहसास करते हुए मानो कि आप इतने पराक्रमी हो गए हो कि आपको जीवन का कोई भी दुःख-सुख यहाँ तक कि तीनों ताप भी संतप्त नहीं कर सकते।

सजनों अब खुद पर यकीन करो कि आप अपने मन से कलुकाल को परास्त कर सतवस्तु यानि स्वर्णिम युग में प्रवेश कर रहे हो। अतः अब आप इतने दक्ष, होशियार, पराक्रमी, प्रतिभाशाली व बुद्धिमान हो गए हो कि कोई भी चंचल वृत्ति इंसान, छल-कपट द्वारा आपकी विवेकशक्ति को हर नहीं सकता।

अब आप सच्चे दिल से मानो कि आप ही ज्योतिर्मय परमात्मा हो, जिसके तेज को कोई हर नहीं सकता। इसीलिए सदा तेजोमय बने रहो क्योंकि किसी भी कारण अपनी शक्तिमय अवस्था से विचलित होना निर्बलता को प्राप्त हो, अपना अपमान करने व जीवन उत्साह हीनता से जीने की बात होगी। तो क्या आप सब खुद को तेजस्वी मानते हो? अगर हाँ तो बलवानों की तरह समभाव-समदृष्टि के सबक को धारण कर उसका वर्त-वर्ताव करने और दूसरों से कराने में सकुचाओ मत।

अब अपने शारीरिक बल, मानसिक व आत्मिक बल को किसी भी दबाव में आकर क्षीण मत होने दो और न ही किसी के सहारे या किसी के आधार पर घमंड करना सीखो। इस

हेतु निरंतर अक्षर चलाते रहो और स्वयं अपनी ताकत पर पूरा भरोसा रखते हुए अफुर व दोषमुक्त बने रहो। जो भी प्राप्त करना है अपने बल से करो। इस हेतु अपने बल का परीक्षण यानि शक्ति जानने की क्रिया करते रहो ताकि विरोधी व्यक्तियों/दलों/वर्गों आदि का परस्पर दबाव डालने या अपनी बात मनवाने के लिए किया जाने वाला द्वंद्व/संघर्ष आपको निर्बल बना आपके मन को अशांत कर, परमार्थी चलन के विपरीत, दुनियावी चलन में न उलझा दे।

सजनों यह युग पुरुषों की तरह बलवान तथा वीर बने रह सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर सुदृढ़ बने रहने की बात है। याद रखो ऐसा करने पर ही श्रेष्ठ पुरुष कहला सकते हो व अपना जीवन लक्ष्य मोक्ष प्राप्त कर जीवन सार्थक कर सकते हो। अतः सजनों ऐसा बनने हेतु हिम्मत दिखाओ और अपने जीवन लक्ष्य की प्राप्ति कर, रौशन नाम कहाओ। इस हेतु अब सब मिल कर बोलो:- मैं ब्रह्म हूँ, ब्रह्मा दा वी ब्रह्म हूँ ।

सजनों अब जब यह समझ में आ गया है कि मैं नित्य चेतन सत्ता ब्रह्म हूँ तो अपने ख्याल को शरीर व शारीरिक सम्बन्धों से मुक्त रख, आत्मीयता अनुसार इस संसार में विचरना सुनिश्चित करो यानि जब भी परस्पर बातचीत हो तो आत्मा की आत्मा से बात हो, शरीर की शरीर से नहीं। वैसे भी सजनों अब जब हमें पता चल ही गया है कि शरीर हमारी वास्तविकता है ही नहीं तो हम शारीरिक स्तर पर बात क्यों करें? हमारी वास्तविकता तो यह है कि हम आत्मा हैं तो क्यों न हम अपने वास्तविक स्वभाव के अनुरूप ही आत्मीयता से इस जग में विचरें। इस संदर्भ में हम मानते हैं कि आज के समयकाल में अगर हम किसी से आत्मा से,

आत्मीयता की बात करते हैं तो अधिकतर व्यक्ति उत्तर में शरीर से बात करते हैं जिससे परस्पर मेल व एकता नहीं बन पाती। यह देखते-समझते हुए भी हमें परेशान नहीं होना अपितु उस समय अनुभव करना है कि मैं परमात्मा हूँ और सब भी वही परमात्मा हैं। इस तरह विचार पर खड़े हो सर्वत्र अपनी ब्रह्म सत्ता का ही बोध करते हुए निज धर्म पर सुदृढ़ता से टिके रहना है। तभी सजनों परमात्मा के विचारों को आत्मसात् करते हुए, इस शरीर का सावधानी व पूर्ण चेतना द्वारा सदुपयोग करना सीख पाओगे व इस जगत में विचरते हुए भी निर्विकारी परमात्म स्वरूप में बने रह पाओगे। अंत में हमारी सबसे प्रार्थना है कि सब ऐसा ही बनना सुनिश्चित करो। इस संदर्भ में अब सजन श्री शहनशाह जी के मुख के शब्द ध्यान से सुनो व बोलो:-

आप हो सारी दुनियाँ दे रक्षक,
 आप ही हो दुनियाँ दे सहारे।
 आप ही हो दुनियाँ दे पालक,
 आप ही हो सब दे पालनहारे॥

(सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी कह रहे हैं)

चानणा हुआ उदय, तां मैं प्रकट भया,
 पाप अन्धेरा अन्धकार हुआ तां मैं गुपट भया।
 अन्धेरे में जेहड़ा जेहड़ा ढूँढना चाहवे,
 ओ इक इक बात नूं पकड़े॥

खालस सोना खोट न राहवे,
 जो इक इक बात नूं पकड़े।

चानणा मेरा है कुल दुनियां अन्दर,
सजन चमके ओ चमक दिखावे।

(सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी कह रहे हैं)

एहो मेरी ब्रह्म सत्ता,
आहा ओ मेरी ब्रह्म सत्ता।
एहो मेरी ब्रह्म सत्ता, मन मन्दिर प्रकाशे,
आद अन्त एहो जापे।

कोने कोने डाली ओ डाली, पत्ते ओ पत्ते व्यापे।
एहो मेरी ब्रह्म सत्ता, आहा ओ मेरी ब्रह्म सत्ता॥

एहो मेरी ब्रह्म सत्ता ब्रह्म सत्ता प्रकाशे,
जगत जहान हां मैं खुद आप भगवान।

जड़ चेतन प्रकाशे सूरज चाँद ही ओ जापे,
एहो मेरी ब्रह्म सत्ता।
एहो मेरी ब्रह्म सत्ता,
आहा ओ मेरी ब्रह्म सत्ता॥

एहो मेरी ब्रह्म सत्ता, प्रकाशे हाज़रा हज़ूर,
निकट हिवे सजनों, सजनों निवे कोई दूर।

प्रकाश मेरा सारे भूमंडल,
प्रकाश मेरा है ज़रूर, एहो मेरी ब्रह्म सत्ता।
एहो मेरी ब्रह्म सत्ता, आहा ओ मेरी ब्रह्म सत्ता॥



दिनांक 24 जुलाई का सबक्र

'सतवस्तु की रामसत्' - 1

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी
को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में
नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर
बने रहो:-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

गत दो कक्षाओं में हमने ब्रह्म सत्ता के विषय में विस्तार से जाना। इस संदर्भ में सजनों जब कोई सजन ब्रह्म सत्ता को पकड़ शब्द ब्रह्म विचार पर खड़ा हो जाता है तो उसके अन्दर संसार से कुछ प्राप्त करने की कोई अपेक्षा नहीं रहती, न ही फिर उसे संसार से कुछ लेना-देना होता है। वह तो सदा अपनी सर्वशक्तिमान अवस्था में स्थिर बना रहता है और जब भी किसी से मिलता है या बात करता है तो परस्पर सतवस्तु के विधान अनुसार, सतवस्तु की रामसत् के अनुरूप ही चलन अपनाता है और जीवन में जो करता है वह निष्काम भाव से सर्वहित के लिए ही करता है। इस तरह सतवस्तु की रामसत् का अपने मन पर, चित्त की प्रसन्नता पर, चरित्र पर व सम्बन्धों के कुशलतापूर्वक निर्वहन पर शुभ प्रभाव समझते हुए वह अपना उपकार करने के साथ-साथ

दूसरों को इस व्यवहार में लाने हेतु इस नीति का निष्काम भाव से भरपूर प्रयोग करता है। तभी तो सजनों सच्चपातशाह जी को भी जैसे ही परब्रह्म परमेश्वर द्वारा रचित इस ब्रह्मांड में ब्रह्म सत्ता की सर्वव्यापकता का सत्य बोध हुआ, वैसे ही सब कुछ जानने वाले यानि सर्वज्ञ श्री साजन परमेश्वर ने हर मनुष्य को निर्विघ्न आत्मीयता में बने रहने हेतु, परस्पर मुलाकात व सम्पर्क स्थापित करते समय सतवस्तु की रामसत् पूछने का आवाहन दिया। सजनों उनके हुक्मानुसार आज कथित सतवस्तु की रामसत् का तात्पर्य स्पष्टता से समझाया जाएगा।

इस विषय में सजनों कलुकाल के स्वभावों में उलझे हुए इन्सानों को इस मानवोचित क्रिया को अपनाने व उसी अनुसार ढलने की प्रेरणा देने के लिए वह अपनी सर्वव्यापकता के बोध का वर्णन इस प्रकार कर रहे हैं:-

श्री साजन जी के मुख के शब्द

सर्व हूँ अज पता लगा, सर्व विच व्यापक हूँ।
 हो हो हो हो, सर्व विच व्यापक हूँ।
 दिसदा हूँ वसदा हूँ, खिड़ खिड़ के पिया हसदा हूँ।
 सर्व हूँ सर्वत्र हूँ, सर्व विच ही जापत हूँ।
 हो हो हो हो, सर्व विच ही जापत हूँ,
 दिसदा हूँ वसदा हूँ, खिड़ खिड़ के पिया हसदा हूँ।
 सर्व ही है नाम मेरा, सर्व ही रोग नाशक हूँ।
 हो हो हो हो, सर्व ही रोग नाशक हूँ।
 दिसदा हूँ वसदा हूँ, खिड़ खिड़ के पिया हसदा हूँ।
 सर्व हूँ जीव जन्तु भासा, सर्व विच प्रकाशित हूँ।

हो हो हो हो, सर्व विच प्रकाशित हूँ।
 दिसदा हूँ वसदा हूँ, खिड़ खिड़ के पिया हसदा हूँ।
 सर्व हूँ अग्न पवन और पानी सर्व ही निस्थापन हूँ।
 हो हो हो हो, सर्व ही निस्थापन हूँ।
 दिसदा हूँ वसदा हूँ, खिड़ खिड़ के पिया हसदा हूँ।
 सर्व हूँ देश देशांतर हूँ, सर्व विच नज़र आवत हूँ।
 हो हो हो हो, सर्व विच नज़र आवत हूँ।
 दिसदा हूँ वसदा हूँ, खिड़ खिड़ के पिया हसदा हूँ।
 सर्व हूँ साज ताज हूँ, सर्व ही निवास हूँ।
 हो हो हो, सर्व ही निवास हूँ।
 दिसदा हूँ वसदा हूँ, खिड़ खिड़ के पिया हसदा हूँ।
 सर्व हूँ रहमत हस्ती सर्व, सर्व ही प्रमाद हूँ।
 हो हो हो हो, सर्व ही प्रमाद हूँ।
 दिसदा हूँ वसदा हूँ, खिड़ खिड़ के पिया हसदा हूँ।
 सर्व मैं हूँ मैं हूँ सर्व, सर्व सर्व प्रकाश हूँ।
 हो हो हो हो, सर्व सर्व प्रकाश हूँ।
 दिसदा हूँ वसदा हूँ, खिड़ खिड़ के पिया हसदा हूँ।

सजन जी इस कीर्तन का क्या भावार्थ है?

इस कीर्तन के माध्यम से श्री साजन जी हम सजनों को बता रहे हैं कि उन्हें आज इस गूढ़ तत्व का बोध हुआ है कि वह ही ब्रह्म सत्ता के रूप में सब पदार्थों में समरूपता से भरे, फैले व छाए हुए हैं अर्थात् हर जगह मौजूद हैं।

इस गुप्त सत्य का बोध होने पर क्या हुआ?

इस गुप्त सत्य का बोध होने पर उन्हें प्रत्येक वस्तु व पदार्थ के रूप-रंग और आकार-प्रकार आदि में अपना ही स्वरूप

नज़र आने लगा और उसी के स्थाई रूप से स्थिर यानि हर जगह बसने की प्रतीति होने लगी। इस तरह सर्व अपनी ही मनोहर व रमणीय सत्ता का दर्शन कर वह खिलखिलाकर हँसते हुए कहने लगे 'दिसदा हूँ, वसदा हूँ खिड़ खिड़ के पिया हसदा हूँ'।

श्री साजन जी अपनी सर्वव्यापकता को इस कीर्तन के माध्यम से कैसे जना रहे हैं, ज़रा खोल कर बताइए?

इस कीर्तन में वह कहते हैं कि मैं ही सब जगह हूँ व नज़र आ रहा हूँ इसलिए सर्व मेरा ही अजपा जाप है। मेरे ही नाम की यश-कीर्ति सर्व फैली हुई है। मैं ही शरीर व मन को अस्वस्थ करने वाले समस्त रोगों के लक्षण और उत्पत्ति के कारणों को पहचान कर उनका नाश करने वाला हूँ। मैं ही जनचर-बनचर, जड़-चेतन यानि नाना प्रकार के चराचर जीवों के रूप में दिखाई दे रहा हूँ यानि सब मेरी ही शक्ति अथवा तत्व से आलोकित यानि प्रकाशित हो नज़र आ रहे हैं। मैं ही सर्वव्याप्त अग्नि, पवन और पानी के रूप में निरूपित हूँ यानि इनकी दृढ़ता व पुष्टता का आधार हूँ और मैं ही विभिन्न देश-विदेशों के रूप में फैले हुए इस भूभाग के हर कोने में नज़र आ रहा हूँ। मैं ही साज-ताज हूँ यानि सर्वव्याप्त इस हकूमत में सज रहा हूँ और मैं ही इस हकूमत का बादशाह हूँ। मेरा ही हर वस्तु में निवास है जिसका बोध होने पर हर सुरत विश्राम पाती है। मैं ही सब पर कृपा करने वाली वह रहमत हस्ती हूँ जिसकी रोशनी सर्व-सर्व समरूपता से फैली हुई है।

अपनी सर्वव्यापकता का वर्णन करते हुए श्री साजन जी हम अज्ञानी जीवों को क्या समझाने का प्रयत्न कर रहे हैं?

अपनी सर्वव्यापकता का वर्णन करते हुए श्री साजन जी हम अज्ञानी जीवों को यह समझाने का प्रयत्न कर रहे हैं कि हे कलुकाल के इन्सानों ! धोखे में मत आओ यानि संसार के मायावी भ्रम में मत फँसो और इस सत्य का बोध कर, इसी सत्य पर डटे रहो कि 'सर्व मैं हूँ, मैं हूँ सर्व' अर्थात् मैं ही प्रकाश के रूप में प्रकृति की हर शै यानि ज़र्रे-ज़र्रे, कण-कण, हद-हद, पब-पब व रग-रग में समाया हुआ हूँ व प्रकाशित हूँ। हे कलुकाल के धोखे में आए हुए इन्सानों ! मुझे पहचानो, मुझे पहचानो और इस पहचान को पक्का कर, निज यथार्थता का बोध रखते हुए, सर्व अपनी ही मनोहर व रमणीय सत्ता का दर्शन कर, रोने-झुखने के स्थान पर, सदा मेरी तरह खिलखिलाकर हँसते रहो और इस प्रकार जीव, जगत व ब्रह्म के सत्य को जान लो।

सजनो यही जीवन की सार्थकता है। जो भी इन्सान इस अनुसार जीवन जीने का पुरुषार्थ दिखाता है, वही परमपद को प्राप्त कर पाता है। अतः हम सब के लिए आवश्यक है कि इस हेतु यत्नशील रहें और पूर्ण रूपेण कामयाब होने के लिए सर्वव्यापक भगवान का बोध रखते हुए, परस्पर निंदा-चुगली, गाली-गलौच, लड़ाई-झगड़ा आदि द्वि-द्वेष वाला व्यवहार न अपनाएं व इस तरह इस उत्तम जीवन लक्ष्य को सिद्ध करें। सजनो यह जानने के पश्चात् हमारे लिए बनता है कि हम स्थिरता से ब्रह्म भाव में बने रहने हेतु कलुकाल के स्वभावों का त्याग करना आवश्यक मानें और ख्याल को सत्य के संग जोड़े रख सतवस्तु की रामसत् युक्तिसंगत अपनाने हेतु तत्पर हो जाएं ताकि सब कार्य व्यवहार करते हुए भी हमारा मन मज़बूती से ब्रह्मलीन रह सके। तो आओ शास्त्र अनुसार सतवस्तु की रामसत् पूछने की नीति युक्तिसंगत जानते हैं:-

इस हेतु ईश्वर कहते हैं हे तीनों तापों से व कलुकाल की आग से संतप्त प्राणी ! ध्यान से सुन कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में समय अनुकूल आत्मसुधार हेतु मुकम्मल बात का वर्णन है। उसे सावधान होकर समझदारी से पढ़ व समझ। इसके साथ-साथ अपने जीवन उद्धार हेतु उस पवित्र वाणी को अमल में लाने के लिए बुधवार व वीरवार के बोर्डों में वर्णित पढ़ाई व गुढ़ाई के साथ-साथ जिन नीतियों का, निष्कामता व निष्पक्षता से वर्त-वर्ताव करने की युक्ति लिखी हुई है, उसे समर्पित भाव से अपना। अपने जीवन को सफल करने के लिए ऐसा करना आवश्यक मान। जान कि इन कलुकाल के स्वभावों का त्याग कर इस काम को सिद्ध करना मेरे लिए कोई मुश्किल काम नहीं है। निषंग होकर उन नीतियों पर स्थिर बने रहते हुए अपने सुन्दर मुकाम परमधाम को प्राप्त हो जा। ऐसा करना अपने पर उपकार व पर उपकार करने का हेतु मान। आत्मविश्वास रख ! इस तरह मनः अवलोकन क्रिया द्वारा आप खुद संभलते हुए औरों को भी संभाल। इसके लिए इस कुदरती ग्रन्थ में वर्णित, परस्पर 'सतवस्तु की रामसत्' पूछने की महत्ता को इस प्रकार से जानः-

सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित इस नीति के अनुरूप सजनों, जब भी दो सजन आपस में मिलो तो भेंट के समय अभिवादन के रूप में नमस्ते, जय सीता राम, सत् श्री अकाल, प्रणाम आदि करने के पश्चात् किसी भी अन्य प्रकार की दुनियावी यानि घृणायुक्त, दुःखमय बात आदि का सिलसिला आरम्भ करने के स्थान पर वास्तविकता में बने रहने हेतु, आत्मा में विद्यमान शाश्वत् परमात्मा यानि सत्य के

संग, ख्याल जुड़ा हुआ है या नहीं, इस के बारे में बातचीत करो। इसके प्रति अपनी जाँचना करो कि क्या आप ऐसा करते हो या नहीं?

अगर आप का उत्तर नहीं है तो सजनों यह समझ लो कि यह आप द्वारा, हृदय में व्याप्त, उस सत्-वस्तु के सत्तायुक्त होने के सत्य को अस्वीकारने यानि असहमति को प्रकट करने का द्योतक है। इसीलिए आपको उस सत्य स्वरूप ईश्वर को स्वीकार कर उसी का ही होकर रहना, अच्छा नहीं लगता। तभी तो आप केवल जगत के ही होकर रह गए हो और इतना समझाने पर भी अपना मुख ईश्वर की ओर नहीं घुमा पा रहे हो। तो सजनों अगर ऐसा सचमुच है तो उसकी विद्यमानता हृदय में होते हुए भी, आप जीवन में आने वाले दुःख-सुख में उसकी सहायता की अपेक्षा कैसे कर सकते हो। अन्य शब्दों में इस परिस्थिति में, सहायता की आशा करना मूर्खता की बात है। निःसंदेह यह इस बात का संकेत देता है कि आप ऐसे मतलबी बन चुके हो, जो काम होने पर सहायता कर्ता की तरफ से पीठ फेर लेता है।

इसके विपरीत सजनों यदि आपका उत्तर 'हाँ-जी' है तो निश्चित ही यह आपकी, उस सत्य के प्रति श्रद्धा और विश्वास के साथ, स्वीकृति, सहमति, समर्थन आदि का वाचक है। कहने का तात्पर्य यह है कि आप नित्य सत्य को अपने हृदय में विद्यमान मानते हुए इंसान कहलाने के काबिल हो। समझो कि, यही भाव ही आपको, सत्-वस्तु के विचारों, सुझावों, प्रस्ताव आदि का समर्थन करते हुए, उसे धर्मसंगत अपने जीवन में प्रयोग में लाने की प्रेरणा देता है। अगर ऐसा ही है तो सजनों फिर कोई कारण नहीं बनता कि

जीवन की किसी भी अच्छी-बुरी परिस्थिति में आप उसे पुकारो और वह आपकी सहायता के लिए न आए।

स्पष्ट है सजनों ख्याल को ईश्वर के संग जोड़ उसी में लीन रखने से ही जीवन शाश्वतता से जिया जा सकता है वरना तो जीवन अच्छी-बुरी बातों की ऐसी निर्मम नकारात्मक कहानी बन जाता है जिसको कहने और सुनने वाला अवाक् रह जाता है और मन ही मन कह उठता है कि इसने अपने साथ ऐसा धोखा क्यों किया? क्यों सतवस्तु के विचारों को पढ़ने-सुनने के पश्चात् भी यह दुःख भोगता रहा?

अतः सजनों हमारे लिए परस्पर 'सत्-वस्तु की रामसत्' पूछने की नीति के पीछे छिपे हुए गूढ़ अर्थ को समझना बनता है क्योंकि इसी क्रिया को समझदारी से सम्पन्न करने पर ही हमें, विघ्न-बाधाओं के होते हुए भी, एक सदाचारी इंसान बने रहने हेतु, आवश्यक शक्ति प्राप्त रहती है। ऐसा होने पर ही हम अपनी विवेकशक्ति का कुशलता से प्रयोग कर पाते हैं यानि बिना सोचे-विचारे कुछ भी नहीं करते। इस तरह हमें अपने कार्यों को सिद्ध करने के लिए किसी अन्य की चापलूसी भी नहीं करनी पड़ती और हम आत्मनिर्भर बने रहते हैं। इस प्रकार यह तृप्ति से, सभी कार्य स्वतन्त्र बुद्धि से सिद्ध करने के योग्य बनने व बनाने की बात है। याद रखो सजनों ऐसे योग्य व्यक्तियों के मुख से, कभी भी अति कष्ट भरा शब्द 'हाय' निकलने की घड़ी नहीं आती। तभी तो वह जीवन में अनेकानेक कष्ट-क्लेशों के आने के बावजूद भी, जीवन का भरपूर आनन्द उठाते हुए, सत्य-धर्म के मार्ग पर बने रह पाते हैं।

सजनों इसी तथ्य के दृष्टिगत परमेश्वर के वचन प्रवान करते हुए हमारे लिए परस्पर व्यवहार के समय, एक-दूसरे से सतवस्तु की रामसत् पूछना आवश्यक है क्योंकि तब ही हम यथार्थ रूप से समभाव-समदृष्टि के सबक पर सुदृढ़ बने रह पाएंगे। सजनों जान लो कि इसी स्वाभाविक परिवर्तन द्वारा ही हम अपने हृदय से कलुकाल का घोर अंधकार मिटा, सतवस्तु रूपी हीरे के प्रकाश से, उसे पुनः प्रकाशित कर पाएंगे और इस तरह जीवन जीने का सही ढंग अपना कर, एकता व एक अवस्था मे बने रह सकेंगे। सबकी जानकारी हेतु शास्त्रानुसार परस्पर सतवस्तु की रामसत् पूछने की नीति व युक्ति, आगामी दो कक्षाओं में बताई जाएगी।

अंत में सजनों हम तो यही कहेंगे कि इस महान कार्य की सिद्धि हेतु अब तत्पर हो जाना और कदाचित् किसी भी कारणवश इस तरफ से हार मत खाना क्योंकि सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि अजे वक्त है सम्भलो सजनों, न होवो नादान, अगर नादानी दिखाई तो होना पड़ेगा परेशान। किसी को जीवन में इस परेशानी का सामना न करना पड़े इस हेतु अगले सप्ताह इस नीति की महत्ता को अच्छे से समझ कर आना। तभी आगे इसको व्यवहारिक रूप से जीवन में उतारने की युक्ति बताएंगे।



दिनाँक 31 जुलाई का सबक्र

‘सतवस्तु की रामसत्’ - 2

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी
को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में
नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर
बने रहो:-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

इस संदर्भ में सजनों जगत में यानि घर-परिवार व संसार
वाले, जिनके साथ भी विचरो इस सत्य के अनुरूप ही
विचरो। जो भी इस के विपरीत इस जगत में विचरे व आपको
वह चलन अपनाने के लिए बाध्य करें उसका संग साथ छोड़
दो अन्यथा वह स्वार्थी आप तो मंझधार में डूबेगा ही डूबेगा
आपको भी साथ ले डूबेगा। इस तरह भवसागर पार नहीं
उतर पाओगे। आओ अब आगे बढ़ते हैं:-

सतवस्तु की रामसत् का विस्तार से महत्त्व जानने के पश्चात्
सजनों मन को नित्य परमेश्वर में लीन रखते हुए, मानव धर्म
अनुरूप आचार-व्यवहार अपनाना सुनिश्चित कर, घर
सतयुग बनाने हेतु आपस में मिलजुल कर प्यार से रहना
सीखो। इसी सन्दर्भ में आओ मिल कर बोलते हैं:-

मिल-जुल कर रहो और प्यार करो ।
गृहस्थ-धर्म हमें समझाता है।।

अत्री मुनी बनो अनुसूया बनो ।
यह ग्रंथ हमें जनाता है ॥

हम एक ही जोत से उपजे हैं ।
और एक ही अपना नाता है ॥

प्रिय बनो या प्रियतम बनो
प्रेम विशुद्ध रहे ये याद रखो ।

द्वि-भाव जड़ से मिटाने हेतु ।
समभाव में खुद ही पारंगत बनो ।

गर चाहते हो बुद्धि निर्मल रहे ।
तो विवेकी बनो सत्यज्ञानी बनो ॥

जो जीवन-लक्ष्य है दिया उसने ।
उसे पाने हेतु निष्कामी बनो ॥

निष्कामी बनो, निष्कामी बनो ।
निष्कामी बनो, तत्वज्ञानी बनो ॥

तत्वज्ञानी बनो, ब्रह्मज्ञानी बनो ।
ब्रह्मज्ञानी बनो, ब्रह्मज्ञानी बनो ॥

सजनों ब्रह्मज्ञानी बनो क्योंकि ब्रह्मज्ञानी ही जीव, जगत का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर अपना जीवन सफल बना सकता है । अन्य शब्दों में ब्रह्मज्ञानी ही सतवस्तु की रामसत् का चलन अपनाकर, सत्यनिष्ठा से धर्मपरायण जीवन जीने में कामयाब हो सकता है । इसलिए हम सबके लिए बनता है कि हम सत्संगी भी जब आपस में मिलें तो परस्पर घरेलू बातें व निंदा-चुगली करने के स्थान पर आपस में एक दूसरे से सतवस्तु की रामसत् इस तरह से पूछना सुनिश्चित करें:-

1 . गृहस्थ धर्म को आप ठीक निभा रहे होंगे, यह है रूढ़दे हुए सजन को पकड़ लेना ।

सजनों धर्म-शास्त्रों के अनुसार, गृहस्थ आश्रम ब्रह्मचर्य आश्रम के बाद का आश्रम होता है। सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार इस आश्रम के अंतर्गत हमें सबके प्रति अपना फ़र्ज़ अदा हँस कर करना है। इस हेतु साग को कड़ाह समझना है ताकि साग भी एक दिन कड़ाह हो जाए और उजड़या घर वस जाए। कहने का आशय यह है कि किसी से किसी बात की इच्छा, आकांक्षा, चिंता, शिकवा व शिकायत किए बगैर, प्रारब्ध अनुसार अपनी हैसियत में ही बने रहने में प्रसन्नता, सुख व संतोष का अनुभव करना है। किसी के भी प्रलोभन में आकर झूठ-चतुराईयों व छल-कपट का सहारा ले, परिवार को चोरी-ठगी द्वारा कमाई गई मंदी खुराक नहीं खिलानी अन्यथा उनके अन्दर ऐसे कीटाणु व ज़रम ज़हरीले पैदा हो जाएंगे जिससे उनकी शारीरिक व मानसिक दोनों स्वस्थता रोगग्रस्त हो जाएंगी। अतः यह भूल मत करना ।

इस संदर्भ में सजनों जान लो कि, अपना गृहस्थ-आश्रम यानि घर-गृहस्थी ठीक चलाने हेतु, यह नेक कमाई द्वारा अपने अंतर्मन व घर-परिवार को स्वच्छ व स्वस्थ, सदा एक अवस्था में रखने के प्रति, आपस में मिलजुल कर किए जाने वाला उद्योग यानि प्रयास है। ऐसा सुनिश्चित करने पर ही हम अपने शरीर रूपी घर व जहाँ हम परिवार सहित रहते हैं उसकी व्यवस्था ठीक रख सकते हैं। अतः इस कार्य को सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार 'कदम-कदम पर विचार और विचार नाल प्यार' रखते हुए, एक विद्यार्थी की

तरह, अंतर्विद्यमान शिक्षक अर्थात् परमात्मा की आज्ञाओं का पालन करने हेतु, गृहकार्य मानो व इसे नित्यप्रति समय पर कर अपना व अपने परिवार का सकारात्मक विकास करो।

इस संदर्भ में याद रखो जिस परिवार के सदस्य एकजुट होकर धर्मसंगत यानि गृहस्थ-धर्म के अनुसार इस कार्य को निपुणता से करते हैं, उस घर-परिवार में किसी भी प्रकार का, कोई ऐसा घरेलू कलह-क्लेश व लड़ाई-झगड़ा नहीं होता जिससे घर की सुख-शांति आदि नष्ट हो जाए। यह कुटुम्ब में मिलजुल कर रहने की व गृहकार्य को भली-भांति संपादित करने के प्रति कमज़ोर हो, घर का त्याग कर कहीं अन्यत्र गमन करने से बचे रहने की बात है।

अतः इसके प्रति परिवार के मुखिया सहित, हर सदस्य को सावधान रहना है ताकि किसी प्रकार भी कोई भी परिवारजन एक-दूसरे को भड़का कर आग लगाने की कोशिश न करे। याद रखो यदि ऐसा हुआ तो यह परिवारों के लोगों का आपसी कलह के कारण होने वाले अलगाव के प्रभाव से, सजन भाव से हट, द्वि-द्वेष का भाव अपनाने की बात होगी। तात्पर्य यह है कि अगर ऐसी भूल होगी तो परिवार में फूट डलेगी ही डलेगी व परस्पर विचारधारा के अलग होने के कारण एकता नष्ट होगी ही होगी। इस तरह परिवारजनों के पास फिर आपस में वाद-विवाद और लड़ाई-झगड़ा करने के सिवाय और कुछ भी लेने-देने को नहीं रहेगा। कोई उन्नति की बात नहीं करेगा। बड़ा छोटे को मारेगा, छोटा बड़े को मारेगा तो फिर कैसे अपनी संतानों को सुख पहुँचा सकोगे।

इसी संदर्भ में सजनों गृह प्रवेश से पहले शास्त्रीय अनुष्ठान

का विधान है जिसके अनुसार हम अपने घर में धर्म-शास्त्र की नीति-नियम अनुसार विदित मर्यादा में बने रह, गृहस्थ के लिए करने योग्य कर्म करने व गृह युद्ध से बचे रहने का संकल्प लेते हैं। इस तरह परिवार के हर सदस्य के अन्दर सुशीलता, बुद्धिमत्ता और कार्य कुशलता का विकास होने के साथ-साथ घर में सुख-समृद्धि आती है। तभी घर का हर सदस्य, अपनी योग्यता अनुसार, गृहस्थी के साधन जुटाने हेतु लगन से, एक अच्छे इन्सान की तरह निष्काम भाव से अपना योगदान दे पाता है और घर का हर कार्य अपने आप करता है। हम कह सकते हैं कि ऐसे घर-परिवार में फिर ऐसा सतयुगी वातावरण पनप जाता है जिसके अंतर्गत सब निरासक्त व चिंतामुक्त हो, समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार, परस्पर सजन-भाव का वर्त-वर्ताव करते हुए अपने जीवन लक्ष्य की ओर उन्मुख हो जाते हैं।

इस प्रकार नीति-नियमों अनुसार ईश्वरीय विचारधारा पर डटा रहने वाला वह मानव, हर परिस्थिति के अनुरूप स्वयं को ढाल, परस्पर सम्बन्ध ठीक निभाता है और कभी भी किसी भी कारण किसी अन्य की विचारधारा से प्रभावित हो, उस विचारधारा में नहीं बहता। तभी तो वह उस नकारात्मक विचारधारा की बाढ़ में असंख्य डूबने वालों को समय रहते ही बचा पाने में सक्षम हो पाता है। गुढ़ाई के दौरान सजनों हमें भी इस प्रकार अपने गृहस्थ-धर्म को ठीक निभाते हुए, रूढ़दे हुए सजनों को पकड़ लेना है।

संक्षेपतः सजनों जान लो कि जिस भी गृहस्थ आश्रम के अंतर्गत, प्रत्येक सदस्य को उचित स्थान प्राप्त रहता है यानि किसी को छोटा अथवा बड़ा मानकर, न अधिक न कम,

निश्चित समय से पहले न बाद में, उसकी आवश्यकता अनुसार उसे प्राप्त होता रहता है, उस परिवार के हर सदस्य का मन संतोषयुक्त रहता है और वह स्वतः ही धीरता से सत्य-धर्म की राह पर चलने में सक्षम हो जाता है। इसके विपरीत जिस भी गृहस्थ आश्रम के अंतर्गत परस्पर सदस्यों के मध्य भिन्न-भेद का वर्ताव होता है वहीं पारिवारिक सदस्यों का संतोष टूटता है और वह अधीर होकर एक-दूसरे से छीनने के लिए उन के विपरीत खड़े होने का दुस्साहस जुटा, लड़ने-मरने के लिए तैयार हो जाते हैं। ऐसा किसी के साथ न हो इसलिए कह रहे हैं कि परस्पर एक दूसरे से नीतिनुसार सतवस्तु की रामसत् पूछने की आदत डालो।

2. सच्चाई-धर्म के रास्ते पर आप ठीक चल रहे होंगे, यह है गिरते हुए सजन को खड़ा करना।

सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कहता है कि सच बोलो, सच चानणा है, झूठ अन्धेरा है। सच घर में वर्तो और दुनियां में फैलाओ। धर्म के रास्ते पर चलो धर्म का रास्ता बड़ा महान है, इसमें हमारी जीत है। धर्म मत हारना रे, धर्म के ऊपर तन-मन-धन सब वारना रे।

इस कथन के अनुसार सजनों हमें यथार्थता से जीवन जीने के प्रति सतर्क रहना है ताकि हमारे मन में कोई दोष पैदा न हो व हमारी प्रकृति हर प्रकार के वल-छल से रहित सत्यमेव बनी रहे और हम कोई गलती न कर सकें। इस प्रकार हमें नियम अनुसार अपने मन-वचन-कर्म को शुद्ध रखते हुए व आचार-विचार व व्यवहार को ठीक रखते हुए, सब कुछ निष्काम भाव से करने के स्वभाव में ढलना है। याद रखो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही हम अच्छी नीयत वाले, उत्तम

आचरण व ठहरे हुए स्वभाव वाले, विश्वसनीय, सद्गुणी इंसान बन, सब कार्य कुशलता से कर पाएंगे और अपने हर कार्य को समय पर निर्विघ्न समाप्त करने या पूर्ण करने की कला में माहिर हो पाएंगे। यही नहीं तभी हम परिस्थितियों के अनुरूप खुद निर्णय लेने के योग्य भी बन पाएंगे।

निःसंदेह फिर हमें जिधर भाग्य ले जाएगा, उस तरफ बहने में विश्वास न रखते हुए, अपने विचारों को पवित्र रखते हुए, यथास्थान अपने असली घर में, बने रह पाएंगे। तभी तो हम उच्च बुद्धि व उच्च ख्याल हो अपने जीवन को मोह-माया या कार्य व्यवस्था आदि के प्रभाव से बचाए रख, सुध में रहते हुए, जीवन का उच्च लक्ष्य प्राप्त करने में सक्षम हो पाएंगे। फलतः कुकर्मा-अधर्मा से बचे रह, उनसे प्राप्त होने वाले बोझ को लादने व अपने जीवन को नष्ट करने के स्थान पर, अपने जीवन-रथ के घोड़ों की लगाम मज़बूती से थामे रख, उसी दिशा में निर्दिष्ट कर पाएंगे जो सच्चे घर की ओर जाती है। याद रखो सजनों ऐसा होने पर ही हम, समभाव नज़रों में कर, सजन प्रवृत्ति को दृढ़ता से धारण कर पाएंगे। यह अपने आप में खुद अपनी प्रारब्ध को तबदील कर, अपने भाग्य निर्माता बनने की बात होगी।

इस तथ्य से सजनों स्पष्ट होता है कि सत्-शास्त्र में विदित मानवीय विचारधारा के विपरीत किसी भी अन्य विचारधारा में बहना अपने आप को मार डालने के समान घातक सिद्ध होता है। अतः यह भूल कदापि नहीं करनी और हर हालात व हर अवस्था में सत्य-धर्म पर डटे रहना है। इस संदर्भ में सदा यह याद रखना है कि जो खुद बुरी आदतों से बचा रह सकता है वह ही सांसारिक विषयों की ओर अपने संगी-

साथियों का झुकाव देखकर, उन्हें अपने अधिकार में कर, उनमें उलझने से बचा सकता है व नैतिक तौर पर अपनी बराबरी पर ला सकता है। ऐसा विचारयुक्त व्यक्ति ही सच्चाई-धर्म के रास्ते पर खुद ठीक चलते हुए, छल-कपट द्वारा झूठ और अधर्म के रास्ते पर यानि अपने जीवन लक्ष्य की विपरीत दिशा में चलने वाले अन्य व्यक्तियों को, आत्मिक ज्ञान का सहारा देकर आगे बढ़ने यानि चारित्रिक रूप से गिरने से रोक सकता है।

निश्चित ही वह ऐसा इसीलिए करता है क्योंकि वह जानता है कि समाज की महत्त्वपूर्ण ईकाई-व्यक्ति के दिशा विहीन होने पर यानि निज व्यक्तित्व से गिर चरित्रहीन होने पर, पूरे समाज पर दुष्प्रभाव पड़ता है। यह उत्कृष्टता से गिर निकृष्टता को प्राप्त होने की बात होती है जिससे व्यक्ति के सम्मान, शक्ति, महत्त्व व मूल्यों में कमी आती है और ऐसा होना नैतिक दृष्टि से निम्नतर स्तर को प्राप्त होना माना जाता है यानि दुश्चरित्रता का प्रतीक होता है। हम कह सकते हैं कि यह बुराईयों की गिरफ्त में रह, दरिद्रता और दुर्दशा को प्राप्त हो, सांसारिक विषयों का बंदी बनने की बात होती है।

अतः मानवता के नाते व्यक्तिगत व सामाजिक स्तर पर फैलने वाली इस गंदगी को रोकने के लिए सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर स्थिर रह पाने वाला ऐसा व्यक्ति नैतिक तौर पर धरातल पर गिरे व्यक्तियों को अपने पैरों पर स्थिर खड़ा कर, धर्म की राह पर चलने के लिए तत्पर करता है और इस तरह चारित्रिक रूप से बीमार पड़े उन व्यक्तियों को सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा प्रदत्त युक्ति के सेवन

द्वारा स्वस्थता को हासिल कर, उत्थान-पथ पर बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। गुढ़ाई के दौरान सजनों हमें भी इस तरह सच्चाई-धर्म के रास्ते पर आप ठीक चलते हुए, गिरते हुए अन्य सजनों को खड़ा करना है।

सतवस्तु की रामसत् पूछने की युक्ति के क्रियात्मक पहलू के विषय में इससे आगे सजनों हम अगले सप्ताह जानेंगे।

इस संदर्भ में सजनों तब तक के लिए हम तो यही कहेंगे कि परस्पर 'सतवस्तु की रामसत् पूछने की युक्ति के रूप में जो ईश्वर समझौता दे रहे हैं, उसको उनकी कलुकालवासियों पर असीम कृपा मानो क्योंकि यह क्रिया परमार्थ के रास्ते पर स्थिर बने रह, मनुष्यत्व अनुसार आचार-संहिता अपनाने व सुख और शांति से जीवन व्यतीत करके अंत अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त करने की बात है। इस द्वारा हम निरंतर चेतन अवस्था में बने रह सकते हैं और आत्मबोध द्वारा, समभाव-समदृष्टि के उसूलों पर ठहरे रह, पवित्र जीवन जी सकते हैं। यह ही वास्तव में घर सतयुग बनाने की युक्ति है। अतः गुढ़ाई के दौरान सजनों इसी युक्ति को अपनाओ व इस तरह अपना घर सतयुग बनाओ। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।



दिनांक 7 अगस्त का सबक्र

‘सतवस्तु की रामसत्’ - 3

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी
को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में
नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर
बने रहो:-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों परस्पर सतवस्तु की रामसत् पूछने की महत्ता के
संदर्भ में अभी तक हमें जो भी बताया गया उससे स्पष्ट होता
है कि सतवस्तु की रामसत् अपने आप में कदम-कदम पर
विचार पकड़, समभाव पर मज़बूत रह, परस्पर सजनता का
व्यवहार करने का यानि मैत्री भाव में आने का सौखा तरीका
है। इस प्रयत्न द्वारा सर्वव्याप्त अपने प्रिय मित्र की छवि
प्रत्येक के हृदय में नज़र आती है। परिणामस्वरूप फिर
किसी से वैर-विरोध या दुई-भाव नहीं रहता। हम कह सकते
हैं कि यह जीवन के आधारभूत गुणों पर सुदृढ़ता से बने रह
अपने ख्याल, भाव-स्वभावों आदि की सकारात्मक पालना
करने का सार्थक यत्न है। इस यत्न को ठीक ढंग से करने
वाले के मन में अब्बल तो कोई विकार घुसता नहीं और अगर
गलती से सूक्ष्म रूप धर घुस भी जाता है तो उसके दुर्भाव के

रूप में विकसित होने से पहले ही उसका सफ़ाया हो जाता है। इस तरह मानव की दोनों वृत्तियाँ निर्मल रहती हैं। फलतः शरीर रूपी मशीनरी एक तो स्वस्थ बनी रहती है दूसरा सचेतन भी बनी रहती है यानि उसमें आलस, भ्रम, कमज़ोरी, खराबी आदि जैसे अवगुण नहीं पनपते और इन्सान सब कुछ कुशलता से करने के योग्य बना रहता है। आओ अब इसी सन्दर्भ में, आगे जानते हैं:-

3. नाम-ध्यान में आप महाराज के साथ जुड़े हुए होंगे, यह है रोते हुए सजन को हँसा देना।

सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है कि घर का सब कार्यव्यवहार करते हुए, नाम-ध्यान में जुड़े रहो यानि नाम-ध्यान द्वारा ऐसा संबंध स्थापित करो कि आपका ख्याल ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल जुड़ा रहे। निश्चित ही ऐसा करने से मन-चित्त आत्मिक स्रोत से जुड़ा रहेगा और उसे सदा सात्विक ऊर्जा प्राप्त होती रहेगी। इस तरह वह सदा संतोषी, सुखी, शांत व तृप्त रह, शीतल बना रहेगा। इस तरह न तो हम आप दुःखी होंगे और न ही किसी और को दुःख प्रदान करेंगे यानि न आप मानवता के विपरीत विचरेंगे न ही किसी और को ऐसा चलन अपनाने के लिए प्रेरित करेंगे। इसीलिए तो सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है कि हर समय महाराज जी के साथ नैन जोड़ो। ऐसा करने से रोते हुए हँस पड़ोगे। यहाँ प्रश्न उठता है कि जुड़ना कैसे है ? इस संदर्भ में इस कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है। ध्यान महाराज की तरफ़ हो, शब्द चलता रहे, फुरना न ठहरे। इस तरह सजनों हमें भक्ति-शक्ति धारण कर महाराज जी के साथ जुड़े रहते हुए सदा प्रसन्नचित्त बने रहना है यानि हर कार्य हँसते हुए करना

है ताकि हमारे नेत्र खिल उठें, अधरों पर मुस्कान हो और कंठ से हर्ष ध्वनि निकले। इस प्रकार हमारा चेहरा हर समय हँसता हुआ नज़र आए और हँसते-हँसते हमें जनहित की खातिर अगर फाँसी के तख्ते पर भी चढ़ना पड़े तो निर्भयता से चढ़ जाएँ। सजनों यह निंदा-उस्तत के स्वभाव से बचे रह प्रसन्नतापूर्वक अफुरता से जीवन जीने की बात है। अतः सजनो हँसना सीखो और त्याग भाव द्वारा औरों को भी हँसने में प्रवृत्त करने का उद्यम दिखाओ। निश्चित ही ऐसा करने से सबसे सुन्दर भी लगोगे और सबके प्रिय यानि मित्र भी बन जाओगे। हकीकत में तभी आप बहादुर कहलाओगे।

इस संदर्भ में सजनों हम जानते हैं कि आजकल रोककर स्वार्थ सिद्धि करना आम चलन बन गया है। रोने वाले इंसान अपने कष्ट, हानि आदि के कारण दुःखी हो, प्रायः छोटी-छोटी सी बात पर बुरा मानकर रोने लगते हैं, चिढ़ते हैं, रुठते हैं, शिकायत करते हैं और रोना सा मुँह बना कर घर-परिवार में कुहराम मचाते हैं। ऐसे रोते इंसानों की शकलें देखकर फिर पूरे परिवार का वातावरण नकारात्मकता से दूषित हो जाता है। फिर जब ऐसे इंसान नेत्रों से आँसू बहाते हैं तो उनको कुछ भी कहना अस्वीकारनीय व फजूल लगता है। इस तरह जब उनकी यह आदत मज़बूत हो जाती है तो उनके संगी-साथियों को अति कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ता है क्योंकि वे न तो उसके साथ रह सकते हैं और न ही उसे छोड़ पाते हैं। आप उनकी बात को एक दफा टाल कर देखो, कैसा तूफान उठाते हैं। यही नहीं वे कभी भी हार को नहीं स्वीकारते इसीलिए झूठी जीत के लिए दूसरों की बदनामी कर, बेईमानी का रास्ता अपनाते हैं।

इस तथ्य से सजनों यह स्पष्ट होता है कि रोना निराशाजनक जीवन जीने का प्रतीक है। रोने वाले व्यक्तियों के साथ रहने वाला इंसान कभी भी हँस नहीं सकता क्योंकि वे हर समय, दुःखी होकर अपने कष्टों की ही चर्चा करते रहते हैं और समझाने पर झल्ला व चिल्ला उठते हैं। अतः ऐसे इंसानों के साथ निर्वाह करना अति कठिन होता है और उनके मुँह लगाना अपना निरादर आप कराने की बात होती है। पर सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ तो हमें हर परिस्थिति व अवस्था में, जीवन के तमाम कष्ट-क्लेश सहते हुए भी हँसते रहने की युक्ति प्रदान कर रहा है। अतः इस युक्ति को प्रवान कर सजनों न तो ऐसे इन्सानों के रोने-झुखने को बढ़ावा दो और न ही किसी को तुच्छ समझ कर उसका उपहास व उसकी बदनामी करो अपितु प्रभावरहित व अपनी मर्यादा में रहते हुए सबके प्रति समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार सजनता का व्यवहार करो। इस तरह आप हँसो और औरों को हँसाने में जुट जाओ। गुढ़ाई के दौरान सजनों नाम-ध्यान में महाराज जी के साथ जुड़े रह इसी तरह रोते हुए सजनों को हँसाना है।

4. भक्ति-शक्ति आप ने धारण की हुई होगी, यह है सोए हुए सजन को जगा देना।

सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है कि 'प्रबल भक्ति और तीन वक्त के अखण्ड पाठ से शक्ति खुद बखुद ताकतवर हो जाएगी'। अतः भक्ति प्रबल करने हेतु 'जो प्रकाश महाराज का मन मन्दिर में देखा है वही प्रकाश जग अन्दर देखो। ऐसा करने से बिन हथियारों बिन तीरों आप

की जय होगी।' अतः सजनों भक्ति-शक्ति को धारणा शक्ति द्वारा मन में धारण कर स्मृतिवान व बुद्धिमान बनो और शास्त्रविहित् विचारों को निजी विचारों के रूप में स्वीकारते हुए, दृढ़ निश्चय व चित्त की एकाग्रता से सब कुछ उनके अनुकूल करने की आदत डालो। यह भक्ति-शक्ति द्वारा झुखना-रोना समाप्त कर संकल्प रहित अवरस्था को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है।

सजनों यह क्रिया हमें मोह-माया की नींद त्याग कर, निज सत्य के प्रति सजग हो, उसी सत्य में स्थिर बने रहने के लिए प्रेरित कर रही है। याद रखो जो खुद जागा होता है वह ही दूसरे व्यक्ति को विचार में ला जगा सकता है। इसके विपरीत जो खुद सोया हुआ यानि अचेतन होता है वह मनुष्यत्व से विपरीत, बेईमानी का रास्ता अपना कर, सोने का घर भी मिट्टी का बना देता है। तात्पर्य यह है कि वह सार्थक गुणों की जगह, सांसारिक अवगुण अपनाकर, मनोविकारी व चरित्रहीन बन जाता है और अपनी धन-संपत्ति व सामर्थ्य व्यर्थ व्यभिचारों में नष्ट कर, निज वैभव का नाश कर, दुर्भाग्य को प्राप्त होता है। इस तरह वह सुन्दर बहुमूल्य मनुष्य चोले का लाभ उठाने से वंचित रह जाता है। आज के समयकाल में सजनों जिसके साथ भी ऐसा होता है उसके लिए पुनः सुन्दर आचरण वाला चरित्रवान इन्सान बनना नामुमकिन सी बात होती है। जानो कि यह अपने सत्य स्वरूप के प्रति जाग्रति खो, अपने ख्याल को जगत के संग जोड़े रखने की अधिकता के कारण होता है। इसीलिए ऐसा व्यक्ति न तो अपने जीवन के यथार्थ लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है और न ही कोई अच्छा कार्य कर सकता है।

अधिकांशतः उसकी हरकतें एक उन्माद युक्त सनकी इंसान की तरह होती हैं और उसे मंद अधम यानि बुरे इंसानों की गणना में माना जाता है। यही मंद अधमता ही उसके घर-परिवार व समाज में दुःख व्याप्ति के साथ-साथ, उसके जीवन के सर्वनाश का कारण बनती है।

इस संदर्भ में सजनों हमें परस्पर एक दूसरे से सतवस्तु की रामसत् पूछने की इस क्रिया द्वारा आप इस गहरी नींद यानि अचेतन अवस्था से उबर, सचेत होना है व दूसरों को भी जाग्रति में लाना है ताकि हमारी मस्तिष्क/मन में अच्छे विचार/भाव/बात उमड़े और हम बात-बात पर क्रोध की अग्नि में जलने के स्थान पर अपने मन को प्रदीप्त यानि प्रकाशित रख सकें। याद रखो कि तब ही अंतर्निहित सत्यज्ञान के साथ हमारा सम्पर्क स्थापित होगा और उसे प्राप्त कर मन में प्रभु प्रगटेंगे तथा आत्मिक ज्ञान की पढ़ाई व गुढ़ाई करने के प्रति प्रेरित कर, समभाव-समदृष्टि के सबक में प्रवीणता हासिल करने की युक्ति प्रदान करेंगे। इस तरह भक्ति-शक्ति प्राप्त कर हम संतोष-धैर्य के बल पर जगत में व्याप्त परमात्मा का साथ पाने के योग्य बन सकेंगे। अतः सजनों बीती कहानियों व घटनाओं को सुनने का कनरस समाप्त कर, प्रकाशित बुद्धि इंसान बनो और दूसरों को भी इसी अवस्था में ढलने के योग्य बनाओ। गुढ़ाई के दौरान सजनों इसी प्रकार भक्ति-शक्ति धारण कर, सोए हुए सजन को जगाने का पुरुषार्थ दिखाना है।

5. यश और कीर्ति में आपका फ़रक तो नहीं पड़ रहा होगा, यह है कुरस्ते पड़े हुए सजन को रास्ते पर लाना।

सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है कि 'अधर्म को छुड़ा कर धर्म का रास्ता दिखाना है। धर्म क्या है; निष्काम रास्ता कामना से रहित, जो कुरस्ते पड़े सजन को रास्ते पर लावेगा, वही पर उपकारी नाम कहावेगा।' इस संदर्भ में सजनों परोपकार कमा, अटल यश और कीर्ति प्राप्त करने यानि जगत में नेकनामी कमाने हेतु सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर बने रहो। चाहे ज्ञानियों द्वारा इस संसार में कितने भी रास्ते बनाए गए हैं पर हमें सदा याद रखना है कि हमें उनके प्रलोभन या बहकावे में आकर उन पर नहीं चढ़ना अपितु सही रीति से अपने सच्चे घर की ओर जाने वाले सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर चढ़, अपनी जीवन यात्रा निर्बाध समाप्त करनी है। इस हेतु हमें किसी की प्रतीक्षा नहीं करनी अपितु रास्ते में आने वाली हर बाधा को दूर करते हुए निरंतर चलते जाना है। यहाँ सावधान रहना है कि यह कार्य जो इस रास्ते से परिचित है यानि सृष्टिकर्ता, उसी की ही देख-रेख व संचालन द्वारा सम्पन्न हो सकता है, अतः हमें मनमत या किसी अन्य के बहकावे में आकर पथभ्रष्ट नहीं होना। अन्य शब्दों में बुरे रास्ते पर यानि दुर्गम दोष युक्त अनुचित रास्ता जिससे हमारे चरित्र पर बुरा प्रभाव पड़े और हम बुरा व्यवहार करते हुए दुर्दशा को प्राप्त हों, ऐसे रास्ते पर नहीं चलना। ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि ऐसे रास्ते पर चलने से मन कठोर बनता है और हम आपसी द्वेष, वैर-विरोध व मनमुटाव का शिकार हो, परस्पर दुर्व्यवहार करते हुए अपने लिए आप विपत्ति खरीद बैठते हैं। यही नहीं नशीले पदार्थों व दुर्व्यसनों के सेवन में उलझ, अशुभ निंदाप्रद कार्य कर, हम अपना व अपनों का ही अनिष्ट करते

हैं। इस तरह इन सब अवगुणों के कारण आप दुःखी व दूसरों को दुःखी कर, हम अपयश को प्राप्त कर अंततः पतनोन्मुख हो जाते हैं। इस पतित अवस्था के कारण सजनों फिर संतोष-धैर्य हमारे लिए एक सवाल बन जाता है और हम सच्चाई-धर्म पर स्थिर नहीं बने रह पाते। इस तरह हर कदम पर हानि ही हानि को प्राप्त करते हैं।

अतः सजनों इस संसार में आने के बाद अकर्ता भाव से केवल वही काम करो जो सर्वहित हेतु करने आवश्यक हों व यशदायक हों। यही परमार्थ का चलन है। इस हेतु हर हाल में अंतर्मुखी बने रहो और ईश्वरीय आज्ञाओं का पालन करना सुनिश्चित करो। इस तरह अच्छे काम करते हुए खुद कुरस्ते पर चढ़ने से बचे रहो व अपनी संतानों व समाज को भी इस दुःख से बचाओ। यह कार्य निष्काम भाव से करो ताकि धनलिप्सा की तरह यशोलिप्सा में उलझ अहंकार को प्राप्त न हो जाओ। याद रखो अगर वड-छोट, तेरी-मेरी, मान-अपमान आदि का सवाल पैदा कर, औरों पर प्रभुता जमाने के स्वभाव में उलझ गए तो प्राप्त यश-कीर्ति भी मिट्टी में मिल जाएगी। इसलिए इसे अपने जीवन की समस्त उपलब्धियों से बड़ी उपलब्धि मानो व अपने आचार-विचार व व्यवहार द्वारा ऐसा आदर्श कीर्तिमान स्थापित करो कि इस मृतलोक को छोड़ने के बाद भी आपकी कीर्ति इस संसार में शेष रह जाए। गुढ़ाई के दौरान ऐसा करना आवश्यक मानो व इस तरह यश और कीर्ति की प्राप्ति कर, कुरस्ते पड़े हुए अन्य सजनों को भी रास्ते पर ले आओ।

स्पष्ट है सजनों कि परस्पर सत्-वस्तु की रामसत् पूछने की

इस क्रिया द्वारा हमारे सभी सवाल हल हो सकते हैं। अतः सजनों इसे सही ढंग से जीवन जीने की युक्ति मानते हुए इस क्रिया का वर्त-वर्ताव दिनचर्या के समय जब भी एक दूसरे से मिलते हो, अवश्य करो व इसे ख्याल की अफुरता का व अपने घर-परिवारजनों की एकता का हेतु मानो। इस संदर्भ में बच्चों व सगे-सम्बंधियों को भी इस क्रिया से विधिवत् परिचित कराना अपना सर्वोपरि कर्तव्य मानो। इस कर्तव्य पालना द्वारा अपने व उनके सजन बन उनका यथार्थ रूप में सुख भोगो।

अंततः सजनों अगर हकीकत में एक अच्छा व नेक इंसान बनना चाहते हो तो इस क्रिया को एक पवित्र चलन वाले, बुद्धिमान इन्सानों की तरह, विधिवत् करने के प्रति सचेत रहो। इस तरह इसको निरन्तर करने हेतु अपने मन में दिलचस्पी पैदा करो। फिर देखो कैसे आपको दिने आराम राती सुखां दी नींद का आनन्द प्राप्त होता है। सजनों यही अपना उपकार करते हुए परउपकार कमा रोशन नाम कहाने का तरीका है और यही जगत हितकारी बन जगत पर निर्भयता व निष्पक्षता से शासन करने की बात है। अतः गुढ़ाई के दौरान इस नीति की पालना करो व आनन्दपूर्वक जीवन जीते हुए मौज मानो। यही जगत में विशेष रहते हुए भी उससे निर्लिप्त रहने की युक्ति है। इस युक्ति को अपनाओ और ब्रह्म नाल ब्रह्म नाम कहाओ। इस शुभ यत्न में सफलता प्राप्त करने हेतु हमारी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं। अंततः सब आओ, आओ, आओ, आओ और परमेश्वर जो हमें सतवस्तु की रामसत् की युक्ति अपनवा हम सबके जीवन में खुशियाँ भरना चाहते हैं उन्हें प्राप्त करने में कमजोर मत पड़ना। अगर अपने घर को सतयुग बना अपने व अपने

परिवारजनों के जीवन को आनन्दमय बनाना चाहते हो तो :-

आओ, आओ, आओ, आओ
आओ आकर खुशियाँ ले जाओ
खुद खुश रहो
और खुशियाँ सबमें बाँटो

गृहस्थ धर्म ठीक निभाते हुए
वैसा औरों को भी सिखलाओ
ए विध रूढ़दे हुआँ को पकड़
इंसानियत में ले आओ
आओ, आओ, आओ, आओ.....

सच्चाई धर्म की राह पर चलते हुए
निष्कामता का भाव अपनाओ
ए विध धर्म से गिरने वालों को
गिरने से पहले ही खड़ा कर लो
आओ, आओ, आओ, आओ.....

नाम-ध्यान में स्थिर रहते हुए
सदा मन को प्रभु में लीन रखो
ए विध बंधन मुक्त करते हुए
रोते हुआँ को हँसा डालो
आओ, आओ, आओ, आओ.....

भक्ति शक्ति इस तरह धारण करो
और गहरी नींद से जाग जाओ
ए विध अन्य सोतों को जगा
जड़ बुद्धियों को चेतन बना डालो

आओ, आओ, आओ, आओ.....

यश-कीर्ति में जिससे फ़र्क पड़े
वैसी भूल कभी भी मत करना
ए विध परमार्थ के रास्ते पर चलते हुए
कुरस्ते पड़ों को भी राह पर ले आओ
आओ, आओ, आओ, आओ.....

सतवस्तु की रामसत् का महत्त्व समझने के बाद सब सजनों से प्रार्थना है कि परस्पर मानवीय व्यवहार में सुदृढ़ रहते हुए आप खुश रहो और सब में खुशियाँ बाँटते हुए उपकारी बन जाओ व परोपकार कमाओ। इसे अपने व अपने परिवारजनों के जीवन उद्धार हेतु आवश्यक मानो।



दिनांक 14 अगस्त 2016 का सबक्र

पुनरावृत्ति - 3

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी
को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में
नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर
बने रहो:-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है:-

इक गल सुनो मेरे साजना, कैसा रचाया हिवे खेल,
कैसा रचाया हिवे खेल।

इक वारी सजन बुलावो, फिर रखो उन्हां दे नाल मेल,
फिर रखो उन्हां दे नाल मेल।

समभाव समदृष्टि वल्लों कदे न होसो फेल,
ओ कदे न होसो फेल।।

फिर फ़र्स्ट दी एहो है निशानी, अपनी ए करन
निगाहबानी ओ साजन, अपनी ए करन निगाहबानी।

**फिर आलम एहो परिश्रम दिखाओ, फिर है नहीं कोई
हैरानी, फिर है नहीं कोई हैरानी।।**

सजनों कितनी सुन्दर बात इन शब्दों में कही गई है। अब तो इन वचनों की मननकारी करो और अपनी निगाहबानी कर गलत हरकतें करने से बाज़ आ जाओ। याद रखो यह अनमोल मानव चोला बड़ी मुश्किल से प्राप्त हुआ है अतः इसे यूँ ही व्यर्थ मत गँवाओ और समय रहते ही मानव जीवन की सार्थकता को सिद्ध करो। इस हेतु जो मानवीय स्वभाव सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ अपनाने के लिए प्रेरित कर रहा है निर्विवाद उन्हें अपनाओ। ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि सच्चेपातशाह जी कहते हैं:-

**वाद-विवाद किसे नाल न कीजे,
जिह्वा राम नाम रस पीजे**

याद रखो जब विवाद करने की आदत पड़ जाती है तो अन्दर जो भी विपरीत यानि नकारात्मक चलता है उससे सत्य यानि परमार्थ छूट जाता है। परिणामस्वरूप रोना-झुखना पीछा नहीं छोड़ता। फिर इन्सान परमार्थ की बातचीत सुनने के प्रति बहरा व उसे समझने के प्रति विवेकहीन हो जाता है। अधिकतर इन्सानों की आज यही दुर्दशा है। तो क्यों इस दुर्दशा में फँसे रहना चाहते हो? सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे पर होने के नाते आप सब तो वह भाग्यवान सजन हो जिन्हें न केवल अपना अपितु कुल संसार को सद्मार्ग पर प्रशस्त करने का सुनहरी अवसर प्राप्त हुआ है। अतः अवसर की अनमोलता को समझो और इस विषय में ध्यान से सुनो:-

तू तो जो भी है खुशनसीब है क्योंकि
सभी सुरतों का शहनशाह तेरे करीब है

गर गौर से तू देखे
और मुझको जान जाए
तो तू भी कह उठेगी
यह तो सबकी दीद है

इसके बाद तो बस विश्वास रह जाता है। विश्वास के अन्तर्गत मनमत नहीं चलता। मनमत पर चलना मानव की सबसे बड़ी भूल होती है। परमार्थ के मार्ग पर मनमत अनुसार नहीं अपितु विश्वास के साथ चलना होता है। याद रखो जो भी सद्मार्ग पर इस प्रकार आगे बढ़ता है उसे मंजिल तक पहुँचने में फिर किसी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता। निःसंदेह जीवन पथ पर चलते हुए कठिनाईयाँ महसूस अवश्य होती हैं पर उसकी पीड़ा में उलझने के स्थान पर आत्मविश्वास की ताकत से उनसे अप्रभावित रह वह सदाचार पर स्थिर बना रहता है। हकीकत में ऐसा इंसान ही ईश्वर का संग प्राप्त कर मंजिल तक पहुँचने के योग्य होता है और वह ही जनचर-बनचर, जड़-चेतन के प्रति अपने कर्तव्यों का संपादन निष्कामता व कुशलता से सम्पन्न कर पाता है।

इस प्रकार उसे फिर जीवन में किसी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता। अन्य शब्दों में जो भी इस नियम पर बना रहता है वह आजीवन सुखी बना रहता है। चाहे उसके अंग-प्रत्यंग सब उसका संग-साथ क्यों न छोड़ दें पर वह नहीं डगमगाता क्योंकि वह अपने आप को शरीर नहीं अपितु

अजर-अमर आत्मा समझता है। ऐसा विवेकी जो आत्मा के रूप में व्याप्त परमात्मा के सदा संग बना रहता है, उसको लक्ष्य तक पहुँचने की आवश्यकता नहीं होती अपितु वह तो सदा लक्ष्य पर पहुँचा हुआ यानि स्थिर रहता है।

कहने का आशय यह है कि जब तक 'तू-मैं' का भ्रम बना रहता है तब तक परमात्मा को उस सुरत को यह एहसास कराना पड़ता है कि तू मेरे संग है यानि लक्ष्य स्थल पर ही है। इसके विपरीत जब वह जगत के साथ जुड़ जाती है तो कुसंग उसे घेर लेता है और सब लुट जाता है। फिर उसे कोई नहीं बचा पाता। यह कुदरत का नियम है। कुदरत के नियम में कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकता। किसी का मनमत तब नहीं चलता। अतः मनमत पर चलना छोड़ दो क्योंकि मनमत हानिकारक है। इसी मनमत के कारण ही मृत्यु के पश्चात् मन जीव को ले उड़ता है और उसकी इच्छा के मुताबिक उसको वहीं स्थापित कर देता है जहाँ उन इच्छाओं की पूर्ति सहज व सुगम होती है। याद रखो जब तक मन को अपनी इच्छाओं की पूर्ति का उचित माध्यम नहीं मिलता तब तक वह जीव को मध्य में यानि आकाश में ही स्थित रखता है। न ऊपर यानि अपने घर में जाने देता है और न ही नीचे जाने देता है। फिर जैसे ही उसे अभीष्ट को सिद्ध करने का जरिया मिल जाता है वैसे ही वह उस जीव को उस गर्भ में स्थिर कर देता है। इस प्रकार प्रारब्ध अनुसार ही फिर जीव की किस्मत बनती है और जीव तदनुसार कर्म करता हुआ सद्गति या अधोगति को प्राप्त होता है।

इसी संदर्भ में सजनों आओ आज फिर गुढ़ाई के दौरान अब

तक पढ़ाए व समझाए गए सबकों के मुख्य तथ्यों को अपनाने व अमल में लाने योग्य बनने के प्रति आत्मनिरीक्षण करते हैं। इस विषय में हमारी सब सजनों से प्रार्थना है कि पूर्ण आत्मसुधार हेतु, सब इस गहराई से अपना आत्मनिरीक्षण करना कि फिर अंतर्निहित बची-खुची कमियों पर फतह पाना कोई कठिन कार्य न रहे और हम कदाचित् अपने जीवन में विगत भूलों को दोहराने की गलती न करें। इस तरह हम अपने यथार्थ चारित्रिक स्वरूप को प्राप्त हो इसी जीवन में अपना उद्धार कर पाने में सक्षम हो जाएं। तो आओ पिछले बिन्दुओं को दृष्टिगत रखते हुए, निम्नलिखित बिन्दुओं के प्रति भी अपना आंकलन करते हैं:-

1. क्या आप आद् अक्षर के अजपा जाप द्वारा ख्याल को अत्यन्त एकाग्रचित्तता व ध्यान से हर्षोल्लास के साथ आत्मस्वरूप में निरंतर जोड़े रखने की आदत डाल पा रहे हो यानि अपना हृदय प्रकाशित रख पा रहे हो या फिर अभी भी संसारी कनरस में फँसे हुए हो ?

2. क्या आप ब्रह्म सत्ता यानि अपने अस्तित्व के आधारभूत सत्य को समझते हुए अपने प्राकृतिक गुणों में बने रह, उस परब्रह्म से प्राप्त जीवनी शक्ति का सदुपयोग कर पा रहे हो यानि ब्रह्म भाव अनुसार जीवन जीते हुए अपने चित्त को साहस से शुभ कर्मों में प्रवृत्त रख पाने में समर्थ हो पा रहे हो या नहीं?

3. क्या आप उठत-बैठत, स्वप्न-जाग्रत, आते-जाते, जिसके साथ भी विचरते हो, हर्षोल्लास के साथ, सब में उसी ब्रह्म

सत्ता का अनुभव करते हुए, समभाव-समदृष्टि के सबक अनुसार परस्पर सजन-भाव का व्यवहार कर पा रहे हो या नहीं?

4. क्या आप अपनी ब्रह्म सत्ता के बल पर, मन को वश में रखते हुए, खुद पर सुचारु ढंग से शासन करने के योग्य बन पा रहे हो या अभी भी मनमत हावी है?

5. क्या आप आत्मिक ज्ञान द्वारा अपनी बुद्धि को प्रकाशित कर मनःशांति प्राप्त करने का भरपूर यत्न कर रहे हो या खलबली में रहते हुए अशांतिपूर्ण जीवन जीने में ही आनन्द का अनुभव हो रहा है?

6. क्या आप खुद को नित्य चेतन सत्ता ब्रह्म मानते हुए, अपने ख्याल को शरीर व शारीरिक सम्बन्धों से मुक्त रख, आत्मीयता अनुसार इस संसार में विचर पा रहे हो या अभी भी शरीरों व शारीरिक स्वभावों के मोह में फँसे हुए हो?

7. क्या आप परमार्थ में स्थिरता से बने रहने हेतु, जब भी किसी सजन से मिलते हो तो भेंट के समय अभिवादन के रूप में नमस्ते, जय सीता राम, सत् श्री अकाल, प्रणाम आदि करने के पश्चात् किसी भी अन्य प्रकार की दुनियावी यानि घृणायुक्त, दुःखमय बात आदि का सिलसिला आरम्भ करने के स्थान पर वास्तविकता में बने रहने हेतु, आत्मा में विद्यमान शाश्वत् परमात्मा यानि सत्य के संग, ख्याल जुड़ा हुआ है या नहीं, इस के बारे में बातचीत करते हो या घरेलू बातचीत की कचहरी लगानी शुरू कर देते हो?

8. क्या आप सतवस्तु की रामसत् के अनुरूप :-

- साग को कड़ाह समझते हुए सबके प्रति अपना फ़र्ज अदा हँस कर, कर रहे हो यानि अपने गृहस्थ धर्म को ठीक निभाते हुए रूढ़दे हुए सजनों को भी पकड़ रहे हो या नहीं?
- अपने मन-वचन-कर्म को शुद्ध रखते हुए व आचार-विचार व व्यवहार को ठीक रखते हुए, सब कुछ निष्काम भाव से करने के स्वभाव में ढल रहे हो यानि आप सच्चाई-धर्म के रास्ते पर ठीक चलते हुए, गिरते हुए सजन को भी खड़ा कर रहे हो या नहीं?
- नाम-ध्यान द्वारा आत्मेश्वर से ऐसा संबंध स्थापित कर पा रहे हो कि घर का सब कार्यव्यवहार करते हुए भी आपका ख्याल ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल जुड़ा रहे यानि नाम-ध्यान में आप महाराज के साथ जुड़े रहने में कामयाब हो पा रहे हो या नहीं?
- भक्ति-शक्ति को धारणा शक्ति द्वारा मन में धारण कर शास्त्रविहित् विचारों को निजी विचारों के रूप में स्वीकारते हुए, दृढ़ निश्चय व चित्त की एकाग्रता से सब कुछ उनके अनुकूल करने की आदत डाल पा रहे हो यानि भक्ति-शक्ति आप धारण कर सोए हुए सजन को भी जगाने का पुरुषार्थ दिखा पा रहे हो या नहीं ?
- अधर्म का रास्ता छोड़, कामना से रहित निष्काम रास्ता पकड़, कुरस्ते पड़े सजन को भी रास्ते पर लाने का परोपकार कमा यश-कीर्ति को प्राप्त हो रहे हो या नहीं?

9. क्या आप जैसे अभी तक बताया गया है, ठीक उसी विधि अनुसार, निंदा-उस्तत के स्वभाव से बचे रह प्रसन्नतापूर्वक परस्पर एकता में बने रह, जीवनयापन कर पा रहे हो यानि आप हँसते हुए औरों को भी हँसने में प्रवृत्त कर पा रहे हो या नहीं?

10. क्या अब इतना कुछ जानने-समझने के पश्चात् इस पर अमल फरमाने से, आपके लिए रोना-झुखना समाप्त कर, संकल्प रहित अवस्था में बने रहना सहज हो पा रहा है या नहीं ?

11. क्या अब आपके अन्दर अंतर्मुखी बने रह निष्काम भाव से ईश्वरीय आज्ञाओं यानि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित वाणी का अनुशीलन करने का सामर्थ्य जाग्रत हुआ है या अभी भी आप अपने को कमजोर पा रहे हो ?

गुढ़ाई के दौरान सजनों मानवोचित गुण धारने के प्रति, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार अभी तक जो भी आपको बताया गया है, उन्हें परिपूर्ण इंसान बनने के निमित्त आवश्यक क्रिया मानो और इसीलिए इस क्रिया को दिलचस्पी में आकर निरंतर करते रहो। ऐसा सुनिश्चित करने पर सजनों आपके मन में उठने वाली सब इच्छाएँ पूर्ण हो जाएंगी और परिपूर्ण मन इच्छा रहित अवस्था को प्राप्त होगा। इस संदर्भ में याद रखो सजनों जब इच्छाएँ अपूर्ण रहती है, तभी इंसान परेशान होता है और भूत-भविष्य उसे खलता है यानि परेशान करता है परन्तु जब कोई इच्छा बाकी नहीं रहती है तो आपको जीवन में किसी काम के लिए

अन्यों से अपेक्षा नहीं रखनी पड़ती, इस प्रकार आप स्वतन्त्र रूप से धीरता पूर्ण जीवन जीने के योग्य बन सकते हो व सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर आगे बढ़ना सहज हो जाता है

इस संदर्भ में सजनों अपना व अपने बच्चों का मानवता अनुरूप अच्छी तरह से पोषण करने हेतु इन मानवीय गुणों को खुद धार कर अमल में लाना व अपनी संतानों को भी इस योग्य बनाना आवश्यक मानो। इस तरह निरोगी व पीड़ा रहित जीवन जीना आरम्भ कर दो। सजनों इस क्रिया को, भाव शुद्धि व पुष्टि द्वारा एक सत्यनिष्ठ व धर्मपरायण इंसानों की तरह सजनतापूर्वक जीवनयापन करने के लिए अनिवार्य मानो क्योंकि यह सुख-शांति से जीवन लक्ष्य प्राप्ति की ओर बंधनरहित होकर विधिवत् आगे बढ़ने की बात है।

अंततः हम सबसे प्रार्थना करते हैं कि इस क्रिया को प्रेमलक्षणां भक्ति यानि ईश्वर से प्रेम करने वाली भक्ति से भी ऊँची भक्ति मानो क्योंकि जहाँ प्रेमलक्षणां भक्ति के अंतर्गत प्रियतम व प्रेयसी यानि सुरत-शब्द का द्वि-भाव बना रहने के कारण दोनों में फ़रक बना रहता है और संयोग-वियोग की स्थिति उत्पन्न होती है वही इसके अंतर्गत सेवक-सेव्य भाव की एकात्मता रहती है और सजन ईश्वरमय होकर इस जगत में विचरता है। तभी तो इसे पराभक्ति भी कहते हैं। याद रखो इस परम भक्ति भाव पर स्थिर रहने वाला इंसान जीवन में सदा विजयी रहता है व सम्मान को प्राप्त करता है। ऐसे व्यक्ति को अपने जीवन काल में कभी भी पराजय व तिरस्कार का सामना नहीं करना पड़ता। कहने का आशय

यह है कि इस भक्ति भाव के अतर्गत इंसान उचित ढंग से सर्वहित के निमित्त जीवन जीने के लिए केवल ईश्वर को ही परामर्शदाता मित्र मानता है और उसी के वेद-विदित विचारों अनुसार सत्यता से धर्मसंगत जीवन के समस्त कर्तव्य कर्म पूर्ण निष्ठा से सम्पन्न करते हुए, मानवीय गुणों के वर्त-वर्ताव द्वारा निर्विघ्नता से अपना जीवन लक्ष्य प्राप्त कर लेता है। इसीलिए वह जीवन निर्वहन हेतु दूसरों से सम्बन्ध जोड़ दूसरों का कुछ अपना आत्मीयता के भाव से गिरने की बात समझता है। सजनों ऐसा ही नेक इंसान बनने के लिए समभाव-समदृष्टि की युक्ति हमें प्रेरित कर रही है। अतः हमारे लिए बनता है कि हम इस युक्ति की पढ़ाई व गुढ़ाई करने में किसी प्रकार भी कमज़ोर न पड़ें और स्वार्थ को त्याग परहित को नैतिक आदर्श मानने का सिद्धान्त अपनाएं। इस हेतु सजनों अगर कष्ट-क्लेश भी सहने पड़ें तो प्रसन्नचित्तता से इसी मत पर डटे रह सब कुछ सह जाएँ। तभी परमार्थी कहला विजय को प्राप्त कर सकोगे। इस परिप्रेक्ष्य में सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है कि स्वार्थ से टप्पा खा परमार्थी बनो और सजन श्री शहनशाह हनुमान जी दे वचनां दी पालना करो क्योंकि:-

सजनों सतवस्तु है आने वाली।
 अजण वक्त है सम्भलो सजनों,
 इस नगरी तों न जावो खाली।।
 उस शहनशाह जी दे कोलों है सब कुछ।
 जो चाहो सो लओ मेरे सजनों, ओ है बागां दा माली।।
 उस दयालु दे संग रहेंदे ओ।

ओ है नगरी दा वाली, ओ है नगरी दा वाली।।
ओ बाज़ी जित लैंदा, ओ बाज़ी जित लैंदा इन्सान।
ओ रौशन कहांदा नाम, ओ रौशन कहांदा नाम।।

अन्त में सजनों हम सबसे प्रार्थना करते हैं कि इस जगत में
आए हो तो परस्पर आत्मीयता का वर्त-वर्ताव करते हुए,
अपना नाम रोशन करो और इस तरह खुश रहते हुए सबको
खुशियाँ बाँटो।



दिनांक 21 अगस्त 2016 का सबक्र

सजनों अभी तक हमने जाना कि न हमें बुरा बनना है न अच्छा बनना है अपितु अपने यथार्थ में बने रहना है। इस हेतु हमें देखना है कि कैसे हम अपने इन्सानियत स्वरूप में यानि मानवीय व्यक्तित्व में मजबूती से बने रह सकते हैं और आने वाली संतानों को भी तदनुसार ढाल, जगत के लिए उपयोगी बना सकते हैं। अतः सजनों अपनी यथार्थ शक्ति और हस्ती का बोध कर सशक्त बनो। इस हेतु:-

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी
को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

याद रखो मात्र इतना ही करने से अपने यथार्थ को पा,
इन्सानियत में बने रह सकोगे।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं
नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

याद रखो शब्द से ही सब उपजता है। अतः जो उपज का
माध्यम है, उस माध्यम से जुड़े रहना ही उचित है क्योंकि
उसी स्रोत से ही सब प्राप्त होता है। उसी से जुड़े रहने पर
ही हमारे व्यक्तित्व का रूप, स्वरूप व गुण निखर कर सामने
आता हैं। इस तरह यह शब्द रूपी गुरु ही जीवन जीने का
सही ढंग बताता है। अतः शब्द ब्रह्म के अर्थ को अपने जीवन
में उतारो और इस शरीर को उसी अनुसार जीवन के अर्थ

को प्रयोग करने का हेतु मानो। याद रखो यह शरीर ज्ञानस्वरूप नहीं है, यह केवल जीवन के अर्थ को सिद्ध करने का जड़ रूप माध्यम है। अतः इस माध्यम का समुचित प्रयोग कर अपना जीवन लक्ष्य प्राप्त करो।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहो:-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

यह नित्यता का प्रतीक है। अतः सब कार्यव्यवहार करते हुए इस सत्य को अपने मन-मस्तिष्क में स्थित रखो।

यह तो सर्वविदित है कि किसी काम या व्यक्ति का बिगड़ना सरल है पर सुधरना कठिन है। आओ इसे समझते हैं, कैसे?

जानो कि हर वस्तु व व्यक्ति का रचनाकार परमेश्वर, प्रयोग-कर्ता के अन्दर, अपनी कृति के गुणकारी होने के प्रति, अटूट विश्वास भरने के लिए, उस मशीनरी में कुछ विशेष गुण भरता है। अतः प्रयोग-कर्ता के लिए, उन विशेष गुणों से परिचित हो, तद्नुरूप उस मशीनरी का कुशलता से प्रयोग करते हुए, वांछित परिणाम प्राप्त करना होता है। इस हेतु प्रयोग कर्ता को, उस मशीनरी का समय-समय पर उचित ढंग से निरीक्षण करते हुए, उस मशीनरी के हर कलपुर्जे को, यथा स्थिरता से बिगाड़ रहित रखने के लिए, युक्तिसंगत प्रयत्न करना होता है। अन्य शब्दों में इसके प्रति किसी भी प्रकार की लापरवाही करना वर्जित होता है क्योंकि इस क्रिया के प्रति थोड़ी सी भी असावधानी से कलपुर्जों के अपने स्थान से इधर-उधर हट जाने व जंग खा जाने का भय

उत्पन्न हो जाता है। परिणामस्वरूप वांछित परिणाम प्राप्ति संदिग्ध हो जाती है। अंत नतीजा यह होता है कि रचनाकार द्वारा, उस मशीनरी के गुणों से विधिवत् परिचित कराने के बावजूद भी, उसका ठीक से संचालन करना कठिन हो जाता है। अन्यों पर निर्भरता की स्थिति पनपती है और रचनाकार से नाता टूट जाता है यानि हमारी पहुँच सीमित हो जाती है।

इसी सन्दर्भ में सजनों यदि हम अपने आप को लें तो ज्ञात होगा कि उस परमपिता परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति होने के बावजूद, लापरवाही वश, हमारा ख्याल, अपनी श्रेष्ठता व गुणवत्ता के प्रति अनभिज्ञ हो, इन्द्रिय सुख यानि विषय-भोग में फँस इधर-उधर भटक गया है। फलतः हमारे ख्याल की स्वतन्त्रता भंग हो चुकी है व हमारे स्वभाव/आचरण/प्रवृत्ति आदि में विकार उत्पन्न हो गए हैं और विकारग्रस्त हो हमारी वृत्ति-स्मृति और बुद्धि अपनी निर्मलता खो बैठे हैं। यहाँ तक कि हमारे संकल्प की स्वच्छता, जिह्वा की स्वतन्त्रता व दृष्टि की कंचनता भी भंग हो गई है और इस तरह आत्मीयता के विपरीत शारीरिक स्वभाव अपनाकर हमारी शरीर रूपी मशीनरी सम्पूर्णतः दोषयुक्त हो बिगड़ गई है।

इस विषय में सजनों ज्ञात हो कि सतयुग में इन्सान की वृत्ति, स्मृति और बुद्धि सब निर्मल होती है। त्रेता से लेकर कलियुग तक संकल्प के कुसंगी होने के कारण, भाव-स्वभावों के मलिन होने पर, ख्याल धीरे-धीरे उस गन्दगी के वातावरण में धँस जाता है और वृत्ति, स्मृति व बुद्धि सब दूषित हो जाती है। जानते हो फिर यह गंदगी साफ कैसे हो सकती है?

नहीं जी।

इसे एक उदाहरण द्वारा समझने के लिए जल से भरा हुआ एक गिलास लेते हैं। तत्पश्चात् इसमें हम अपनी गंदगी से भरी उँगली डालते हैं। आपने देखा कि उँगली की सारी गंदगी जल में चली गई। इससे स्पष्ट हुआ कि जल में वह शक्ति है कि यह सारी गंदगी को अपने में समेट लेता है और वस्तु विशेष को पुनः उज्ज्वल बना देता है। यही नहीं कुदरत ने जल को वह गुण भी दिया है कि चाहे इसमें कितनी भी गंदगी डालो यह गंदगी को यथास्थान छोड़, खुद को पुनः स्वच्छ व निर्मल बना लेता है। आओ समझते हैं कैसे?

अब इस गंदे जल को हम धरती पर गिरा देते हैं। इसके धरती पर गिरने से क्या होगा?

यह स्वभाववश धरती के कण-कण से गुजरता हुआ नीचे चला जाता है और इस तरह वहाँ से पुनः निर्मल हो, नल से स्वच्छ जल के रूप में निकल, फिर अस्तित्व में आ जाता है और पुनः उपयोगी सिद्ध होता है।

सजनों इस उदाहरण से शिक्षा ले हमें भी समझना चाहिए कि चाहे गंदगी से भरा कोई इंसान अपने आचार-विचार व व्यवहार द्वारा हमें कितना ही गंदा करने का यत्न क्यों न करे परन्तु हमें उसकी गंदगी धारण कर, अपनी वृत्ति, स्मृति व बुद्धि को दूषित नहीं करना। इस संदर्भ में अपनी निर्मलता सुनिश्चित करने हेतु हमें ईश्वरीय विचारों से अपने ख्याल को निरंतर जोड़े रखना है और मन को उसी में ही लीन रखना है। याद रखो सजनों ऐसा करने पर ही अपना

अंतःकरण स्वच्छ रखने में कामयाब हो सकोगे अन्यथा वृत्ति, स्मृति व बुद्धि सब दोष युक्त हो जाएंगे।

सजनों जान लो कि इसी बिगड़ाव के कारण ही हमारा मन-मस्तिष्क सत्य-असत्य का अनुभव करने में असमर्थ हो गया है और हमारे लिए शब्द विचार का मनन करते हुए, तदनुकूल ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों से धर्म-कर्म करवाना कठिन हो गया है। यह मनःसंतोष के भंग होने की स्थिति है जिसके फलस्वरूप हम दिशाविहीन हो यानि अविचारियों की तरह कामना युक्त हो, केवल अपनी इच्छा को महत्त्व देते हुए, सब कुछ मनचाहे ढंग से कर रहे हैं और कर्मफल का भोग भुगत रहे हैं। आशय यह है कि ईश्वर का कहना मानने की जगह हम अपने मन की तरंग के अनुसार काम करने में ही अपना बड़प्पन समझते हैं और मन को मोहित करने वाली, आधार रहित कोरी कल्पना अनुसार ही, अपने जीवन जीने का ढंग अपनाते हैं। यह अहंकार प्रवृत्ति में फँसने की निशानी होती है।

इस संदर्भ में सब जानते ही हैं कि मनमानी करने वाला इन्सान केवल स्वार्थ सिद्धि तक ही सीमित होता है यानि किसी अन्य संगी-साथी की चिंता नहीं करता और मनमुखी हो, ईर्ष्या-द्वेष आदि के कारण अन्यो के प्रति शत्रुता का भाव रखता है। यही नहीं जहाँ उसकी स्वार्थ सिद्धि में बाधा उत्पन्न होती है वहीं वह औरों को दुत्कारता है। निःसंदेह ऐसा व्यक्ति मानसिक संतुलन शक्ति खो बैठता है और अमृत की जगह विषपान करता हुआ कभी भी मनःसंतोष प्राप्त नहीं कर पाता। मनःसंतोष खोने पर सजनों जगत के विषय व

सम्बन्ध उस पर हावी हो, उसकी चेतना को हर लेते हैं। परिणामस्वरूप वह जीवन में पुण्य कर्म करने के स्थान पर इच्छाओं का गुलाम हो, सब कुछ गलत ही गलत करता है। सजनों यह जीवन उद्देश्य से भटकने की बात होती है और ऐसा होने पर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के प्रभाव से आत्मविस्मृति हो जाती है यानि अंतर्दृष्टि द्वारा अपना यथार्थ दिखना बंद हो जाता है। फलतः इंसान आत्मा और परमात्मा की एकता का सत्य भूल, मनुष्यत्व अनुरूप गुणों पर बने रह, परस्पर आत्मीयता का व्यवहार करने में स्वयं को असमर्थ पाता है और परमार्थ के विषय में बात करना तक पसंद नहीं करता। बड़े-बड़े निष्कामी भी परिस्थितियों में उलझ यह गलती कर बैठते हैं। सजनों यदि ध्यान से देखा जाए तो शायद यही कारण है कि हम अपनी प्राकृतिक प्रकृति यानि समभाव से च्युत हो, लाचारों जैसा जीवन जीने पर खुद को विवश पा रहे हैं और दीन-हीन दशा को प्राप्त हो, इस शरीर रूपी मशीनरी का भली-भांति संचालन करते हुए, इसका सदुपयोग करने में खुद को असक्षम समझ रहे हैं।

सजनों यह अपने आप में पूर्ण होते हुए भी अपूर्ण मानव की तरह जीवन जीने का द्योतक है। इस संदर्भ में मत भूलो कि एक अपूर्ण इंसान, बिके हुए इंसान की तरह, औरों के अधीन हो, व्याकुलता से भरा हुआ, तनावयुक्त जीवन जीता है। तभी तो वह प्रसन्नचित्तता की जगह, रोते-झुखते हुए जीवन गुज़ारता है और उसे पुनः अपनी श्रेष्ठतम अवस्था को प्राप्त करने के लिए आवश्यक बौद्धिक विकास करना कठिन प्रतीत होता है। यह अत्यन्त दयनीय स्थिति होती है। इस कठिनाई से न उबर पाने के कारण ही वह दोषयुक्त, अपने

संगी-साथियों को भी सांसारिक विषयों में फँसा उनमें बिगाड़ उत्पन्न करने का यत्न करता है। इस यत्न के दौरान, बात-बात पर तोड़-फोड़ करना, हर जगह उलझन व विघ्न-बाधा खड़ी करना, छिपाव-दुराव करना, दूसरों की निंदा, उपहास व तिरस्कार करना, भ्रम फैलाना, धोखा देना, घृणा पैदा करना, झूठ-चोरी-ठगी करना, आतंकवादियों की तरह औरों का चरित्र व सुख-शांति बिगाड़ना आदि उसका सामान्य प्रचलन बन जाता है।

स्पष्ट है सजनों ऐसा पथभ्रष्ट इंसान सच्चाई-धर्म के उचित मार्ग से हट, कदम-कदम पर फिसलते हुए, मुख्य धारा से अलग हो जाता है यानि उसकी विचारशक्ति क्षीण हो जाती है और चित्त और बुद्धि ठिकाने नहीं रहती। इस तरह वह निर्बल अचेतन अवस्था को प्राप्त हो, कष्ट-पीड़ा, भय व दुःखों से भरा उत्साहहीन जीवन जीते हुए अकेला रह जाता है और अंततः उसका व्यथा भरा जीवन काल का ग्रास बन जाता है।

सजनों हम सब जानते हैं कि जीवन क्रियाशीलता का नाम है। किसी भी दोष के पनपने के कारण क्रिया का ठीक ढंग से संचालित न हो पाना स्वाभाविक सी बात होती है व इस कारण कोई भी काम ठीक से नहीं हो पाता। याद रखो ऐसा होने पर कोई भी काम सँवरता नहीं अपितु सब काम बिगड़ते जाते हैं क्योंकि मनोबल कमज़ोर होने के कारण, बिखरे हुए ख्याल को पुनः समेट कर, एकाग्रचित्तता से कुछ कर पाना असंभव हो जाता है।

इस परिप्रेक्ष्य में याद रखो कि जहाँ बिखराव होता है वहाँ

एकता की जगह परस्पर फूट पनपती है व उसका परिणाम सम्बन्धों की अखंडता के स्थान पर विनाश के रूप में दृष्टिगोचर होता है। इस संदर्भ में द्वापर युग में कौरवों और पांडवों के मध्य हुई लड़ाई इसका प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत करती है। ऐसा इसीलिए होता है क्योंकि वहाँ सामूहिक हित के स्थान पर व्यक्तिगत स्वार्थ पूर्ति को लेकर परस्पर वैर-विरोध, लड़ाई-झगड़ा, अपना-पराया, तेरी-मेरी का भिन्न-भेद युक्त आचार-व्यवहार चलता रहता है और परिवारजन क्रोधवश अनियन्त्रित होकर, एक-दूसरे पर कठोर बातों के तीर चलाते रहते हैं। इस उन्माद युक्त उपद्रवी वातावरण में फिर छोटा-बड़ा, कोई किसी का आदर-सत्कार नहीं करता और सारा खेल ठीक उसी तरह बिगड़ जाता है जैसे कोई अड़ियल घोड़ा, हठ के कारण, बिगड़ कर, ढीठों की तरह सड़क पर खड़ा हो जाता है और उस पर बैठे हुए घुड़सवार के लिए अपनी मंज़िल तक पहुँचना नामुमकिन हो जाता है। याद रखो सजनों जिस भी परिवार या राज्य में ऐसा वैर व द्वेष युक्त कटुता का वातावरण पनपता है वह चाहे कितना ही बड़ा व शक्तिशाली परिवार या राज्य क्यों न हो, आखिरकार हर तरफ से हानि की प्राप्ति कर तबाह हो जाता है।

सजनों ऐसा किसी के साथ भी न हो, इस हेतु सदा अपने यथार्थ स्वरूप का बोध रखते हुए, सुध-बुध में बने रहो। याद रखो जो अपनी सुध नहीं खोता उसी की वृत्ति-स्मृति, बुद्धि व मन सदा विशुद्धता को प्राप्त रहता है क्योंकि उस स्थिर बुद्धि, शुभ दृष्टि वाले दूरदर्शी इंसान का ध्यान अपनी वास्तविकता से हट किसी ओर आकर्षित नहीं होता। इसीलिए तो वह उच्च बुद्धि, उच्च ख्याल इंसान, समझदारों

की तरह, विवेकशीलता से, शास्त्रविहित विचारों पर बने रहने में कामयाब हो जाता है और कभी भी, किसी भी कारण अचेत नहीं होता। इस प्रकार वह जगत की मिथ्या धारणा से बचा रहता है व अपने अंतःकरण को विशुद्ध रख पाता है।

अतः सजनों आत्मनिरीक्षण द्वारा अपनी खोज-खबर रखने के योग्य बनो यानि निज यथार्थ में बने रह, सुकर्म करने हेतु, समय रहते ही निज सुधार करने की इस क्रिया को नियम से करना आवश्यक मानो। इस संदर्भ में याद रखो कि एक सचेतन इंसान, आत्मनिरीक्षण क्रिया द्वारा अपनी त्रुटि/दोष आदि का, उचित उपाय कर उसे व्यवहार में लाने से पूर्व ही ठीक कर लेता है। इसलिए तो वह बुरे आचार-व्यवहार में फँसने के स्थान पर अच्छे आचार-व्यवहार की ओर प्रवृत्त होता है। इस तरह शोधन क्रिया में निपुण वह इंसान छल-कपट का रास्ता कभी नहीं अपनाता और अपने सुधार हेतु बुरी या गलत रीतियों/बातों आदि को साथ-साथ ही हटाते हुए, उनके स्थान पर उचित रीति/बात आदि को प्रयोग में लाता जाता है।

सजनों जीवन में आत्मनिरीक्षण के महत्त्व को समझते हुए इसे दोष निवारण की आवश्यक प्रक्रिया मानो और इस तरह प्रेममय व सजन पुरुष बने रहो ताकि अंतःशुद्धि बनी रहे व ध्यान की स्थिरता द्वारा ख्याल में आत्मबोध बना रहे। यह सुधि-बुद्धि यानि स्मृति, ध्यान व बुद्धि के चेतन अवस्था में बने रहने की बात है। ऐसा सुबुद्धि मानव ही विद्वान, बुद्धिमान व धैर्यवान व्यक्ति कहलाता है और वही भाग्यशाली जीवन में शुभ कार्य करता हुआ पथभ्रष्ट होने से बचा रहता है व धर्मात्मा कहलाता है।

सजनों यह कार्य खुद पर यकीन रखते हुए, पूर्ण चेतनाशक्ति द्वारा सम्पन्न करो। तभी खुद पर निरंतर मज़बूती से पकड़ रखते हुए, मानव जाति को नैतिक तौर पर पतन अवस्था को प्राप्त होने से बचाए रखने हेतु, राजनीतिक, धार्मिक व सामाजिक स्तर पर सुधार लाने का सतत प्रयास कर सकोगे और आपका यह प्रयास उपदेश आदि के द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर व्यापक मानसिक दोषों-आचरण/चरित्र की बुराईयों को दूर कर, सबका जीवन सुधारने के निमित्त होगा। सजनों यही तरीका है अपनी बिगड़ी हुई शरीर रूपी मशीनरी की मरम्मत कर, उसे ठीक करने का और उसका यथोचित प्रयोग करने में दक्ष बन अपने संगी-साथियों को भी वैसा ही निपुण बनाने का। इस संदर्भ में अब ध्यान से सुनो:-

सुधरना चाहो तो सुधर सकते हो
खुद पर करो यकीन
कब तक सोए रहोगे
बुद्धिहीनों की तरह
यूँ ही गहरी नींद

जो सोता है सो खोता है
उस कहावत को याद करो
ईश्वर ने जो चेतना शक्ति दी है
उसका भरपूर इस्तेमाल करो

अरे, मानव बन कर आए हो दुनियां में
मानवता की संभाल करो
उसी धर्म पर डटे रहो
कुछ तो दुनियां में कमाल करो

सब कुछ होते हुए भी
ऐसा करने से क्यों डरते हो
जानो हर डरने वाले की बुद्धि
यह जग छल-कपट से हरता है

इसीलिए सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है:-

सोया है तो जाग ओ बन्दे सोया सोया जाग ।
खुल गए तेरे भाग ओ बन्दे खुल गए तेरे भाग ।।
शहनशाह ओ दाता उस दाते दे चरणों में आ ।
जेहड़ा सजन आ गया, उन्हां नूं मिला देवनगे सुहाग ।
ओ सुहाग ओ सुहाग ओ सुहाग ओ सुहाग ।।

अंततः सजनों आप सब स्वीकारेंगे कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते हमारे लिए ऐसा करना बनता है। अतः परमात्मा की तरह मनुष्यों में श्रेष्ठ बनने हेतु, बुद्धिमत्ता व विचारशीलता से सजनता/मानवता अपना कर, मनुष्य होने के भाव अनुसार, कुदरत प्रदत्त गुणों का सत्यता से धर्मसंगत इस्तेमाल करो। इस तरह जीवन लक्ष्य प्राप्ति हेतु, इस मृतलोक में परस्पर एक दूसरे का आदर-सत्कार करते हुए, अपना हर कर्तव्य कर्म निष्काम भाव से करते हुए, कर्मफल प्राप्ति से सदा मुक्त बने रहो।



दिनांक 28 अगस्त 2016 का सबक

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहो:-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

इस संदर्भ में सजनों हम आपसे पूछते हैं कि ज्ञानी को क्यों नहीं अपनाना चाहिए?

क्योंकि इससे इंसान बंधनमान हो उसके अधीन हो जाता है।

याद रखो कई बार ज्ञानी जो ज्ञान प्रदान करता है, उस को खुद नहीं अपनाता। तो उस वक्त हमें उस स्वार्थपर ज्ञानी के चलन को नहीं अपनाना होता अपितु उस द्वारा जो ज्ञान प्रदान किया जा रहा है उसके अर्थ को अपने जीवन में उतारना होता है। अतः यह भूल कोई मत करना। याद रखो यदि यह भूल करी तो इसका अर्थ होगा आपने ज्ञान के स्थान पर ज्ञानी को अपना लिया अर्थात् आप ज्ञान से अधिक ज्ञानी को महत्त्व देने लग गए हो। सो ऐसा मत करना और ज्ञान पर ध्यान देना। याद रखो ज्ञान पर ध्यान देने वाला

उसके अर्थ को समझना आवश्यक मानता है ताकि वह उस समझे हुए ज्ञान को धार कर उसका सही ढंग से वर्त-वर्ताव कर सके और इस प्रकार उस ज्ञान में और उसकी करनी में कोई फर्क नज़र न आए। इस संदर्भ में जान लो कि कथनी और करनी का फर्क उस ज्ञान के प्रति इंसान के अन्दर बहुत बड़ा भ्रम पैदा करता है। यह दो नावों में सवार होने की बात होती है। आमतौर पर इसे हम अपने दैनिक पारिवारिक जीवन में भी देखते हैं कि माता-पिता व शिक्षक जो उपदेश हमें देते हैं वैसा आचरण नहीं दिखलाते। इससे बच्चों के अन्दर विभ्रम पैदा होता है और उनकी बुद्धि धोखा खा जाती है। तभी तो वे शांत अवस्था में नहीं रह पाते और माता-पिता की करनी उनके चरित्र का नाश कर देती है। अतैव ऐसा मत होने देना। आओ अब आगे बढ़ते हैं।

गत सप्ताह सजनों किसी काम या व्यक्ति के बिगड़ने का कारण बताया गया। इस विवेचना से सजनों स्पष्ट हुआ कि मनुष्य के स्वाभाविक स्वरूप के बिगड़ने का मुख्य कारण वही होता है जोकि पढ़ाई के दौरान आप सजनों को बताया गया अर्थात् जो माता-पिता अपने बच्चों को लालन-पालन के दौरान, उन्हें आत्मिक ज्ञान से वंचित रख, केवल शारीरिक ज्ञान में उलझा देते हैं, उन्हीं के बच्चे बिगड़ जाते हैं। ऐसे बिगड़े हुए माता-पिता अपने नकारात्मक क्रियाकलापों द्वारा बच्चों के सम्मुख, अपनी दुश्चरित्रता के रूप में जब अपने स्वभावों का बुरा प्रदर्शन करते हैं तो उसी के दुष्प्रभाव से उन बच्चों की चिंतन और विचारशक्ति की पवित्रता भंग हो जाती है और बुद्धि भ्रमित हो जाती है। इसी कारण तो वह शब्द विचार पकड़, उस पर स्थिर बने रहने के स्थान पर, हर बात

पर परस्पर वाद-विवाद का टकराव भरा रास्ता अपनाते हैं। यही असंतुलित मानसिक परिस्थिति ही उनकी विचार व व्यवहार की भ्रष्टता का कारण बनती है और वह नादान अपने माता-पिता की लापरवाही के कारण भ्रष्ट आचार अपना कर दुराचारी, अत्याचारी व व्यभिचारी बन जाते हैं। निःसंदेह उनका ऐसा बनना यह ज़ाहिर करता है कि वह जीवन में जो भी करते हैं वह उस करनी से प्राप्त होने वाले अच्छे-बुरे फल से अपरिचित होकर ही करते हैं और इसी नासमझी के कारण वह अपनी भूलों को समझने में भी असक्षम हो जाते हैं। तभी तो वह अधर्म व झूठ की राह पर बने रहते हुए किसी के कहने पर भी उस गलती का एहसास नहीं कर पाते।

याद रखो इस मानसिक दोष को जड़ से उखाड़ फेंकने का किसी के पास कोई इलाज नहीं होता और इसी लाइलाज बीमारी के प्रभावों से उनका शरीर भी अस्वस्थता को प्राप्त हो जाता है। ऐसा होने पर वे अपने जीवन का कोई भी कर्तव्य कर्म धर्मसंगत व कुशलता से नहीं कर पाते और इस प्रकार सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर सुदृढ़ बने रहने से हार खा जाते हैं।

सजनों हम में से किसी को भी इस हार का सामना न करना पड़े इस हेतु हमें भूल कर भी कुछ भी ऐसा नहीं करना जो मनुष्यों के लिए करना निषेध हो। इस विषय में अब तक जो हुआ सो हुआ, उसे भूल जाना है और आगे से हमारे सहित, परिवार का हर सदस्य, पुनः आत्मीयता से जीवन जीने के योग्य बन सके, इसके लिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित युवावस्था की भक्ति यानि समभाव-समदृष्टि की युक्ति

को अपनाते हुए, बहादुरों की तरह सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के वचनानुसार, बैहरूनी वृत्ति को छोड़कर, अन्दरूनी वृत्ति को धारण कर, अपने मन को सदा परमेश्वर में लीन रखना है। कोई बात नहीं यदि एक बार यत्न करने से सफलता प्राप्त नहीं होती तो भी घबराना नहीं है अपितु उस छोटी सी चींटी का उदाहरण सामने रखना है जो अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, अनेकों बार असफल होने पर भी हिम्मत नहीं हारती और अंततः अपने साहस व विश्वास के बल पर विजय प्राप्त कर लेती है। आपको भी ऐसा ही अद्वितीय साहस दिखाना है और दृढ़ संकल्प के बल पर सफलता को पाना है।

इस संदर्भ में इन वचनों को परिवार का हर सदस्य प्रवान करने योग्य बन सके व गृहस्थाश्रम में खलबली के स्थान पर, शांति व एकता का वातावरण स्थापित हो सके, उसके लिए हमें आत्मिक ज्ञान की पढाई व गुढाई दिलचस्पी से करते हुए, विधिवत् यत्न द्वारा आत्मबोध करना होगा। आत्मबोध से तात्पर्य मैं क्या हूँ, क्या करने आया हूँ और कैसे कर सकता हूँ इस तथ्य को जानने से है। याद रखो जैसे ही हम युक्तिसंगत प्रयत्न द्वारा आत्मबोध करने में कामयाब हो जाएंगे तो शरीर का कोई सवाल नहीं रहेगा। इस तरह जैसे-जैसे हम अब तक धारे हुए शारीरिक स्वभावों को छोड़ कर, धीरे-धीरे आत्मीयता अनुरूप भाव-स्वभावों को पकड़ते जावेंगे वैसे-वैसे हमारी चेत यानि सुरत कंचन होती जाएगी। इस संदर्भ में सजनों सुनो सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है:--

**सुरत कंचन होवे, ओ सुरत कंचन होवे
फिर नाम ते ध्यान किवें न होवे, ओ सुरत कंचन होवे**

अर्थात् जिसकी सुरत कंचन हो जाती है, वह सहजता से एकाग्रचित्त हो ध्यान स्थिर हो जाता है और उसके लिए आत्मबोध करना कोई कठिन कार्य नहीं रहता। सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार यही, खुद में आए बिगड़ाव को सुधार कर आत्मोन्नति करने की अचूक युक्ति है। इस युक्ति को अपना कर व्यवहार में लाने वाला सजन निश्चित रूप से मनुष्यत्व के भाव में ढल सकता है।

अतः सजनों इस प्रयत्न में पूर्ण सफलता प्राप्ति हेतु, अब अपने घर-परिवारों में विचरते समय, परस्पर घरेलू बातें करना बंद कर दो और संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म पर मज़बूती से बने रह, सम पर खड़े होने के प्रति एक-दूसरे को जागरूक रखो। इसके अतिरिक्त ख्याल को अफुर अवस्था में अपने सच्चे घर में साधे रखने के लिए परस्पर आवश्यकता अनुसार ही बात करना सुनिश्चित करो अर्थात् वृत्ति मौन की अपनाओ क्योंकि मौन का नतीजा है विश्राम। इस संदर्भ में सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है:-

**सजनों तुसां बालक नहीं नादान, हो तुसां हुन नौजवान,
पा लवो आत्मिक ज्ञान, पावो विश्राम सजनों, पावो विश्राम।**

इस विषय में याद रखो कि बैहरूनी वृत्ति अपनाने से कोई लाभ नहीं होने वाला, अतः यह त्याज्य है। अतैव अन्दरूनी वृत्ति को धारण कर सशक्त बनो। इस हेतु शारीरिक स्वभावों की सफाई करो। जानो कि शारीरिक स्वभावों की सफाई करने के उपरांत ही आत्मिक ज्ञान के प्रयोग द्वारा जिह्वा स्वतन्त्र व संकल्प स्वच्छ रखते हुए सबके साथ यानि घर-परिवार व कुल संसार के साथ सजनता का व्यवहार करने

योग्य बन सकोगे और झुखना-रोना समाप्त हो जाएगा। ऐसा होते ही आत्मतुष्ट हो जाएंगे और मन संकल्प रहित अवस्था को प्राप्त होगा। इस तरह दृष्टि कंचन हो जाएगी और अन्दरूनी वृत्ति में प्रसन्नचित्त रहते हुए अपनी इन्द्रियों पर कंट्रोल रख काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार पर फ़तह पा ब्रह्म नाम कहा सकोगे। अतः सजनों ब्रह्म नाल ब्रह्म होने के लिए, ऐसा करना सुनिश्चित करो और श्रेष्ठ पुरुष बनो। इस संदर्भ में अब ध्यान से सुनो:-

वह बुरा, वह बुरा, कब तक कहते रहोगे
खुद को देखो कहीं खुद ही बुरे तो नहीं
सोचो सोचो हँ सोचो बड़े प्यार से
इन्सान होकर इन्सान बुरा बनता है क्यों

पैदा होने पे होता वह गुणवान है
यही अन्य जीवों से बढ़कर पहचान है
योग्यता से करता वह हर काम है
गर पकड़ता वह रस्ता निष्काम है

कलुकाल के प्रभाव में आकर जो भी
विषय-विकारों में फँस जाता है
उसी के ही मन में जानो सजनों
अमंगलकारी बुरा भाव घर कर जाता है

फिर वह अपनी करनी द्वारा सजनों
जो भी करता है बुरा ही करता है
अनुचित काम जैसे निंदा-चुगली आदि
करते-करते अनेकों कष्ट उठाता है

बस फिर तो ये ही अवगुण सारे
उसके बुरे व्यवहार का कारण बनते हैं
और उस निर्दोष इन्सान को बुरा बनाकर
मायावी रूप से छलते हैं

इसी कारण ही उस मानव की
चेतनता ए विध नष्ट हो जाती है
कि क्या करने आया, क्या कर बैठा
उसे इसकी होश भी न रहती है

हमारे साथ ऐसा न हो
इस हेतु शब्द विचार अपनाओ जी
बुराई का रास्ता छोड़ सारे
अब सच्चाई-धर्म का रास्ता अपनाओ जी

इस संदर्भ में सबसे प्रार्थना है कि अपना जीवन बनाने हेतु
शब्द विचार पकड़ अपने हृदय में ऐसे निर्मल वातावरण का
निर्माण करो कि आपको अपने यथार्थ स्वरूप का बोध करने
व उसी उज्ज्वल छवि में बने रहने हेतु तनिक भी कठिनाई न
हो। ऐसा सुनिश्चित करने पर निश्चित ही जीवन में अपने
सद्गुणों का अच्छे कामों के निमित्त प्रयोग करते हुए अन्यों
से बढ़कर प्रशंसा का पात्र बन सकोगे। अब सब मिलकर
बोलो:-

न बुरा सोचूँगा न बुरा बोलूँगा और न ही किसी का
बुरा करूँगा।



दिनांक 4 सितम्बर 2016 का सबक

ईमानदारी

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

याद रखो जैसे ही हमारे अन्दर यह भाव मज़बूती से घर कर जाता है तो अंतर्निहित मानवीय गुण हमारे दृष्टिगोचर हो, प्रकाशित हो जाते हैं और हमें समझ आ जाती है कि एक इन्सान का व्यवहार कैसा होना चाहिए। फिर इंसानियत अनुरूप चाल-चलन अपनाना कोई कठिन कार्य नहीं रहता और हम शक्तिशाली होकर निर्भयता से इस जगत में विचरते हैं। अतः इस तथ्य की महत्ता को समझते हुए इस सत्य को अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहो:-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

अर्थात् मैं वह तत्व हूँ जो अजर-अमर है व जिसका नाश कदाचित् नहीं हो सकता।

एक ईमानदार व्यक्ति बनने के लिए सजनों अन्दर-बाहर दोनों तरफ से हँसते रहो अर्थात् न अन्दर कोई बात या सोच

हो न बाहर कोई बात या सोच हो। ऐसा होने का अर्थ होगा कि आप प्रसन्नता में हो। याद रखो प्रसन्नता भंग तभी होती है जब अन्दर-बाहर कोई अविचार चलता है। इस अविचार से नुकसान न केवल अपना होता है अपितु उन सबका भी होता है जिनके साथ हम विचरते हैं। चूंकि आज का सबक 'ईमानदारी' है, अतः इस बात पर सबने विचार कर आत्मनिरीक्षण करना है कि कहीं हम चाहे-अनचाहे कुछ ऐसा अनुचित करके, अपनों को व दूसरों को हानि तो नहीं पहुँचा रहे? कहीं हम अपनी बात को सही सिद्ध करने के लिए या अनुचित लाभ उठाने के लिए खुद को या दूसरों को धोखा तो नहीं दे रहे ?

इस संदर्भ में यदि लगे कि कहीं न कहीं जो कहा जा रहा है, हम उसके प्रति दोषी हैं तो अब के बाद से वैसी करनी न करने का दृढ़ निश्चय लेते हुए, आगे से हर कदम पर ईश्वरीय हुक्म को मानने के लिए तत्पर हो जाना यानि हाँ जी के स्वभाव में ढल जाना। याद रखो जो भी ईश्वर के वचनों की पालना करते हुए, आत्मिक खुराक के रूप में शब्द ब्रह्म विचार का सेवन करता है उसके बुरे मनोभाव स्वतः ही अन्दर से समाप्त होने आरम्भ हो जाते हैं। इस तरह धीरे-धीरे सारी बुराई सिमट जाती है और वह आत्मज्ञानी, संतोष व धैर्य को धारण कर, सुदृढ़ मानवीय व्यक्तित्व में ढल, आत्मीयता का व्यवहार करने में सक्षम हो जाता है। फिर उसके मन-चित्त की प्रसन्नता व शांति कदाचित् किसी भी परिस्थिति व अवस्था में भंग नहीं होती और वह आनन्दपूर्वक बेखौफ़ा-बेखतरा होकर सच्चाई-धर्म के मार्ग पर चलता हुआ निष्कामता से परोपकार कमाने का पुरुषार्थ दिखा पाता है।

सजनों यदि हकीकत में ऐसा बनना चाहते हो तो आज के सबक को ध्यान से सुनना, समझना व विचार में लाकर उस पर अमल फरमाते हुए, अपनी बुरी करनी से उबर जाना। अब एकाग्रचित्त होकर सुनो:-

सजनों जीवन में किसी भी पुरुषार्थ की सिद्धि के लिए ईमानदार होना अति आवश्यक है। कहा जाता है कि जिसके पास ईमान है, वही ईमानदार है। ईमान शब्द से तात्पर्य ईश्वर में विश्वास और जीवन में सदाचार अपनाने से है। यह सर्वोच्च आध्यात्मिक, नैतिक और सामाजिक मूल्य है, अतः धन व भौतिक सम्पदा से अधिक महत्त्व अपने ईमान को सुरक्षित रखने पर देना है। ईमानदारी का उदय अंतर हृदय में तब होता है जब मन ईश्वर में लीन रहता है। अपने प्रति ईमानदार होना इसकी पहली शर्त है। तात्पर्य यह है कि अपने को जानते-समझते हुए अर्थात् अपनी शक्ति व सामर्थ्य को पहचानते हुए हम जो भी कहें अत्यन्त सोच-विचार कर कहें और कहकर फिर उसे करें यानि कथनी-करनी में सामंजस्य होना अति आवश्यक है। अन्य शब्दों में जीवन में खूब सोच-विचारकर जो भी उद्देश्य निर्धारित करें फिर उस पर डटे रह सुदृढ़ बने रहें और तदनुसार ही कथन और कर्म करें। इससे मन-वचन-कर्म की एकता बनती है और इनके सामंजस्य से व्यक्ति निर्धारित उद्देश्य की प्राप्ति हेतु उचित दिशा में समुचित तरीके से प्रयत्न कर पाता है और उसकी सिद्धि हेतु किसी भी कठिनाई का सामना करने व बलिदान देने से नहीं सकुचाता। इस प्रकार एक ईमानदार व्यक्ति अपने ईमान की रक्षा हेतु प्राणोत्सर्ग कर, औरों को भी इस ओर प्रवृत्त करता है।

हम कह सकते हैं कि किसी भी कर्म को उसके स्वभाव, सीमा, तत्व के आधार पर विधिपूर्वक संपूर्ण निष्ठा से संपन्न करना ईमानदारी है। एक ईमानदार व्यक्ति वही होता है जो आचारवान, संतोषी, नैतिक और अनुशासित होता है और समस्त कार्य धर्म, नीति, आचार, शील, मर्यादा को दृष्टिगत रखते हुए, विवेकपूर्वक, न्यायसम्मत व नीतिसम्मत सम्पन्न करता है। वह बराबर अपनी दैनंदिन क्रियाओं में इसका अभ्यास करता है और आत्मादेश के विरुद्ध व भौतिक ज्ञान के अनुरूप, ईमानदारी का उपदेश कभी नहीं देता। तात्पर्य यह है कि तर्क-वितर्क द्वारा वह धर्म का आडम्बर खड़ा कर स्वार्थ साधने की चेष्टा कभी नहीं करता क्योंकि वह जानता है कि यह धर्म से गिरने की बात है। इससे सजनों उस व्यक्ति का स्वयं विकास होता है और उसका सोया आत्मविश्वास जागता है। फिर जैसे-जैसे उसका आत्मविश्वास सद्गुणों के रूप में विकसित हो आचार-व्यवहार द्वारा प्रकट रूप ले लेता है, वैसे-वैसे उसके संपर्क में आने वाले लोग न केवल उससे लाभान्वित होते हैं, वरन् वे भी उदाहरण बनकर समाज का विकास करते हैं।

इस संदर्भ में यह भी मत भूलो कि जिस प्रकार कंचन यानि सोना आग में जलाने पर और सज्जन विपत्ति पड़ने पर परखे जाते हैं, वैसे ही विषमता, विनाश, पराजय के मध्य ईमानदारी विकसित होती है। प्राण को हथेली पर लेकर जो ईमानदारी की आग में कूदने का साहस करते हैं, जो अपने स्वार्थ की परवाह किए बिना इस ओर प्रवृत्त होते हैं, वे ही ईमानदारी का निर्वाह कर पाते हैं। ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि जैसा कि सबको पता ही है कि अग्नि का धर्म है या

तो किसी वस्तु को जलाकर भस्म कर देना या फिर पका देना। अतः भक्त प्रह्लाद की तरह जो अपनी आत्मा की अजरता-अमरता को भली-भांति जानता है वह ईमानदारी की इस आग में कूद कर भी भस्म नहीं होता अपितु आवी पर रखे घड़े की तरह पक कर मजबूत यानि वज्र हो जाता है और आजीवन चरित्रवान बना रहता है। इसलिए ईमानदारी की रक्षा व इससे उत्पन्न होने वाली हर प्रकार की परिस्थिति, क्षति व विपरीतता का सामना करने के लिए सदा तत्पर रहना चाहिए। इस हेतु ईमानदारी के इस महत्त्वपूर्ण नैतिक मूल्य का पाठ बच्चों को होश में आते ही सिखाना चाहिए।

इस संदर्भ में सजनों ईमानदार इंसान बनने हेतु ईश्वर, धर्म और अपने मनुष्य होने के सत्य में निष्ठा रखो। ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि ईमान कहो या धर्म कहो, दोनों ही एक बात है। अतः ईमानदारी पर खरा उतरने के लिए आवश्यक है कि हम आत्मा और परमात्मा की शाश्वतता, शाश्वत जीवन और शाश्वत मूल्यों में विश्वास रखते हुए, इस नैतिक व्यवस्था को भौतिक व्यवस्था से उच्चतर मानें। इस प्रकार इन विश्वासों के अनुसार ही आचार-व्यवहार अपनाकर, आध्यात्मिक कर्म जैसे ईश्वर की भक्ति व साधना द्वारा, मन को विरक्त भाव से ईश्वर में लीन रखें। सजनों तभी क्षमाशीलता अपनाकर, सत्य-अहिंसा के पथ पर, निष्काम भाव से अग्रसर हो सकेंगे और लोकहित के निमित्त सदा न्यायसंगत पुण्य कर्म करते हुए, जगत के समस्त कर्तव्य धर्म संगत निभा पाएंगे। इस तरह सजनों परोपकारी व धर्मपरायण श्रेष्ठ मानव कहला सकेंगे।

सजनों इसे ही एक ईमानदार व्यक्ति की कसौटी मानो और इसी विश्वास अनुसार सत्य में पूरी निष्ठा रखते हुए, परस्पर लेन-देन आदि में न्यायसंगत सच्चाई का व्यवहार करो। सजनों मन से यह धार्मिक विश्वास न छूटे, उसके लिए मन में बेईमानी का भाव न आने दो। याद रखो यदि ऐसा अधर्मपूर्ण चलन अपनाया तो यह अपने ही धर्म का खून करने के समान होगा क्योंकि मन में बेईमानी का भाव आना अपने धर्म के प्रति निष्ठा न रहने व लोभ के स्वभाव को अपनाने की बात है। याद रखो लोभ में फँसना ईमान को बेचने की बात है। इसी कारण मन में ईर्ष्या-द्वेष, क्रोध आदि का भाव पनपता है और मन अस्थिर व अव्यवस्थित हो, इधर-उधर भटकने लगता है।

लोभवश होकर ही इंसान के मन में जब दूसरों की उन्नति व सुख आदि देख कर कष्ट उत्पन्न होता है तो वह वैसा बनने की होड़ में ईश्वर के विचारों के प्रति बने रहने के स्थान पर उनका विद्रोह करने का दुस्साहस कर बैठता है। इस प्रकार माया युक्त हो वह निज के सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान व सर्वज्ञ होने का सत्य भूल जाता है और माया के चक्रव्यूह में फँस हर कर्म, फल की कामना से करता है। तभी तो सच्चाई-धर्म का निष्काम रास्ता छूट जाता है और संतोष, धैर्य पर सत्यता से बने रहना कठिन हो जाता है। ऐसा होने पर मन का झुकाव ईश्वर की तरफ से हट, जगत के विषयों में जा फँसता है व मानव मन-चित्त की प्रसन्नता खो, झुखने-रोने के स्वभाव में उलझ जाता है। तभी तो सजनों कह रहे हैं कि बेइमानी के स्थान पर ईमानदारी से जीविका चलाओ और अपनी हैसियत में प्रसन्न बने रहो। किसी से पक्षपात न

करो व सदा सत्य बात कहो। याद रखो ईमानदार इंसान नेक नीयत से युक्त होता है इसलिए वह सबका शुभ ही करता है और सर्वदा सर्वहितकारी कार्य करता है। इस तरह वह सब को नेक राय देकर नेक रस्ते पर चलने के लिए प्रेरित कर, सदाचार का रास्ता दिखाता है। उसकी बुद्धि व विचार शुद्ध होते हैं इसीलिए तो वह लोक-परलोक में यश कीर्ति का अधिकारी बनता है। अतः सजनों समभाव नज़रों में कर, ऐसा ही पवित्र दृष्टि वाला भला आदमी बनना सुनिश्चित करो। यह सजनता का भाव अपना कर, निष्काम भाव से पुण्य कर्म करने की बात है।

अंततः सजनों याद रखो पशुता का आशय है आप-आप चरना, अपने लिए जीना-मरना जबकि मनुष्यता का तकाजा है मनुष्य के लिए मरना, दूसरे के सुख-दुःख में सहभागी होना, पर दुःख कातर होना ताकि कोई भी मानव धर्म से न गिरे। यह सहभागिता पारस्परिक ईमानदारी की पूरी अपेक्षा रखती है और इस अपेक्षा पर खरे उतरने के लिए मनुष्य को त्याग, समर्पण, असुविधा आदि का पग-पग पर सामना करना पड़ता है, जैसा कि सतवस्तु की रामसत् अपनाने की नीति के दौरान आपको समझाया गया था। अतः बहादुरों की तरह इस प्रकार का ईमानदार इंसान बनने का पराक्रम दिखाओ और विजय पथ पर अग्रसर हो जाओ। इस संदर्भ में सजनों अब ध्यान से सुनो कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार ईश्वर हम सबको क्या कह रहे हैं:-

**इंसान है इन्सानी दिखा, इन्सानी दिखा कुर्बानी दिखा।
कुर्बानी दिखा फिर नाम चला।**

नाम चला फिर ध्यान लगा, फिर कंचन हो के आ।।
फिर तूं साडे दर्शन पा, ज्योति स्वरूप नाम कहलवा।
बिन सूरजों अपने प्रकाश नूं तूं पा।।

तो हम मानें कि यह सब सुनने के पश्चात् आपको, अपने ईमान पर बने रह, ईमानदारी से निर्दोष जीवन जीने की बात पसंद आई है। अगर हाँ, तो इस हेतु आत्मनिरीक्षण करो। इस प्रकार जिस भी कारण, जितना भी खोट आपके मन में भरा हुआ है और जिसके प्रभाव से आप कदम-कदम पर धर्म हारते हो व सत्य आपकी पकड़ से छूट जाता है यानि झूठ का आश्रय ले जीवन के सब स्वार्थ सिद्ध करना आपकी मजबूरी हो जाती है, उस खोट को मन से बाहर निकाल फेंको। इस तरह अंतःकरण की शुद्धि करो ताकि पुनः सत्य के चलन पर टिके रहने हेतु आपके अन्दर सामर्थ्य पैदा हो जाए और आप इस दुनियां में बुद्धिमत्ता व नेक नीयती से केवल वही करो जो सबके लिए हितकारी हो। सजनों इस प्रकार सदाचारी बन, निष्काम भाव से सब करते हुए परोकार कमाओ और अपने खालस सोना ईश्वरीय स्वरूप को पाओ।

आओ अब इसी बात को 'मदारी और जमूरा' नामक, इस नृत्य नाटिका के माध्यम से समझते हैं:-

मदारी मदारी मदारी मदारी मेरा तूं.....
मैं जमूरा जमूरा जमूरा जमूरा.....
क्या आप जानते हैं कि यह मदारी और जमूरा कौन हैं?

बताओ बताओ

इस समस्त संसार का मदारी "ईश्वर" ही तो है
और हम सब उसके जमूरे ।
देखो-देखो हम सब जमूरे ही तो बैठे हैं ।
मदारी ने अनोखा खेल रचाया
कुशलता व ईमानदारी से खेलने के लिए नीति नियम
बनाया
साथ में दी जमूरे को चेतावनी
ना कर बैठना अपनी मनमानी
पर जमूरे ने बात न मानी
और कर ली अपनी ही हानि
ओ मूर्ख बन्दे ! अब तो सम्भल, अब तो सम्भल !
मनमत को छोड़ गुरुमत पर चल
सौंप दे मदारी को अपनी डोर
वही ले जाएगा उजाले की ओर
याद रहे:--
न बनो बुरा, न बनना अच्छा
धर्म कहता -- बनो मानव सच्चा
मानवता है धर्म हमारा,
निष्कामता से परोपकार करना है कर्म हमारा ।
मानवता को जो अपनाता, सदाचारी वह कहलाता ।
चल जमूरे शुरू हो जा--
जी उस्ताद
दिमाग पर अपने ज़ोर लगा,

अब तू सबको यह बता
 मानवता का प्रतीक है क्या
 बताओ बताओ सारे बताओ
 क्या बताएं-क्या बताएं
 विचार में रहना या अविचारी बनना
 विचार में रहना उस्ताद
 एकता में रहना या द्वि-भाव में चलना
 एकता में रहना मालिक ।
 आपस में लड़ना या सजन भाव से विचरना
 सजन भाव से विचरना उस्ताद
 यह जमूरे तूने सही फरमाया
 कुछ-कुछ तेरी समझ में आया
 ध्यान दो आगे क्या है करना
 हर पल रोना या सदा ही हँसना
 हँसना हँसना....हर पल हँसना....सदा ही हँसना
 चल जमूरे शुरू हो जा इन सबको भी हँसा
 इन सबका भी खून बढ़ा
 अब बता क्या उचित है करना
 औरों से लेना या औरों को देना
 लेना नहीं नहीं उस्ताद देना
 मन वश होना या उसे वश में रखना
 मन को वश में रखना उस्ताद
 जग संग जुड़ना या प्रभु संग रहना
 प्रभु संग जुड़ना उस्ताद
 मुझ भुलनहार को अब समझ आया कि
 ईश्वर ही है मेरा सच्चा साथी
 जगत की माया तो है धोखे बाज़ी

शाबाश जमूरे---

सही चुना है तूने साथी
खुल गई तेरे मस्तक की ताकी
इसी बात पे दे ताली, चेहरे पे आ गई लाली
चल बता! अब क्या है कहना
बेघर होना या घर में रहना
घर में ही रहना है
बेसुध होना या सुध में ही रहना
सुध में रहना है उस्ताद...धीरे-धीरे में बेसुध को सुध
आ रही है उस्ताद
ये बताओ अब सच पर बने रहोगे
या अभी भी करोगे झूठ का व्यापार
अब समझ आ गई यह बात

अब तो अपनाया सच्चाई धर्म का निष्काम रास्ता उस्ताद।
माँ कसम केवल सच बोलूंगा सच के सिवा कुछ नहीं बोलूंगा
स्वार्थपरता अपनाओगे या परमार्थ की राह पर अग्रसर हो जाओगे

परमार्थ की राह पर चलना है उस्ताद
अब छल कपट कर औरों का माल हड़पने की भूल
करोगे या संतोष-धैर्य में बने रहोगे
संतोष धैर्य अपना ताकतवर बनना है उस्ताद जी।
दुराचारी बनना या चरित्रवान होना
बोलो बोलो क्या उचित है- सोचकर बोलो

चरित्रवान होना है उस्ताद
जमूरे शाबाश! क्या बात-क्या बात
दिए तूने सही जवाब, लाजवाब-लाजवाब

दिए सारे सही जवाब, जमूरा बन रहा उस्ताद
इसका उत्तर दो तो जानूं, बुद्धि बल तेरा पहचानूं
फिर-फिर कर इस जगत में आना
या अपने घर पहुँच विश्राम को पाना
जान गया इस खेल का राज़
जन्म-मरण से रहना है आज़ाद
उस्ताद ! फिर-फिर इस जगत में नहीं है आना
अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम है पाना
समझ गया हूँ वही है मेरा असली अंतिम ठिकाणा
इन्सान तो इन्सान होता है इन्सान पैदाइश से अच्छा बुरा नहीं होता
कर्मफल के अनुसार अच्छा या बुरा बनता है
इन्सानियत में रहने में ही उसका सम्मान होता है।

इसीलिए सब सजनों से प्रार्थना है कि ईमानदारी से नेक
इंसान बने रहना सुनिश्चित करो और ऐसा कर बिन दागों
अपने सच्चे घर पहुँच जाओ।

अब सारे मिलकर बोलो

ओ३म् शांति शांति शांति ओ३म्, ओ३म् शांति शांति शांति
ओ३म्, ओ३म् शांति शांति शांति ओ३म्

अब तो जो ईश्वर कह रहे हैं सबको स्पष्ट हो गया कि
ओ३म् विच विशेष हूँ, ओ३म् तों निर्लेप हूँ

इसीलिए उसी शब्द गुरु मूलमंत्र का अजपा जाप करते हुए
अपना जीवन पथ प्रकाशमय बनाओ और समभाव-समदृष्टि
की युक्ति समझ सजन बन जाओ। सजन बन जाओ, सजन

बन जाओ और ज्योति स्वरूप परब्रह्म परमेश्वर नाम कहाओ। अब सब मिलकर बोलो सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय, सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय, सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय।



दिनांक 11 सितम्बर 2016 का सबक

अन्दरूनी व बैहरूनी वृत्ति

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहो:-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

सजनों अन्दरूनी व बैहरूनी वृत्ति दोनों वृत्तियों की समरसता द्वारा मन की शांति प्राप्त करने हेतु सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है:-

हुण अन्दर जुड़ो जी, बैरूनी छडो वृत्ति।

बैरूनी वृत्ति विच लाभ न कोई।

अन्दरूनी वृत्ति विच प्रसन्नता होई।

हुण अन्दर जुड़ो जी, बैरूनी छडो वृत्ति।।

सजनों यह ग्रन्थ क्योंकर हमें बैरूनी विषयों व स्वभावों को छोड़कर अन्दर जुड़ने का निर्देश दे रहा है, यह समझने के लिए हमें अपनी धारणा के मुख्य आधार अन्दरूनी वृत्ति व बैरूनी वृत्ति में से मनुष्यता यानि सच्चाई-धर्म के रास्ते पर बने रहने हेतु कौन सी वृत्ति उत्तम व उपयोगी है यह समझना होगा। आओ इसी

संदर्भ में जानते हैं अन्दरूनी व बैरूनी वृत्ति के बारे में:-

अन्दरूनी वृत्ति यानि अन्तः प्रकृति। यहाँ अन्तः का अर्थ है भीतरी व आंतरिक तथा प्रकृति का अर्थ है स्वभाव। अतः आन्तरिक प्रकृति का मुख्य अर्थ है आन्तरिक स्वभाव यानि मनुष्य की अन्तर वृत्ति या मूल स्वभाव। अन्तः प्रकृति का अन्य अर्थ है आत्मा यानि परमात्मा का समीपवर्ती अंश। यह व्यक्ति की आत्मा का अन्यतम गुण है व व्यक्ति की मौलिक प्रकृति यानि मूल स्वभाव का द्योतक है। याद रखो उस सत्य को धारण करने वाले की अन्दरूनी वृत्ति कभी भी दूषित नहीं होती।

इस प्रकार यह बाहरी वस्तुओं से दृष्टि और मन हटा कर अंतर्दृष्टि द्वारा अपने यथार्थ स्वरूप यानि आत्म दर्शन को देखने, जानने व समझने का यत्न है। तभी तो इसे अंतर्दृष्टि हो, स्वः स्फुरित ज्ञान का हेतु मानते हैं तथा इसी के द्वारा हृदय में स्थित परमात्मा दृष्टिगोचर होते हैं। कहते हैं कि आत्मिक ज्ञान के प्रयोग द्वारा भवसागर के ऊपरी तत्व पर बहने वाली धारा दिखती है पर जो विचारक ध्यान से उस तल के नीचे बहने वाली विचारधारा को यानि भावनाओं को जान लेता है उसका मन वेग रहित यानि शीतल संतोष को प्राप्त रहता है अर्थात् जिसकी अन्दरूनी वृत्ति इस यत्न द्वारा सशक्त हो जाती है, उसका मन शांत, इन्द्रियाँ नियंत्रित, ख्याल अफुर, निर्भय व निषंग हो जाता है और उस को न केवल अंतः जगत अपितु बाह्य जगत के यथार्थ की रमज़ भी समझ आ जाती है। अन्य शब्दों में उसे ज्ञात हो जाता है कि यह जगत मायावी हैं। अतः माया के वश आकर इस को धारण कर इसमें अटकना व भटकना नहीं। इस प्रकार इसे आन्तरिक व बाहरी एकता व एकरसता का प्रतीक माना जाता है।

जानो कि अपनी निर्मल अन्तः प्रकृति में स्थिर बना रहने वाला, विवेकशील व्यक्ति, सर्वदा मौलिक विचारों यानि ब्रह्म भाव से युक्त भावनाओं पर एकनिष्ठ भाव से अडिग बने रहते हुए, ध्येय प्राप्त करने की ललक, विचारों को दोषमुक्त रखने का सतत् प्रयास और निरंतर उत्कृष्ट और उदात्त यानि महान गुणों को आत्मसात् करता है। तभी तो वह सहृदयवान होता है और दूसरों के प्रति स्नेह, दया और विश्वास का भाव दिखलाते हुए कभी किसी को क्षति नहीं पहुँचाता यानि वह सर्वहितकारी अपने व सबके दुःख-सुख को सम कर जानता है। यही नहीं परिस्थितियाँ चाहे कितनी ही प्रतिकूल क्यों न हों और ऐसी परिस्थितियों में चाहे कोई उसे अपनी मूल प्रकृति से गिराने का कितना भी यत्न क्यों न करे, वह अचल सदैव समभाव में स्थित बना रह, शुभ कार्यों में प्रवृत्त रहता है। इसी कारण उसका मानसिक संतुलन ठीक बना रहता है और वह मानसिक कष्ट सहने से बचा रहता है। कहने का आशय यह है कि निर्मल मन-बुद्धि के प्रभाव से वह मनुष्य, सत्यं, शिवं, सुन्दरम् जैसे उदात्त गुणों से युक्त अन्तः प्रकृति में युक्तिसंगत बने रहने पर ही दुर्गुणों से दूर रहकर, अपने मूल स्वभाव समभाव के अनुरूप दूसरों के लिए समदर्शिता का कल्याणकारी भाव रखता है और उसका समर्थन करते हुए परस्पर सजन-भाव का वर्त-वर्ताव कर पाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अंतः प्रकृति जन्मजात गुण होते हुए मनुष्य के मनुष्यता अनुरूप चरित्र का परिचायक होती है।

यद्यपि सजनों अन्तःप्रकृति आत्मा की आवाज़ या पुकार होती है और सर्वथा विशुद्ध, निर्मल और पवित्र होती है तथापि यह इतनी अप्रकट रहती है कि अज्ञानी और विवेकहीन लोगों को यह सहसा परिलक्षित नहीं होती यानि सुनाई नहीं देती। ऐसी विशुद्ध अन्तःप्रकृति वाला इंसान बाह्य रूप से चाहे वज्र के समान कठोर

होता है किंतु अन्दर से पुष्प के समान मृदु यानि कोमल होता है और उसकी थाह उसकी जननी यानि माता समेत कोई भी नहीं पा सकता। इस संदर्भ में वर्तमान परिस्थितियों के दृष्टिगत बाह्य आवरण में निज दोषों को छिपाए रखने में माहिर मनुष्य बाहर से तो अत्यन्त सजन और मृदु व्यवहार करते हैं परन्तु अंतर्मन से कलुषित, कलह प्रिय, व्यभिचारी और हिंसक वृत्ति के होते हैं। वे अपनी क्रियाओं द्वारा चोरों की तरह दूसरों के मन में घुस उनमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी विकार भर उन्हें, अभिमानी, दंभी और अनुदार बना देते हैं। अतः अपनी अंतःप्रकृति को सुरक्षित रखने के लिए ब्रह्मविचारी बन हर पल संगति दोष से सावधान रहना होता है क्योंकि अगर दुर्भाग्यवश कुसंगति के कारण अथवा प्रतिकूल परिस्थितियाँ आने पर हम हिंसा, क्रूरता, कठोरता, अन्याय और दुर्दमनीय दुर्गुणों का पक्ष ले लेते हैं तो उसका सीधा-सादा सा अर्थ होता है कि हमने बैहरूनी वृत्ति में बाह्य धारणा द्वारा अपने हृदय की निर्मलता भंग कर दी और मनुष्यता या सजनता का व्यवहार छोड़ दिया। तब हमारा अपने प्रति यह कर्तव्य बनता है कि हम आत्मनिरीक्षण द्वारा अपनी अन्दरूनी व बैहरूनी दोनों स्वाभाविक वृत्तियों के गुणों और दोषों का विवेचन करते हुए, केवल सदगुणों को ग्रहण करें और उन्हीं आदर्शों को आत्मसात् करें व करवाएं जोकि शास्त्रविहित सर्वहितकारी हो। इस संदर्भ में सजनों अन्तःप्रकृति आन्तरिक मनोवृत्ति भी कहलाती है जो व्यक्ति के गुणों और अवगुणों को बतलाने वाली होती है। अतः मनुष्य के लिए उचित होता है कि वह आन्तरिक स्वभाव यानि गुण पर उसी रूप में यथा बने रहने हेतु सांसारिकता में लिप्त हो विष ग्रहण न करे क्योंकि यह अपनी मूल प्रकृति से च्युत हो, नैतिक नियमों की सीमा पार कर, दूसरों के अविचार अपनाते हुए उन जैसा ही दुर्व्यवहार करने वाला स्वभाव अपनाने की बात होगी।

इसलिए सदा याद रखो कि जो घर में रहता है यानि अन्दरूनी वृत्ति में होता है वही परम पिता परमेश्वर की आवाज सुन उसकी आज्ञाओं का पालन कर पाता है जबकि जो ईश्वर से सम्बन्ध तोड़ दुनियां के लोगों के रंग-ढंग से प्रभावित हो कर स्वभाव बदलता है और एक घर से निकले हुए आवारा नकलची इंसान की तरह जीवन जीता है, उसका ख्याल अपने सच्चे घर से भटक जाता है। तभी तो वह जो कुछ भी अपनाता है वह बैहरूनी वृत्ति में जगत से ही अपनाता है और मन के आगे अज्ञान का पर्दा पड़ते ही उसकी अन्दरूनी वृत्ति प्रभावित होती है। ऐसा इंसान अपना, अपने परिवार व समाज का मित्र नहीं होता। उसके मन में किसी के प्रति स्नेह नहीं होता इसलिए वह सदा निरर्थक बातें व काम करता हुआ विनाशकारी प्रवृत्ति अपना बैठता है। यह होता है आत्मीयता का आचार-व्यवहार छोड़, दिखावे के स्वभाव में ढलना व दुराचार का रास्ता अपनाना यानि यथार्थ से अपरिचित हो अजनबियों की तरह बाहरी सौन्दर्य पर गर्व करना। इससे मन में कामुकता का भाव यानि इच्छा प्रबल हो जाती है और फिर व्यक्ति चाह के भी इन इच्छाओं के दुष्चक्रव्यूह से नहीं निकल पाता।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों हम कह सकते हैं कि यद्यपि सजनों अन्तःप्रकृति ईश्वर प्रदत्त गुण है और कभी-कभी यह विरासत के रूप में माता-पिता और पूर्वजों से प्राप्त होती है तथापि अन्तःप्रकृति में यथा निर्दोष बने रहने हेतु सत्संगति की महिमा अवर्णनीय है। याद रखो कि जहाँ कुसंगति के कारण सजन पुरुष भी कुमतिवान बन जाते हैं वहीं सत्संगति के फलस्वरूप दुर्जन भी सुजान बन जाते हैं। अतः अंतः प्रकृति को सुरक्षित रखने के लिए सत्-संगति को महत्ता दो और इस हेतु बैरूनी वृत्ति छोड़ अन्दरूनी वृत्ति को धारण करो। तभी आपके जीवन

चरित्र की सुगंधि देवलोक की सुगंधि को भी मात कर सकेगी ।

अंततः सजनों हम तो यही कहेंगे कि जहाँ आत्मा का स्वभाव दुःख-सुख से अछूते रहना है वहीं मनुष्य की सच्ची प्रकृति ईश्वरत्व है। अपनी इसी मूल प्रकृति यानि विचार ईश्वर आप नून मान के भाव अनुसार ईश्वरत्व में बने रहने हेतु सार्वभौम व सार्वकालिक युग पुरुषों की भांति निष्कलुष, निश्छल, सहज किंतु गंभीर, दृढ़ प्रतिज्ञ, कर्मठ और उदारमना बनो। इस प्रकार मन-वचन-कर्म से निष्कपटता, विनम्रता, शम, दम, नियम और नीति से विरत न होने वाले, मृदुभाषी बन अपने शील और चरित्र का आदर्शतम् रूप सबके सामने प्रस्तुत करो। सुख और दुःख को समान समझो व परहित और पर पीड़ा मिटाने के निमित्त सब कुछ त्याग करने का सामर्थ्य दर्शाओ। तभी स्वयं सम्मानरहित होकर सबको सम्मान देने वाले, सजन पुरुष कहलाओगे। अब इस संदर्भ में सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कैसे अन्दरूनी व बैहरूनी वृत्ति के अंतर को समझाते हुए हमें सदैव सब कार्यव्यवहार करते हुए अन्दरूनी वृत्ति में बने रहने का निर्देश दे रहा है, उसके विषय में ध्यान से सुनो:-

अन्दर राहवाँ में बाहर न जावाँ,
सदके जावाँ वारी महाराज ।
सदके जावाँ बलिहार जावाँ,
साँवले चरणों तों जावाँ वारी महाराज ॥

अन्दर आवे प्रेम ते प्रीति,
बाहर कामना सतावे महाराज ।
कामना सतावे ते पई घबरावे,
चैन न आवे दिन रात महाराज ॥

अन्दर प्यार ते लाडौं नूं देखौं,
बाहर क्रोध सतावे महाराज ।
क्रोध सतावे घर विच झगड़ा पवावे,
वैर विरोध दिखावे महाराज ॥

साँवले चरणौं विच शान्ति आवे,
बाहर लोभ सतावे महाराज ।
लोभ सतावे रघुनाथ जी दा रस्ता भुलावे,
भय दिखावे हर दम महाराज ।
मोह सतावे दुनियाँ विच फँसावे,
घबराहट दिखावे हरदम महाराज ॥

अन्दर हैन फुलौं दियाँ माला,
बाहर दुःखौं दी माला महाराज ।
दुःखौं दियाँ माला ते भरम दिखावन,
भरमदी आई तुआडे द्वारे महाराज ।
अन्दर हैन फुलौं दियाँ सेजाँ,
बाहर कंड़ियाँ दियाँ सेजाँ महाराज ।

कंड़ियाँ दियाँ सेजाँ ते चोभां देवन,
शरण में आई तुम्हारी महाराज ।
अन्दर हैन फुलौं दियाँ वर्षा,
बाहर तृष्णा दी सर्पनी महाराज ।
फुकारे मारे ते ज़हर खिलारे,
रक्षा करो तुसीं आप महाराज ।

अन्दर देखौं सम सन्तोष,
बाहर अहंकार सतावे महाराज ।
अहंकार सतावे अभिमान दिखावे,

मौत खरीदी हुण आप महाराज ।

दासी ए पुकारदी ए,
हुण पंजां तों बचाओ महाराज ।
पंजां तों बचाओ पंजे मार मुकाओ,
इको रूप दिखाओ महाराज ॥

इस कीर्तन के भावार्थ से सजनों स्पष्ट होता है कि दो तरह की वृत्तियाँ होती हैं अन्दरूनी व बैहरूनी। अन्दरूनी वृत्ति अन्दर से धारण होती है व उसके लिए हमारे ख्याल व ध्यान को एकाग्रता से अन्दरूनी स्रोत से जुड़े रहना होता है। दूसरी बैहरूनी वृत्ति होती है जिसे इंसान बाहर यानि जगत से धारण करता है। अधिकतर इसके अंतर्गत माता-पिता, भाई-बहन, सगे-सम्बन्धी व मित्रगण इत्यादि जिनके साथ भी हम विचरते हैं, उनके आचार-विचार व व्यवहार का प्रभाव, किताबी ज्ञान व जो कुछ भी हम देखते-सुनते हैं, वह सब सम्मिलित रहता है। कहते हैं कि इंसान के मन को जो कुछ भी भाता है, उसे वैसा ही बनने की प्रेरणा प्राप्त होती है व वह वैसा ही बन जाता है अर्थात् जिसको आत्मिक तत्व में रूचि होती है वह अन्दरूनी वृत्ति में अपने ख्याल व ध्यान को वहीं जोड़े रख, सब कुछ वहीं से प्राप्त करता हुआ, तद्नुरूप अपने भाव-स्वभावों का निर्माण करता है व जो जगत के विषयों में रूचि रखता है वह बैहरूनी वृत्ति में माता-पिता, पख-परिवार व कुल संसार को अपना गुरु मान, सब कुछ वहीं से प्राप्त कर, जगत के विषयों में उलझ तद्नुरूप अपने भाव-स्वभावों का निर्माण करता है।

इस संदर्भ में समझने की बात यह है कि जो अन्दरूनी वृत्ति के अनुरूप जीवन जीता है वह सम, संतोष को प्राप्त कर, सर्व-सर्वत्र इको रूप देखता है इसलिए बैहरूनी वृत्ति में सबके साथ

आत्मीयता का व्यवहार करता है। जीवन उसके लिए कोई कठिन डगर नहीं रहता अपितु सुखों की सेज बन जाता है जबकि जो बैहरूनी वृत्ति अनुरूप जीवन जीता है वह कामनाओं के दुष्क्रव्यूह में फँस जाता है इसलिए मानसिक रूप से आशा-तृष्णा, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार से व्याधिग्रस्त हो तनावयुक्त जीवन जीता है। जीवन पथ उसके लिए काँटों की यानि दुःखों की सेज बन जाता है जिस पर चलते हुए उसे अत्यन्त कष्ट व पीड़ा भुगतनी पड़ती है।

सारतः इस विवेचना से सजनों स्पष्ट होता है कि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, हमें तुलनात्मक ढंग से इन दोनों वृत्तियों के इंसानों के चरित्र पर पड़ने वाले अच्छे व बुरे प्रभावों व उससे प्राप्त होने वाले परिणाम से परिचित कराते हुए आदेश दे रहा है कि बैहरूनी वृत्ति को छोड़कर अन्दरूनी वृत्ति को धारण करो क्योंकि यही एकमात्र युक्ति है ख्याल को प्रभु के संग निरन्तर जोड़े रख, विशुद्धता, एकाग्रचित्तता व ध्यान स्थिरता द्वारा, हृदय प्रकाशित अपने यथार्थ स्वरूप में स्थित बने रहने की। इसका कदाचित् अर्थ यह नहीं कि हम बैहरूनी वृत्ति में जगत में विचरना ही छोड़ दें क्योंकि इसी ग्रन्थ में अन्दरूनी व बैहरूनी वृत्ति का वर्णन करते हुए यह भी कहा गया है 'जब तक हम बाहर की सफ़ाई नहीं रख सकेंगे अन्दर की सफ़ाई सजनों किस तरह कर सकेंगे। अतः सजनों बैहरूनी वृत्ति को धारण करते हुए और अपने गृहस्थ-आश्रम को ठीक चलाते हुए हम ने अन्दरूनी वृत्ति को पकड़ना है।' अन्दरूनी वृत्ति यानि शारीरिक स्वभावों की सफ़ाई करनी है। शारीरिक स्वभावों की सफ़ाई हेतु जिह्वा स्वतन्त्र व संकल्प को स्वच्छ रख उसे सजन और संगी बनाना है। इससे घर-परिवार व कुल संसार सब सजन हो जाएगा और हमारा झुखना-रोना बंद हो जाएगा यानि दृष्टि कंचन हो जाएगी

व संतोष का सवाल हल हो जाएगा। ऐसा होते ही ख्याल की स्वच्छता स्वतः बन जाएगी। फिर धैर्यपूर्ण होकर, सच्चाई-धर्म के रास्ते पर बने रहना कोई कठिन बात नहीं रहेगी। इसीलिए सजनों अपना बोलचाल सत्य व हृदय प्रकाशित रखते हुए प्राप्त सद्गुणों से धर्म पर अडिग बने रहो। इस हेतु सजनों मात्र अपनी बैहरूनी दृष्टि के उपयोग द्वारा जगत व उसके विषयों को धारण मत करो अपितु अपनी अन्दरूनी दृष्टि यानि विवेकशक्ति के प्रयोग द्वारा प्रत्येक वस्तु का यथार्थ देखते व समझते हुए, विधिवत् उसका इस्तेमाल करना सीखो। यह अपने आप में बाह्य दृष्टि को बंद रखने व अंतर्दृष्टि को खोलने की बात है ताकि ध्यान परमेश्वर के संग जुड़ा रहे और टूटने न पावे। याद रखो बैहरूनी वृत्ति अपनाकर जो व्यवहारिक रूप से परस्पर खलबली मचाते हैं, वैसी क्रिया करना अब बिल्कुल बंद करना होगा। जो सजन मनमत अनुसार ऐसा करने से बाज़ नहीं आएगा यानि खुद पर काबू नहीं रख पाएगा, वह अन्दरूनी वृत्ति को धारण करने में अयोग्य हो जाएगा यानि उसके लिए अपने घर से सब कुछ प्राप्त कर संतोषमय बने रहना असंभव हो जाएगा। ऐसा होने के पश्चात् जब आत्मा की आवाज़ सुनने में व धारण करने में ख्याल असमर्थ हो जाएगा तो अंतःकरण रूपी दर्पण पर परमात्मा के दर्शन के प्रति अबोध हो जाओगे और जो बैहरूनी दर्पण में, शरीर रूपी चोला नज़र आएगा उसी तक सीमित रह, उसी के द्वारा सब कुछ प्राप्त करने व उसी अनुसार सब कुछ करने की होड़ में दुनियावी मंदे भाव-स्वभाव अपना बैठोगे।

सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे पर होने के नाते हम में से किसी के साथ भी ऐसा न हो इस हेतु आत्मनिरीक्षण द्वारा, बैहरूनी वृत्ति में अपनाए भाव-स्वभावों को छोड़ते हुए, अन्दरूनी वृत्ति के भाव-स्वभावों को अपनाओ ताकि आपकी सुरत कंचन

हो जाए व आप इस जगत में एक कामयाब इंसान की तरह निर्लिप्तता से विचर सको। याद रखो ऐसा होने पर ही संसारी बातों का कनरस छूट पाएगा और हम परस्पर संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म की बातें करते हुए, ब्रह्म स्वरूप जो है अपना आप, उस पर स्थिर रह, दिव्य दृष्टि दिखा पाएंगे। अतैव सजनों मानो कि बैहरुनी वृत्ति को छोड़ना अपने आप में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार को जीतने की बात है। इसलिए बैहरुनी वृत्ति की देन कुलनाशक अहंकारता से बचाव हेतु ब्रह्म से ब्रह्म होने की चाहना अपने अन्दर पैदा करो और अपनी इन्द्रियों पर कंट्रोल करके अन्दरुनी वृत्ति अनुसार ही जीवन जीना सुनिश्चित करो व ब्रह्म नाल ब्रह्म नाम कहाओ।



दिनांक 18 सितम्बर 2016 का सबक

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहो:-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

इस संदर्भ में जानो कि ईश्वर सबके सांझे हैं क्योंकि वे समरूप से सबमें बसते हैं। जैसे वे समरूप सबमें हैं, वैसे ही समरूप उसमें बने रहने की आदत डालो। ऐसा करने से उस ईश्वर की अभिन्नता का रहस्य जान जाओगे और एक परिपूर्ण विचारशील इन्सान की तरह मानवता अनुरूप विचरने के योग्य बन सकोगे। कहने का तात्पर्य यह है फिर धारणा कलुषित नहीं होगी यानि मनोभावों में एक दूसरे के प्रति कड़वाहट नहीं पनपेगी और आप अन्दर से ख्याल व बाहर से जिह्वा की स्वतन्त्रता भंग कर ऐसे कटु शब्दों का उच्चारण नहीं करोगे जिससे दूसरों के संग-संग खुद को भी पीड़ा हो। इसी सन्दर्भ में आओ अब जानें कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार गाली-गलूचे निकालना क्यों वर्जित है?

सजनों समभाव-समदृष्टि के इस स्कूल में प्रवेश पाने के

पश्चात् भी जो सजन इतना कहने व समझाने के पश्चात् भी अपनी चाल तबदील कर सतवस्तु की चाल नहीं अपना पा रहे यानि अभी तक जो इस स्कूल का आधारभूत कायदा है यथा जिह्वा स्वतन्त्र कर, संकल्प स्वच्छ व दृष्टि कंचन करना, इसका पाठ न आप पढ़ पा रहे हैं न अपनी संतानों को पढ़ा पा रहे हैं, उनके विषय में स्पष्टता देते हुए सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है:-

**अनपढ़े होय ने दाखिल विच,
अनपढ़े किस तरह पावनगे जित ।
कोई घमंडी कोई गुस्ताखी,
कोई बाणी बोल रहे अनुचित ।।**

अर्थात् जो अहंकारी सजन अभी तक पिता के वचनानुसार अपनी जिह्वा स्वतन्त्र कर परस्पर सजन-भाव का वर्त-वर्ताव नहीं कर पा रहे और अभी भी समभाव के कायदे के विपरीत परस्पर गाली-गलूचे का व्यवहार दर्शाते हैं उनके लिए आवश्यक है कि वह गाली-गलूचे से होने वाले नुकसान को समझें और अपने व अपने कुल के बचाव हेतु तुरंत इस स्वभाव से उबर जाएं अन्यथा भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है। आओ अब जानें कि गाली क्या होती है?

क्रोध में किसी के प्रति कही जाने वाली रूखी/कठोर/अश्लील और अपमानजनक बात, दुर्वचन या अपशब्द को गाली कहते हैं। गाली देने वाले दोषयुक्त व्यक्ति के स्वभाव में कठोरता/तीव्रता आदि की अधिकता होती है और वह अधिकतर आपसी द्वेष/वैर/मनमुटाव के कारण ऐसा करता है। गाली का प्रयोग अशिष्टता और असभ्यता का प्रतीक है।

सामान्यतः गाली देने के दौरान किसी के आचरण पर अनुचित आक्षेप लगाने का प्रयत्न किया जाता है यानि उसे पापी, बेईमान, नीच, मूर्ख, उल्लू, गधा आदि कह कर गुणहीन सिद्ध करने का यत्न किया जाता है। अश्लील गालियों के अंतर्गत दूसरे व्यक्ति का अपनी पुत्री/बहिन/माता से यौन सम्बन्ध बताकर उसे चरित्रहीन की कोटि में डालनेवाली भाषा का प्रयोग किया जाता है। अधिक अश्लील गालियों में यौन अंगों के वाचक शब्दों का घृणित प्रयोग भी किया जाता है। जान लो कि गालियाँ देते समय स्वयं गाली देने वाले को प्रायः गाली के अर्थ का ज्ञान भी नहीं होता और वह आवेश में आकर जो भी प्रचलित गालियाँ मुँह में आएँ बोलता जाता है। गालियाँ कलंक व आक्षेप का सूचक होती हैं। दो व्यक्तियों/पक्षों या दलों में परस्पर गालियाँ देना गाली-गलौज कहलाता है।

सजनों अर्थ चाहे कुछ भी हो, गाली तो गाली है इसीलिए तो कहते हैं कि जहाँ गाली देना बुरी बात है वहीं गाली खाना यानि कसमें खाना और बुरा होता है। इस संदर्भ में जान लो कि गाली देना या कसमें खाना दोनों ही अनुचित बात होती है क्योंकि जो गाली देता है वह कमज़ोर इंसान होता है और जो कसमें खाता है वह महा झूठा इंसान होता है। फिर जैसे ही उस झूठ से पर्दा उठने लगता है तो कसम की ओट में व्यक्ति उसे छुपाने का यत्न करता है और सामने वाले को भ्रमित कर छलता है। यह यथार्थ को छिपा कर अन्यो को एक दूसरे के प्रति भड़का कर, ईर्ष्या-द्वेष पैदा करने व कसम खाकर, सत्य का निरादर करने की बात होती है। ऐसे दूषित व्यवहार से जो अपने व दूसरों पर बुरा प्रभाव पड़ता

है, उससे केवल परस्पर सम्बन्धों में हानि के अतिरिक्त और कुछ प्राप्त नहीं होता यानि यह अमंगल कारक होता है और इससे निंदा के रूप में मात्र अपयश प्राप्त होता है। इस प्रकार ऐसा करते-करते जब मानव इस चलन को अपने स्वभाव के अंतर्गत कर बैठता है तो वह न जाने कितने ही अपने संगी-साथियों की बरबादी का कारण बनता है। इसी के साथ ही वह अपना सब मान-सम्मान गँवा बैठता है और तब वह न तो अपने इस आडम्बर युक्त बुरे चलन को स्वीकारने योग्य रहता है और न ही छोड़ने योग्य। फिर यकदम अपने शुभचिंतकों से वियोग होने पर सब कुछ बदल जाता है और जो भी ईश्वर की कृपा से, संयोगवश मिला होता है, वियोग होने पर वह सब चला जाता है। यह तो सब जानते ही हैं कि वियोग अग्नि में जलने की पीड़ा असहनीय होती है जो इन्सान को अंदर ही अंदर से खा जाती है यानि स्वाहा कर देती है। यह भी सब जानते हैं कि स्वाहा होने के पश्चात् किसी वस्तु का कोई वजूद नहीं रहता।

याद रखो बात-बात पर कसमें खाने वाला व्यक्ति न तो कभी अपने वायदे पर खरा उतरता है और न ही परस्पर प्रेम-प्यार का उचित तरीके से निर्वाह कर सकता है यानि उस बेवफ़ा से वफ़ाई की आशा रखना निराधार होती है। तभी तो ऐसा दोषयुक्त व्यक्ति किसी का भी विश्वासपात्र नहीं रहता और सभी उससे दूर रहने में ही अपनी भलाई समझते हैं। इस तरह वह कुल परिवार व समाज में अकेला पड़ जाता है जिसके फलस्वरूप उसकी शारीरिक व मानसिक स्वस्थता पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। ऐसा होने पर वह रोगी इस संसार में परिपूर्णता से कुछ भी सिद्ध कर पाने के काबिल

नहीं रहता। परिणामस्वरूप दुत्कार व हताशा से भरा कष्टमय जीवन जीना उसकी विवशता हो जाती है। ऐसे सजनों के लिए ही सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है:-

**प्रतिकूल गल बात करन, प्रतिकूल करन सवाल।
असली वर्ताव समझ न सकन, हर जगह खावन हार।।**

सजनों इस परिप्रेक्ष्य में यह भी जान लो कि गाली देते हैं तो लेने वालों पर निर्भर करता है वह ले या न ले और अगर वह ले लेता है तो उसका दुःखी होना निश्चित होता है। ठीक उसी की तरह गाली यानि कसमें खाने वाला भी दुःख से अछूता नहीं रह सकता। गाली लेने वाला तो गाली देने वाले पर चिल्ला कर अपनी पीड़ा का निवारण कर लेता है पर गाली खाने वाले यानि कसमें खाने वाले के लिए यह प्रावधान नहीं होता। वह तो किसी प्रकार अपना दुःख हल्का नहीं कर सकता। इस तरह वह गाली अपने प्रति हो या अपनों के प्रति जब उस गाली अनुरूप घट जाता है तब फिर गाली खाने वाले के पास पछतावे के सिवाय कुछ नहीं रहता। संक्षेपतः सजनों जो मन-वचन से गाली देता है व कसमें खाता है वह मानव सबसे अशिष्ट व्यवहार करता हुआ अंतनिर्हित मानवीय गुणों का निरादर करता है और इस तरह वह मानवता के प्रतिकूल बातचीत व व्यवहार कर निज मानव-धर्म से गिर जाता है। इस प्रकार वह कदापि विश्वास का पात्र नहीं बन पाता है।

सजनों इन दुःखदायक परिणामों को याद रखते हुए आज के पश्चात् न किसी को मन-वचन से गाली देना और न ही झूठी गाली यानि कसमें खाने की गलती करना। तभी आप अपने

संगी-साथियों के साथ सुख में बने रह, आनन्द से जीवन जी सकोगे। इस संदर्भ में सजनों सच्चेपातशाह जी की यह बात भी हमेशा स्मरण रखना कि 'जासो पर नूं आसवे घर नूं।' अर्थात् जैसा करोगे वैसा ही भरना पड़ेगा।

हमारे साथ ऐसा न हो इस हेतु अब सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित श्री साजन जी के मुख के शब्द ध्यान से सुनो और अगर गाली देने व कसमें खाने का चलन आपके स्वभाव के अंतर्गत हो गया है तो उसको छोड़ने की आवश्यकता व प्राप्त होने वाले अच्छे परिणामों को इस कीर्तन के माध्यम से ध्यान से समझो:-

श्री साजन जी के मुख के शब्द

जिह्वा गाली गलूचे न कढ ओय,
सब नूं सजन भाव तूं सड ओय।

ओ हैन शहनशाहवां दे शाह ओय,
ओ तैनुं देनगे परे हटा ओय ।

ओ शहनशाह हैन सर्वज्ञ ओय,
सब नूं सजन सजन सड ओय।।

जिह्वा सजन सजन सड ओय,
निंदिया चुगली करनों बच ओय।

जिह्वा गाली गलूचे न कढ ओय,
सब नूं सजन सजन सड ओय।

ओ शहनशाह हैन सर्वज्ञ ओय,
सब नूं सजन सजन सड ओय।।

जिह्वा हनुमान जी दे आखे लग ओय,
ख्याल जिधर किधर न भज ओय ।

जिह्वा गाली गलूचे न कढ ओय,
सब नूं सजन सजन सड ओय ॥

ओ हैन शहनशाहवां दे शाह ओय,
ओ मौत नूं देनगे परे हटा ओय ।

ओ शहनशाह हैन सर्वज्ञ ओय,
सब नूं सजन सजन सड ओय ॥

इन्सान जमया ओ ठग ओय,
अजे न सम्भले ते कइयां नूं ठगे ओय ।

जब पता है ओ हैन शनशाहवां दे शाह ओय,
ओ मौत नूं देनगे परे हटा ओय ।

ओ शहनशाह हैन सर्वज्ञ ओय,
सब नूं सजन सजन सड ओय ॥

जिह्वा स्वतन्त्र हो गई,
फिर इन्सान गाली गलूचे न कढ ओय ।

फिर कौन है वैरी दुश्मन शत्रु ओय,
हुण भजन बन्दगी विच लग ओय ॥

ओ हैन शहनशाहवां दे शाह ओय,
मौत नूं देनगे परे हटा ओय ।

ओ शहनशाह हैन सर्वज्ञ ओय,
सब नूं सजन सजन सड ओय ॥

जिह्वा न कर सानुं तंग ओय,
इलाही सूरत दा चढ़न दे रंग ओय ।

जिह्वा बात साडी इक मन ओय,
साडी भक्ति विच न पा भंग ओय ॥

ओ हिन शनशाहवां दे शाह ओय,
मौत नूं देनगे परे हटा ओय ।

ओ शहनशाह हिन सर्वज्ञ ओय,
सब नूं सजन सजन सड ओय ॥

फिर ओ निर्विकार विकार न कोई ओय,
फिर निराकार भक्ति है जे सोई ओय ।

हो गया ओ खालस सोना,
फिर खोट न राहवे कोई ओय ॥

हो गया ओ खालस सोना,
फिर खोट न राहवे कोई ओय ॥

ईश्वर परमात्मा निराकार ओही ओय ।

फिर ओही है सर्वज्ञ ओय,
सब नूं सजन सजन सड ओय ॥

सजनों श्री साजन जी इस कीर्तन द्वारा कलुकालवासियों को गाली-गलूचे का स्वभाव छोड़, परस्पर सजन-भाव यानि सजन सदो, सजन सदाओ का व्यवहार करने के लिए इसलिए कह रहे हैं ताकि वे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर बने रहने योग्य बने रहें । अतः हमारे लिए बनता

है कि हम उनका कहना मानते हुए इस मानवोचित व्यवहार को अपना लें और परस्पर गाली-गलूचे देना व कसमें खाना छोड़ दें।

इस संदर्भ में हम मानते हैं कि कलुकाल में माया ठगनी के प्रभाव से हर इंसान जन्म से ही सब को ठगने का स्वभाव अपना बैठता है और ज्यों-ज्यों जीवन बढ़ता है वह संभलने के स्थान पर उस अनुचित स्वभाव को इस तरह से व्यावहारिक रूप देता है कि उसे इस मदहोशी में अपने परमपिता शहनशाह की सर्वज्ञता के प्रति विस्मृति हो जाती है। फलतः उसका सजन व संगी ख्याल सांसारिक कुसंग में उलझ जाता है और वह जीवन की बाज़ी हार बैठता है। पर सजनों हमें तो सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ बता रहा है कि वह शहनशाह सब कुछ जानने वाले हैं और उनसे कुछ भी छिपा नहीं रह सकता। अतः उस ईश्वर के सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान व सर्वज्ञ होने के सत्य को यादगिरी में रखते हुए, ख्याल को उन द्वारा बताए गए मनुष्यता अनुरूप शिष्टाचार के व्यवहार में समरसता से साधे रखने में ही कल्याण मानें। भूल कर भी अपने ख्याल को इसके प्रतिकूल न जाने दें यानि अमानवीय चलन अपनाने के प्रति खुद पर परिपूर्णता से नियन्त्रण रखें। इस तरह मानवीय चलन अपना कर उनके सुपुत्र बन जन्म-मरण के चक्रव्यूह से छुटकारा पाएँ। सजनों इसीलिए सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें कह रहा है:-

**जिह्वा नाल झूठ निंदिया किस तरह करोगे,
हनुमान जी दा नाम है तुहाडे पास।**

गाली-गलूचे सजनों किस तरह कढोगे,
हृदय पवित्र करो अपना आप ।।

सजनों याद रखो ऐसा करने पर ही हम अपनी जिह्वा को मनमाना चलन अपनाने से रोक पाएंगे यानि जिह्वा स्वतन्त्र कर, परस्पर शत्रुता के कारण मन में पनपने वाले वैर-विरोध को हटा कर अफुरता से भजन-बन्दगी करने में सक्षम हो पाएंगे। इस प्रकार जिह्वा को अपने अधिकार में रखने पर ही हम निर्विघ्न सच-धर्म की भक्ति करते हुए परस्पर सजन-भाव अनुसार वर्त-वर्ताव करने के काबिल बन पाएँगे। तभी हमारा ख्याल इलाही विचारधारा को अपने स्वभाव के अंतर्गत कर सदा उसी रंग में रंगा रहेगा और हम तमाम फुरनों व परेशानियों से बचे रह पाएंगे। अन्य शब्दों में तभी हम आत्मिक खुराक के रूप में ब्रह्मविचारों का सेवन कर शारीरिक-मानसिक रूप से स्वस्थ रह सकेंगे और समभाव नज़रों में कर पवित्रता से समदर्शिता अनुरूप इस जगत में विचर सकेंगे। यह समस्त इच्छाओं के समाप्त होने यानि संकल्प रहित हो नेकी के रास्ते पर बने रह, आनन्दमय जीवन जीने की बात है।

याद रखो इतना समझाने पर भी इसके प्रति अगर हम अपने मन को नहीं समझा पाते तो संसारी फुरनों के कारण हमारी भक्ति में भंग पड़ेगा ही पड़ेगा और हम कभी भी अपने इलाही स्वरूप का बोध नहीं कर पाएंगे। अगर हम हकीकत में चाहते हैं कि हमारे मन में कोई विकार या खोट न रहे यानि हम खालस सोना हो निर्विकार समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुसार रूप-रंग-रेखा से रहित, पुनः निराकार अवस्था को

प्राप्त हो जाएं तो हमें अति उत्साह में आकर पूरी लगन के साथ सही तरीके से आत्मनिरीक्षण करते हुए अपने सच्चे घर की ओर आगे बढ़ना होगा और अपने निराकार स्वरूप को पा सर्वज्ञ नाम कहाना होगा। इस संदर्भ में सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें कह रहा है:-

जिह्वा गल बात उल्टे,
फिर ख्याल नूं पलटा खवाओ।
हम हैं सजन तुम हो सजन,
एहो नवीन पोशाक सजनों पाओ, ते सजनां नूं पवावो।।

अतः अपना संकल्प स्वच्छ व जिह्वा स्वतन्त्र रखने के लिए सदा याद रखो कि गाली देना बहुत बुरी बात है क्योंकि गाली जब दिल पर घात लगाती है तो बहुत, हाँ बहुत, पीड़ा दिखाती है। पीड़ित इन्सान अगर कमज़ोर होने के कारण गाली देने वाले का अगर कुछ कर नहीं पाता तो उसके दिल से ऐसी आह निकलती है जो गाली देने वाले को लगने पर बुरा प्रभाव दिखाती है। फिर जो बुरा, कुदरत के नियम के अनुसार गाली देने वाले के साथ होता है और जब वह इन्सान अपने साथ बुरा होने का कारण समझ नहीं पाता तब वह इन्सान कहता है कि मैंने क्या बुरा किया था जो ईश्वर ने मुझे यह सज़ा दी। उसे वह गाली वाली करनी फिर याद ही नहीं आती। बस फिर तो सोचों में हाँ सोचों में ही ज़िन्दगी कट जाती है। हमारे में से किसी के साथ ऐसा न हो इसलिए गाली-गलौच करने का स्वभाव छोड़ दो। सब समभाव-समदृष्टि के सबक अनुसार सबको सजन मानो व सजनता का व्यवहार करो और परस्पर मधुरता से बातचीत करना सीखो। इस प्रकार सत् का व्यवहार करते हुए सबको

प्यार दो व लो और आनन्दमय एकता व शांति से जीवन
जीना सुनिश्चित करो। आओ अब मिलकर बोलें :-

गाली गलूचे कढने वालो
परस्पर यूँ ही लड़ने वालो
होश में आओ, होश में आओ
जोश में आकर, हाँ जोश में आकर
इक दूजे से न टकराओ
अपनी कसमें खा-खा कर के
झूठ को सच बनाने वालो
यह तो कोई इन्साफ़ नहीं है
यह तो अति पाप घना है
जिसको नहीं कोई सह सकता है
इससे कोई अपना नहीं रह सकता है
सब छूट जाते हैं, सब रूठ जाते हैं
इसलिए कहते हैं कि संभल जाओ,
संभल जाओ अरे इन्सानों
गाली देने के स्वभाव को सजनता के विपरीत जानो
सब जीवों को एक ही मानो।
इस तरह सर्व एकात्मा का नाता पहचानो व
अपना मानव होने का सत्य सिद्ध कर डालो।।



दिनांक 25 सितम्बर 2016 का सबक

पुनरावृत्ति

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान
अर्थात् ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है, उसी
को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,
अर्थात् ज्ञानी को नहीं ज्ञान को अपनाओ और निमित्त में
नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह, इस अटल सत्य पर स्थिर
बने रहो:-

ओ३म् अमर है आत्मा, आत्मा में है परमात्मा

आओ आज आत्मनिरीक्षण करने से पूर्व, पिछले सबकों की
दोहराई करते हुए, सर्वप्रथम समभाव-समदृष्टि की महानता
को समझते हैं:-

समभाव समदृष्टि की युक्ति की महानता

समभाव समदृष्टि का
है निष्काम रास्ता
इसमें तो होता नहीं
कामनाओं से वास्ता।

यह शान्ति का प्रतीक है
एकता सब की मीत है
सर्वहित का यह नज़रिया

अति ही सटीक है।

यह युवावस्था की भक्ति है
जिसमें सजन-भाव की युक्ति है
यह वह आत्मिक ज्ञान है
जिससे मानव बनता महान है।

संतोष धैर्य का श्रृंगार है
सच्चाई धर्म की पहचान है
इस राह पर चलने वाला
करता सदा परोपकार है।

यह सजनता का व्यवहार ही
सब गुणों की खान है
इस आत्मीयता के आचार से
बढ़ती आन बान और शान है।

इसलिए सजनों मानो कि:-

समभाव-समदृष्टि की युक्ति निराली है।
परख लेंदा जेहड़ा सजन, ए युक्ति सुखाली है।।

सजनों हम सब जानते हैं कि ध्यान-कक्ष में हम बार-बार
शांति-शक्ति के प्रतीक बलधारी, ब्रह्मचारी, असुरसिंहारी,
तेजधारी, जगत हितकारी, परोपकारी, न्यायकारी सजन श्री
शहनशाह हनुमान जी से शांति-शक्ति प्राप्त करने हेतु प्रार्थना
करते हैं ताकि हम भी उन सम श्रेष्ठ, विद्वान, गुणवान,
बलवान, धनवान, बुद्धिमान व सारी दुनियां विचों ज्ञानवान
बन, सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर बने रह, जगत

कल्याण हेतु, हर कर्तव्य-कर्म निर्भयता व बुद्धिमत्ता से, समयबद्ध सिद्ध करने के योग्य बन सकें। इस हेतु सजनों हमें पूर्ण श्रद्धा व विश्वास के साथ, समर्पित भाव से, उनके संग बने रह, उनकी प्रदान की हुई युक्तियों अनुसार, उनके विदित जीवनेोपयोगी विचारों को अर्थ सहित धारना होगा।

कहने का तात्पर्य यह है कि हमें अपने अन्दर ऐसी तबदीली लानी होगी कि हम संसार में आवश्यकता अनुसार ही बोलें व विचरें और अपना अधिक से अधिक समय पारमार्थिक यानि आत्मिक ज्ञान को समझने व परमार्थ के काम करने में ही लगाएं। इस प्रकार सजनों हमें अपना अधिक से अधिक समय, अन्दरूनी वृत्ति में अक्षर चला-चला कर, हृदय प्रकाशित सत्य स्वरूप में स्थित रख, तदनुकूल आचार-विचार व व्यवहार करने में व्यतीत करना होगा। इस तरह हमें कलुकाल के समयकाल में अपने मूल गुणों यथा संतोष, धैर्य व सच्चाई, धर्म पर स्थिरता से बने रह, उचित ढंग से परोपकार कमाने हेतु, उन विचारों को कैसे निष्काम भाव से प्रयोग में लाना है, उस क्रिया शैली को भली-भांति समझना होगा ताकि किसी भी सांसारिक प्रभाव से हम अपने मन की शांति भंग न कर बैठें व शक्ति विहीन होकर जगत जंजाल में न फँस जाएं। इस तरह सारी उमर हमें रोते-झुखते हुए व्यतीत न करनी पड़े। ऐसा सुनिश्चित करने हेतु सजनों जानो कि आत्मिक ज्ञान ही, ब्रह्म, जीव, जगत व मानवता के उसूलों पर सुदृढ़ बने रहने हेतु परिपूर्ण ऐसा एकमात्र साधन है जिससे एक तो मन को शांति प्राप्त रहती है, दूसरा इंसान शक्तिशाली होकर अपने जीवन का हर कर्तव्य कर्म परमेश्वर के निमित्त निःस्वार्थ व अकर्ता भाव से करता हुआ निर्वैर,

निर्भय, निरासक्त, निर्विकार व निष्कलंक बना रह सकता है।

सजनों यह सब जानने के पश्चात् हमें लगता है कि अब तो आपको एक अच्छा व नेक इंसान बन, प्रसन्नतापूर्वक एकता में बने रह, जीवन जी पाने के योग्य निरंतर आत्मनिरीक्षण करने का महत्त्व समझ में आ गया होगा। इसीलिए हमारी सबसे प्रार्थना है कि अब सब इसी भाव के अनुसार कि 'मैं अब सुधरना चाहता हूँ', अपना आत्मनिरीक्षण करना व इस क्रिया को सत्यनिष्ठा से नित्य करते हुए धर्मपरायण बनना:-

1. क्या आप आत्मा और परमात्मा की शाश्वतता, शाश्वत जीवन और शाश्वत मूल्यों में विश्वास रखते हुए, नैतिक व्यवस्था को भौतिक व्यवस्था से उच्चतर मान, इन विश्वासों के अनुसार आचार-विचार व व्यवहार अपना पा रहे हो यानि हर हाल में अंतर्मुखी बने रह ईश्वरीय आज्ञाओं का पालन कर पा रहे हो या नहीं?

2. क्या आप अपने प्रति ईमानदार बने रहते हुए अपनी कथनी-करनी में सामंजस्य बनाए रख पाते हो और तदनुसार किसी से पक्षपात न करते हुए परस्पर न्यायसंगत सत्य आचरण कर पा रहे हो अथवा नहीं ?

3. क्या आप सत्य में पूरी निष्ठा रखते हुए, अपनी जीविका ईमानदारी से चलाते हुए अपनी हैसियत में ही प्रसन्न बने रह पा रहे हैं और तदनुसार परस्पर लेन-देन आदि में नेक नीयत से युक्त होकर सच्चाई का व्यापार कर रहे हो या फिर स्वार्थपरता व लोभ-लालच के कारण, अभी भी बेईमानी का भाव आपको सताता रहता है और इस हेतु आप निज धर्म

तक हार बैठने की गुस्ताखी कर बैठते हो?

4. क्या आप एक सचेतन इंसान की तरह आत्मनिरीक्षण क्रिया द्वारा अपनी त्रुटि/दोष आदि का, उचित उपाय कर उसे व्यवहार में लाने से पूर्व ही ठीक कर पा रहे हो या अभी भी इस दोष निवारण क्रिया को ठीक से समझने व पकड़ने में नाकामयाब हो? अगर ऐसा है तो क्यों? जानो यह इंसानियत में न ढलने की बात है और आपका इस कक्षा में आना व्यर्थ है।

5. क्या अब आपने घर-परिवार में विचरते समय, परस्पर घरेलू बातें करना बंद कर दिया है और उसके स्थान पर संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म पर मज़बूती से बने रह, सम पर खड़े होने के प्रति एक-दूसरे को जागरूक कर रहे हो या नहीं?

6. क्या अपने ख़्याल को अफुर अवस्था में, सच्चे घर में साधे रखने के लिए, आप मौन की वृत्ति अपनाने में कामयाब हो पा रहे हो यानि परस्पर आवश्यकता अनुसार ही बात करना सुनिश्चित कर पा रहे हो या अभी भी आलतू-फालतू बोलते हुए अपने ख़्याल को जगत में बिखेर रखा है?

7. क्या आप अपनी सच्ची प्रकृति ईश्वरत्व में बने रहने हेतु सुख और दुःख को समान समझते हुए, परहित और पर पीड़ा मिटाने के निमित्त सब कुछ त्याग करने का सामर्थ्य दर्शाने के लिए स्वयं को तैयार कर पा रहे हो या अभी भी मौत का भय सताता है?

8. क्या आप अन्दरूनी वृत्ति में अपने ख़्याल व ध्यान को

एकाग्रता से अन्दरूनी स्रोत से जोड़े रख, सब कुछ वहीं से प्राप्त करते हुए, तद्नुरूप अपने भाव-स्वभावों का निर्माण करने में कामयाब हो पा रहे हो या फिर जगत के विषयों में रूचि रखते हुए बैहरूनी वृत्ति में माता-पिता, पख-परिवार व कुल संसार को अपना गुरु मान, सब कुछ वहीं से प्राप्त कर, जगत के विषयों में उलझ तद्नुरूप अपने भाव-स्वभावों का निर्माण कर रहे हो व सदाचारिता अपनाने के स्थान पर दुराचारिता के चलन पर बने हुए हो?

9. क्या आप अपनी अन्दरूनी दृष्टि यानि विवेकशक्ति के प्रयोग द्वारा प्रत्येक वस्तु का यथार्थ देखते व समझते हुए, विधिवत् उसका इस्तेमाल करना सीख रहे हो या फिर बैहरूनी दृष्टि के उपयोग द्वारा जगत व उसके विषयों को धारण कर दुनियावी मंदे भाव-स्वभाव अपना बैठे हो?

10. क्या आप परम पिता परमेश्वर के वचनानुसार अपनी जिह्वा स्वतन्त्र कर परस्पर सजन-भाव का वर्त-वर्ताव कर पा रहे हो या अभी भी समभाव के कायदे के विपरीत परस्पर गाली-गलूचे का व्यवहार दर्शाते हो व झूठ को सच साबित करने के लिए कसमें खाते हो?

11. क्या आप ईश्वर के सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान व सर्वज्ञ होने के सत्य को यादगिरी में रखते हुए, ख्याल को उन द्वारा बताए गए मनुष्यता अनुरूप शिष्टाचार के व्यवहार में समरसता से साधे रख पा रहे हो या अभी भी मनमत के अधीन हो अशिष्टता व अभद्रता का प्रदर्शन करते हो?

सजनों इस आत्मनिरीक्षण को करने के पश्चात् एक श्रेष्ठ

मानव बनने के प्रति आज आपको जो भी परिणाम प्राप्त हुआ हो, उस फ़र्स्ट/सैकिंड/थर्ड या पास/फेल के नतीजे को किसी प्रकार से भी सोच बनाकर कमज़ोर मत पड़ो क्योंकि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में सजन श्री शहनशाह महाबीर जी ने फरमाया है कि 'मखट्टू पुत्र नहीं ओ प्यारा बेटा, निकल जावे तो उसनूं निकलने देवो, फिर उसने आना है इस द्वारे बेटा'। सजनों इस बात को ध्यान से समझो व नित्य आत्मनिरीक्षण द्वारा अपने मन-मन्दिर की सफ़ाई सुनिश्चित करते हुए, उस परमपिता के आज्ञाकारी उत्तम सुपुत्र बन जाओ। इस संदर्भ में याद रखो कि अगर मन-मन्दिर में गन्दगी होगी तो अंतर्निहित मानवता का क्या होगा? फिर मानव धर्म की पालना किस प्रकार करोगे? निःसंदेह इसी गंदगी के कारण ही मानवीय गुण लुप्त हो जाते हैं और मानवता मर जाती है। इस तरह इंसान सारी उम्र कुकर्म-अधर्म करने में ही व्यतीत कर अंत मृत्यु को प्राप्त होता है। अतः अपने साथ ऐसा मत होने देना। इस पुरुषार्थ में सफलता प्राप्त करने के लिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित, शब्द ब्रह्म विचारों को प्रवान करना व विचारशीलता से सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर अटूटता से बने रह व घर सतयुग बना, स्वार्थ की तरफ़ से सुखी हो जाना और परमार्थ की तरफ़ से प्रभु से मेल खा जाना। इसी सन्दर्भ में अब ध्यान से सुनो:-

हे

हय
क्या है

सच
हमको आत्मबोध हो

मन में अति शोध हो
आत्मस्वरूप से सदा
प्राप्त मनःसंतोष हो

वीर हो कर हम जिएं
धीर हो कर हम जियें
सच्चाई-धर्म की राह पर
एकरस बने रहें

सात्विक आहार हो
स्वस्थता से प्यार हो
दोनों वृत्तियों में ही
शब्द ब्रह्म विचार हो

हर कर्म निष्काम हो
निज धर्म महान हो
जो भी जीवन में करें
परोपकार प्रवृत्ति से करें

ऐसा बनने के लिए बताओ- बताओ क्या है सच

क्या है सच..... हम नित्य हैं
क्या है सच.....हम सर्व हैं
आगे कहो हम सर्वज्ञ हैं

सच कहना है तो खुल कर कहो.....हम
सर्वशक्तिमान भगवान हैं

रूप में होनहीं
रंग में होनहीं

रूप-रंग में नहीं तो किस ढंग में हो

हम रूप-रंग-रेखा से बाहर, ज्योति स्वरूप, आद् पुरुष
निरंकार हैं

तो हम मानें क्या आप ब्रह्म हैं
हाँ हम ब्रह्म हैं...हम ब्रह्म हैं.... हम ब्रह्म हैं

सजनों ब्रह्म भाव में बने रहने के लिए प्रसन्नता में आना होगा
और प्रसन्नता ही बाँटनी होगी। दूसरों को दुःख देना अब बंद
करना होगा और एक दूसरे की इज्जत करते हुए मानवीय
सम्मान के साथ जीना होगा। तभी शक्तिशाली होकर परस्पर
शांति व एकता से विचर सकोगे और एकभाव होकर जीवन
लक्ष्य प्राप्त कर सकोगे।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।



निवेदन

इस पुस्तक को और अधिक जीवन उपयोगी बनाने हेतु आपके सुझाव सादर आमन्त्रित हैं।



SATYUG DARSHAN TRUST (REGD.)

ALLEVIATING PHYSICAL, MENTAL AND SPIRITUAL SUFFERINGS OF HUMAN BEINGS.

info@satyugdarshantrust.org | www.satyugdarshantrust.org

Institutions under the aegis of Satyug Darshan Trust (Regd.)



SATYUG DARSHAN CHARITABLE DISPENSARIES & LABORATORIES

Multidiscipline dispensaries, labs & diagnostic centres spread in 15 cities

www.satyugdarshandispensaries.org



SATYUG DARSHAN VIDYALAYA

Nursery-XII, Co-Ed. English medium, residential & day boarding school.

Affiliated to CBSE.

www.satyugdarshanvidyalaya.net



SATYUG DARSHAN INSTITUTE OF EDUCATION & RESEARCH

B.Ed. College for Girls. CRS University, Jind.

www.sdier.org



SATYUG DARSHAN INSTITUTE OF ENGINEERING & TECHNOLOGY

UG College, offering B.Tech. and BBA courses. Co-Ed., residential & day boarding facilities. Affiliated to Maharshi Dayanand University, Rohtak.

www.satyug.edu.in



DHYAN KAKSH

World's first School of Equanimity & Even-sightedness. It is open to all age and gender.

www.schoolofequanimity.com



SATYUG DARSHAN SANGEET KALA KENDRA

Imparting true teachings of music and dance, open to all age and gender.

Present in 14 cities. Affiliated to Prayag Sangeet Samiti, Allahabad.

www.satyugdarshansangeet.org

Initiatives of Satyug Darshan Trust on Humanity and Ethics



INTERNATIONAL
EQUANIMITY OLYMPIAD
www.equanimityolympiad.in



HUMANITY
DEVELOPMENT CLUB
www.awakehumanity.org